1895

॥ श्रीहरिः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

जीवच्छ्राद्धपद्धति

[माहात्म्य एवं प्रयोगविधिसहित]

त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देवदेव॥

प्रणेता—पं० श्रीरामकृष्णजी शास्त्री

गीताप्रेस, गोरखपुर

॥ श्रीहरिः ॥

विषय-सूची

कृष्णचतुर्दशी (तृतीय दिन)-का कृत्य

अमावास्या (चतुर्थ दिन)-का कृत्य

शुक्लप्रतिपदा (पंचम दिन)–का कृत्य

चित्र-सूची

सम्पादकीय निवेदन

'अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्।'—**प्रत्येक मनुष्यको अपने द्वारा किये गये शुभ तथा अशुभ कर्मोंका फल अवश्य भोगना पड़ता है। अर्थात् इनके भोगनेसे ही इनकी परिसमाप्ति होती है। सामान्यतः जीवसे इस जीवनमें पाप और पुण्य दोनों होते हैं। पुण्यका फल है स्वर्ग और पापका फल है नरक। नरकमें पापीको यातनाएँ भोगनी पड़ती हैं। स्वर्ग-नरक भोगनेके बाद जीव पुनः अपने कर्मोंके अनुसार ८४ लाख योनियोंमें भटकने लगता है। पुण्यात्मा मनुष्ययोनि अथवा देवयोनि प्राप्त करते हैं। पापात्मा पशु-पक्षी, कीट-पतंग आदि तिर्यक् एवं अन्यान्य निम्न योनियाँ प्राप्त करते हैं। अतः अपने शास्त्रोंके अनुसार पुत्र-पौत्रादिका यह कर्तव्य होता है कि वे अपने माता-पिता तथा पूर्वजोंके निमित्त श्रद्धापूर्वक कुछ ऐसे शास्त्रोक्त कर्म करें, जिससे मृत प्राणियोंको परलोकमें अथवा अन्य योनियोंमें सुखकी प्राप्ति हो सके। इसीलिये भारतीय संस्कृति तथा सनातनधर्ममें मृत प्राणियोंके निमित्त श्राद्ध करनेकी अनिवार्य आवश्यकता बतायी गयी है।**

अपने शास्त्रोंमें श्राद्धकी महिमा विशेष रूपसे वर्णित है—

श्राद्धात् परतरं नान्यच्छ्रेयस्करमुदाहृतम्। तस्मात् सर्वप्रयत्नेन श्राद्धं कुर्याद् विचक्षणः॥

(हेमाद्रिमें सुमन्तुका वचन)

श्राद्धसे बढ़कर कल्याणकारी और कोई कर्म नहीं होता। अतः प्रयत्नपूर्वक श्राद्ध करते रहना चाहिये।

एवं विधानतः श्राद्धं कुर्यात् स्वविभवोचितम् । आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं जगत् प्रीणाति मानवः॥

(ब्रह्मपुराण)

जो व्यक्ति विधिपूर्वक अपने धनके अनुरूप श्राद्ध करता है, वह ब्रह्मासे लेकर घासतक समस्त प्राणियोंको संतृप्त कर देता है।

योऽनेन विधिना श्राद्धं कुर्याद् वै शान्तमानसः । व्यपेतकल्मषो नित्यं याति नावर्तते पुनः॥

(हेमाद्रिमें कूर्मपुराणका वचन)

जो शान्तमन होकर विधिपूर्वक श्राद्ध करता है, वह सम्पूर्ण पापोंसे मुक्त होकर जन्म-मृत्युके बन्धनसे छूट जाता है।

यद्यपि ये सब क्रियाएँ मुख्यरूपसे पुत्र-पौत्रादि सन्ततियोंके लिये कर्तव्यरूपसे लिखी गयी हैं, परंतु आधुनिक समयमें कई प्रकारकी बाधाएँ और व्यवधान भी दिखायी पड़ते हैं। पूर्वकालसे यह परम्परा रही है कि माता-पिताके मृत होनेपर उनके पुत्र-पौत्रादि श्रद्धापूर्वक शास्त्रोंकी विधिसे उनका श्राद्ध सम्पन्न करते हैं। जिन लोगोंको सन्तान नहीं होती, उनका श्राद्ध उस व्यक्तिके किसी निकट-सम्बन्धीके द्वारा सम्पन्न होता है, परंतु आजके समयमें नास्तिकताके कारण कई अपने औरस पुत्र भी अपने माता-पिताका श्राद्ध शास्त्रोक्त विधिसे सम्पन्न नहीं करते तथा मनमाने तरीकेसे दिखावेके रूपमें अपने सुविधानुसार कुछ कर देते हैं। इसी प्रकार जिनको

अपनी सन्तान नहीं है, वे आस्तिकजन तो और भी तनावग्रस्त रहते हैं कि उनकी मृत्युके बाद श्राद्ध आदि क्रियाएँ कौन सम्पन्न करेगा ?

इसीलिये अपने शास्त्रोंमें जीवच्छ्राद्ध करनेकी पद्धति बतायी गयी है, जिसे व्यक्ति स्वयं अपनी जीवितावस्थामें शास्त्रोक्तविधिसे सम्पन्न कर सकता है, जिससे श्राद्धकी सम्पूर्ण प्रक्रिया पूरी हो जाती है। इसके बाद भी मृत्युके उपरान्त कर्तव्यकी भावनासे यदि कोई उत्तराधिकारी श्राद्धादि करता है तो करनेवालेको तथा उस प्राणीको—दोनोंको पुण्यलाभ होता है। और न करनेपर भी प्राणीको इसकी अपेक्षा नहीं रहती। यद्यपि यह कार्य अबतक विशेष प्रचलनमें नहीं है, कारण पूर्वके लोगोंमें शास्त्र और परलोकके प्रति आस्था और विश्वास पूर्णरूपसे था। अतः मृत व्यक्तिके उत्तराधिकारी कर्तव्यकी दृष्टिसे इन कार्योंको पूर्ण तत्परतासे करते थे, परंतु आज इस आस्था और विश्वासमें गिरावट आती जा रही है। मृत व्यक्तिके उत्तराधिकारी अपने माता-पिताकी सम्पत्तिके स्वामी तो बन जाते हैं, परंतु उनकी श्राद्धादि कर्मोंमें आस्था न होनेके कारण दशगात्रके पिण्डदान तथा द्वादशाहादिके कृत्योंको भी नहीं करते। शास्त्राज्ञाके विपरीत तीन दिनोंमें कुछ मनमाना करके निवृत्त हो जाते हैं। जिनको अपनी सन्तान नहीं है, वे तनावग्रस्त होकर परमुखापेक्षी रहते हैं।

इन सब दृष्टियोंको ध्यानमें रखते हुए आस्तिकजनोंकी परलोक-सन्तृप्तिके लिये जीवच्छ्राद्धकी शास्त्रोक्त विधि प्रस्तुत करना आवश्यक हो गया। अतः गीताप्रेसने सर्वसाधारणकी जानकारीके लिये 'जीवच्छ्राद्धपद्धति'

पुस्तक प्रकाशित करनेका निर्णय लिया।

यद्यपि यह कार्य अत्यन्त दुरूह था, कारण सामान्यतः कर्मकाण्डके पण्डित अभ्यस्त न होनेके कारण इस विधासे अनभिज्ञ थे। संयोगवश कुछ वर्षोंपूर्व श्रीहरीराम गोपालकृष्ण सनातनधर्म संस्कृत महाविद्यालय, प्रयागके अवकाशप्राप्त प्राचार्य पं० श्रीरामकृष्णजी शास्त्रीने अपना जीवच्छ्राद्ध काशीमें ही पूर्ण शास्त्रोक्त विधिसे सम्पन्न किया, जिसका आचार्यत्व श्राद्धादि कर्मकाण्डके मूर्धन्य विद्वान् अग्निहोत्री पं० श्रीजोषणरामजी पाण्डेयने किया। वे इस विधाके मर्मज्ञ थे, किंतु कुछ वर्षपूर्व पं० श्रीजोषणरामजी परलोक सिधार गये। अतः मैंने पं० श्रीरामकृष्णजी शास्त्रीसे, जो स्वाभाविक रूपसे जीवच्छ्राद्धकी शास्त्रोक्त विधिसे परिचित हैं, इस पुस्तकके प्रणयनके लिये अनुरोध किया। यह कार्य और किसीके वशका था भी नहीं। उन्होंने कृपापूर्वक इसे स्वीकार कर लिया और निष्कामभावसे पूर्ण मनोयोगपूर्वक विभिन्न ग्रन्थोंका अवलोकन करते हुए इस पुस्तक 'जीवच्छ्राद्धपद्धति' का प्रणयन किया।

इस ग्रन्थके अनुसार किसी भी मासके कृष्णपक्षकी द्वादशीसे लेकर शुक्लपक्षकी प्रतिपदातक—पाँच दिनमें जीवच्छ्राद्धके सम्पूर्ण कार्य सम्पन्न होते हैं। प्रथम दिन अधिकारप्राप्तिके लिये प्रायश्चित्तका अनुष्ठान, प्रायश्चित्तके पूर्वांग तथा उत्तरांगके कृत्य, दस महादान, अष्ट महादान तथा पंचधेनुदान आदि कृत्य; द्वितीय दिन शालग्रामपूजन, जलधेनुका स्थापन एवं पूजन, वसुरुद्रादित्यपार्वणश्राद्ध तथा भगवत्स्मरणपूर्वक रात्रिजागरण

आदि कृत्य; तृतीय दिन पुत्तलका निर्माण, षट्पिण्डदान, चितापर पुत्तलदाहकी क्रिया, दशगात्रके पिण्डदान तथा शयनादि कृत्य; चतुर्थ दिन मध्यमषोडशी, आद्यश्राद्ध, शय्यादान, वृषोत्सर्ग, वैतरणीगोदान तथा उत्तमषोडशश्राद्ध और अन्तिम पंचम दिन सपिण्डीकरणश्राद्ध, इसके अनन्तर गणेशाम्बिकापूजन और कलशपूजन, शय्यादानादि कृत्य, पददान एवं ब्राह्मणभोजन तथा ब्राह्मणभोजनके अनन्तर श्राद्धकी परिपूर्णता सम्पन्न होती है।

श्राद्धकी क्रियाएँ इतनी सूक्ष्म हैं कि जिन्हें सम्पन्न करनेमें अत्यधिक सावधानीकी आवश्यकता है। इसके लिये इससे सम्बन्धित बातोंकी जानकारी होना भी परम आवश्यक है। इस दृष्टिसे जीवच्छ्राद्धसे सम्बन्धित आवश्यक बातें आगे लिखी जा रही हैं, जो सभीके लिये उपादेय हैं। अतः इन्हें अवश्य पढ़ना चाहिये।

आशा है सर्वसाधारणजन इस पुस्तकसे लाभान्वित होंगे। कलिकालमें कर्मोंके लोप होनेसे यदि इस ग्रन्थके द्वारा भगवत्कृपासे किंचित् रक्षा हो सकी तथा सर्वसाधारणजनोंके कल्याणमें यह निमित्त बन सका तो प्रस्तुत प्रकाशन सार्थक होगा।

—राधेश्याम खेमका

जीवच्छ्राद्धकी अवश्यकरणीयता

प्राचीन धर्मशास्त्रीय मान्यताओंमें आज अत्यन्त द्रुतगतिसे परिवर्तन होता जा रहा है। विशेषरूपसे जीवके आमुष्मिक श्रेय:सम्पादनके लिये की जानेवाली और्ध्वदैहिक क्रियाओंमें तो उत्तरोत्तर ह्रास दिख रहा है। और्ध्वदैहिक संस्कारोंके कर्तामें आस्था तथा श्रद्धाका अभाव और कारयिता आचार्यजनोंमें कर्मके सम्यक् सम्पादनकी योग्यता—अर्हताका भी अभाव होता जा रहा है। प्राचीन विद्वज्जनोंकी योग्यता और अर्हताकी ओर दृष्टि डालनेपर आज हममें और उन ऋषियोंमें द्यावाभूमीका अन्तराल प्रतीत होता है।

ऐसी स्थितिमें प्रत्येक सनातनधर्मी आस्तिक पुरुषमें अपने उद्देश्यसे किये जानेवाले और्ध्वदैहिक कर्मकाण्डकी सम्यक्-सम्पन्नताके प्रति संशयकी स्थिति उत्पन्न होती जा रही है। इन सब दृष्टियोंसे उत्तरोत्तर अवनतिकी ओर बढ़ती हुई स्थितिके प्रति सचेत रहनेकी आवश्यकता है। मरणासन्न-अवस्थामें और मृत्युके अनन्तर किये जानेवाले प्रत्यवायपरिहारार्थ पापोंके प्रायश्चित्तोंका अनुष्ठान और परलोकमें प्राप्त होनेवाली विविध यातनाओंसे बचनेका उपाय तथा जीवकी सद्गतिके लिये जो कार्य करने चाहिये, उनका सम्पादन अपने जीवनकालमें करनेकी व्यवस्था शास्त्रमें प्रतिपादित है। अत: आत्मकल्याणकामी सुबुद्धजनोंको यह कृत्य शक्तिसामर्थ्य रहते ही यथासम्भव सम्पादित कर लेना चाहिये।*

---

* देशकालधनश्रद्धाव्यवसायसमुच्छ्रये। जीवते वाऽथ जीवाय दद्याच्छ्राद्धं स्वयं नर:॥ (प्रभुदत्तजीकी जीवच्छ्राद्धपद्धतिमें आदित्यपुराणका वचन)
देश, काल, धन, श्रद्धा, आजीविका आदि साधनोंकी समुन्नतावस्थामें जीवित रहते हुए पुरुषके उद्देश्यसे अथवा जीवके उद्देश्यसे व्यक्तिको स्वयं श्राद्ध सम्पादित कर लेना चाहिये।

यहाँ यह ध्यान देनेयोग्य बात है कि **'पितरो वाक्यमिच्छन्ति भावमिच्छन्ति देवताः।'**—इस वचनके अनुसार और्ध्वदैहिक संस्कारके संकल्पादि वाक्योंका साधुत्व अनिवार्यरूपसे अपेक्षित है। यह चिन्ताका विषय है कि विशेषकर पितृकार्यमें लगे हुए विद्वज्जनोंमें शब्दसाधुत्वके परिज्ञानकी उपेक्षा हो रही है।

'श्रद्धया पितॄन् उद्दिश्य विधिना क्रियते यत्कर्म तत् श्राद्धम्', **'श्रद्धार्थमिदं श्राद्धम्'**, **'श्रद्धया कृतं सम्पादितमिदम्'**, **'श्रद्धया दीयते यस्मात् तच्छ्राद्धम्'**, **'श्रद्धया इदं श्राद्धम्'**, **'देशे काले च पात्रे च श्रद्धया विधिना च यत्। पितॄनुद्दिश्य विप्रेभ्यो दत्तं श्राद्धमुदाहृतम्॥'**—इन व्युत्पत्तियोंके आधारपर यह सुस्पष्ट है कि और्ध्वदैहिक संस्कार-सम्पादनकर्तामें श्रद्धाका होना परम आवश्यक है, किंतु आज विडम्बना यह है कि धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्षरूप पुरुषार्थको सम्पादन करनेमें पूर्ण समर्थ इस शरीरका निर्माण करनेवाले और इसका संरक्षण-संवर्धन करनेवाले तथा पुत्रादिके जीवनमें ऐहिक तथा आमुष्मिक श्रेयःसम्पादनकी योग्यता भर देनेमें अपनी समूची शक्ति लगा देनेवाले पिता-माता आदि गुरुजनोंके और्ध्वदैहिक संस्कारके प्रति उनके पुत्रादि उत्तराधिकारी उदासीन होते दीख रहे हैं। इसी तथ्यको श्रीमद्भागवत (१०।४५।५)-में भगवान्ने स्वयं इस प्रकार कहा है—

सर्वार्थसम्भवो देहो जनितः पोषितो यतः। न तयोर्याति निर्वेशं पित्रोर्मर्त्यः शतायुषा॥

अर्थात् पिता और माता ही इस शरीरको जन्म देते हैं और इसका लालन-पालन करते हैं। तब कहीं जाकर यह शरीर धर्म, अर्थ, काम अथवा मोक्षकी प्राप्तिका साधन बनता है। यदि कोई मनुष्य सौ वर्षतक जीकर माता और पिताकी सेवा करता रहे, तब भी वह उनके उपकारसे उऋण नहीं हो सकता।

हमारे पूर्वजोंने हमें न केवल पूर्वोक्त साधनोंसे सम्पन्न बनाया है, प्रत्युत अपना सर्वस्व दायभागके रूपमें जीवननिर्वाहके लिये हमें प्रदान किया है। आश्चर्य तो यह है कि इन दिनों कहीं एक दिन और कहीं तीन दिनमें ही मृत माता-पिताके सभी और्ध्वदैहिक संस्कार शास्त्रसे अविहित विधिसे करके सन्तान अपने उत्तरदायित्वकी इतिश्री मान लेती है। सूचना यहाँतक मिली है कि यदि माता-पिता या किसी गुरुजनकी मृत्यु हो जाय तो विशिष्ट नगरोंमें ऐसी संस्थाओंका निर्माण हो चुका है, जहाँ सूचना देनेपर उन संस्थाओंके कार्यकर्ता उपस्थित हो जाते हैं और वे शुल्क लेकर शवको उठा ले जाने आदि सभी कार्योंको कर देते हैं। धर्मशास्त्रीय मान्यताओंके परिपालन करनेमें वे कितनी निष्ठा, कितनी अभिज्ञता और कितनी प्रतिबद्धता रखते होंगे, ये वे ही जान सकते हैं। मुख्य बात तो यह है कि उनको शवके अन्तिम संस्कारके सम्बन्धमें शास्त्रीय दृष्टिसे कोई उत्तराधिकार ही प्राप्त नहीं है। इसलिये अनधिकारी व्यक्तियोंके ऊपर अपने माता-पिता और गुरुजनोंके अन्तिम संस्कारका भार फेंककर निश्चिन्त हो जाना बहुत बड़ी कृतघ्नता है, उनके अधःपतनका हेतु है और शास्त्रविरुद्ध है। शास्त्रोंमें तो शवके स्पर्श आदि करनेका अधिकार किसे है, किसे नहीं है, इस व्यवस्थाका वर्णन भी मिलता है।

आज तो अधिकांश घरोंमें जीवितावस्थामें ही माता-पिताकी दुर्दशा देखी जा रही है फिर मृत्युके अनन्तर और्ध्वदैहिक संस्कार सम्पन्न करनेका प्रश्न ही नहीं। यद्यपि माता-पिताके जीवनकालमें उनके पुत्रादि उत्तराधिकारियोंके द्वारा भरण-पोषणमें जो उनकी उपेक्षा हो रही है और इससे उन्हें जो कष्ट हो रहा है, वह कष्ट तो इस शरीरके रहनेतक ही है, उसके बाद समाप्त हो जानेवाला है, किंतु शरीरके अन्त होनेके अनन्तर जीवके सुदीर्घ कालतककी आमुष्मिक

सद्‌गति–दुर्गतिसे सम्बन्धित और्ध्वदैहिक संस्कारोंके न कर लेनेकी सम्भावनासे माता–पिता आदि जनोंमें घोर निराशा उत्पन्न होती है। इस अवसादसे त्राण पानेके लिये अपने जीवनकालमें ही जीवको अपना जीवच्छ्राद्ध कर लेनेकी व्यवस्था शास्त्रने दी है।

अपनी जीवितावस्थामें ही अपने पुत्रादिद्वारा अपनी उपेक्षाको देख–समझकर उन पुत्रादि अधिकारियोंसे अपने आमुष्मिक श्रेयः–सम्पादनकी आशा कैसे की जा सकती है? पुत्रादि उत्तराधिकारियोंको अपने दिवंगत माता–पिताके कल्याणके लिये अपनी शक्ति और सामर्थ्यके अनुरूप इन सब कृत्योंका किया जाना आवश्यक है—पापके प्रायश्चित्तके रूपमें जीवनमें किये गये व्रत आदिकी पूर्णताके लिये अकृत उद्यापनादि विधियोंके अनुष्ठान, अष्टमहादान, दश–महादान, पंचधेनुदान, मलिनषोडशी, मध्यमषोडशी, उत्तमषोडशी, सपिण्डीकरण, आनुमासिकश्राद्ध, सांवत्सरिक एकोद्दिष्ट एवं पार्वणश्राद्ध आदि। इसीलिये शास्त्रमें उत्तराधिकारियोंके रहते हुए भी जीवच्छ्राद्ध कर लेनेकी व्यवस्था दी गयी है—

जीवन्नेवात्मनः श्राद्धं कुर्यादन्येषु सत्स्वपि।

(हेमाद्रि पृ० १७१०, वीरमित्र० श्राद्धप्र० पृ० ३६३)

साधनसम्पन्न होते हुए भी भगवत्कृपाका अवलम्ब लेकर जो व्यक्ति अपने आमुष्मिक कल्याणके लिये प्रवृत्त नहीं होता, ऐसे व्यक्तिको श्रीमद्भागवत (११।२०।१७)–में 'आत्महा' की संज्ञा दी गयी है—

नृदेहमाद्यं सुलभं सुदुर्लभं प्लवं सुकल्पं गुरुकर्णधारम्।
मयानुकूलेन नभस्वतेरितं पुमान् भवाब्धिं न तरेत् स आत्महा॥

अर्थात् यह मनुष्य-शरीर समस्त शुभ फलोंकी प्राप्तिका मूल है और अत्यन्त दुर्लभ होनेपर भी अनायास सुलभ हो गया है। इस संसार-सागरसे पार जानेके लिये यह एक सुदृढ़ नौका है। शरण-ग्रहणमात्रसे ही गुरुदेव इसके केवट बनकर पतवारका संचालन करने लगते हैं और स्मरणमात्रसे ही मैं अनुकूल वायुके रूपमें इसे लक्ष्यकी ओर बढ़ाने लगता हूँ। इतनी सुविधा होनेपर भी जो शास्त्रप्रतिपादित अनुष्ठान करके इस शरीरके द्वारा संसार-सागरसे पार नहीं हो जाता, वह तो अपने हाथों अपने आत्माका हनन—अधःपतन कर रहा है।

अन्यत्र भी कहा गया है कि जबतक यह शरीर स्वस्थ है, रोगोंसे रहित है, जरावस्था अभी दूर है और जबतक इन्द्रियोंकी शक्ति अप्रतिहत है और जबतक आयु क्षीण नहीं हो जाती, बुद्धिमान् व्यक्तिको चाहिये कि उससे पहले ही अपने आत्मकल्याणके लिये महान् प्रयत्न कर ले। भवनमें आग लग जाय तो फिर कुआँ खोदनेका श्रम करनेसे क्या लाभ है—

यावत्स्वस्थमिदं शरीरमरुजं यावच्च दूरे जरा यावच्चेन्द्रियशक्तिरप्रतिहता यावत्क्षयो नायुषः।
आत्मश्रेयसि तावदेव विदुषा कार्यः प्रयत्नो महान् सन्दीप्ते भवने तु कूपखनने प्रत्युद्यमः कीदृशः॥

अतः जीवनकालमें अपने उद्देश्यसे किये जानेवाले श्राद्धादि कृत्योंका सम्पादन आवश्यक प्रतीत होता है।

जीवच्छ्राद्ध-सम्बन्धी वचन लिंगपुराण, आदिपुराण, आदित्यपुराण, बौधायनगृह्यशेषसूत्र, वीरमित्रोदयश्राद्धप्रकाश, कृत्यकल्पतरु, हेमाद्रि (चतुर्वर्गचिन्तामणि) आदि ग्रन्थोंमें प्राप्त होते हैं। आचार्य शौनकके नामसे भी जीवच्छ्राद्धकी व्यवस्था प्राप्त होती है।

एक शंका यह होती है कि पत्नीके रहते पुरुषको जीवच्छ्राद्ध नहीं करना चाहिये, इसका कारण इसमें पुत्तलदाह आदिके कारण पत्नीको वैधव्यकी भावना बन सकती है। परंतु इसका समाधान यह है कि पत्नीका जीवच्छ्राद्ध पूर्वमें कराकर पुरुष अपना श्राद्ध करे।

यदि कोई व्यक्ति अपनी अस्वस्थता आदिके कारण स्वयं श्राद्ध करनेमें सक्षम नहीं है तो प्रतिनिधिके द्वारा भी श्राद्ध करा सकता है।

अपनी जीवितावस्थामें ही स्वयंके कल्याणके उद्देश्यसे किया जानेवाला श्राद्ध जीवच्छ्राद्ध कहलाता है। बौधायनगृह्यसूत्र (पितृमेधसूत्र २।९।५७।१)-में कहा गया है—'**जीवता स्वार्थोद्देश्येन कर्तव्यं श्राद्धं जीवच्छ्राद्धमित्युच्यते।**'

जीवच्छ्राद्धका माहात्म्य

लिंगपुराणमें जीवच्छ्राद्धकी महिमाका प्रतिपादन इस प्रकार हुआ है—ऋषियोंके द्वारा जीवच्छ्राद्धके विषयमें पूछनेपर सूतजीने कहा—हे सुव्रतो! सर्वसम्मत जीवच्छ्राद्धके विषयमें संक्षेपमें कहूँगा। देवाधिदेव ब्रह्माजीने पहले वसिष्ठ, भृगु, भार्गवसे इस विषयमें कहा था। आपलोग सम्पूर्ण भावसे सुनें, मैं श्राद्धकर्मके क्रमको और साक्षात् जो श्राद्ध करनेके योग्य हैं, उनके क्रमको भी बताऊँगा तथा जीवच्छ्राद्धकी विशेषताओंके सम्बन्धमें भी कहूँगा, जो श्रेष्ठ एवं सब प्रकारके कल्याणको देनेवाला है।

मृत्युको समीप जानकर पर्वतपर अथवा नदीके तटपर, वनमें या निवासस्थानमें प्रयत्नपूर्वक जीवच्छ्राद्ध करना चाहिये। जीवच्छ्राद्ध कर लेनेके अनन्तर वह व्यक्ति कर्म करे अथवा न करे, ज्ञानी हो अथवा अज्ञानी हो, श्रोत्रिय हो अथवा अश्रोत्रिय हो, ब्राह्मण हो, क्षत्रिय हो अथवा वैश्य हो—अपनी जीवितावस्थामें ही योगीकी भाँति कर्मबन्धनसे मुक्त हो जाता है। उसके मरनेपर उसका और्ध्वदैहिकसंस्कार किया जाय अथवा न किया जाय; क्योंकि वह स्वयं जीवन्मुक्त हो जाता है। यतः वह जीव जीवन्मुक्त हो जाता है, अतः नित्य-नैमित्तिकादि विधिबोधित कार्योंके सम्पादन करने अथवा त्याग करनेके लिये वह स्वतन्त्र है। बान्धवोंके मरनेपर उसके लिये शौचाशौचका विचार भी नहीं है। उसे सूतक प्रवृत्त नहीं होता, वह स्नानमात्रसे शुद्ध हो जाता है। जीवच्छ्राद्ध कर लेनेके अनन्तर अपनी पाणिगृहीती भार्यामें अपने द्वारा पुत्रकी उत्पत्ति हो जाय तो उसे अपनी नवजात सन्ततिके समस्त संस्कारोंको सम्पादित करना चाहिये। ऐसा पुत्र ब्रह्मवित्

और कन्या सुव्रता अपर्णा पार्वतीकी भाँति हो जाती है, इसमें सन्देह नहीं। जीवच्छ्राद्धकर्ताके कुलमें उत्पन्न हुए लोग तथा पिता-माता भी नरकसे मुक्त हो जाते हैं। जीवच्छ्राद्धकर्ता मातृ-पितृ-ऋणसे भी मुक्त हो जाता है। उसके कालकवलित होनेपर उसका दाह कर देना चाहिये अथवा उसे गाड़ देना चाहिये।*

जैसे मृत्युके समय अचिन्त्य, अप्रमेयशक्तिसम्पन्न भगवन्नाम मुखसे निकल जाय अथवा मोक्षभूमिमें मृत्यु हो जाय तो उस जीवकी मुक्ति सुनिश्चित हो जाती है, उसकी सद्गतिके लिये श्राद्धादि और्ध्वदैहिक कृत्योंकी अपेक्षा नहीं होती,

---

* जीवच्छ्राद्धविधिं वक्ष्ये समासात्सर्वसम्मतम्। मनवे देवदेवेन कथितं ब्रह्मणा पुरा॥
वसिष्ठाय च शिष्टाय भृगवे भार्गवाय च। शृण्वन्तु सर्वभावेन सर्वसिद्धिकरं परम्॥
श्राद्धमार्गक्रमं साक्षाच्छ्राद्धार्हाणामपि क्रमम्। विशेषमपि वक्ष्यामि जीवच्छ्राद्धस्य सुव्रताः॥
पर्वते वा नदीतीरे वने वायतनेऽपि वा। जीवच्छ्राद्धं प्रकर्तव्यं मृतकाले प्रयत्नतः॥
जीवच्छ्राद्धे कृते जीवो जीवन्नेव विमुच्यते। कर्म कुर्वन्नकुर्वन्वा ज्ञानी वाज्ञानवानपि॥
श्रोत्रियोऽश्रोत्रियो वापि ब्राह्मणः क्षत्रियोऽपि वा। वैश्यो वा नात्र सन्देहो योगमार्गगतो यथा॥
विशेष एव कथित अशेषश्राद्धचोदितः। मृते कुर्यान्न कुर्याद्वा जीवन्मुक्तो यतः स्वयम्॥
नित्यनैमित्तिकादीनि कुर्याद्वा सन्त्यजेत्तु वा। बान्धवेऽपि मृते तस्य शौचाशौचं न विद्यते॥
सूतकं च न सन्देहः स्नानमात्रेण शुद्ध्यति। पश्चाज्जाते कुमारे च स्वे क्षेत्रे चात्मनो यदि॥
तस्य सर्वं प्रकर्तव्यं पुत्रोऽपि ब्रह्मविद्भवेत्। कन्यका यदि सञ्जाता पश्चात्तस्य महात्मनः॥
एकपर्णा इव ज्ञेया अपर्णा इव सुव्रता। भवत्येव सन्देहस्तस्याश्चान्वयजा अपि॥
मुच्यन्ते नात्र सन्देहः पितरो नरकादपि। मुच्यन्ते कर्मणानेन मातृतः पितृतस्तथा॥
कालं गते द्विजे भूमौ खनेच्चापि दहेत्तु वा। पुत्रकृत्यमशेषं च कृत्वा दोषो न विद्यते॥
(लिंगपुराण उ०भाग ४५। २—७, ८४—९०)

तथापि शास्त्रबोधित विधिका परिपालन करनेकी बाध्यता होनेके कारण उत्तराधिकारियोंको सम्पूर्ण और्ध्वदैहिक कार्य अवश्य करने चाहिये। उसी प्रकार (दायभाग ग्रहण करनेवाले) पुत्रादिको जीवच्छ्राद्धकर्ताके मरनेपर उसके उद्देश्यसे समस्त और्ध्वदैहिक कृत्योंको करना चाहिये, अन्यथा वे विकर्मरूप अधर्मके भागी होंगे। ऐसा न करनेवालेके प्रति श्रीमद्भागवतमें कहा गया है कि जो अजितेन्द्रिय व्यक्ति शास्त्रबोधित विधि-निषेधके प्रति अज्ञ होनेके कारण वेद-विहित कर्मोंका पालन नहीं करता, वह विकर्मरूप अधर्मसे युक्त हो जाता है। इस कारण वह जन्म-मरणके बन्धनसे मुक्त नहीं होता—

नाचरेद् यस्तु वेदोक्तं स्वयमज्ञोऽजितेन्द्रियः। विकर्मणा ह्यधर्मेण मृत्योर्मृत्युमुपैति सः॥

(श्रीमद्भा० ११।३।४५)

व्यक्ति अपनी जीवितावस्थामें अपने कल्याणके सम्पादनमें जब प्रवृत्त होगा तो वह जीवच्छ्राद्ध करनेके लिये अपेक्षित उत्तमोत्तम देश, काल, वित्त तथा कारयिता आचार्य और अन्य अपेक्षित व्यवस्थाओंको अपनी पूरी शक्ति लगाकर सम्पादित करना चाहेगा तथा अपनी पूरी शक्ति एवं सामर्थ्यके अनुसार समस्त क्रियाओंके अविकल अनुष्ठानमें प्रवृत्त होगा। अपनी जीवितावस्थामें और्ध्वदैहिकदान, प्रायश्चित्त और श्राद्धादि कर्मोंके यथावत् अनुष्ठान कर लेनेसे उसे कृतकृत्यताकी प्रतीति होना स्वाभाविक है। ऐसी अवस्थामें निम्नलिखित अभियुक्तोक्तिके आधारपर वह मृत्युरूप महादुःखसे सर्वथा निश्चिन्त होकर प्रिय अतिथिकी भाँति मृत्युकी प्रतीक्षा करते हुए तथा सत्कर्मोंका अनुष्ठान करते हुए जीवनयापन करेगा—

प्रायशः पापकारित्वात् मृत्योरुद्विजते जनः। कृतकृत्याः प्रतीक्षन्ते मृत्युं प्रियमिवातिथिम्॥

प्रायः लोग मृत्युकालमें अपने पापोंका स्मरण करके मृत्युसे उद्विग्न होते हैं, किंतु जो व्यक्ति कृतकृत्यताका अनुभव करता है, वह प्रिय अतिथिकी भाँति मृत्युकी प्रतीक्षा करता है।

भ्रान्त-धारणा

यह धारणा सर्वथा निर्मूल है कि जीवच्छ्राद्धकर्ता लोकव्यवहारके लिये अनुपयुक्त हो जाता है। इस सम्बन्धमें लिंगपुराण, हरिवंश (नीलकण्ठी) आदि ग्रन्थोंके आधारपर महामहोपाध्याय पं० श्रीशिवकुमार मिश्र, ज्योतिर्विद् पं० श्रीगणेशदत्तजी शास्त्री, पं० श्रीप्रियानाथजी, पं० श्रीगौरीदत्तजी, पं० श्रीकुबेरपति शर्मा तथा पं० श्रीगंगाधरशास्त्रीने जीवच्छ्राद्धकर्ताके लोकव्यवहारकी उपयोगिताकी व्यवस्था दी है। इस विषयमें भारतके प्रसिद्ध वैदिक महाविद्वान् महामहोपाध्याय आहिताग्नि काशी हिन्दू विश्वविद्यालयके धर्मविज्ञान विभागाध्यक्ष पं० श्रीप्रभुदत्तजी शास्त्रीद्वारा निर्मित जीवच्छ्राद्धपद्धति ग्रन्थका अवलोकन करना चाहिये।

प्रमाण-संग्रह

(१) जीवच्छ्राद्धकी परिभाषा

अपनी जीवितावस्थामें ही स्वयंके कल्याणके उद्देश्यसे किया जानेवाला श्राद्ध जीवच्छ्राद्ध कहलाता है—

'जीवता स्वार्थोद्देश्येन कर्तव्यं श्राद्धं जीवच्छ्राद्धमित्युच्यते।' (बौधायनगृह्यसूत्र, पितृमेधसूत्र २।९।५७।१)

(२) जीवच्छ्राद्धकी अवश्यकरणीयता

देश, काल, धन, श्रद्धा, आजीविका आदि साधनोंकी समुन्नतावस्थामें जीवित रहते हुए पुरुषके उद्देश्यसे अथवा स्वयं (जीव)-के उद्देश्यसे व्यक्तिको अपना श्राद्ध सम्पादित कर लेना चाहिये—

देशकालधनश्रद्धाव्यवसायसमुच्छ्रये । जीवते वाऽथ जीवाय दद्याच्छ्राद्धं स्वयं नरः॥

(जीवच्छ्राद्धपद्धतिमें आदित्यपुराणका वचन)

(३) जीवच्छ्राद्ध करनेका स्थान

मृत्युको समीप जानकर पर्वतपर अथवा नदीतटपर, वनमें या निवासस्थानमें प्रयत्नपूर्वक जीवच्छ्राद्ध करना चाहिये—

पर्वते वा नदीतीरे वने वायतनेऽपि वा। जीवच्छ्राद्धं प्रकर्तव्यं मृत्युकाले प्रयत्नतः॥

(लिंगपु०उ० ४५।५)

(४) जीवच्छ्राद्ध कर लेनेवाला कर्मबन्धनसे मुक्त हो जाता है

जीवच्छ्राद्ध कर लेनेके अनन्तर व्यक्ति कर्म करे अथवा न करे, ज्ञानी हो अथवा अज्ञानी हो, श्रोत्रिय हो अथवा अश्रोत्रिय हो, ब्राह्मण हो, क्षत्रिय हो अथवा वैश्य हो—अपनी जीवितावस्थामें ही योगीकी भाँति कर्मबन्धनसे मुक्त हो जाता है—

जीवच्छ्राद्धे कृते जीवो जीवन्नेव विमुच्यते। कर्म कुर्वन्नकुर्वन्वा ज्ञानी वाज्ञानवानपि॥
श्रोत्रियोऽश्रोत्रियो वापि ब्राह्मणः क्षत्रियोऽपि वा। वैश्यो वा नात्र सन्देहो योगमार्गगतो यथा॥

(५) जीवच्छ्राद्ध कर लेनेवालेके लिये अशौचका विचार नहीं

जीवच्छ्राद्धकर्ताके लिये अपने बान्धवोंके मरनेपर अशौचका विचार नहीं है। उसे सूतक प्रवृत्त नहीं होता तथा वह स्नानमात्रसे शुद्ध हो जाता है—

बान्धवेऽपि मृते तस्य शौचाशौचं न विद्यते॥ सूतकं च न सन्देहः स्नानमात्रेण शुद्ध्यति।

(लिंगपु०उ० ४५।८५-८६)

(६) जीवच्छ्राद्ध कर लेनेवाला जीवन्मुक्त हो जाता है

जीवच्छ्राद्धकर्ताकी मृत्यु होनेपर उसका और्ध्वदैहिकसंस्कार किया जाय अथवा न किया जाय; क्योंकि वह स्वयं जीवन्मुक्त हो जाता है—

मृते कुर्यान्न कुर्याद्वा जीवन्मुक्तो यतः स्वयम्। (लिंगपु०उ० ४५।७)

(७) जीवच्छ्राद्धकर्ताके लिये लोकव्यवहारकी व्यवस्था

जीवच्छ्राद्ध कर लेनेके अनन्तर यदि अपनी पाणिगृहीती भार्यामें अपने द्वारा पुत्रकी उत्पत्ति हो जाय तो उसे अपनी नवजात सन्ततिके समस्त संस्कारोंको सम्पादित करना चाहिये। ऐसा पुत्र ब्रह्मवित् और कन्या सुव्रता अपर्णाकी भाँति हो जाती है, इसमें सन्देह नहीं। जीवच्छ्राद्धकर्ताके कुलमें उत्पन्न हुए लोग तथा माता-पिता भी नरकसे मुक्त हो जाते हैं। जीवच्छ्राद्धकर्ता मातृ-पितृ-ऋणसे मुक्त हो जाता है—

पश्चाज्जाते कुमारे च स्वे क्षेत्रे चात्मनो यदि॥
तस्य सर्वं प्रकर्तव्यं पुत्रोऽपि ब्रह्मविद्भवेत्। कन्यका यदि सञ्जाता पश्चात्तस्य महात्मनः॥
एकपर्णा इव ज्ञेया अपर्णा इव सुव्रता। भवत्येव सन्देहस्तस्याश्चान्वयजा अपि॥
मुच्यन्ते नात्र सन्देहः पितरो नरकादपि। मुच्यन्ते कर्मणानेन मातृतः पितृतस्तथा॥

(लिंगपु०उ० ४५।८६—८९)

(८) उत्तरीय वस्त्रकी अनिवार्यता

स्नान, दान, जप, होम, स्वाध्याय, पितृतर्पण, श्राद्ध तथा भोजन आदिमें द्विजको अधोवस्त्र तथा उत्तरीय वस्त्रके रूपमें गमछा आदि अवश्य धारण करना चाहिये—

स्नानं दानं जपं होमं स्वाध्यायं पितृतर्पणम्। नैकवस्त्रो द्विजः कुर्यात् श्राद्धभोजनसत्क्रियाः॥

(श्राद्धचिन्तामणिमें योगियाज्ञवल्क्यका वचन)

(९) कच्छविहीन (लाँगसे रहित) धोतीका निषेध

कच्छ (लाँग)-से रहित, बिना उत्तरीय वस्त्र (गमछा, दुपट्टा आदि) धारण किये, नग्न तथा अवस्त्र—अप्रशस्त (अर्थात् काला, नीला अथवा बिना धुला हुआ) वस्त्र पहनकर श्रौत एवं स्मार्तकर्म नहीं करना चाहिये—

विकच्छोऽनुत्तरीयश्च नग्नश्चावस्त्र एव च। श्रौतस्मार्ते नैव कुर्यात्। (धर्मसिन्धु)

(१०) आचमनके अनन्तर भी पवित्रीका त्याग अपेक्षित नहीं

पवित्री धारणकर आचमन करना चाहिये। आचमन करनेसे पवित्री त्याज्य नहीं होती। भोजनके अनन्तर पवित्री जूठी हो जाती है। उसका त्याग कर देना चाहिये—

सपवित्रेण हस्तेन कुर्यादाचमनक्रियाम्। नोच्छिष्टं तत्पवित्रं तु भुक्तोच्छिष्टं तु वर्जयेत्॥

(श्राद्धचिन्तामणिमें मार्कण्डेयका वचन)

(११) पर्षद्‌की स्थापना

धर्मशास्त्र तथा वेद एवं लोकधर्मके जाननेवाले चार अथवा तीन विद्वान् ब्राह्मणोंकी सभा बुलाकर उनसे प्रायश्चित्तका निर्धारण कराना चाहिये। विद्वानोंकी ये सभा पर्षद् कहलाती है।

चतुरो विप्रान् पर्षत्वेनोपवेश्य। चत्वारो वा त्रयो वापि वेदवन्तोऽग्निहोत्रिणः। ब्राह्मणानां समर्था ये पर्षत्सा हि विधीयते॥ (जीवच्छ्राद्धपद्धति)

(१२) कृच्छ्रव्रत

एक कृच्छ्रव्रत बारह दिनोंमें सम्पन्न होता है। इसे कुछ विद्वज्जन प्राजापत्य कृच्छ्र भी कहते हैं। कृच्छ्रव्रत निम्न रीतिसे सम्पन्न होता है—पहले दिन एकभक्त अर्थात् पूरे दिन-रात (चौबीस घण्टे)-में मध्याह्नकालमें केवल एक बार २६ ग्रासका भोजन, दूसरे दिन नक्तव्रत अर्थात् दिन-रातमें प्रदोषकालमें केवल एक बार २२ ग्रासका भोजन, तीसरे दिन अयाचित अर्थात् दिन-रातमें बिना माँगे प्राप्त केवल एक बार चौबीस ग्रासका भोजन तथा चौथे दिन पूरे दिन-रात पूर्ण उपवास—इस प्रकार चार दिनोंमें एक पादकृच्छ्रव्रत सम्पन्न होता है। इस पादकृच्छ्रव्रतकी तीन आवृत्ति करनेपर अर्थात् बारह दिनोंमें एक कृच्छ्रव्रत सम्पन्न होता है—

कृच्छ्रस्तु द्वादशदिनसाध्यः। तथा हि। प्रथमे दिने मध्याह्ने हविष्यैकभक्तस्य षड्विंशतिर्ग्रासा भोक्तव्याः। द्वितीयेऽहनि नक्तं द्वाविंशतिर्ग्रासाः। तृतीये अयाचितस्य चतुर्विंशतिर्ग्रासाः। चतुर्थेऽहनि निरशनम् अयं पादकृच्छ्रः। कथंचित्त्रिगुणीकृतोऽयं प्राजापत्यकृच्छ्रः। (धर्मसिन्धु पू०तृ०परि०)

(१३) गोप्रत्याम्नायद्वारा सम्पादित होनेवाले प्राजापत्यकृच्छ्र-प्रायश्चित्तकी व्यवस्था

एक वर्षकी कालावधिमें तीस कृच्छ्रप्रायश्चित्त होते हैं। अतः अब्दप्रायश्चित्तका तात्पर्य हुआ तीस कृच्छ्रप्रायश्चित्त। प्रत्येक प्रायश्चित्तके प्रत्याम्नायके रूपमें एक-एक गोदान निर्धारित किये जानेके कारण तीस गोदानको अब्दप्रायश्चित्तके प्रत्याम्नायके रूपमें कहा गया है। इस प्रकार द्वादशाब्दप्रायश्चित्तमें ३६० कृच्छ्रव्रत, षडब्दमें १८० कृच्छ्रव्रत, त्र्यब्दमें ९०, सार्धाब्दमें ४५ तथा आब्दिकमें तीस कृच्छ्रव्रत सम्पन्न होते हैं। एक ही दिनमें उत्तमोत्तम, उत्तम, मध्यम, निकृष्ट तथा

अतिनिकृष्ट—इन पक्षोंमेंसे किसी भी पक्षका आश्रयण करके किया जानेवाला प्रायश्चित्त सम्भव नहीं होगा, अतः एक कृच्छ्रव्रतके प्रत्याम्नाय (विकल्प)-के रूपमें एक गोदान करनेकी विधि शास्त्रमें उपलब्ध होती है।

इस प्रकार उत्तमोत्तम द्वादशाब्द प्रायश्चित्त प्रत्याम्नायके रूपमें ३६० गोदान, षडब्द प्रत्याम्नायके रूपमें १८० गोदान, त्र्यब्द प्रत्याम्नायके रूपमें ९० गोदान, सार्धाब्द प्रत्याम्नायके रूपमें ४५ गोदान एवं आब्दिक प्रत्याम्नायके रूपमें ३० गोदान प्रायश्चित्तके प्रत्याम्नायके रूपमें निर्धारित हैं।

पर्षद्को क्रियाकर्ताकी शक्ति और सामर्थ्यपर भलीभाँति विचार करके उसके पापोंके निरासार्थ उपर्युक्त पक्षोंमेंसे किसी एक पक्षका निर्धारण करना चाहिये।

(१४) प्रत्याम्नायके रूपमें विविध मानोंके अनुसार गोनिष्क्रयद्रव्यका निर्धारण

प्राजापत्यकृच्छ्रके प्रत्याम्नायके रूपमें निर्धारित गोदानके सन्दर्भमें गोनिष्क्रयद्रव्यकी व्यवस्था शास्त्रोंमें पाँच प्रकारसे उपलब्ध होती है। अपने सामर्थ्यके अनुसार किसी एक व्यवस्थाका आश्रयण करके सवत्स गोनिष्क्रयका संकल्प करना चाहिये। पाँच प्रकारके मान इस प्रकार हैं—(१) सुवर्णमानसे एक गायका निष्क्रयद्रव्य=ढाई तोला सोना, (२) रौप्यमानसे एक गायका निष्क्रयद्रव्य=दो रत्ती सोना, (३) राजतमानसे एक गायका निष्क्रयद्रव्य=ढाई तोला चाँदी, (४) ताम्रमानसे एक गायका निष्क्रयद्रव्य=चाँदीका एक रुपया और (५) कपर्दिकामानसे एक गायका निष्क्रयद्रव्य=चाँदीकी एक अठन्नी। (संस्कारगणपति पृ० ५१, ५५) यदि प्रायश्चित्तरूपमें आब्दिक प्रत्याम्नायके रूपमें ३० गोदान करना हो तो कम-से-कम कपर्दिकामानसे ३० चाँदीकी अठन्नीसे गोदान करनेकी विधि है। गोदानका तात्पर्य सवत्सा गौके दानसे है। '**चतुर्थांशेन वत्सं तु**'—इस विष्णुधर्मोत्तरपुराणके वचनके अनुसार गायके मूल्यका चतुर्थांश गोनिष्क्रयद्रव्यके साथ वत्सके लिये भी करना उचित है। अतः उपर्युक्त लिखे क्रमके अनुसार वत्सका मूल्य चतुर्थांश और जोड़ देना चाहिये। सामर्थ्य न होनेपर अपनी शक्तिके अनुसार निष्क्रय कर देना चाहिये।

(१५) क्षौरकी व्यवस्था

शिखा, कक्ष तथा उपस्थको छोड़कर क्षौर कराये—

(क) क्षौरं च शिखाकक्षोपस्थवर्जनम्। (प्रायश्चित्तेन्दुशेखर पृ० ७६)

(ख) प्रेतकृत्ये राजदण्डे वपनं केशपूर्वकम्। अग्निहोत्रे च तीर्थे च वपनं श्मश्रुपूर्वकम्॥
ब्रह्महत्यादिपापेषु सशिखं वपनं स्मृतम्। वपनाभावे द्विगुणं व्रतं दक्षिणा च॥

(श्राद्धसंग्रह पृ० १२८)

(ग) मुण्डयेत्सर्वगात्राणि कक्षोपस्थशिखं विना।

(१६) दशविधस्नान

भस्म, गोमय (गोबर), शुद्ध मिट्टी, जल, गोमूत्र, गोमय, दूध, दधि, घृत तथा कुशोदक—इन द्रव्योंसे क्रमशः दस प्रकारका स्नान कहा जाता है—

भस्मगोमयमृद्वारिगोमूत्रं गोमयं पयः। दध्याज्यं दर्भ इत्येते विहिताः क्रमशो दश॥

(१७) पंचगव्यके द्रव्योंका परिमाण

पंचगव्य बनानेके लिये एक पल गोमूत्र, आधा अँगूठाभर गोमय, सात पल दूध, तीन पल दधि, एक पल घृत और एक पल कुशोदक मिलाना चाहिये। चार तोलेका एक पल होता है।

मूत्रमेकपलं दद्यादङ्गुष्ठार्धं तु गोमयम्। क्षीरं सप्तपलं दद्याद्दधित्रिपलमुच्यते।
घृतमेकपलं दद्यात्पलमेकं कुशोदकम्॥

(१८) दस महादान

गाय, भूमि, तिल, सोना, घी, वस्त्र, धान्य, गुड़, चाँदी तथा नमक—इन दस वस्तुओंका दान दस महादान कहलाता है। इससे जीवको परलोकमें सुख प्राप्त होता है—

(क) गोभूतिलहिरण्याज्यं वासो धान्यं गुडानि च। रौप्यं लवणमित्याहुर्दशदानान्यनुक्रमात्॥

(निर्णयसिन्धुमें मदनरत्नका वचन)

(ख) महादानेषु दत्तेषु गतस्तत्र सुखी भवेत्। (गरुडपुराण प्रेतखण्ड १९।३)

(१९) अष्ट महादान

तिल, लोहा, सोना, कपास, नमक, सप्तधान्य, भूमि तथा गौ—इन आठका दान अष्ट महादान कहलाता है। ये सभी पवित्र करनेवाले हैं—

तिलं लौहं हिरण्यं च कार्पासं लवणं तथा। सप्तधान्यं क्षितिर्गाव एकैकं पावनं स्मृतम्॥

(गरुडपुराण २।४।३९)

(२०) सप्तधान्य

(क) जौ, गेहूँ, धान, तिल, टाँगुन, साँवा तथा चना—ये सप्तधान्य कहलाते हैं—

यवगोधूमधान्यानि तिलाः कङ्कुस्तथैव च। श्यामाकं चीनकञ्चैव सप्तधान्यमुदाहृतम्॥

(षट्त्रिंशन्मत)

(ख) मतान्तरसे जौ, धान, तिल, कँगनी, मूँग, चना तथा साँवा—ये सप्तधान्य कहलाते हैं—

यवधान्यतिलाः कङ्गुः मुद्गचणकश्यामकाः। एतानि सप्तधान्यानि सर्वकार्येषु योजयेत्॥

(२१) धान्य आदिकी परिभाषा

खेतमें जो तैयार फसल खड़ी है उसे शस्य कहते हैं, तुषयुक्त अनाजको धान्य कहते हैं (जैसे धान), तुषा (छिलका)-रहित अनाजको आमान्न (कच्चा अन्न) तथा आगमें पके हुए अनाजको सिद्ध अन्न कहते हैं—

शस्यं क्षेत्रगतं प्राहुः सतुषं धान्यमुच्यते। आमान्नं वितुषं प्रोक्तं सिद्धमन्नं प्रकीर्तितम्॥

(२२) जलधेनुओंकी स्थापना

शालग्रामशिलाके आगे (पूर्व दिशामें) तीन वेदियोंपर उत्तर, दक्षिण तथा मध्यक्रमसे उपस्करसहित सतिल तीन जलधेनुओं (कलशों)-की पच्चीस कुशोंसे निर्मित विष्टरोंके ऊपर स्थापना की जाती है—

(क) शालग्रामे मूर्तौ जलादौ वा विष्णुं सम्पूज्य तदग्रे उत्तरतो दक्षिणतो मध्ये च ''''तिस्रः सदक्षिणाः (सतिलाः) सवत्सा जलधेनूः (जलानि धेनव इवेत्युपमितसमासः जलमयीधेनुरित्यर्थः) क्रमेण संस्थापयेत्। (पूजयेन्निवेदयेच्चेत्यर्थः)। (प्रथमामुत्तरतो द्वितीयां दक्षिणतस्तृतीयां मध्ये निक्षिपेदिति हेमाद्रौ कौस्तुभे उद्योते च)

(ख) दक्षिणाग्रविष्टरत्रयनिधानम्। विष्टरोपरि ''''कलशत्रयस्य स्थापनम्। (जीवच्छ्राद्धपद्धति पृ० ३९३-३९५)

(२३) कुशब्रह्मा तथा विष्टर

ब्रह्माके निमित्त पचास कुशोंसे ब्रह्मा भी बनता है, इसे कुशब्रह्मा कहते हैं। पचीस कुशोंका विष्टर बनता है—

पञ्चाशत् कुशैः ब्रह्मा तदर्धेन तु विष्टरः। ऊर्ध्वकेशो भवेद् ब्रह्मा लम्बकेशश्च विष्टरः॥
दक्षिणावर्तको ब्रह्मा वामावर्तस्तु विष्टरः॥

(२४) विष्टरके पास वस्तुओंका स्थापन

विष्टरके समीपमें कुष्ठ (औषधि विशेष), मांसी (जटामांसी), मुरा, उषीर (खस), तिल, गन्ध, आमलक, प्रियंगुपत्र, यज्ञोपवीत, छत्र तथा उपानह रखना चाहिये—

कुष्ठमांसीमुरोशीरतिलगन्धामलकैर्युतम्। प्रियङ्गुपत्रसहितं सितयज्ञोपवीतिनम्॥
सच्छत्रं स उपानत्कमिति विष्णुधर्मोत्तरात्। (जीवच्छ्राद्धपद्धति पृ० ३९५)

(२५) जलधेनुवत्सकलश

प्रत्येक जलधेनुकलशके आगे (पूर्वभागमें) जलधेनुकलशके चतुर्थांश परिमाणमें एक-एक छोटा कलश भी स्थापित करे। ये जलधेनुवत्सकलश कहलाते हैं—

चतुर्थांशेन वत्सं तु""। जलधेनुं सवत्सकामिति विष्णुधर्मोत्तरात् च। पूजयेत् वत्सकं तद्वत्कृतं जलमयं बुध इति॥ (जीवच्छ्राद्धपद्धति पृ० ३९५)

(२६) जलधेनुकलशका परिमाण

कलश एक हजार पल (एक पल=चार तोला)अथवा ५१२ पल सुवर्णका हो अथवा अभावमें ताम्रके तीन कलश स्थापितकर उनमें कुछ स्वर्ण छोड़ना चाहिये—

पलसहस्त्रपरिमाणः कुम्भ इति दानविवेके, द्वादशपलाधिकानि पञ्चपलशतानि कुम्भ इति मयूखे। अभावे क्षिप्तसुवर्णस्य ताम्रकलशत्रयस्य स्थापनम्। (जीवच्छ्राद्धपद्धति पृ० ३९४-३९५)

(२७) जलधेनुओंका निवेदन

निवेदनसे तात्पर्य विष्णुके निमित्त संकल्पमात्र करना समझना चाहिये न कि ब्राह्मणको दान करना; क्योंकि वसुरुद्रादित्यके श्राद्ध हो जानेके अनन्तर ही इन जलधेनुओंको ब्राह्मणको दक्षिणारूपमें देनेका विधान है—'**अत्र निवेदनं विष्णवे संकल्पमात्रं न तु ब्राह्मणाय दानं तस्य श्राद्धान्ते विधानात्।**' (जीवच्छ्राद्धपद्धति पृ० ३९६)

(२८) श्राद्धीय पाकद्रव्यके प्रोक्षण आदिकी व्यवस्था

श्राद्धमें देवताओंके लिये तीन बार तथा पितरोंके लिये एक बार पाकद्रव्यका प्रोक्षण आदि करना चाहिये—

कण्डनं प्रेषणं चैव तथैवोल्लेखनं सदा। सकृदेव पितॄणां स्याद्देवानां तु त्रिरुच्यते॥

(वीरमित्रोदयसंस्कारप्रकाशमें वायुपुराणका वचन)

निदर्शनमिदं न तु परिगणनम्।

(२९) श्राद्धमें लोहेके पात्रका सर्वथा निषेध

पितृकार्य-सम्बन्धी अन्नका परिपाक लोहेके पात्रमें कभी भी नहीं करना चाहिये। लोहेके दर्शनमात्रसे पितर वापस लौट जाते हैं। पितृकार्यमें कृष्णवर्णके लोहेकी विशेषरूपसे निन्दा की गयी है। केवल शाक तथा फलों आदिके काटनेमें भोजनालयमें उनका प्रयोग विहित है—

न कदाचित् पचेदन्नमयःस्थालीषु पैतृकम्। अयसो दर्शनादेव पितरो विद्रवन्ति हि॥
कालायसं विशेषेण निन्दन्ति पितृकर्मणि। फलानां चैव शाकानां छेदनार्थानि यानि तु॥
महानसेऽपि शस्तानि तेषामेव हि संनिधिः। (चमत्कारखण्ड, श्राद्धकल्पलता)

(३०) बने हुए पाकका विष्णुके लिये निवेदन

श्राद्धके लिये बने पाकमें तुलसीदल छोड़कर सर्वप्रथम भगवान् विष्णुको निवेदित करना चाहिये—

विष्णोर्निवेदतान्नेन यष्टव्याः सर्वदेवताः।

(३१) दीपककी दिशा

देवोंके निमित्त तथा द्विजके घरमें दीपकका मुख पूर्व या उत्तर और पितरोंके निमित्त दक्षिण करना चाहिये—

प्राङ्मुखोदङ्मुखं दीपं देवागारे द्विजालये। कुर्याद् याम्यमुखं पैत्र्ये अद्भिः संकल्प्य सुस्थिरम्॥

(निर्णयसिन्धु)

(३२) नीवीबन्धन

श्राद्धमें रक्षाके लिये पानके पत्ते अथवा किसी पत्रपुटकपर तिल तथा कुशत्रयसे नीवीबन्धन किया जाता है। पितृकार्यमें दक्षिण कटिभागमें तथा देवकार्यमें वाम कटिभागमें नीवीबन्धन होता है—

पितॄणां दक्षिणे पार्श्वे विपरीता तु दैविके। दक्षिणे कटिदेशे तु कुशत्रयतिलैः सह॥
तर्जयन्तीह दैत्यानां यथा नॄणामयस्तथा।

(३३) श्राद्धमें पितृगायत्रीका पाठ

जिस प्रकार सन्ध्योपासनामें ब्रह्मगायत्रीका त्रिकाल जप आवश्यक है, उसी प्रकार श्राद्धमें पितरोंके गायत्रीमन्त्रका जप आवश्यक है। श्राद्धके प्रारम्भ, मध्य तथा अन्तमें निम्न पितृगायत्रीमन्त्रका तीन बार जप करना चाहिये—

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च। नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः॥
आद्यावसाने श्राद्धस्य त्रिरावृत्त्या जपेत् सदा। पिण्डनिर्वपणे वाऽपि जपेदेवं समाहितः॥

(ब्रह्मपु० २२०।१४३-१४४)

(३४) विभक्तिनिर्णय

अक्षय्योदकदान तथा आसनदानमें षष्ठी, आवाहनमें द्वितीया, अन्नदानमें चतुर्थी विभक्ति तथा शेष स्थलोंपर सम्बोधन बताया गया है—

अक्षय्यासनयोः षष्ठी द्वितीयावाहने तथा। अन्नदाने चतुर्थी स्याच्छेषाः सम्बुद्धयः स्मृताः॥ (निर्णयसिन्धु)

(३५) पितृकार्यमें पातितवामजानु

पितृकार्यमें बायाँ घुटना तथा देवकार्यमें दाहिना घुटना जमीनपर लगाना चाहिये—

दक्षिणं पातयेज्जानुं देवान् परिचरन् सदा। पातयेदितरं जानुं पितॄन् परिचरन् सदा॥

(श्राद्धकाशिकामें धर्मप्रदीप)

(३६) पितृकर्ममें अपसव्यत्व एवं दक्षिणाभिमुखता

सामान्यरूपसे पितृकर्म अपसव्य होकर और दक्षिणकी ओर मुँह करके करनेका विधान है—

अपसव्येन कृत्वैतद् वाग्यतः पित्र्यदिङ्मुखः। (छन्दोगपरिशिष्ट)

(३७) जीवच्छ्राद्धमें प्रेत शब्दके प्रयोगका निषेध

जीवच्छ्राद्धमें 'प्रेत' शब्दका उच्चारण नहीं होता, उसके स्थानपर 'जीव' शब्दका प्रयोग होता है तथा आसनदान आदिमें स्वधा शब्द प्रयुज्य होता है।

(क) जीवच्छ्राद्धे सर्वत्र प्रेतशब्दो न प्रयोज्यः, सर्वत्र जीवच्छ्राद्धे प्रेतशब्दोच्चारणं नास्ति।

(श्राद्धमयूख पृ० ८६-८७)

(ख)जीवच्छ्राद्धे सर्वत्र प्रेतशब्दोच्चारणं नास्तीति मयूखकौस्तुभोद्योतकृदादिभिरुक्तत्वात्प्रेतशब्दोच्चारणाभावेन स्वधा शब्दोच्चारणं भवत्येवेति। (श्राद्धपद्धति पृ० ४११)

(३८) आसनोंपर आवाहन

पितरों तथा जीवका आवाहन आसनोंपर तिल छोड़कर तथा देवताओंका आवाहन आसनोंपर जौ छोड़कर करना चाहिये—

आवाहयेदनुज्ञातो विश्वे देवास इत्यृचा॥
यवैरन्ववकीर्याथ भाजने सपवित्रके।
शन्नो देव्या पयः क्षिप्त्वा यवोऽसीति यवांस्तथा॥

(वीरमित्रोदय, श्रा०प्र०में याज्ञवल्क्यका वचन)

(३९) एकतन्त्रका निषेध

अर्घदान, अक्षय्योदकदान, पिण्डदान, अवनेजनदान, प्रत्यवनेजनदान और स्वधावाचनमें एकतन्त्रकी विधि नहीं है—

अर्घेऽक्षय्योदके चैव पिण्डदानेऽवनेजने। तन्त्रस्य तु निवृत्तिः स्यात् स्वधावाचन एव च॥

(कात्यायनस्मृति २४। १५, वीरमित्रोदय-श्राद्धप्रकाश)

(४०) मण्डलकरण

देवताओंके लिये चतुष्कोण और प्रेत तथा पितरोंके लिये वृत्ताकार मण्डल बनाना चाहिये—**(क) दैवे चतुरस्रं पित्र्ये वर्तुलं मण्डलम्।** (निर्णयसिन्धुमें बह्वृचपरिशिष्ट) (ख) देवताओंके लिये दक्षिणावर्त तथा प्रेत एवं पितरोंके लिये वामावर्त मण्डल बनानेकी विधि है—**प्रदक्षिणं तु देवानां पितॄणामप्रदक्षिणम्।** (वीरमित्रोदय-श्राद्धप्रकाशमें कात्यायनका वचन)

(४१) अग्नौकरण किसमें करें

अग्नौकरणके सम्बन्धमें वीरमित्रोदय-श्राद्धप्रकाशमें यह वचन प्राप्त है—'**अग्न्यभावे तु विप्रस्य पाणौ वाथ जलेऽपि वा।**' जो अग्निहोत्री हैं, वे दक्षिणाग्निमें अग्नौकरण करें और अग्निके अभावमें अर्थात् अग्न्याधानके अभावमें जो अग्निहोत्री नहीं हैं, वे सपात्रकश्राद्धमें ब्राह्मणके दाहिने हाथमें अग्नौकरण करें और सपात्रकश्राद्ध न होनेपर दोनियेमें स्थित जलमें अग्नौकरण करें।

(४२) भोजनपात्रोंसे तिलादिका अपसारण

पितरोंके भोजनपात्रोंसे परोसनेके पूर्व तिल आदिको हटा लेना चाहिये। ऐसा न करनेसे अर्थात् अन्नपात्रोंमें तिल देखकर पितर निराश होकर वापस लौट जाते हैं—

अन्नपात्रे तिलान् दृष्ट्वा निराशाः पितरो गताः॥

(४३) अर्घपात्रोंकी स्थापनाका प्रकार

विद्वान्‌को चाहिये कि अर्घप्रदानके बाद एकोद्दिष्टश्राद्धमें पात्रको उत्तान (सीधा) रखे और पार्वणश्राद्धमें उलटा (अधोमुख) रखे—

उत्तानं स्थापयेत् पात्रमेकोद्दिष्टे सदा बुधः। न्युब्जन्तु पार्वणे कुर्यात्०॥ (वीरमित्रोदय)

(४४) देवपात्रालम्भन तथा पितृपात्रालम्भन

देवताओंका पात्रालम्भन उत्तान (सीधे) बायें हाथपर उत्तान दाहिना हाथ स्वस्तिकाकार रखकर करना चाहिये तथा पितरोंका पात्रालम्भन अनुत्तान (उलटे) दाहिने हाथपर अनुत्तान बायें हाथको स्वस्तिकाकार रखकर करना चाहिये—

(क) पित्र्येऽनुत्तानपाणिभ्यामुत्तानाभ्यां च दैवते। (यम) एवमेव हेमाद्रिमदनरत्नप्रभृतयः।

(ख) दक्षिणं तु करं कृत्वा वामोपरि निधाय च। देवपात्रमथालभ्य पृथ्वी ते पात्रमुच्चरेत्॥
दक्षिणोपरि वामञ्च पित्र्यपात्रस्य लम्भनम्। पात्रालम्भनं कुर्याद् दत्त्वा चान्नं यथाविधि॥

(श्राद्धकाशिकामें पद्मपुराणका वचन)

(४५) अंगुष्ठनिवेशन (अन्नावगाहन)

(क) उत्तान (सीधे) हाथके अँगूठेसे अन्नस्पर्श करनेपर वह श्राद्ध आसुरश्राद्ध हो जाता है और पितरोंको उपलब्ध नहीं होता। इसलिये अनुत्तान हाथके अँगूठेसे अन्न आदिका स्पर्श करना चाहिये—

उत्तानेन तु हस्तेन कुर्यादन्नावगाहनम्। आसुरं तद्भवेच्छ्राद्धं पितॄणां नोपतिष्ठते॥

(ख) जो अज्ञानवश उत्तान हाथसे अंगुष्ठनिवेशन करता है तो वह अन्न राक्षसोंको प्राप्त होता है—

उत्तानेन तु हस्तेन द्विजाङ्गुष्ठनिवेशनम्। यः करोति नरो मोहात् तद्वै रक्षांसि गच्छति॥ (धौम्य)

(४६) श्राद्धोंमें विकिरदानकी दिशा

आभ्युदयिक (वृद्धि)-श्राद्धमें पूर्वमें, पार्वणश्राद्धमें नैर्ऋत्यकोणमें, सांवत्सरिकश्राद्धमें अग्निकोणमें तथा प्रेतश्राद्धमें दक्षिण दिशामें विकिरदान करना चाहिये—

आभ्युदयिके तु पूर्वे नैर्ऋत्ये पार्वणे तथा। अग्निकोणे क्षयाहे स्यात् प्रेतश्राद्धे च दक्षिणे॥

(४७) रेखाकरणके अनन्तर दक्षिण दिशामें उल्मुक-स्थापन

उल्लेखनानन्तरं पश्चादुल्मुकनिधानमाह कात्यायनः—उल्मुकं परस्तात् करोति ये रूपाणीति रेखायाः परस्ताद्दक्षिणप्रदेशे उल्मुकं निदधातीत्यर्थः। स्कन्दपुराणेऽपि ये रूपाणीति मन्त्रेण न्यसेदुल्मुकमन्तिके। अन्तिके दक्षिणाशायामित्यर्थः। (गौडीयश्राद्धप्रकाश पृ० ३०)

अंगारको घुमानेके अनन्तर पिण्डवेदीके दक्षिणदिशामें स्थापित करना चाहिये।

(४८) लेपभागकी व्यवस्था

पार्वणश्राद्धमें तीन पीढ़ीतक पिण्डदान करनेकी विधि है। अतः चौथी पीढ़ीसे सातवीं पीढ़ीतकके सपिण्ड पितरोंकी तृप्ति आदिके लिये लेपभाग प्रदान करनेकी व्यवस्था शास्त्रमें इस प्रकार दी गयी है। लेपभागभुक् पितरोंके लिये कुशाके अग्रभागमें पिण्डसे बचे अन्नको '**लेपभागभुजः पितरस्तृप्यन्ताम्**' कहकर दे और पिण्डाधार कुशोंके मूलमें हाथ पोंछ ले—

(क) लेपभाजश्चतुर्थाद्याः पित्राद्याः पिण्डभागिनः। पिण्डदः सप्तमस्तेषां सापिण्ड्यं साप्तपौरुषम्॥

(मत्स्यपु० १८। २९)

(ख) उत्तरे कुशमूलं तु पितृमूलं तु दक्षिणे। कुशमूलेषु यो दद्यान्निराशाः पितरो गताः॥

(पा०गृह्यसूत्र षड्भाष्योपेतश्राद्धसूत्र-कण्डिका ३)

(ग) दत्ते पिण्डे ततो हस्तं त्रिर्मृज्याल्लेपभागिनाम्। कुशाग्रे तत्प्रदातव्यं प्रीयन्तां लेपभागिनः॥ (ब्रह्मोक्त)

(४९) पिण्ड-प्रतिपत्ति (विसर्जन)

श्राद्ध पूर्ण हो जानेके अनन्तर पिण्डोंको पवित्र जलमें विसर्जित कर दे अथवा ब्राह्मण या गायको प्रदान करे—

ततः कर्मणि निर्वृत्ते तान् पिण्डांस्तदनन्तरम्। ब्राह्मणोऽग्निरजो गौर्वा भक्षयेदप्सु वा क्षिपेत्॥

(श्राद्धचिन्तामणिमें देवलका वचन)

(५०) विश्वेदेवोंकी दक्षिणाके लिये दिये जानेवाले तिलपूरित ताम्रपात्र

विश्वेदेवोंकी दक्षिणाके लिये दिये जानेवाले दोनों तिलपूरित ताम्रपात्र जलधेनुकलशके चारों ओर रखे ताम्र-पात्रोंसे भिन्न हैं—**इदं तिलपूरितं ताम्रपात्रद्वयं जलधेन्वङ्गतिलपात्रेभ्यो भिन्नम्।** जलधेनुकलशके चारों ओर रखे तिलपात्रोंको पितृब्राह्मणोंको दिया जाता है—**जलधेन्वङ्गभूततिलपात्रचतुष्टयस्य तु पितृविप्रेभ्यो दानम्।** (जीवच्छ्राद्धपद्धति पृ० ४०१)

(५१) दीपनिर्वापणकी प्रक्रिया

दीपकको बुझानेसे पुरुषोंकी तथा कूष्माण्डच्छेदनसे स्त्रियोंकी वंशहानि होती है, अतः दीपकको जल आदि अथवा किसी मिट्टीके पात्रसे ढककर बुझाना चाहिये—

दीपनिर्वापणात्पुंसः कूष्माण्डच्छेदनात् स्त्रियाः। वंशहानिः प्रजायेत तस्मान्नैवं समाचरेत्॥

(५२) यज्ञीय पवित्र वृक्ष

पलाश, फल्गु, न्यग्रोध (वट), प्लक्ष (पाकड़), अश्वत्थ (पीपल), विकंकत, उदुम्बर (गूलर), बिल्व, चन्दन, सरल, देवदारु, शाल तथा खदिर (खैर)—ये वृक्ष यज्ञ आदिके लिये प्रशस्त हैं—

पलाशफल्गुन्यग्रोधाः प्लक्षाश्वत्थविकङ्कताः। उदुम्बरस्तथा बिल्वश्चन्दनो यज्ञियाश्च ये॥
सरलो देवदारुश्च शालश्च खदिरस्तथा। समिदर्थे प्रशस्ताः स्युरेते वृक्षा विशेषतः॥

(आह्निकसूत्रावलीमें वायुपुराणका वचन)

(५३) तीन सौ साठ कुशोंसे प्रतिकृति (पुत्तल)-का निर्माण

तीन सौ साठ कुशोंसे जीवकी प्रतिकृति (पुत्तल) मनुष्यकी आकृतिके समान बनानी चाहिये—
‘**षष्ट्यधिकशतत्रयमितैर्दर्भैः पालाशसमिद्भिर्वा शरीरं कृत्वा०।**’ (धर्मसिन्धु उ०तृ०परि०)

(५४) सर्वौषधि

मुरा, जटामाँसी, वच, कुष्ठ, शिलाजीत, हल्दी, दारुहल्दी, सठी, चम्पक और मुस्ता—ये सर्वौषधि कहलाती हैं—

मुरा माँसी वचा कुष्ठं शैलेयं रजनीद्वयम्। सठी चम्पकमुस्ता च सर्वौषधिगणः स्मृतः॥

(अग्निपु० १७७।१७)

(५५) चितामें प्रतिकृतिका स्थापन

(क) भूप्रदेशे शुचौ देशे पश्च्चाच्चित्यादिलक्षणे। तत्रोत्तानं निपात्यैनं दक्षिणाशिरसं मुखे॥

(छन्दोगपरिशिष्टमें कात्यायनका मत)

चितामें शवको दक्षिण सिर करके उत्तान देह रख दे।

(ख) आदिपुराणके इस वचन—

अधोमुखो दक्षिणादिक् चरणस्तु पुमानिति। स्वगोत्रजैः गृहीत्वा तु चितामारोप्यते शवः॥

उत्तानदेहा नारी तु सपिण्डैरपि बन्धुभिः।

—के अनुसार पुरुषको उत्तरकी तरफ सिर तथा अधोमुख (नीचेकी तरफ मुख करके) चितापर स्थापित करना चाहिये तथा स्त्रीको उत्तर सिर तथा उत्तानदेह करके रखना चाहिये। शुद्धितत्त्वादि ग्रन्थोंमें ऐसी ही व्यवस्था है।

पारस्करगृह्यसूत्रके '**विवाहश्मशानयोः ग्रामं प्रविशतात्**'—इस वचनसे देशाचारके अनुसार करना चाहिये।

(५६) दाहके लिये निषिद्ध अग्नि

चाण्डालकी अग्नि, अमेध्याग्नि (अपवित्र अग्नि), सूतिकाग्नि, पतिताग्नि और चिताग्निको शिष्ट लोग कभी भी ग्रहण न करें—

चाण्डालाग्निरमेध्याग्निः सूतिकाग्निश्च कर्हिचित्। पतिताग्निश्चिताग्निश्च न शिष्टग्रहणोचितः॥

(निर्णयसिन्धुमें देवलका वचन)

कर्पूर अथवा घीकी बत्तीसे स्वतः अग्नि तैयार कर लेनी चाहिये। अन्य किसीसे अग्नि नहीं लेनी चाहिये।

(५७) चिताग्नि सिरकी ओर दे

दाहके समय सर्वप्रथम सिरकी ओर अग्नि देनी चाहिये—

शिरःस्थाने प्रदापयेत्। (वराहपुराण)

(५८) कपालक्रिया

प्रतिकृतिके आधे अथवा प्राय: पूरे जल जानेपर उसके मस्तकका भेदन करना चाहिये। गृहस्थकी बाँस आदिकी लकड़ीद्वारा तथा यतियोंकी श्रीफलसे कपालक्रिया करनी चाहिये—

अर्द्धे दग्धेऽथवा पूर्णे स्फोटयेत् तस्य मस्तकम्। गृहस्थानां तु काष्ठेन यतीनां श्रीफलेन च॥

(गरुडपुराण-सारोद्धार १०।५६)

(५९) समिधासहित चिताकी सात प्रदक्षिणा

कपालक्रियाके अनन्तर दाहकर्ता एक-एक समिधा (एक वित्तेकी यज्ञीय लकड़ी) लेकर चिताकी सात प्रदक्षिणा करे और प्रदक्षिणाके अन्तमें **'क्रव्यादाय नमस्तुभ्यम्'** कहकर एक-एक समिधा चितामें डालता जाय—

गच्छेत् प्रदक्षिणाः सप्त समिद्भिः सप्तभिः सह॥ (आदि०)

(६०) बलिनिवेदन तथा पिण्डदानके लिये पाक

बलिनिवेदन तथा दशगात्रके पिण्डदानके लिये दो पृथक्-पृथक् पाक बनाये जाते हैं। बलिके लिये मूँग और चावलसे मिश्रित तथा दशगात्रके लिये तिल और चावलमिश्रित पाक बनाया जाता है। प्रथम पाक बलिनिवेदनसे पूर्व चिताके समीपवर्ती स्थानका शोधनकर दूसरी पवित्र अग्निमें बनाना चाहिये और द्वितीय पाक षष्ठपिण्डदानके अनन्तर किसी पवित्र स्थानपर दूसरी अग्निमें बनाना चाहिये—

श्रपयेच्चापरे वह्नौ मुद्गमिश्रं चरुं ततः। तिलतण्डुलमिश्रं च द्वितीयं च पवित्रकम्॥

अत्र आद्यश्चरुर्बल्यर्थोऽपरः पिण्डार्थ इति वक्ष्यते। (जीवच्छ्राद्धपद्धति पृ० ४०८)

(६१) अक्षय्योदकदान

पिण्डार्चनदानके अनन्तर '**सर्वेषामक्षय्योऽस्तु**' कहकर सभी पिण्डोंपर अक्षय्योदकदान करना चाहिये और भगवान् विष्णुका स्मरण करना चाहिये।

धूपो दीपो बलिर्गन्धः सर्वेषामस्तु चाक्षयम्। दशपिण्डांस्ततो दत्त्वा विष्णुं सौम्यमुखं स्मरेत्॥

(जीवच्छ्राद्धपद्धति)

(६२) वर्धमान तिलतोयाञ्जलि तथा तिलतोयपूर्णपात्र

दशगात्र पिण्डदानके अनन्तर सभी पिण्डोंपर वर्धमान क्रमसे अर्थात् प्रथम पिण्डपर एक, द्वितीय पिण्डपर दो, तृतीय पिण्डपर तीन—इस प्रकारसे एक-एक अंजलि बढ़ाते हुए दसवें पिण्डपर दस तिलतोयांजलि प्रदान करनी चाहिये। तिलतोयांजलियोंके समान ही वर्धमान क्रमसे तिलतोयपूर्णपात्र भी प्रदान करने चाहिये, इस प्रकार तिलतोयांजलियोंकी कुल संख्या ५५ और तिलतोयपूर्णपात्रोंकी कुल संख्या ५५ होती है। तिलतोयांजलि पिण्डपर देनी चाहिये और तिलतोयपूर्णपात्रोंको पिण्डके समीपमें रखना चाहिये।

(६३) रात्रिशयनविधि तथा एकरात्रिका अशौच

कृष्णचतुर्दशी (पुत्तलदाह)-के दिन रात्रिमें दक्षिणाग्र कुशोंके ऊपर उत्तरकी ओर सिर करके शयन करे। दूसरे दिन आद्यश्राद्ध होनेके कारण इस दिन एक रात्रिका अशौच होगा—

रात्रौ दक्षिणाग्रदर्भेषूदङ्मुखः स्वपेत्। प्रातराद्यश्राद्धविधानात्तदहरेकरात्रमाशौचम्।।॥

(जीवच्छ्राद्धपद्धति पृ० ४१४)

(६४) आद्यश्राद्ध (महैकोद्दिष्ट)-श्राद्धकी आवश्यकता

कुछ लोग उत्तमषोडशीके अन्तर्गत किये जानेवाले प्रथम मासिक श्राद्धको ही आद्यश्राद्ध मान लेते हैं तथा कुछ पद्धतिकारोंने **'षोडशश्राद्धान्तर्गतमाद्यश्राद्धं करिष्ये'** और **'षोडशश्राद्धान्तर्गतसपिण्डीकरणश्राद्धं करिष्ये'**—ऐसे संकल्पवाक्यमें योजना करके आद्यश्राद्ध (महैकोद्दिष्टश्राद्ध) तथा सपिण्डीकरणके प्रेतश्राद्धको उत्तमषोडशीके अन्तर्गत बताया है, इससे भ्रम उत्पन्न होता है। गरुडपुराणके अनुसार सपिण्डीकरणश्राद्धान्तर्गत किये जानेवाले प्रेतश्राद्धके पूर्व उनचास श्राद्धों (मलिनषोडशीके सोलह+मध्यमषोडशीके सोलह+आद्यश्राद्ध (महैकोद्दिष्टश्राद्ध)-का एक+उत्तमषोडशीके सोलह=उनचास श्राद्ध)-के पिण्डदानोंकी संख्या पूरी होनी चाहिये। जिसकी पूर्तिके लिये उत्तमषोडशीके अतिरिक्त आद्यश्राद्ध (महैकोद्दिष्टश्राद्ध)-का पिण्डदान करना आवश्यक है। पचासवाँ श्राद्ध सपिण्डीकरणका प्रेतश्राद्ध है। अतः आद्यश्राद्ध तथा सपिण्डीकरण इन दोनों श्राद्धोंको षोडशश्राद्धान्तर्गत कहना असंगत है। गरुडपुराण प्रेतखण्ड (३५।३८—४०)-के मूल वचन इस प्रकार हैं—

आद्यं शवविशुद्ध्यर्थं कृत्वान्यच्च त्रिषोडशम्। पितृपङ्क्तिविशुद्ध्यर्थं शतार्द्धेन तु योजयेत्॥
शतार्द्धेन विहीनो यो मिलितः पङ्क्तिभाङ्न हि। चत्वारिंशत् तथैवाष्टश्राद्धं प्रेतत्वनाशनम्॥
सकृदूनशतार्द्धेन सम्भवेत् पङ्क्तिसन्निधः। मेलनीयः शतार्द्धेन सन्धिः श्राद्धेन तत्त्वतः॥

शवकी विशुद्धिके लिये आद्यश्राद्ध (महैकोद्दिष्टश्राद्ध) तथा प्रेतत्वकी निवृत्तिके लिये षोडशत्रय (मलिनषोडशी, मध्यमषोडशी तथा उत्तमषोडशी)-श्राद्ध करने चाहिये। षोडशत्रयश्राद्धसे जीवके प्रेतत्वका नाश हो जाता है। इस प्रकार शवविशुद्धि तथा प्रेतत्वनिवृत्ति हो जानेके कारण ४९ श्राद्धोंसे पितरोंकी पंक्तिका सामीप्य प्राप्त हो जाता है। अतः सपिण्डीकरणश्राद्धके पचासवें प्रेतश्राद्धका मेलन करनेसे पितृपंक्तिकी प्राप्ति हो जाती है।

(६५) ऊह-विचार

श्राद्धकी कई प्रयोगपद्धतियोंमें **'अत्र पितरो मादयध्वम्०'**, **'नमो वः पितरः०'**, **'अघोराः पितरः०'**, '.....**स्वधा स्थ तर्पयत मे पितृन्'** आदि वैदिक मन्त्रोंमें ऊह करके (अर्थात् कल्पना करके)लिंग-वचन तथा सम्बन्ध आदिका परिवर्तन कर दिया गया है अर्थात् एकोद्दिष्टश्राद्धोंमें **'पितरः०'** इत्यादि बहुवचनान्त पदोंमें ऊह करके उन्हें एकवचनान्त कर दिया गया है। वैदिक मन्त्रोंमें आनुपूर्वी नियत होनेके कारण ऊह करनेसे मन्त्रत्व नहीं रह जायगा और उन मन्त्रोंकी कर्मांगता भी नहीं हो सकेगी। इसी आशयसे पातंजलमहाभाष्यमें **'वैदिकाः खल्वपि'**—इसका व्याख्यान करते हुए आचार्य कैयटने **'वेदे त्वानुपूर्वी-नियमाद्वाक्यान्युदाहरति'**—ऐसा लिखा है। इसके अतिरिक्त ऊह न करनेके विषयमें निम्नलिखित प्रमाण ध्यातव्य हैं—

(क) अनाम्नातेष्वमन्त्रत्वमाम्नातेषु हि विभागः॥ '.....याज्ञिकप्रसिद्धिरूपस्य मन्त्रलक्षणस्यैतेष्वभावात्। न ह्यध्येतार ऊहादीन् मन्त्रकाण्डेऽधीयते। तस्मात् नास्ति मन्त्रत्वम्।' (जैमिनीय न्यायमाला अ० २, पाद १, अधि० ९, सूत्र ३४ तथा व्याख्या)

(ख) '.....एवञ्च पूर्वोक्ते मन्त्रजाते पितृशब्दस्य सपिण्डीकरणान्तश्राद्धजन्यपितृत्वपरत्वात्तस्य च मातामहादिष्वपि सद्भावान्नोहः। तथा 'पूयति वा एतदृचोऽक्षरं यदेनदूहति तस्मादृचं नोहेत्' इति प्रतिषेधादपि नोहः। तथा अनृग्रूपेष्वपि मन्त्रेषु 'एतद्वः पितरो वासोऽमीमदन्त पितरः' इत्यादिष्वपि पूर्वोक्तन्यायान्नोहः।' (भगवन्तभास्कर, श्राद्धमयूख)

(६६) शय्यादानका स्वरूप

जीवके निमित्त अमावास्या तथा प्रतिपदा—दोनों दिन शय्या देनेका विधान है। अमावास्याके दिन उत्तरकी ओर सिरहानाकर शय्याको बिछाये। शय्याके नीचे ईशानकोणमें सामर्थ्यानुसार धातु या मिट्टीसे बना घृतपूर्णपात्र, अग्निकोणमें कुमकुमपात्र, नैर्ऋत्यकोणमें गेहूँसे भरा पात्र तथा वायव्यकोणमें जलपात्र रखे। सिरहानेकी ओर घृतपूर्ण कलश रखे। यह निद्राकलश कहलाता है। शय्यापर गद्दा आदि बिछाकर श्वेत चादरसे सुसज्जित कर दे। कोमल तकिया लगा दे। जीवके द्वारा उपभोगमें लायी गयी वस्तुएँ—वस्त्र, वाहन, पात्र आदि सामग्रियोंको शय्याके पास इकट्ठा करे। शय्याके नीचे सप्तधान्य भी रख दे। जीवको जो वस्तुएँ प्रिय हों, निषिद्धेतर उन वस्तुओंको भी शय्याके पास रख दे। शय्याके ऊपर

फल, फूल, माला, पान, कुमकुम, कर्पूर, अगरु, चन्दन, धोती, गमछा, मच्छरदानी, शृंगारपात्र, आभूषण, पुस्तक, जपमाला, स्वर्णमयी जीवप्रतिमा (कांचनपुरुष) और भोजनपात्र आदि रख दे—

(क) तस्माच्छय्यां समासाद्य सारदारुमयीं शुभाम्। दन्तपत्रचितां रम्यां हेमपट्टैरलङ्कृताम्॥
रक्ततूलिप्रतिच्छन्नां शुभशीर्षोपधानिकाम्। प्रच्छादनपटीयुक्तां गन्धधूपाधिवासिताम्॥
तस्यां संस्थाप्य हैमञ्च हरिं लक्ष्म्यासमन्वितम्। घृतपूर्णञ्च कलशं तत्रैव परिकल्पयेत्॥
ताम्बूलं कुङ्कुमाक्षोदं कर्पूरागुरुचन्दनम्। दीपकोपानहौ छत्रं चामरासनभाजनम्॥
पार्श्वेषु स्थापयेद् भक्त्या सप्तधान्यानि चैव हि। शयनस्थञ्च भवति यच्च स्यादुपकारकम्॥
भृङ्गारकादर्शपञ्चवर्णवितानशोभितम्। शय्यामेवंविधां कृत्वा ब्राह्मणाय निवेदयेत्॥

(गरुडपुराण प्रेत० २४।५१—५६)

अमावास्याके दिन दी जानेवाली शय्या जीवशय्या कही जाती है तथा प्रतिपदाको दी जानेवाली शय्या पितृयज्ञके निमित्त होती है, वह भी जीवशय्याकी भाँति सभी उपकरणोंसे सम्पन्न रहती है, किंतु उसमें जीवोपभुक्त वस्तुएँ नहीं रहतीं और कांचनपुरुषके स्थानपर स्वर्णकी लक्ष्मी-नारायणकी प्रतिमा स्थापित की जाती है। यह मांगलिक शय्यारूप है। इसका सिरहाना दक्षिणकी ओर होता है।

(६७) दानमें दी जानेवाली शय्याकी दिशा

देवशय्याका सिरहाना पूर्व, यज्ञशय्याका दक्षिण, तीर्थशय्याका पश्चिम और प्रेतशय्याका उत्तरकी ओर होना चाहिये—

देवशय्याशिरः प्राच्यां मखशय्या तु दक्षिणे। पश्चिमे तीर्थशय्यायाः प्रेतशय्याशिरोत्तरे॥

(दानसंग्रह)

(६८) दान लेनेके बाद 'स्वस्ति' का उच्चारण

वायुकी पत्नी स्वस्तिदेवी सम्पूर्ण विश्वमें पूजित हैं। प्रतिग्रहीता ब्राह्मणके द्वारा दान लेनेके अनन्तर '**स्वस्ति**' शब्दके न बोलनेसे लेना-देना सब विफल हो जाता है—

स्वस्तिदेवी वायुपत्नी प्रतिविश्वेषु पूजिता ॥ आदानञ्च प्रदानञ्च निष्फलं च यया विना।

(श्रीमद्देवीभा० ९।१।१००-१०१)

(६९) शय्याकी प्रदक्षिणा

शय्यापूजनके अनन्तर '**प्रमाण्यै देव्यै नमः**' कहकर हाथ जोड़कर शय्याकी प्रदक्षिणा करनी चाहिये—

शय्यां तु पूजयित्वैवं तद्भक्तो मत्परायणः। कृताञ्जलिपुटो भूत्वा कुर्याच्छय्याप्रदक्षिणाम्॥
नमः प्रमाण्यै देव्यै इति प्रणम्य चतुर्दिशि।

(७०) शय्यादानका प्रयोजन और उसका फल

शय्यादानसे जीवको तो प्रलयपर्यन्त सुख मिलता ही है, दान देनेवालेका भी अभ्युदय होता है। जीवको न तो

यमदूतोंकी प्रताड़ना सहनी पड़ती है और न शीत–घाम आदि द्वन्द्व ही सहने पड़ते हैं। बस, सुख–ही–सुख प्राप्त होता है। इसी तरह दान देनेवाला व्यक्ति भी लाभ–ही–लाभ प्राप्त करता है—

स्वर्गे पुरन्दरपुरे सूर्यपुत्रालये तथा। सुखं वसत्यसौ जन्तुः शय्यादानप्रभावतः॥
ताडयन्ति न तं याम्याः पुरुषा भीषणाननाः। न यमेन न शीताद्यैर्बाध्यते स नरः क्वचित्॥
अपि पापसमायुक्तः स्वर्गलोकं स गच्छति। आभूतसम्प्लवं यावत् तिष्ठत्यन्तकवर्जितः॥ (भविष्य०)

जो ब्राह्मणको शय्यादान करता है अथवा उसके दानके महनीय फलका श्रवण करता है, वह स्वर्गलोकमें दस हजार वर्षतक प्रतिष्ठित होता है—

प्रदद्याद् यस्तु विप्राय शृणुयाद्वापि यत् फलम्। पुरुषः सुभगः श्रीमान् स्त्रीसहस्रैश्च संवृतः॥
दशवर्षसहस्राणि स्वर्गलोके महीयते॥

(७१) वृषका विकल्प

जीवके निमित्त किये जानेवाले वृषोत्सर्ग कर्मके लिये यदि साक्षात् वृष उपलब्ध न हो तो शास्त्रने बताया है कि मिट्टी, कुश अथवा जौके आटेसे वृषाकृति बनाकर विधिपूर्वक वृषोत्सर्ग करना चाहिये, क्रियाका लोप न करे—

(क) धर्मसिन्धुमें भी कहा गया है—

वृषाऽभावे मृद्भिः पिष्टैर्वा वृषभं कृत्वा होमादिविधिना वृषोत्सर्गः।

(ख) **एकादशेऽह्निसम्प्राप्ते वृषाभावो भवेद् यदि। दर्भैः पिष्टैश्च सम्पाद्य तं वृषं मोचयेद् बुधः॥**

(ग) **वृषोत्सर्जनवेलायां वृषाऽभावः कथञ्चन। मृत्तिकाभिश्च दर्भैर्वा वृषं कृत्वा विमोचयेत्॥**

(७२) उत्सर्ग किये जानेवाले वृष एवं वत्सतरीकी अवस्था

यथोक्त लक्षणोंसे युक्त वृष यदि प्राप्त न हो तो जो प्राप्त हो, उसीका उत्सर्ग कर देना चाहिये। वृष एक वर्षका हो अथवा दो वर्षका हो। बछिया एक वर्षसे अधिक की हो, वे संख्यामें चार हों अथवा एक ही हों, उनका उत्सर्ग किया जा सकता है—

(क) **यथोक्तालाभे यथालाभो द्विवर्ष एकवर्षो वा वृषः, वर्षाधिकाश्चतस्त्र एका वा वत्सतरी स्यात्।**

(धर्मसिन्धु तृ० प० उत्तरा०)

(ख) **त्रिहायनीभिर्धर्म्याभिः सुरूपाभिः सुशोभितः।** (ब्रह्मपुराण)

(७३) नील वृषभका सामान्य लक्षण

(क) वृषभोंमें नील वृषभका अधिक महत्त्व है। नील वृषभ पारिभाषिक शब्द है। जिसका रंग लाल हो, मुख और पूँछ पीत-धवल हो तथा खुर एवं सींग सफेद हो, उसे नील वृषभ कहते हैं।

लोहितो यस्तु वर्णेन मुखपुच्छे च पाण्डुरः। श्वेतः खुरविषाणाभ्यां स नीलो वृष उच्यते॥

(ख) नील वृषभ उसे भी कहते हैं, जिसका सारा अंग तो श्याम हो, किंतु मुख आदि श्वेत हो—

यद्वा सर्वश्यामस्य मुखादि श्वेतत्वे नीलवृषत्वम्। (धर्मसिन्धु तृ० प० उत्तरा०)

(७४) वृषोत्सर्ग कहाँ करे ?

वृषोत्सर्ग किसी अरण्य, गोशाला, तीर्थ, एकान्तस्थान अथवा निर्जन वनमें करना चाहिये—

(क) **स त्वरण्ये भवेत् तीर्थे उत्सर्गो गोकुलेऽपि वा।** (चतुर्वर्गचिन्तामणि)

(ख) **विविक्तेष्वेव कुर्वन्ति**.....। (देवल)

(ग) **अयं गृहे न कार्यः।** (धर्मसिन्धु तृ० प० उत्त०)

(घ) **न गृहे मोचयेद् विद्वान् कामयन् पुष्कलं फलम्॥** (ब्रह्मपुराण)

(७५) सोलह संस्कार

गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, वपनक्रिया (चूडाकरण), कर्णवेध, व्रतादेश (उपनयन), वेदारम्भ, केशान्त (गोदान), वेदस्नान (समावर्तन), विवाह, विवाहाग्निपरिग्रह तथा त्रेताग्निसंग्रह—ये सोलह संस्कार कहे गये हैं—

गर्भाधानं पुंसवनं सीमन्तो जातकर्म च। नामक्रियानिष्क्रमणेऽन्नप्राशनं वपनक्रियाः॥
कर्णवेधो व्रतादेशो वेदारम्भक्रियाविधिः। केशान्तः स्नानमुद्वाहो विवाहाग्निपरिग्रहः॥
त्रेताग्निसंग्रहश्चेति संस्काराः षोडशस्मृताः॥ (व्याසस्मृति १।१३—१५)

(७६) वृषोत्सर्गके वृषका अंकन

गरुडपुराणमें कहा गया है—'**त्रिशूलं दक्षिणे पार्श्वे वामे चक्रं तु विन्यसेत्।**' किंतु शास्त्रोंमें भिन्न-भिन्न मत पाये

जाते हैं—

(क) **'वामे त्रिशूलं दक्षिणे चक्रम्।'** (विष्णुधर्मोत्तरपुराण)

(ख) **ततोऽरुणेन गन्धेन मानस्तोक इतीरयन्। वृषस्य दक्षिणे पार्श्वे त्रिशूलाङ्कं समुल्लिखेत्॥**
वृषा ह्यसीति सव्येऽस्य चक्राङ्कमपि दर्शयेत्॥ (शु०तत्त्व, छन्दो० परिशिष्टवचन)

(ग) बह्वृचपद्धतिके अनुसार दोनों अंकन दोनों पुट्ठोंपर ही होता है। (अन्त्यकर्मदीपक)

(घ)**तप्तेन धातुना पश्चादयस्कारोऽङ्कयेद् वृषम्। ....॥**
सव्ये स्फिचि लिखेच्चक्रं शूलं बाहौ तु दक्षिणे। कुङ्कुमेनाङ्कमित्यादौ ब्राह्मणः सुसमाहितः॥
(सौर पु०)

ये भिन्नताएँ शाखाके अनुसार हैं। अपनी-अपनी शाखा और देशाचारके अनुसार व्यवस्था कर लेनी चाहिये।

(ङ) यदि पिष्टमय वृषभ हो तो वहाँ मात्र चन्दनसे त्रिशूल एवं चक्र अंकित कर देना चाहिये। दागनेकी आवश्यकता नहीं है।

(७७) रुद्रकुम्भके जलसे वृष एवं वत्सीका स्नान

स्नापयेच्च वृषं वत्सीं रुद्रकुम्भोदकेन च। (गरुडपुराण)

(७८) नीलवृषश्राद्ध

तिल, घृत और शर्करामिश्रित जौके आटेसे २८ पिण्ड बनाकर पौराणिक मन्त्रोंको पढ़ते हुए नीलवृषके मुखके आगे

पिण्डदान करना चाहिये और पिण्डदानके अनन्तर नीलवृषपुच्छोदक तर्पण करना चाहिये—

नीलश्राद्धं तु कर्तव्यं यवपिष्टेन धीमता। तिलशर्करया युक्तं तर्पणं च ततः परम्॥

यवचूर्णेन तिलघृतमधुशर्कराभिर्नीलमुखाग्रे पौराणिकमन्त्रेण पिण्डान् दद्यात्। (श्राद्धसंग्रह)

(७९) वैतरणीतरण

समय तथा स्थानके अनुरूप गड्ढा खोदकर अथवा मिट्टीकी बाड़ बनाकर उसमें पानी भरकर वैतरणी नदीका आकार बनाना चाहिये। इक्षुदण्ड (गन्नोंके टुकड़े) काटकर एक नाव बनानी चाहिये। नावमें कांचनपुरुषकी प्रतिमा, लोहदण्ड तथा कपास स्थापित करना चाहिये। वह नाव कलावा या रक्षासूत्रसे गायकी पूँछमें बँधी होनी चाहिये। वैतरणी-संतरण उत्तरसे दक्षिण दिशामें होगा। वैतरणी पार करते समय आगे सवत्सा गाय होगी तथा उसके पीछे पार करनेवाला व्यक्ति पूर्वोक्त उपकरणोंसे युक्त इक्षुमयी नावको हाथमें लिये हुए होगा।

वैतरणी पार करते समय निम्नलिखित मन्त्र पढ़े—

धेनुके मां प्रतीक्षस्व यमद्वारमहापथे। उत्तारणार्थं देवेशि वैतरण्यै नमोऽस्तु ते॥

(८०) विभिन्न श्राद्धोंमें विश्वेदेव-निरूपण

इष्टिश्राद्धमें क्रतु तथा दक्ष, नान्दीमुखश्राद्धमें सत्य तथा वसु, नैमित्तिकश्राद्धमें काम तथा काल, काम्यश्राद्धमें धुरि तथा लोचन, पार्वणश्राद्धमें पुरूरवा तथा आर्द्रव—इन नामोंसे विश्वेदेव कहे गये हैं—

इष्टिश्राद्धे क्रतुर्दक्षः सत्यो नान्दीमुखे वसुः। नैमित्तिके कामकालौ काम्ये च धुरिलोचनौ।
पुरूरवार्द्रवौ चैव पार्वणे समुदाहृतौ॥ (वीरमित्रोदय-श्राद्धप्रकाश)

(८१) पददान

गरुडपुराणके अनुसार (१) छत्र, (२) उपानह (जूता), (३) वस्त्र, (४) मुद्रिका (अँगूठी), (५) कमण्डलु, (६) आसन, (७) भाजन (बर्तन) तथा (८) भोज्यसामग्री—इन आठ वस्तुओंका एक पद होता है—

छत्रोपानहवस्त्राणि मुद्रिका च कमण्डलुः। आसनं भाजनं भोज्यं पदं चाष्टविधं स्मृतम्॥

(गरुडपुराण, प्रेतखण्ड ४।९)

देशाचारके अनुसार गौड़ीयश्राद्धप्रकाश (पृ० २३९)-में निम्न तेरह वस्तुओंका एक पदके रूपमें वर्णन है। यथा—

(१) आसन, (२) जूता, (३) छत्र (छाता), (४) अँगूठी (सोने, चाँदी या ताँबेकी), (५) कमण्डलु (ताँबे, पीतलका या गंगा-जमुनी), (६) अन्न, (७) जल, (८) बर्तन (पात्र), (९) वस्त्र, (१०) घी, (११) यज्ञोपवीत, (१२) छड़ी तथा (१३) ताम्बूल (पान)।

(८२) द्वादश कुम्भोंका दान

जीवच्छ्राद्धमें पाँचवें दिन बारह घटोंका दान करना चाहिये।

द्वादशाहे विशेषेण उदकुम्भान् प्रदापयेत्। विधिना तत्र संकल्प्य घटान् द्वादशसंख्यकान्॥

(गरुडपुराण,प्रेतखण्ड ३७।७)

(८३) तीन वर्द्धनी कलशोंका दान

पाँचवें दिन भगवान् विष्णु, धर्मराज तथा चित्रगुप्तके निमित्त एक-एक वर्द्धनी कलशका दान करना चाहिये।।

एकापि वर्द्धनी तत्र पक्वान्नफलपूरिता। विष्णुमुद्दिश्य दातव्या संकल्प्य ब्राह्मणे शुभे॥
एको वै धर्मराजाय तेन तुष्टेन मुक्तिभाक्। चित्रगुप्ताय चैकं तु गतस्तत्र सुखी भवेत्॥
एका वै वर्द्धनी तत्र तस्यां पात्रं तु वंशजम्॥
वस्त्रेणाच्छादयेत्तान्तु पूजयित्वा सुगन्धिभिः। ब्राह्मणेभ्यो विशेषेण जलपूर्णानि दापयेत्॥

(ग०पु०,प्रेत० ३७।८-९, १३-१४)

कृष्णद्वादशी (प्रथम दिन)-के कृत्योंकी सामग्री*

(क) प्रायश्चित्तानुष्ठानकी सामग्री

(१) **आचार्यवरणकी सामग्री**—धोती, उत्तरीय, जनेऊ, सुपारी, आसन तथा द्रव्य।

(२) **पूजनकी सामग्री**—दीपक, रूई, दियासलाई, कुश, शुद्ध जल, पंचामृत, वस्त्र, यज्ञोपवीत, उपवस्त्र, रोली, अक्षत, चन्दन, पुष्प, पुष्पमाला, तुलसीपत्र, दूर्वा, सिन्दूर, अबीर, धूप, दीप, नैवेद्य, ऋतुफल (केला छोड़कर),

* प्रथम दिनकी सामग्रीकी सूची यहाँ प्रस्तुत की जा रही है। अन्य दिनोंकी सामग्री-सूची उनके प्रयोगके साथ-साथ दी गयी है। कृपणताको छोड़कर अपनी श्रद्धा-शक्ति और सामर्थ्यानुसार इसमें न्यूनाधिक्य किया जा सकता है।

ताम्बूल, सुपारी, लौंग-इलायची, दक्षिणाद्रव्य।

(३) दन्तधावनके लिये अपामार्ग आदिकी दातौन।

(४) दशविध स्नानकी सामग्री—भस्म, गोमय, मृत्तिका, शुद्धोदक, गोमूत्र, दुग्ध, दधि, घृत, कुशोदक।

(५) तर्पणके लिये सामग्री—तिल, जौ, अक्षत, कुश, तर्पणके बाद धारण करनेके लिये यज्ञोपवीत, वस्त्र (धोती-उत्तरीय)।

(६) मुख्य प्रायश्चित्तके पूर्वांग तथा उत्तरांगमें विहित आमान्नदानात्मक विष्णुश्राद्धके लिये—दो-दो ब्राह्मणोंके लिये पर्याप्त भोजनसामग्री (आमान्न) आठ स्थानपर।

(७) हवनसामग्री—आमकी लकड़ी, गोहरी, कपूर, कुश, ब्रह्माके वरणकी सामग्री तथा आहुतियोंके लिये घृत।

(८) पंचगव्य—गोमूत्र, गोमय, दुग्ध, दधि, घृत तथा कुशोदक।

(९) सात कुशोंसे निर्मित ब्रह्मकूर्च।

(१०) २५६ मुट्ठी चावलसे भरा पूर्णपात्र (पीतलका भगौना)।

(११) पर्षद्‌द्वारा निर्धारित प्रधान प्रायश्चित्तके लिये गोनिष्क्रयद्रव्य।

(१२) बारह ब्राह्मणोंको भोजन करानेके लिये भोजनसामग्री।

(ख) महादानोंकी सामग्री

(१३) दस महादानकी सामग्री—सवत्सा गौ, भूमि, तिल, स्वर्ण, घृत, वस्त्र, धान्य, गुड़, चाँदी तथा लवण (जो वस्तु प्रत्यक्ष न हो, उसके लिये निष्क्रयद्रव्य)।

(१४) आठ महादानकी सामग्री—तिल, लोहा, स्वर्ण, कपास, लवण, सप्तधान्य, भूमि तथा गाय (जो वस्तु नहीं हो, उसके लिये निष्क्रयद्रव्य)।

(१५) सप्तधान्य—जौ, धान, तिल, कँगनी, मूँग, चना तथा साँवा।

मतान्तरसे—जौ, गेहूँ, धान, तिल, टाँगुन, साँवा तथा चना।

कृष्णद्वादशी (प्रथम दिन)-का कृत्य

जीवच्छ्राद्धसे पूर्व प्रायश्चित्तानुष्ठान

किसी भी महीनेके कृष्णपक्षकी द्वादशी तिथिको उपवास करके सर्वप्रथम प्रायश्चित्तानुष्ठानकी सभी सामग्री एकत्रित करके किसी महातीर्थमें, पुण्यतोया नदीके तटपर, किसी पुण्य पर्वतपर, वन अथवा अपने निवासस्थानपर जीवच्छ्राद्ध करना चाहिये।[१] जीवच्छ्राद्ध करनेसे पूर्व जीवच्छ्राद्ध करनेका अधिकार प्राप्त करनेके लिये सर्वप्रथम प्रायश्चित्तानुष्ठान करना आवश्यक है। प्रायश्चित्तानुष्ठानकी विधि आगे दी गयी है।

स्नानादि नित्य-क्रिया सम्पादित करके कर्ता धुले हुए दो वस्त्र[२] (धोती तथा उत्तरीय—चादर अथवा गमछा आदि) धारणकर अपने आसनपर पूर्वाभिमुख बैठ जाय तथा आगेका कृत्य निम्न रीतिसे सम्पन्न करे—

शिखाबन्धन—गायत्रीमन्त्र अथवा शिखाबन्धनके मन्त्रसे शिखा बाँध ले।

तिलकधारण—मृत्तिका, गोपीचन्दन आदिसे ऊर्ध्वपुण्ड्र अथवा भस्मसे त्रिपुण्ड्र लगा ले।

---

१. पर्वते वा नदीतीरे वने वायतनेऽपि वा। जीवच्छ्राद्धं प्रकर्तव्यम्····॥ (लिंगपुराण)

२. (क) स्नानं दानं जपं होमं स्वाध्यायं पितृतर्पणम्। नैकवस्त्रो द्विजः कुर्याच्छ्राद्धभोजनसत्क्रियाः॥ (श्राद्धचिन्तामणिमें योगियाज्ञवल्क्यका वचन) स्नान, दान, जप, होम, स्वाध्याय,पितृतर्पण, श्राद्ध, भोजन आदि सत्कर्म एक वस्त्र धारणकर नहीं करने चाहिये।
(ख) विकच्छोऽनुत्तरीयश्च नग्नश्चावस्त्र एव च। श्रौतस्मार्ते नैव कुर्यात्॥ (धर्मसिन्धु) लाँगरहित, उत्तरीय वस्त्रके बिना तथा नग्नावस्थामें और निषिद्ध वस्त्र धारणकर श्रौत-स्मार्तकर्म नहीं करना चाहिये।

सिंचन-मार्जन—निम्न मन्त्रसे अपने ऊपर तथा पूजनकी वस्तुओंपर जल छिड़ककर पवित्र हो जाय—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

पवित्रीधारण—निम्न मन्त्रसे पवित्री पहन ले—

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः।
तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्॥

आचमन[1]—**ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः**—इन मन्त्रोंको बोलकर आचमन करे। तदनन्तर **ॐ हृषीकेशाय नमः**—कहकर हाथ धो ले।

प्राणायाम—प्राणायाम करे।

दीप-प्रज्वालन[2]—पूर्व दिशामें घृतका पूर्वाग्र दीप जलाकर उसे अक्षतोंपर रख ले। गन्ध, अक्षत, पुष्प आदिसे दीपकका पूजन कर ले और प्रार्थना करे—

---

१. सपवित्रेण हस्तेन कुर्यादाचमनक्रियाम्। नोच्छिष्टं तत्पवित्रं तु भुक्तोच्छिष्टं तु वर्जयेत्॥ (श्राद्धचिन्तामणिमें मार्कण्डेयका वचन)

२. प्राङ्मुखोदङ्मुखं दीपं देवागारे द्विजालये। कुर्याद् याम्यमुखं पैत्र्ये अद्भिः संकल्प्य सुस्थिरम्॥ (निर्णयसिन्धु)

भो दीप ब्रह्मरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत्। यावत् कर्मसमाप्तिः स्यात् तावत् त्वं सुस्थिरो भव॥

*__आचार्यवरण__—तदनन्तर आचार्यका वरण करे। आचार्यको उत्तराभिमुख आसनपर बैठाकर दाहिने हाथमें

---

* किसी कारणवश व्यक्तिके अत्यधिक अशक्त होजानेपर यदि वह स्वयं जीवच्छ्राद्धकी पूरी प्रक्रिया सम्पन्न करनेमें समर्थ नहीं है तो किसी ब्राह्मणका अपने प्रतिनिधिके रूपमें वरण करके उस प्रतिनिधिद्वारा कार्य सम्पन्न करा लेना चाहिये। प्रतिनिधिके वरणका संकल्प नीचे लिखा जा रहा है। प्रमाद एवं आलस्यके कारण प्रतिनिधिसे कार्य नहीं कराना चाहिये, स्वयं ही करना चाहिये।

प्रतिनिधिके वरणका संकल्प—दाहिने हाथमें अक्षत, त्रिकुश तथा जल लेकर यजमान निम्न संकल्प करे—**ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः नमः पुराणपुरुषोत्तमाय ॐ तत्सत् अद्यैतस्य अचिन्त्यशक्तेर्महाविष्णोराज्ञया जगत्सृष्टिकर्मणि प्रवर्तमानस्य परार्धद्वयजीविनो ब्रह्मणो द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशान्तर्गते ....क्षेत्रे ....स्थाने बौद्धावतारे ....संवत्सरे ....अयने ....ऋतौ ....मासे ....पक्षे ....तिथौ ....वासरे एवं ग्रहगणगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ....गोत्रः शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं (यदि स्त्री हो तो ....गोत्रा ....देव्यहम्** बोले **) चिकीर्षिते मम जीवच्छ्राद्धे तत्कर्मकर्तृत्वेन ....गोत्रं ....शर्माणं भवन्तमात्मनः प्रतिनिधिरूपेण वृणे।** कहकर संकल्प प्रतिनिधि ब्राह्मणके हाथमें दे दे।

प्रतिनिधिके द्वारा किया जानेवाला संकल्प—**ॐ अद्य पूर्वोच्चारितग्रहगणगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ....गोत्रः ....शर्माहं ....गोत्रेण ....शर्मणा/वर्मणा/गुप्तेन (** यदि स्त्री हो तो **....गोत्रया ....देव्या** बोले **) करिष्यमाणे स्वकीयजीवच्छ्राद्धे तत्कर्मकर्तृत्वेन तदीयप्रतिनिधिरूपेण वृतोऽहं शास्त्रानुरोधिकर्मसम्पादनं करिष्ये।** कहकर संकल्पजल छोड़ दे।

[यदि स्त्रीका प्रतिनिधि हो तो आगेके संकल्पवाक्योंमें जहाँ **शर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे**—ऐसा आया है, वहाँ **....जीवदेव्याः जीवच्छ्राद्धे**—इस प्रकारसे ऊह कर लेना चाहिये।]

अक्षत, त्रिकुश, जल तथा वरण-सामग्री लेकर आचार्यके वरणके लिये निम्न संकल्प करे—

वरणसंकल्प—ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः नमः पुराणपुरुषोत्तमाय ॐ तत्सत् अद्यैतस्य अचिन्त्यशक्ते-र्महाविष्णोराज्ञया जगत्सृष्टिकर्मणि प्रवर्तमानस्य परार्धद्वयजीविनो ब्रह्मणो द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशान्तर्गते ....क्षेत्रे ....स्थाने बौद्धावतारे ....संवत्सरे ....अयने ....ऋतौ ....मासे ....पक्षे ....तिथौ ....वासरे एवं ग्रहगणगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं करिष्यमाणे जीवच्छ्राद्धे तत्राधिकारसिध्यर्थमनुष्ठीयमाने प्रायश्चित्तादिकर्मणि च ....गोत्रं ....शर्माणं ब्राह्मणं आचार्यत्वेन भवन्तं वृणे—ऐसा कहकर वरणसामग्री तथा संकल्पजल आचार्यके हाथमें दे दे।

आचार्य '**वृतोऽस्मि**' बोले।

पूजन—तदनन्तर '**सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि**' कहकर रोली, अक्षतसे तिलककर आचार्यका पूजन करे।

जीवच्छ्राद्धमें अधिकारप्राप्तिके लिये प्रायश्चित्तानुष्ठान

जीवच्छ्राद्धमें अधिकार प्राप्त करनेके लिये प्रायश्चित्तानुष्ठान किया जाता है। अतः सर्वप्रथम हाथमें त्रिकुश, अक्षत तथा जल लेकर प्रायश्चित्ताचरणका संकल्प करना चाहिये।

प्रायश्चित्तानुष्ठानका प्रतिज्ञा-संकल्प—ॐ अद्य पूर्वोच्चारितग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां ....शुभपुण्यतिथौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहम् अनेकजन्मार्जितज्ञाताज्ञातकामाकामकायिकवाचिकमानसिक-सांसर्गिकस्पृष्टास्पृष्टभुक्ताभुक्तपीतापीतसकलपातकातिपातकोपपातकगुरुलघुस्थूलसूक्ष्मपातकसंकरीकरणमलिनी-करणापात्रीकरणजातिभ्रंशकरप्रकीर्णपातकानां मध्ये सम्भावितानां सर्वेषां पापानां निरसनद्वाराशास्त्रोक्तौर्ध्वदैहिक-फलावाप्तये करिष्यमाणे जीवच्छ्राद्धकर्मण्यधिकारप्राप्त्यर्थं प्रायश्चित्तानुष्ठानं करिष्ये। तत्रादौ प्रारीप्सितसम्पूर्ति-प्रतिबन्धकविघ्नव्यूहध्वंसकामः गणेशाम्बिकयोः पूजनं भगवतः शालग्रामस्य पूजनं च करिष्ये। हाथका संकल्पजल आदि छोड़ दे।

जीवच्छ्राद्ध आरम्भ करनेके पूर्व कार्यकी निर्विघ्नतापूर्वक परिपूर्णताके लिये गणेशाम्बिका तथा भगवान् शालग्रामका पूजन करना चाहिये। अतः संक्षेपमें स्वस्तिवाचनपूर्वक गणेशाम्बिका तथा शालग्रामपूजनकी विधि आगे दी जा रही है—

किसी पात्रमें अष्टदलकमल बनाकर गणेश-गौरीकी प्रतिमा स्थापित कर ले। यदि गणेशाम्बिकाकी मूर्ति न हो तो सुपारीमें मौली लपेटकर गणेशजीकी प्रतिमा बना ले तथा गोमय अथवा सुपारीकी अम्बिका (गौरी)-की प्रतिमा बनाकर उसे गणेशजीके दक्षिण भागमें पात्रमें रख ले और हाथमें अक्षत-पुष्प लेकर स्वस्तिवाचन करे।

स्वस्तिवाचन

ॐ आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः। देवा नो यथा सदमिद् वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे॥ देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानाᳪं रातिरभि नो निवर्तताम्। देवानाᳪं सख्यमुपसेदिमा वयं

देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे॥ तान्पूर्वया निविदा हूमहे वयं भगं मित्रमदितिं दक्षमस्त्रिधम्। अर्यमणं वरुणꣳ सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत्॥ तन्नो वातो मयोभु वातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः। तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना शृणुतं धिष्ण्या युवम्॥ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये॥ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥ पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथेषु जग्मयः। अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसागमन्निह॥ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥ शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्। पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः॥ अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः। विश्वे देवा अदितिः पञ्च जना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्॥ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥ यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु। शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः॥ सुशान्तिर्भवतु॥

श्रीमन्महागणाधिपतये नमः। लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। उमामहेश्वराभ्यां नमः। वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः। शचीपुरन्दराभ्यां नमः। मातापितृचरणकमलेभ्यो नमः। इष्टदेवताभ्यो नमः। कुलदेवताभ्यो नमः। ग्रामदेवताभ्यो नमः। वास्तुदेवताभ्यो नमः। स्थानदेवताभ्यो नमः। सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। ॐ

सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः।

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः। लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः। द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा। सङ्ग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥
विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम्। वन्दे काशीं गुहां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम्॥
वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ। निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

गणेशाम्बिकाभ्यां नमः॥

हाथमें लिये अक्षत-पुष्पको गणेशजी एवं अम्बिकापर चढ़ा दे।

गणेशाम्बिका-पूजन*

सर्वप्रथम हाथमें पुष्प लेकर गणेशजीका आवाहन करे—

भगवान् गणेशका आवाहन—

ॐ गणानां त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिꣳ हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्॥

* यथासम्भव गणेशाम्बिकाका षोडशोपचार अथवा पंचोपचार पूजन कर लेना चाहिये।

ॐ गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि, स्थापयामि। आवाहनार्थे पुष्पं समर्पयामि।

आवाहनके लिये पुष्प अर्पित करे।

भगवती गौरीका आवाहन—

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्॥

ॐ गौर्यै नमः, गौरीमावाहयामि, स्थापयामि। आवाहनार्थे पुष्पं समर्पयामि।

आवाहनके लिये पुष्प अर्पित करे।

प्राण-प्रतिष्ठा—

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च। अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

गणेशाम्बिके सुप्रतिष्ठिते वरदे भवेताम्। कहकर गौरी-गणेशपर अक्षत-पुष्प छोड़े।

आसन—

विचित्ररत्नखचितं दिव्यास्तरणसंयुतम्। स्वर्णसिंहासनं चारु गृह्णीष्व सुरपूजित॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, आसनं समर्पयामि। आसनके लिये अक्षत समर्पित करे।

पाद्य—ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पादयोः पाद्यं समर्पयामि। कहकर एक आचमनी पाद्य (जल) समर्पित करे।

अर्घ—ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, हस्तयोरर्घं समर्पयामि। कहकर गणेश-गौरीको अर्घ दे। **ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, आचमनीयं जलं समर्पयामि।** कहकर एक आचमनी जल अर्पित करे।

स्नान—

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्। तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, स्नानीयं जलं समर्पयामि। कहकर शुद्ध जलसे स्नान कराये।

पंचामृतस्नान—

पयोदधिघृतं चैव मधुशर्करयान्वितम्। पञ्चामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि। कहकर पंचामृतसे स्नान कराये।

शुद्धोदकस्नान—

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। कहकर शुद्ध जलसे स्नान कराये।

वस्त्र—

शीतवातोष्णसन्त्राणं लज्जाया रक्षणं परम्। देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, वस्त्रं समर्पयामि। कहकर वस्त्र चढ़ाये और **आचमनीयं जलं समर्पयामि** कहकर आचमनीय जल समर्पित करे।

यज्ञोपवीत—ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, यज्ञोपवीते समर्पयामि। कहकर यज्ञोपवीत समर्पित करे। **यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि** कहकर आचमनका जल अर्पित करे।

उपवस्त्र—ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि। कहकर उपवस्त्र चढ़ाये और '**आचमनीयं जलं समर्पयामि**' कहकर आचमनका जल अर्पित करे।

चन्दन—

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्। विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, चन्दनानुलेपनं समर्पयामि। कहकर चन्दन चढ़ाये।

अक्षत—ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अक्षतान् समर्पयामि। कहकर गणेश-गौरीपर अक्षत चढ़ाये।

पुष्पमाला—

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो। मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पुष्पमालां समर्पयामि। कहकर पुष्पमाला समर्पित करे।

दूर्वांकुर—

दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान् मङ्गलप्रदान्। आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि। कहकर गणेशजीपर दूर्वा चढ़ाये।

सिन्दूर—

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्। शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, सिन्दूरं समर्पयामि। कहकर गणेश-गौरीको सिन्दूर चढ़ाये।

अबीर—

नानापरिमलैर्द्रव्यैर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम्। अबीरनामकं चूर्णं गन्धं चारु प्रगृह्यताम्॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि। कहकर अबीर चढ़ाये।

गणेशाम्बिकाके सम्मुख नैवेद्य स्थापितकर धूप-दीप अर्पण करे।

धूप—

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, धूपमाघ्रापयामि। कहकर धूप अर्पण करे।

दीप—

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया। दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दीपं दर्शयामि। हस्तप्रक्षालनम्। दीप दिखाये और हाथ धो ले।

नैवेद्य—नैवेद्य निवेदित करे—

शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च। आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नैवेद्यं समर्पयामि। नैवेद्यान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। कहकर नैवेद्य अर्पण करे और आचमनीय जल अर्पित करे।

ऋतुफल—ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, ऋतुफलं समर्पयामि। कहकर ऋतुफल अर्पण करे।

ताम्बूल—

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्। एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, ताम्बूलं समर्पयामि। कहकर इलायची, लौंग-सुपारीके साथ ताम्बूल अर्पित करे।

दक्षिणा—

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः। अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि। कहकर यथाशक्ति द्रव्य-दक्षिणा समर्पित करे।

आरती—

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्। आरार्तिक्यमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, आरार्तिक्यं समर्पयामि। आरती करे।

प्रदक्षिणा—

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च। तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणा* पदे पदे॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि। प्रदक्षिणा करे।

पुष्पांजलि—

नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च। पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तो गृहाण परमेश्वर॥

---

* आर्षत्वात्सुपो लुक्।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। पुष्पांजलि अर्पित करे।

विशेषार्घ—ताम्रपात्रमें जल, चन्दन, अक्षत, सुपारी, पुष्प, दूर्वा और दक्षिणा रखकर दोनों घुटनोंको जमीनपर लगा दे और दोनों हाथसे अर्घपात्रको सिरतक ले जाय तथा निम्न मन्त्रसे गणेशको अर्पित करे—

रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्यरक्षक। भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात्॥
द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रज प्रभो। वरदस्त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद॥
अनेन सफलार्घ्येण वरदोऽस्तु सदा मम।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, विशेषार्घं समर्पयामि। विशेषार्घ दे।

प्रार्थना—हाथमें फूल लेकर प्रार्थना करे—

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते॥
नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः प्रार्थनापूर्वकं नमस्कारान् समर्पयामि। कहकर पुष्प चढ़ा दे और प्रणाम करे।

समर्पण—अनेन पूजनेन श्रीगणेशाम्बिके प्रीयेताम्, न मम। कहकर सम्पूर्ण कर्म भगवान्‌को निवेदित कर दे।

शालग्रामपूजन

ध्यान—हाथमें पुष्प लेकर भगवान्‌का ध्यान करे—

नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे।
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटीयुगधारिणे नमः॥

श्रीमन्नारायणाय नमः। ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि। भगवान्‌के सामने पुष्प रख दे।

शालग्राममें भगवान् विष्णुकी नित्य संनिधि रहती है, इसलिये उनका आवाहन नहीं होता, आवाहनके स्थानपर आसनार्थ प्रार्थनापूर्वक पुष्प समर्पित करे। शालग्रामके न रहनेपर विष्णुपूजनके लिये अन्य प्रतिमाओंमें प्रतिष्ठापूर्वक इस प्रकार आवाहन करे—

आवाहन—

आगच्छ भगवन् देव स्थाने चात्र स्थिरो भव। यावत् पूजां करिष्यामि तावत् त्वं संनिधौ भव॥

श्रीमन्नारायणाय नमः। आवाहनार्थे पुष्पं समर्पयामि। आवाहनके लिये पुष्प चढ़ाये।

आसन—

अनेकरत्नसंयुक्तं नानामणिगणान्वितम्। भावितं स्वर्णिमं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीमन्नारायणाय नमः। आसनार्थे पुष्पाणि समर्पयामि। आसनके लिये पुष्प समर्पित करे।

पाद्य-अर्घ-आचमन—श्रीमन्नारायणाय नमः। पादयोः पाद्यं समर्पयामि। श्रीमन्नारायणाय नमः। हस्तयोरर्घं समर्पयामि। श्रीमन्नारायणाय नमः। आचमनीयं जलं समर्पयामि। पाद्य-जल, अर्घ-जल तथा आचमनके लिये जल दे।

स्नान—

मन्दाकिन्यास्तु यद् वारि सर्वपापहरं शुभम्। तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीमन्नारायणाय नमः। स्नानीयं जलं समर्पयामि। जलसे स्नान कराये।

पंचामृतस्नान—

पयोदधिघृतं चैव मधुशर्करयान्वितम्। पञ्चामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीमन्नारायणाय नमः। पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि। पंचामृतसे स्नान कराये।

शुद्धोदकस्नान—

शुद्धं यत्सलिलं दिव्यं गङ्गाजलसमं स्मृतम्। समर्पितं मया भक्त्या शुद्धस्नानाय गृह्यताम्॥

श्रीमन्नारायणाय नमः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। शुद्ध जलसे स्नान कराये।

वस्त्र—

शीतवातोष्णसंत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्। देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

श्रीमन्नारायणाय नमः। वस्त्रं समर्पयामि, आचमनीयं जलं च समर्पयामि। वस्त्र चढ़ाये, पुनः आचमनीय जल दे।

यज्ञोपवीत—

यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥

श्रीमन्नारायणाय नमः। यज्ञोपवीते समर्पयामि, यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं जलं च समर्पयामि।
यज्ञोपवीत अर्पण करे, पुनः आचमनीय जल दे।

उपवस्त्र—

उपवस्त्रं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने। भक्त्या समर्पितं देव प्रसीद परमेश्वर॥

श्रीमन्नारायणाय नमः। उपवस्त्रं समर्पयामि, आचमनीयं जलं च समर्पयामि। उपवस्त्र चढ़ाये तथा आचमनीय जल समर्पित करे।

गन्ध—

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्। विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीमन्नारायणाय नमः। चन्दनं समर्पयामि। मलय-चन्दन चढ़ाये।
(शालग्रामपर अक्षत नहीं चढ़ाया जाता। अतः अक्षतके स्थानपर श्वेत तिल या तुलसीपत्र चढ़ाये।)

अक्षत—श्रीमन्नारायणाय नमः। अक्षतस्थाने श्वेततिलान् समर्पयामि। श्वेत तिल चढ़ाये।

पुष्प—

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो। मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीमन्नारायणाय नमः। पुष्पं पुष्पमालां च समर्पयामि। पुष्प और पुष्पमालासे अलंकृत करे।

तुलसीपत्र—

तुलसीं हेमरूपां च रत्नरूपां च मञ्जरीम्। भवमोक्षप्रदां तुभ्यमर्पयामि हरिप्रियाम्॥

श्रीमन्नारायणाय नमः। तुलसीदलं तुलसीमञ्जरीं च समर्पयामि। तुलसीदल तथा तुलसीमंजरी अर्पित करे।

दूर्वा—

दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान् मङ्गलप्रदान्। आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण परमेश्वर॥

श्रीमन्नारायणाय नमः। दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि। दूब समर्पित करे।

धूप—

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीमन्नारायणाय नमः। धूपमाघ्रापयामि। धूप आघ्रापित करे।

दीप—

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया। दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्॥

श्रीमन्नारायणाय नमः। दीपं दर्शयामि। घृतदीप दिखाये तथा हाथ धो ले।

नैवेद्य—

त्वदीयं वस्तु गोविन्द तुभ्यमेव समर्पये। गृहाण सुमुखो भूत्वा प्रसीद परमेश्वर॥

श्रीमन्नारायणाय नमः। नैवेद्यं निवेदयामि, मध्ये पानीयं जलं समर्पयामि, आचमनीयं जलं च समर्पयामि। नैवेद्य निवेदित करे तथा पानीय जल अर्पित करे, पुनः आचमनीय जल अर्पित करे।

ऋतुफल—

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव। तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि॥

श्रीमन्नारायणाय नमः। अखण्डऋतुफलं समर्पयामि। ऋतुफल समर्पित करे।

ताम्बूल—

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्। एलालवङ्गसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीमन्नारायणाय नमः। एलालवङ्गपूगीफलयुतं ताम्बूलं समर्पयामि। इलायची, लवंग तथा पूगीफलयुक्त ताम्बूल र्पित करे।

दक्षिणा—

दक्षिणा प्रेमसहिता यथाशक्तिसमर्पिता। अनन्तफलदामेनां गृहाण परमेश्वर॥

श्रीमन्नारायणाय नमः। द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि। द्रव्य-दक्षिणा अर्पित करे तथा आरती करे।

आरती—

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्। आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव॥

श्रीमन्नारायणाय नमः। आरार्तिकं समर्पयामि। आरती करे।

शंख-जल—

शङ्खमध्यस्थितं तोयं भ्रामितं केशवोपरि। अङ्गलग्नं मनुष्याणां सर्वं पापं व्यपोहति॥

शंखका जल भगवान्पर घुमाकर अपने ऊपर छोड़े।

स्तुति-प्रार्थना—

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्॥

पुष्पांजलि—

नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च। पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तो गृहाण परमेश्वर॥

श्रीमन्नारायणाय नमः। पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। भगवान्‌को पुष्पांजलि समर्पित करे।

प्रदक्षिणा—

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च। तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणा पदे पदे॥

श्रीमन्नारायणाय नमः। प्रदक्षिणां समर्पयामि। भगवान्‌की चार प्रदक्षिणाकर उन्हें साष्टांग प्रणाम करे, तदनन्तर क्षमा-प्रार्थना करे।

क्षमा-प्रार्थना—

यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत्। तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर॥

चरणामृतग्रहण—भगवान्‌के पूजनके अनन्तर चरणोदक लेना चाहिये।

पर्षद्‌की स्थापना

इस प्रकार भगवान् शालग्रामका पूजन कर लेनेके अनन्तर कर्ताको चाहिये कि वह धर्मशास्त्रको जाननेवाले चार अथवा तीन ब्राह्मणोंको पर्षद्*के रूपमें बैठाकर हाथ जोड़कर निम्न मन्त्रोंसे उनकी प्रार्थना करे—

ब्राह्मण-प्रार्थना—

समस्तसम्पत्समवाप्तिहेतवः समुत्थितापत्कुलधूमकेतवः।
अपारसंसारसमुद्रसेतवः पुनन्तु मां ब्राह्मणपादपांसवः॥
आपद्घनध्वान्तसहस्रभानवः समीहितार्थार्पणकामधेनवः।
समस्ततीर्थाम्बुपवित्रमूर्तयो रक्षन्तु मां ब्राह्मणपादपांसवः॥
विप्रौघदर्शनात् सद्यः क्षीयन्ते पापराशयः।
दर्शनान्मङ्गलावाप्तिरर्चनादच्युतं पदम्॥
आधिव्याधिहरं नृणां मृत्युदारिद्र्यनाशनम्।
श्रीपुष्टिकीर्तिदं वन्दे विप्रश्रीपादपङ्कजम्॥

पार्षदोंका पूजन तथा प्रदक्षिणा—प्रार्थनाके अनन्तर गन्ध, अक्षत तथा पुष्पसे पार्षदों तथा उनके

* चतुरो विप्रान् पर्षत्वेनोपवेश्य। चत्वारो वा त्रयो वापि वेदवन्तोऽग्निहोत्रिणः। ब्राह्मणानां समर्था ये पर्षत्सा हि विधीयते। (जीवच्छ्राद्धपद्धति)

द्वारा साथमें लाये गये धर्मग्रन्थकी पूजा करके उनके समक्ष गोवृषका निष्क्रयद्रव्य स्थापित करके उन्हें साष्टांग प्रणाम करे तथा निम्न संकल्पसे उन्हें दक्षिणा प्रदान करे।

दक्षिणादानका संकल्प—दाहिने हाथमें त्रिकुश, अक्षत, जल तथा दक्षिणा लेकर बोले—

ॐ अद्य ……गोत्रः ……शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं करिष्यमाणप्रायश्चित्ताङ्गत्वेन इमानि गोवृषनिष्क्रयद्रव्याणि सर्वेभ्यो पार्षदब्राह्मणेभ्यो दातुमुत्सृज्ये। ऐसा कहकर गोवृषनिष्क्रयद्रव्य पार्षदोंको प्रदान करे।

तदनन्तर प्रार्थनापूर्वक निम्न मन्त्रोंको पढ़ते हुए उनकी प्रदक्षिणा करे—

सर्वे धर्मविवेक्तारो गोप्तारः सकला द्विजाः। मम देहस्य संशुद्धिं कुर्वन्तु द्विजसत्तमाः॥
मया कृतं महाघोरं ज्ञातमज्ञातकिल्बिषम्। प्रसादः क्रियतां मह्यं शुभानुज्ञां प्रयच्छथ॥
पूज्यैः कृतपवित्रोऽहं भवेयं द्विजसत्तमाः।*

कर्ता—तदनन्तर कर्ता **'मामनुगृह्णन्तु भवन्तः'** (आपलोग मुझपर अनुग्रह करें)—ऐसा कहे।

पर्षद्—पर्षद् कर्तासे पूछे—

किं ते कार्यं वदास्माभिः किं वा मृगयसे द्विज। तत्त्वतो ब्रूहि तत्सर्वं सत्यं हि गतिरात्मनः॥

---

* हे द्विजो! आप सब धर्मका विवेचन करनेवाले हैं, हे द्विजश्रेष्ठो! मेरे शरीरकी सम्यक् शुद्धि करनेकी कृपा करें। मैंने ज्ञात और अज्ञातरूपसे अत्यन्त घोर पापाचरण किया है। आपलोग मुझपर कृपा करें और शुभ आज्ञा दें। हे द्विजश्रेष्ठो! आप पूज्य ब्राह्मणोंकी कृपासे मैं पवित्र हो जाऊँगा।

अस्माकं चैव सर्वेषां सत्यमेव परं बलम् । यदि चेद्रक्षसे सत्यं नियतं प्राप्स्यसे शुभम्॥[१]

कर्ता—इसपर कर्ता पापोंके निरासार्थ प्रायश्चित्त-निर्धारणके लिये पर्षद्से इस प्रकार निवेदन करे—

ॐ अद्य ····गोत्रस्य ····शर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य ममानेकजन्मार्जितानां पातकातिपातकोपपातकानां निरासार्थं अनुग्रहं कृत्वा[२] **प्रायश्चित्तमुपदिशन्तु भवन्तः।'**

धर्मग्रन्थ, पार्षदों तथा अनुवादकका पूजन—पर्षद्द्वारा प्रायश्चित्त-प्रत्याम्नायका निर्धारण हो जानेपर क्रियाकर्ता धर्मग्रन्थ तथा पार्षदोंका पूजन करे और प्रायश्चित्तानुष्ठानकी घोषणाहेतु पार्षदोंके द्वारा नियुक्त अनुवादककी भी पूजा करे और अनुवादकको दक्षिणा प्रदान करे।

---

१. हे द्विज! हमलोगोंको तुम्हारे लिये क्या करणीय है, इसे बताओ अथवा क्या जिज्ञासा है, यह सब बात यथार्थ रूपसे कहो। सत्य ही अपने उद्धारका हेतु है। हम सबका सत्य ही सबसे श्रेष्ठ बल है। अगर सत्यकी रक्षा करोगे तो तुम्हें अवश्य ही कल्याणकी प्राप्ति होगी।

२. **प्रायश्चित्तविधान**—पापोंके समूल विनाशके लिये शास्त्रोंमें कृच्छ्र आदि प्रायश्चित्तव्रतोंको करनेका विधान है। द्वादशाब्द (बारह वर्ष), षडब्द (छः वर्ष), त्र्यब्द (तीन वर्ष), सार्धाब्द (डेढ़ वर्ष) और आब्दिक (एक वर्ष) कृच्छ्रव्रतमें भेदसे पाँच पक्ष बताये गये हैं, जिनमें द्वादशाब्द प्रायश्चित्तव्रतको उत्तमोत्तम, षडब्दको उत्तम, त्र्यब्दको मध्यम, सार्धाब्दको निकृष्ट तथा अब्दको अतिनिकृष्टकी संज्ञा दी गयी है।

कृच्छ्रव्रत—एक कृच्छ्रव्रत बारह दिनोंमें सम्पन्न होता है। इसे कुछ विद्वज्जन प्राजापत्यकृच्छ्र भी कहते हैं। कृच्छ्रव्रत निम्न रीतिसे सम्पन्न होता है—पहले दिन एकभक्त अर्थात् पूरे दिन-रात (चौबीस घण्टे)-में मध्याह्नकालमें केवल एक बार २६ ग्रासका भोजन, दूसरे दिन नक्तव्रत अर्थात् दिन-रातमें प्रदोषकालमें केवल एक बार २२ ग्रासका भोजन, तीसरे दिन अयाचित अर्थात् दिन-रातमें बिना माँगे प्राप्त केवल एक बार चौबीस ग्रासका भोजन तथा चौथे दिन पूरे दिन-रात पूर्ण उपवास—इस प्रकार चार दिनोंमें एक पादकृच्छ्रव्रत सम्पन्न होता है। इस पादकृच्छ्रव्रतकी तीन आवृत्ति करनेपर अर्थात् बारह दिनोंमें एक कृच्छ्रव्रत सम्पन्न होता है—

कृच्छ्रस्तु द्वादशदिनसाध्यः। तथा हि। प्रथमे दिने मध्याह्ने हविष्यैकभक्तस्य षड्विंशतिर्ग्रासा भोक्तव्याः। द्वितीयेऽहनि नक्तं द्वाविंशतिर्ग्रासाः। तृतीये

अनुवादकद्वारा प्रायश्चित्तका कथन—इसके बाद पर्षद् धर्मशास्त्रानुसार कर्ताकी शक्ति और सामर्थ्यके अनुरूप सुनिश्चित किये गये प्रायश्चित्तको अनुवादकसे कहे। तदनन्तर अनुवादक कर्तासे इस प्रकार कहे—

ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....शर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य तव अनेकजन्मार्जितपापानां समूलोन्मूलनार्थं पर्षदुपदिष्टं द्वादशाब्दादिप्रायश्चित्तानां मध्ये (अमुक) ....प्रायश्चित्तं सुवर्णादिमानेषु (अमुक) ....मानेन गोप्रत्याम्नायद्वारा प्राच्योदीच्याङ्गसहितं त्वया आचरितव्यम्। तेन तव शुद्धिर्भविष्यति। अतः त्वं सर्वेभ्यः पातकेभ्यः मुक्तो भविष्यसि। इसी बातको अनुवादक तीन बार कहे।

कर्ता—इसपर कर्ता '**ॐ भवदनुग्रहः**' ऐसा कहकर अनुवादकके द्वारा कहे गये प्रायश्चित्त-प्रत्याम्नायको स्वीकार करे तथा उन्हें प्रणाम करे।

पर्षद् तथा अनुवादकका विसर्जन—कर्ता पर्षद् तथा अनुवादकको विदा कर दे और आगेके

अयाचितस्य चतुर्विंशतिग्रासाः। चतुर्थेऽहनि निरशनम् अयं पादकृच्छ्रः। कथंचित्त्रिगुणीकृतोऽयं प्राजापत्यकृच्छ्रः। (धर्मसन्धु पू० तृ० परि०)

एक वर्षकी कालावधिमें तीस कृच्छ्र प्रायश्चित्त होते हैं। अतः अब्दप्रायश्चित्तका तात्पर्य हुआ तीस कृच्छ्र प्रायश्चित्त। इस प्रकार द्वादशाब्द प्रायश्चित्तमें ३६० कृच्छ्रव्रत, षडब्दमें १८० कृच्छ्रव्रत, त्र्यब्दमें ९०, सार्धाब्दमें ४५ तथा आब्दिकमें तीस कृच्छ्रव्रत सम्पन्न होते हैं। एक ही दिनमें उत्तमोत्तम, उत्तम, मध्यम, निकृष्ट तथा अतिनिकृष्ट—इन पक्षोंमेंसे किसी भी पक्षका आश्रयण करके किया जानेवाला प्रायश्चित्त सम्भव नहीं होगा, अतः एक कृच्छ्रव्रतके प्रत्याम्नाय (विकल्प)-के रूपमें एक गोदान करनेकी विधि शास्त्रमें उपलब्ध होनेके कारण उत्तमोत्तम द्वादशाब्द प्रायश्चित्त प्रत्याम्नायके रूपमें ३६० गोदान, षडब्द प्रत्याम्नायके रूपमें १८० गोदान, त्र्यब्द प्रत्याम्नायके रूपमें ९० गोदान, सार्धाब्द प्रत्याम्नायके रूपमें ४५ गोदान एवं आब्दिक प्रत्याम्नायके रूपमें ३० गोदान प्रायश्चित्तके प्रत्याम्नायके रूपमें निर्धारित हैं।

पर्षद्‌को क्रियाकर्ताकी शक्ति और सामर्थ्यपर भलीभाँति विचार करके उसके पापोंके निरासार्थ उपर्युक्त पक्षोंमेंसे किसी एक पक्षका निर्धारण करना चाहिये।

कार्यमें अनुवादकको सम्मिलित न करे। तदनन्तर प्रायश्चित्तानुष्ठान करे।

प्रायश्चित्ताचरणका प्रतिज्ञा-संकल्प—हाथमें त्रिकुश, अक्षत, जल लेकर प्रायश्चित्ताचरणका निम्न प्रतिज्ञासंकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहमनेकजन्मार्जितपापनिरासपूर्वकजीवच्छ्राद्धाधिकारसिद्ध्यर्थं पर्षदुपदिष्टं द्वादशाब्दादिप्रायश्चित्तानां मध्ये प्राच्योदीच्याङ्गसहितं ....प्रायश्चित्तं सुवर्णमानेन/रौप्यमानेन/राजतमानेन/ताम्रमानेन/कपर्दिकामानेन[1] गोप्रत्याम्नायद्वारा आचरिष्ये। अथ च वपनदन्तधावनभस्मादिदशविधस्नानानि च करिष्ये। ऐसा कहकर संकल्पजलादि छोड़ दे।

क्षौर

तदनन्तर निम्न मन्त्र पढ़कर सिरसे प्रारम्भकर वपन (क्षौर) कराये। यदि सधवा स्त्री हो तो केवल दो अंगुल बाल कटा ले। **'सर्वान् केशान् समुद्धृत्य च्छेदयेदङ्गुलद्वयम्। तीर्थादिषु स्वभर्तृणां स्यादेवं केशवापनम्॥'** (त्रिस्थलीसेतुसारसंग्रह पृ० ३२, तीर्थेन्दुशेखर पृ० ८)

यानि कानि च पापानि ब्रह्महत्यासमानि च। केशानाश्रित्य तिष्ठन्ति तस्मात् केशान् वपाम्यहम्॥

ऐसा कहकर शिखा, कक्ष, तथा उपस्थ[2]को छोड़कर क्षौर कराये।

---

१. गोनिष्क्रयद्रव्य—प्राजापत्यकृच्छ्रके प्रत्याम्नायके रूपमें निर्धारित गोदानके सन्दर्भमें गोनिष्क्रयद्रव्यकी व्यवस्था शास्त्रोंमें पाँच प्रकारसे उपलब्ध होती है। अपने सामर्थ्यके अनुसार किसी एक व्यवस्थाका आश्रयण करके गोनिष्क्रयका संकल्प करना चाहिये। पाँच प्रकारके मान इस प्रकार हैं—(१) सुवर्णमानसे एक गायका निष्क्रयद्रव्य=ढाई तोला सोना, (२) रौप्यमानसे एक गायका निष्क्रयद्रव्य=दो रत्ती सोना, (३) राजतमानसे एक गायका निष्क्रयद्रव्य=ढाई तोला चाँदी, (४) ताम्रमानसे एक गायका निष्क्रयद्रव्य=चाँदीका एक रुपया और (५) कपर्दिकामानसे एक गायका निष्क्रयद्रव्य=चाँदीकी एक अठन्नी। (संस्कारगणपति पृ० ५१, ५५) गोदानका तात्पर्य सवत्सा गौके दानसे है। 'चतुर्थांशेन वत्सं तु'—इस विष्णुधर्मोत्तरपुराणके वचनके अनुसार गायके मूल्यका चतुर्थांश गोनिष्क्रयद्रव्यके साथ वत्सके लिये भी करना उचित है।

२. (क) क्षौरं च शिखाकक्षोपस्थवर्जनम्। (प्रायश्चित्तेन्दुशेखर पृ० ७६), (ख) प्रेतकृत्ये राजदण्डे वपनं केशपूर्वकम्। अग्निहोत्रे च तीर्थे च वपनं श्मश्रुपूर्वकम्॥ ब्रह्महत्यादिपापेषु सशिखं वपनं स्मृतम्। वपनाभावे द्विगुणं व्रतं दक्षिणा च॥ (श्राद्धसंग्रह पृ० १२८), (ग) मुण्डयेत् सर्वगात्राणि कक्षोपस्थशिखं विना॥

दन्तधावन

क्षौरके अनन्तर जलसे बारह कुल्ले करके अपामार्ग आदि विहित काष्ठोंसे दन्तधावन करना चाहिये। हाथमें दन्तकाष्ठ लेकर उसकी निम्न प्रार्थना करे—

आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजापशुवसूनि च। ब्रह्मप्रज्ञां च मेधां च त्वन्नो देहि वनस्पते॥

दन्तधावन करके किसी दूसरे काष्ठसे जिह्वाको साफ कर ले। पुनः जलसे बारह कुल्ले करे।

भस्मादि दशविधस्नान*

दन्तधावनके अनन्तर जलमें डूबकर स्नान करके भस्म आदिसे दशविधस्नान करे—

(१) भस्मस्नान—सर्वप्रथम निम्न मन्त्रसे सिरपर भस्म लगाये—

ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानाम्। ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम्॥

निम्न मन्त्रसे मुखपर भस्म लगाये—

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥

निम्न मन्त्रसे हृदयपर भस्म लगाये—

ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्तेऽस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥

निम्न मन्त्रसे बायें हाथसे गुह्यस्थानपर भस्म लगाये—

ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः॥

निम्न मन्त्रसे बायें हाथसे पैरोंपर भस्म लगाये—

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः।
भवे भवे नातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः॥

तदनन्तर प्रणवसे सभी अंगोंपर भस्म लगाकर शुद्धजलसे स्नान कर ले। शीत आदिकी बाधा हो तो मार्जनस्नान करके आचमन कर ले।

(२) गोमयस्नान—निम्न मन्त्रसे गोमयका अभिमन्त्रण कर ले एवं थोड़े जलके साथ गोबरको दोनों हाथोंमें लगाकर भगवान् सूर्यनारायणको दिखाये—

अग्रमग्रं चरन्तीनामोषधीनां रसं वने। तासां वृषभपत्नीनां पवित्रं कायशोधनम्॥
तन्मे रोगाँश्च शोकाँश्च पापं मे हर गोमय॥

तदनन्तर निम्न मन्त्रसे दायें हाथसे सिरसे लेकर नाभितक एवं बायें हाथसे नाभिसे पैरोंतक तीन बार गोमय लगाये—

मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः।
मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित् त्वा हवामहे॥

तदनन्तर शुद्धोदकसे स्नान करे, यदि शीतबाधा हो तो मार्जनस्नान करे।

(३) मृत्तिकास्नान—निम्न मन्त्रसे भूमिकी प्रार्थना करे—

नन्दे नन्दय वासिष्ठे वसुभिः प्रजया सह। जय भार्गवदायादे प्रजानां जयमावह॥

निम्न मन्त्रसे नदीतीरसे थोड़ी मिट्टी निकाल ले—

मा वो रिषत् खनिता यस्मै चाहं खनामि वः। द्विपाच्चतुष्पादस्माकꣳ सर्वमस्त्वनातुरम्॥

निम्न मन्त्रसे मिट्टी ले ले एवं थोड़ा-सा जल लेकर हाथोंमें लगा ले—

स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथाः॥

निम्न मन्त्रसे हाथोंमें लगी हुई मिट्टीको भगवान् सूर्यनारायणको दिखाये—

नमो मित्रस्य वरुणस्य चक्षसे महो देवाय तदृतꣳ सपर्यत। दूरेदृशे देवजाताय केतवे दिवस्पुत्राय सूर्याय शꣳ सत॥

निम्न मन्त्रसे मिट्टीको अभिमन्त्रित कर ले—

अश्वक्रान्ते रथक्रान्ते विष्णुक्रान्ते वसुन्धरे। मृत्तिके हर मे पापं यन्मया दुष्कृतं कृतम्॥

निम्न मन्त्रसे मिट्टीको शरीरपर अनुलेपित करे—

उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना। शिरसा धारयिष्यामि रक्षस्व मां पदे पदे॥

तदनन्तर शुद्धोदकसे स्नान कर ले। यदि शीतबाधा हो तो मार्जनस्नान करे। तत्पश्चात् आचमन कर ले।

(४) शुद्धोदकस्नान—निम्न मन्त्रोंको पढ़ते हुए शुद्ध जलसे स्नान करे—

आपो अस्मान्मातरः शुन्धयन्तु घृतेन नो घृतप्वः पुनन्तु। विश्वꣳ हि रिप्रं प्रवहन्ति देवीरुदिदाभ्यः शुचिरा पूत एमि॥

विष्णुपादाब्जसम्भूते गङ्गे त्रिपथगामिनि। ब्रह्मद्रवेति विख्याते पापं मे हर जाह्नवि॥

(५) गोमूत्रस्नान—निम्न मन्त्रोंको पढ़ते हुए गोमूत्रसे स्नान करे—

तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥

गोशरीरात् समुद्भूतं पवित्रं क्लेशनाशनम्। स्नानार्थं प्रतिगृह्णामि गोमूत्रं मलनाशनम्॥

तदनन्तर शुद्धोदकसे स्नान कर ले, शीतबाधा हो तो मार्जन-स्नान करे और आचमन करे।

(६) गोमयस्नान—निम्न मन्त्रोंको पढ़ते हुए गोमयसे स्नान करे—

मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः।
मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित् त्वा हवामहे॥

गोमये वसते लक्ष्मीः पवित्रं सर्वमङ्गलम्। स्नानार्थं संस्कृतं शुद्धं पापं मे हर गोमय॥

तदनन्तर शुद्धोदकसे स्नान कर ले, यदि शीतबाधा हो तो मार्जनस्नान कर ले और आचमन कर ले।

(७) दुग्धस्नान—निम्न मन्त्रोंको पढ़ते हुए दूधसे स्नान करे—

आ प्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य सङ्गथे॥

पयो मिष्टं पुष्टिदं च सौरभेयं सुनिर्मलम्। शरीरस्य विशुद्ध्यर्थमघौघस्य प्रणाशकम्॥

तदनन्तर शुद्धोदकसे स्नान कर ले। यदि शीतबाधा हो तो मार्जनस्नान कर ले और आचमन कर ले।

(८) दधिस्नान—निम्न मन्त्रोंको पढ़ते हुए दहीसे स्नान करे—

दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभि नो मुखा करत्प्रण आयूꣳषि तारिषत्॥

दुग्धसारं तु माङ्गल्यं चन्द्रकान्तिसमं शुभम्। दधिसर्वगुणोपेतं स्नानार्थं गृह्यते मया॥

तदनन्तर शुद्धोदकसे स्नान कर ले। यदि शीतबाधा हो तो मार्जनस्नान कर ले और आचमन कर ले।

(९) घृतस्नान—निम्न मन्त्रोंको पढ़ते हुए घीसे स्नान करे—

घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा।

दिशः प्रदिश आदिशो विदिश उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा॥

पयसा मन्थितं हृद्यं श्लक्ष्णं तेजोविवर्द्धनम्। सर्वकल्मषनाशाय स्नास्यामि हितकाम्यया॥

तदनन्तर शुद्धोदकसे स्नान कर ले, यदि शीतबाधा हो तो मार्जनस्नान कर ले और आचमन कर ले।

(१०) कुशोदकस्नान—निम्न मन्त्रोंको पढ़ते हुए कुशोदकसे स्नान करे—

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्।

सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्येनाभि षिञ्चाम्यसौ॥

विष्णुदेहसमुत्पन्ना ब्रह्मणा स्वकरे धृताः। कुशास्तदग्रसंलग्नैर्जलैः स्नास्यामि शुद्धये॥

जलमें अवगाहन करके स्नान करे और आचमन कर ले।

अघमर्षण

तदनन्तर नदीके प्रवाहाभिमुख अथवा पूर्वाभिमुख होकर जलमें स्नान करे। जलके मध्यमें स्थित हो निम्न मन्त्र पढ़ते हुए अघमर्षण करे—

ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत। ततः समुद्रो अर्णवः। समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत॥ अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी॥ सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत्॥ दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः॥

इस मन्त्रका यथासम्भव तीन बार पाठ करे। मन्त्र स्मरण न होनेपर गायत्रीमन्त्रसे कर ले अथवा आचार्य उपर्युक्त मन्त्रका उच्चारण कर लें।

स्नानांगतर्पण

गंगादि तीर्थोंमें स्नानके पश्चात् स्नानांग-तर्पण करे। यदि प्रायश्चित्तस्नान घरमें हो रहा हो तो स्नानांगतर्पण न करे। सन्ध्याके पहले इसका करना आवश्यक माना गया है। यही कारण है कि अशौचमें भी इसका निषेध नहीं होता तथा जीवित-पितृकों (जिनके पिता जीवित हों)-के लिये भी यह विहित है। जीवित-पितृकोंके लिये केवल इसका अन्तिम अंश त्याज्य होता है, जिसका आगे कोष्ठकमें निर्देश कर दिया गया है। इसमें तिलक जलसे ही किया जाता है। बायें

हाथमें जल लेकर दाहिने अँगूठेसे ऊर्ध्वपुण्ड्र कर ले। तदनन्तर तीन अंगुलियोंसे त्रिपुण्ड्र करे।

जलांजलि देनेकी रीति यह है कि दोनों हाथोंको सटाकर अंजलि बना ले। इसमें जल भरकर गौके सींग-जितना ऊँचा उठाकर जलमें ही अंजलि छोड़ दे। इसमें देव, ऋषि, पितर एवं अपने पिता, पितामह आदिका तर्पण होता है।

(क) देवतर्पण—(इसे सपितृक भी करे) सव्य होकर पूर्वकी ओर मुँहकर अँगोछेको बायें कन्धेपर रखकर देवतीर्थसे मन्त्र पढ़-पढ़कर एक-एक जलांजलि दे—

ॐ ब्रह्मादयो देवास्तृप्यन्ताम् (१)।

ॐ भूर्देवास्तृप्यन्ताम् (१)।

ॐ भुवर्देवास्तृप्यन्ताम् (१)।

ॐ स्वर्देवास्तृप्यन्ताम् (१)।

ॐ भूर्भुवः स्वर्देवास्तृप्यन्ताम् (१)।

(ख) ऋषितर्पण—(इसे सपितृक भी करे)—उत्तरकी ओर मुँहकर निवीती होकर (जनेऊको मालाकी तरह गलेमें पहनकर) और गमछेको भी मालाकी तरह लटकाकर प्रजापतितीर्थसे दो-दो जलांजलि जलमें छोड़े।

ॐ भूः ऋषयस्तृप्यन्ताम् (२)।

हाथमें तीर्थ

ॐ भुवः ऋषयस्तृप्यन्ताम् (२)।

ॐ स्वः ऋषयस्तृप्यन्ताम् (२)।

ॐ भूर्भुवः स्वः ऋषयस्तृप्यन्ताम् (२)।

(ग) पितृतर्पण—(सपितृक इसका कुछ अंश करे)—दक्षिणकी ओर मुँहकर अपसव्य होकर (जनेऊको दाहिने कन्धे और बायें हाथके नीचे करके) गमछेको भी दाहिने कन्धेपर रखकर पितृतीर्थसे तीन-तीन जलांजलि दे। (सपितृक जनेऊको बायें हाथमें पहुँचेतक ही रखे, हाथके नीचेतक न करे)।

ॐ कव्यवाडनलादयः पितरस्तृप्यन्ताम् (३)।

ॐ चतुर्दशयमास्तृप्यन्ताम् (३)।

ॐ भूः पितरस्तृप्यन्ताम् (३)।

ॐ भुवः पितरस्तृप्यन्ताम् (३)।

ॐ स्वः पितरस्तृप्यन्ताम् (३)।

ॐ भूर्भुवः स्वः पितरस्तृप्यन्ताम् (३)।

(इसके आगेका कृत्य जीवित-पितृक न करे)

ॐ ....गोत्रा अस्मत्पितृपितामहप्रपितामहास्तृप्यन्ताम् (३)।

ॐ ……गोत्रा अस्मन्मातृपितामहीप्रपितामह्यस्तृप्यन्ताम् (३)।

ॐ ……गोत्रा अस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकास्तृप्यन्ताम् (३)।

ॐ ब्रह्मादिस्तम्बपर्यन्तं जगत्तृप्यताम् (३)।

इसके बाद तटके पास आकर जलमें स्थित होकर भूमिपर एक जलांजलि दे, जिसका मन्त्र यह है—

अग्निदग्धाश्च ये जीवा येऽप्यदग्धाः कुले मम। भूमौ दत्तेन तोयेन तृप्ता यान्तु परां गतिम्॥

जलसे बाहर आकर निम्नलिखित मन्त्रसे दाहिनी ओर शिखाको पितृतीर्थ (अँगूठे और तर्जनीके मध्यभाग)-से निचोड़े—

लतागुल्मेषु वृक्षेषु पितरो ये व्यवस्थिताः। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु मयोत्सृष्टैः शिखोदकैः॥

तर्पणके बादका कृत्य—अब उपवीती होकर (जनेऊको बायें कन्धेपर और दाहिने हाथके नीचेकर) आचमन करे और बाहर एक अंजलि जल यक्ष्माको दे।

यन्मया दूषितं तोयं शारीरैः सम्भवैर्मलैः। तस्य पापस्य शुद्ध्यर्थं यक्ष्माणं तर्पयाम्यहम्॥

तदनन्तर '**वरुणाय नमः**' इस मन्त्रका जप करके तर्पणकार्य पूर्ण करे।

तदनन्तर नया यज्ञोपवीत तथा धुले हुए वस्त्र (धोती-उत्तरीय) धारणकर आचमन करे और अपने आचारके अनुसार तिलक लगा ले। इसके पश्चात् आमान्नदानात्मक विष्णुश्राद्ध करे।

प्रायश्चित्तके पूर्वांगके कृत्य

आमान्नदानात्मक विष्णुश्राद्ध

जीवच्छ्राद्धमें अधिकार प्राप्त करनेके लिये स्वीकृत मुख्य प्रायश्चित्तके पूर्वांग तथा उत्तरांगके रूपमें आमान्नदानात्मक विष्णुश्राद्ध तथा गोनिष्क्रयद्रव्यदान एवं हवन करनेकी विधि है। सर्वप्रथम आमान्नदानात्मक विष्णुश्राद्धकी विधि दी जा रही है—

दाहिने हाथमें त्रिकुश, अक्षत, जल लेकर श्राद्धका निम्न संकल्प करे—

प्रतिज्ञासंकल्प—ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः नमः पुराणपुरुषोत्तमाय ॐ तत्सत् अद्यैतस्य अचिन्त्य-शक्तेर्महाविष्णोराज्ञया जगत्सृष्टिकर्मणि प्रवर्तमानस्य परार्धद्वयजीविनो ब्रह्मणो द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशान्तर्गते ......क्षेत्रे ......स्थाने बौद्धावतारे ......संवत्सरे ......अयने ......ऋतौ ......मासे ......पक्षे ......तिथौ ......वासरे एवं ग्रहगणगुणविशेषण-विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ......गोत्रः ......शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं करिष्यमाणजीवच्छ्राद्धाधिकारसिद्ध्यर्थमङ्गीकृत-प्रायश्चित्तपूर्वाङ्गतया विष्णुपूजनपूर्वकं आमान्नदानात्मकं विष्णुश्राद्धं करिष्ये। ऐसा कहकर संकल्पजल छोड़ दे।

तदनन्तर यथालब्धोपचारोंसे शालग्रामशिलाका पूजन करे और फिर आठ ब्राह्मणोंके भोजनके लिये पर्याप्त आमान्नको चार भागोंमें विभाजित करके चार ब्राह्मणोंको देनेके लिये हाथमें त्रिकुश, अक्षत, जल लेकर आमान्नदानात्मक विष्णुश्राद्धका निम्न संकल्प करना चाहिये—

आमान्न-निष्क्रयका संकल्प—**ॐ अद्य पूर्वोच्चारितग्रहगणगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं करिष्यमाणजीवच्छ्राद्धाधिकारसिद्ध्यर्थमङ्गीकृतप्रायश्चित्तपूर्वाङ्गभूतविष्णुश्राद्धसम्पत्तये श्रीविष्णूद्देशेन युग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्तामान्नचतुष्टयं (निष्क्रयभूतं द्रव्यं) नानानामगोत्रेभ्यो चतुर्भ्यो ब्राह्मणेभ्यो यथाभागं विभज्य यथाकाले दातुमुत्सृज्ये। तेन पापापहा श्रीमहाविष्णुः प्रीयताम्।** ऐसा कहकर आमान्न अथवा निष्क्रयद्रव्य चार भागोंमें विभक्तकर ब्राह्मणोंको दे दे।

गोनिष्क्रयद्रव्यदान

जीवच्छ्राद्धमें अधिकार प्राप्त करनेके लिये स्वीकृत मुख्य प्रायश्चित्तके पूर्वांग तथा उत्तरांगके रूपमें गोदान भी करनेकी विधि है। अतः यथाशक्ति गोनिष्क्रयद्रव्यदान करना चाहिये।

संकल्प—हाथमें त्रिकुश, अक्षत, जल तथा गोनिष्क्रयद्रव्य लेकर निम्न संकल्प करे—

ॐ अद्य पूर्वोच्चारितग्रहगणगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहम् जीवच्छ्राद्धाधिकारसिद्ध्यर्थम् अङ्गीकृतप्रायश्चित्तपूर्वाङ्गतया विहितगोदानप्रत्याम्नायत्वेन यथाशक्तिगोनिष्क्रयभूतं द्रव्यं ....गोत्राय ....शर्मणे ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे। कहकर संकल्पजल छोड़ दे और निष्क्रयद्रव्य ब्राह्मणको दे दे। यदि बादमें देना हो तो '**दातुमुत्सृज्ये**' बोले।

प्रार्थना—तदनन्तर निम्न मन्त्रसे प्रार्थना करे—

गावो ममाग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः। गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम्॥

होमकर्म

मुख्य प्रायश्चित्तके पूर्वांग तथा उत्तरांगके रूपमें हवन भी किया जाता है। सर्वप्रथम घृतके द्वारा चार व्याहृतिमन्त्रोंकी सात बार आवृत्ति करके इस प्रकार २८ आहुतियोंद्वारा हवन करना चाहिये।

प्रतिज्ञासंकल्प—हवनसे पूर्व हाथमें त्रिकुश, अक्षत तथा जल लेकर बोले—

ॐ अद्य ……गोत्रः ……शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं जीवच्छ्राद्धाधिकारसिध्यर्थमङ्गीकृतप्रायश्चित्तपूर्वाङ्गतया चतुर्णां व्याहृतीनां सप्तावृत्या सम्पद्यमानाभिरष्टाविंशतिभिराहुतिभिराज्येन होमं करिष्ये। तदङ्गतया पञ्चभूसंस्कारपूर्वक-विटनामाग्नेः प्रतिष्ठापनं करिष्ये। हाथका जल छोड़ दे। तदनन्तर वेदीका पंचभूसंस्कार करके विट नामक अग्निकी स्थापना करे और फिर ब्रह्माका वरण करे।

पंचभूसंस्कार—संकल्प करनेके बाद वेदीके निम्नलिखित पाँच संस्कार करने चाहिये—

(१) परिसमूहन—तीन कुशोंसे वेदी अथवा ताम्रकुण्डका दक्षिणसे उत्तरकी ओर परिमार्जन करे तथा उन कुशोंको ईशान दिशामें फेंक दे। (**दर्भैः परिसमुह्य**)। **(२) उपलेपन**—वेदीको गोबर और जलसे लीप दे (**गोमयोदकेनोपलिप्य**)। **(३) रेखाकरण**—स्रुवा अथवा कुशमूलसे पश्चिमसे पूर्वकी ओर प्रादेशमात्र (दस अंगुल लम्बी) तीन रेखाएँ दक्षिणसे प्रारम्भकर उत्तरकी ओर खींचे (**स्रुवमूलेनोल्लिख्य**)। **(४) उद्धरण**—उल्लेखनक्रमसे दक्षिण अनामिका और अँगूठेसे रेखाओंपरसे मिट्टी निकालकर बायें हाथमें तीन बार रखकर पुनः सब मिट्टी दाहिने हाथमें रख ले और उसे उत्तरकी ओर फेंक दे (**अनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां मृदमुद्धृत्य**)।

(५) अभ्युक्षण—पुनः जलसे कुण्ड या स्थण्डिलको सींच दे (**उदकेनाभ्युक्ष्य**)।

अग्निस्थापन—पंचभूसंस्कार करके पवित्र अग्नि अपने दक्षिणकी ओर रखे और उस अग्निसे थोड़ा क्रव्याद-अंश निकालकर नैर्ऋत्यकोणमें रख दे। पुनः सामने रखी पवित्र अग्निको कुण्ड या स्थण्डिलपर निम्न मन्त्रसे स्थापित करे—

ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे। देवाँ२ आ सादयादिह।

कुशास्तरण—अग्निस्थापनके पश्चात् कुशोंसे परिस्तरण करे। कुण्ड या स्थण्डिलके पूर्व उत्तराग्र तीन कुश या दूर्वा रखे। दक्षिणभागमें पूर्वाग्र तीन कुश या दूर्वा रखे। पश्चिमभागमें उत्तराग्र तीन कुश या दूर्वा रखे। उत्तरभागमें पूर्वाग्र तीन कुश या दूर्वा रखे। अग्निको बाँसकी नलीसे प्रज्वलित करे। इसके बाद अग्निका ध्यान करे और '**ॐ विटनामाग्नये नमः, सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि**' कहकर गन्ध, अक्षत, पुष्प चढ़ाये तथा हाथ जोड़ ले।

ब्रह्मावरणसंकल्प—हाथमें त्रिकुश, अक्षत, जल तथा वरणद्रव्य लेकर ब्रह्माके वरणका संकल्प करे—

ॐ अद्य पूर्वोच्चारितग्रहगणगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं जीवच्छ्राद्धाधिकारसिद्ध्यर्थमङ्गीकृतप्रायश्चित्तपूर्वाङ्गतयाविहितहवनकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्मकर्तृत्वेन एभिर्वरणद्रव्यैः ....गोत्रं ....शर्माणं ब्रह्मत्वेन भवन्तं वृणे। कहकर संकल्पजल तथा वरणद्रव्य ब्रह्माके हाथमें दे दे।

ब्रह्मा '**वृतोऽस्मि**' बोले।

आहुतिप्रदान

तदनन्तर स्रुवामें घृत लेकर निम्न आहुतियाँ प्रदान करे—

आघार होम—ब्रह्मा कुशसे कर्ताका स्पर्श किये रहें। इसी स्थितिमें घृतसे आघार एवं आज्यहोमकी आहुतियाँ दे—**(१) ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम।** मनमें बोलकर घीकी आहुति दे और स्रुवामें बचे हुए घीकी एक बूँद प्रोक्षणीपात्रमें डाले।

(२) ॐ इन्द्राय स्वाहा, इदमिन्द्राय न मम। मनमें बोलकर घीकी आहुति दे और स्रुवामें बचे हुए घीकी एक बूँद प्रोक्षणीपात्रमें डाले।

आज्यहोम—**(३) ॐ अग्नये स्वाहा, इदमग्नये न मम।** बोलकर घीकी आहुति दे और स्रुवामें बचे हुए घीकी एक बूँद प्रोक्षणीपात्रमें डाले।

(४) ॐ सोमाय स्वाहा, इदं सोमाय न मम। बोलकर घीकी आहुति दे और स्रुवामें बचे हुए घीकी एक बूँद प्रोक्षणीपात्रमें डाले।

व्याहृतिहोम

आघाराज्याहुतिके बाद स्पर्श किये जानेवाले कुशको ब्रह्मा हटा लें। कर्ता स्रुवामें घी लेकर निम्न व्याहृतिहोम करे—

(१) ॐ भूः स्वाहा, इदमग्नये न मम।

(२) ॐ भुवः स्वाहा, इदं वायवे न मम।

(३) ॐ स्वः स्वाहा, इदं सूर्याय न मम।

(४) ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम।

इस प्रकार चारों आहुतियोंकी सात आवृत्ति करनेसे अट्ठाईस आहुतियाँ पूर्ण होती हैं।

पंचगव्य[१] तथा ब्रह्मकूर्चका निर्माण

गायत्रीमन्त्रसे एक पल[२] गोमूत्र, **ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोप ह्वये श्रियम्॥** मन्त्रसे अंगुष्ठप्रमाणका आधा गोमय, **ॐ आ प्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य सङ्गथे॥** मन्त्रसे सात पल दूध, **ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णो रश्वस्य वाजिनः। सुरभि नो मुखा करत्प्रण आयूᳬषि तारिषत्॥** से तीन पल दधि, **ॐ तेजोऽसि शुक्रममृतमायुष्पा आयुर्मे पाहि। देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यामा ददे॥** से एक पल घृत और **ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्॥** अथवा **आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे॥** से एक पल कुशोदक किसी पत्रपुटक या पात्रमें लेकर यज्ञीय काष्ठद्वारा प्रणवमन्त्रसे उसका आलोडन करे। प्रणवमन्त्रसे ही मन्थन करे तथा प्रणवमन्त्रसे ही अभिमन्त्रण करे। इसी प्रकार सात हरे अखण्ड कुशोंसे ब्रह्मकूर्च भी बना ले।

---

१. मूत्रमेकपलं दद्यादङ्गुष्ठार्धं तु गोमयम्। क्षीरं सप्तपलं दद्याद्दधित्रिपलमुच्यते। घृतमेकपलं दद्यात्पलमेकं कुशोदकम्॥ (गोमूत्र एक पल, आधे अँगूठेभर गोमय, दूध सात पल, दही तीन पल, घी एक पल तथा एक पल कुशोदक मिलाकर पंचगव्य बनाना चाहिये।)

२. एक पल=चार तोला।

पंचगव्यहोम

तदनन्तर पंचगव्यसे निम्न मन्त्रोंसे एक-एक आहुति इस प्रकार प्रदान करे। प्रत्येक आहुतिके अनन्तर हुतशेषको प्रणीतापात्रमें छोड़ता जाय—

(१) ॐ इरावती धेनुमती हि भूतꣳ सूयवसिनी मनवे दशस्या। व्यस्कभ्ना रोदसी विष्णवेते दाधर्थ पृथिवीमभितो मयूखैः स्वाहा॥ इदं पृथिव्यै न मम।

(२) ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम्। समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा॥ इदं विष्णवे न मम॥

(३) ॐ मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः। मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे॥ इदं रुद्राय न मम।

(४) ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च वि वः स्वाहा॥ इदं ब्रह्मणे न मम।*

(५) अग्नये स्वाहा, इदमग्नये न मम॥

(६) सोमाय स्वाहा, इदं सोमाय न मम।

(७) तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् स्वाहा॥ इदं सवित्रे न मम।

(८) ॐ स्वाहा॥ इदं परमेष्ठिने न मम।

---

* ब्रह्मस्थाने शं नो देवीति मन्त्रेण अद्भ्य० इति केचित्। (प्रायश्चित्तेन्दुशेखर पृ० ७९)

(९) ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा॥ इदं प्रजापतये न मम।

(१०) तदनन्तर ब्रह्मा कुशासे कर्ताका स्पर्श कर लें। **ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा॥ इदमग्नये स्विष्टकृते न मम॥**

नवाहुति

इसके बाद निम्न मन्त्रोंसे नौ आहुतियाँ घीसे दे। प्रत्येक आहुतिके अनन्तर हुतशेषको प्रणीतापात्रमें छोड़ता जाय—

(१) ॐ भूः स्वाहा, इदमग्नये न मम।

(२) ॐ भुवः स्वाहा, इदं वायवे न मम।

(३) ॐ स्वः स्वाहा, इदं सूर्याय न मम।

(४) ॐ त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाꣳसि प्र मुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा। इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम।

(५) ॐ स त्वं नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ। अव यक्ष्व नो वरुणꣳ रराणो वीहि मृडीकꣳ सुहवो न एधि स्वाहा॥ इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम।

(६) ॐ अयाश्चाग्ने ऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्त्वमया असि। अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषजꣳ स्वाहा॥ इदमग्नये अयसे न मम।

(७) ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः। तेभिर्नो ऽअद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा॥ इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च, न मम॥

(८) ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमꣳ श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा॥ इदं वरुणायादित्यायादितये, न मम॥

(९) ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये, न मम॥

तदनन्तर संस्रवप्राशन करे और आचमन कर ले। हाथमें त्रिकुश, अक्षत तथा जल लेकर पूर्णपात्रदानका निम्न संकल्प करे—

पूर्णपात्रदान—ॐ अद्य पूर्वोच्चारितग्रहगणगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं जीवच्छ्राद्धाधिकारसिद्ध्यर्थमङ्गीकृतप्रायश्चित्तपूर्वाङ्गतयाविहितप्रायश्चित्ताङ्गहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षण-रूपब्रह्मकर्मप्रतिष्ठार्थं इदं पूर्णपात्रं सदक्षिणाकं ....गोत्राय ....शर्मणे ब्रह्मणे भवते सम्प्रददे। ब्रह्माको दक्षिणासहित पूर्णपात्रका दान कर दे।

प्रणीतोदकसे मार्जन कर ले और प्रणीतापात्रको अग्निके पश्चिमकी ओर उलटकर रख दे।

पंचगव्यप्राशन

हवनसे बचा हुआ पंचगव्य निम्न मन्त्र पढ़कर पी ले—

यत्त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके। प्राशनात् पञ्चगव्यस्य दहत्यग्निरिवेन्धनम्॥

तदनन्तर आचमन कर ले।

प्रधान प्रायश्चित्तस्वरूप गोनिष्क्रयद्रव्यदानका संकल्प

हाथमें त्रिकुश, अक्षत, जल तथा गोनिष्क्रयद्रव्य लेकर निम्न संकल्प करे—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः नमः पुराणपुरुषोत्तमाय ॐ तत्सत् अद्यैतस्य अचिन्त्यशक्तेर्महाविष्णोराज्ञया जगत्सृष्टिकर्मणि प्रवर्तमानस्य परार्धद्वयजीविनो ब्रह्मणो द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशान्तर्गते ''''क्षेत्रे ''''स्थाने बौद्धावतारे ''''संवत्सरे ''''अयने ''''ऋतौ ''''मासे ''''पक्षे ''''तिथौ ''''वासरे एवं ग्रहगणगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ''''शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं जीवच्छ्राद्धाधिकारसिद्ध्यर्थमनेकजन्मार्जितज्ञाताज्ञातकामाकामसकृदसकृत्कृतकायिक-वाचिकमानसिकसांसर्गिकस्पृष्टास्पृष्टभुक्ताभुक्तपीतापीतसकलपातकातिपातकोपपातकलघुपातकसङ्करीकरण-मलिनीकरणापात्रीकरणजातिभ्रंशकरप्रकीर्णपातकानां मध्ये सम्भावितानां पापानां निरासार्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं पर्षदुपदिष्टं गोनिष्क्रयद्रव्यदानप्रत्याम्नायद्वाराङ्गीकृत (द्वादशाब्द/षडब्द/त्र्यब्द/सार्द्धाब्द/अब्द इनमेंसे एकका उच्चारण करना चाहिये) **प्रायश्चित्तस्य संसिध्यर्थं (सुवर्णमानेन/रौप्यमानेन/राजतमानेन/ताम्रमानेन/कपर्दिकामानेन** इनमें भी एकका उच्चारण करे) **यथासंख्याकं गोनिष्क्रयभूतं द्रव्यं* नानानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो यथाकाले दातुमुत्सृज्ये।**— कहकर द्रव्यादि दोना आदि किसी पत्रपुटकमें रखकर यथासमय ब्राह्मणोंको विभक्त करके दे दे।

प्रार्थना—तदनन्तर निम्न मन्त्रसे प्रार्थना करे—

गावो ममाग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः। गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम्॥

* गोनिष्क्रयद्रव्यकी व्यवस्था पृ०सं० ३३में दी गयी है, वहाँ देख सकते हैं।

प्रायश्चित्तके उत्तरांगके कृत्य

इस प्रकार प्रायश्चित्तका पूर्वांग सम्पन्नकर हाथमें त्रिकुश, अक्षत, जल लेकर उत्तरांग-सम्पादनके लिये संकल्प करे—

प्रतिज्ञासंकल्प—ॐ अद्य पूर्वोच्चारितग्रहगणगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं आचीर्णस्य (अमुक) ....प्रायश्चित्तस्योत्तराङ्गानि करिष्ये—कहकर संकल्पजल छोड़ दे। तदनन्तर पूर्वकी भाँति निम्न रीतिसे व्याहृतिहोम करे—

व्याहृतिहोम

हाथमें त्रिकुश, अक्षत तथा जल लेकर बोले—**ॐ अद्य ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं अङ्गीकृतप्रायश्चित्तस्य उत्तराङ्गत्वेन व्याहृतिहोमं करिष्ये**—कहकर हाथका संकल्पजल छोड़ दे। तदनन्तर घृतके द्वारा व्याहृतिमन्त्रोंसे पूर्वकी भाँति २८ आहुतियोंद्वारा हवन करे—

ॐ भूः स्वाहा, इदमग्नये न मम।

ॐ भुवः स्वाहा, इदं वायवे न मम।

ॐ स्वः स्वाहा, इदं सूर्याय न मम।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम।

इस प्रकार चार आहुतियाँ दे। इन चारों आहुतियोंकी सात आवृत्ति करनेसे अट्ठाईसकी संख्या पूर्ण होती है।

आमान्नदानात्मक विष्णुश्राद्ध

तदनन्तर अंगीकृतप्रायश्चित्तके उत्तरांगके रूपमें पूर्वकी भाँति आमान्नदानात्मक विष्णुश्राद्ध करे। श्राद्धसे पूर्व यथालब्धोपचार विष्णुपूजन कर ले।

आमान्ननिष्क्रयका संकल्प—हाथमें त्रिकुश, अक्षत, जल लेकर संकल्प करे—

ॐ अद्य पूर्वोच्चारितग्रहगणगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ""गोत्रः ""शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं जीवच्छ्राद्धाधिकारसिद्ध्यर्थमङ्गीकृतप्रायश्चित्तस्योत्तराङ्गतयाविहितविष्णुश्राद्धसम्पत्तये श्रीविष्णूद्देशेन युग्मब्राह्मणभोजन-पर्याप्तमामान्नचतुष्टयनिष्क्रयभूतं द्रव्यं नानानामगोत्रेभ्यः चतुर्भ्यो ब्राह्मणेभ्यो यथाभागं विभज्य दातुमुत्सृज्ये। तेन पापापहा श्रीमहाविष्णुः प्रीयताम् कहकर हाथका संकल्पजल गिरा दे और निष्क्रयद्रव्य चार ब्राह्मणोंमें विभक्त कर दे।

गोनिष्क्रयद्रव्यदान

हाथमें त्रिकुश, अक्षत, जल तथा गोनिष्क्रयद्रव्य लेकर निम्न संकल्प करे—**ॐ पूर्वोच्चारितग्रहगणगुणविशेषण-विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ""गोत्रः ""शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं जीवच्छ्राद्धाधिकारसिद्ध्यर्थमङ्गीकृतप्रायश्चित्तस्योत्तराङ्गतया**

विहितगोदानप्रत्याम्नायत्वेन यथाशक्ति गोनिष्क्रयभूतं द्रव्यं ....गोत्राय ....शर्मणे ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे।

प्रार्थना—निम्न मन्त्रसे प्रार्थना करे—

गावो ममाग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः। गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम्॥

ब्राह्मणभोजन—तदनन्तर बारह ब्राह्मणोंको भोजन करानेके लिये संकल्प करे।

ब्राह्मणभोजनका संकल्प—हाथमें त्रिकुश, अक्षत तथा जल लेकर निम्न संकल्प करे—

ॐ पूर्वोच्चारितग्रहगणगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं जीवच्छ्राद्धाधिकार सिद्ध्यर्थं कृतस्य सर्वप्रायश्चित्तकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं शास्त्रोक्तफलप्राप्तिपूर्वकभगवत्प्रीत्यर्थं च द्वादशसंख्याकान् ब्राह्मणान् यथाकाले भोजयिष्ये। तेन पापापहा श्रीमहाविष्णुः प्रीयताम्, न मम। ऐसा कहकर हाथका संकल्पजल छोड़ दे।

॥ प्रायश्चित्तप्रयोग पूर्ण हुआ॥

दस महादान

प्रायश्चित्तकर्मके अनन्तर जीवच्छ्राद्धकर्ताको और्ध्वदैहिक दान करने चाहिये। इन दोनोंसे जीवको परलोकमें सुख प्राप्त होता है। और्ध्वदैहिक दानोंमें दस महादान और आठ महादान—इन दोनोंका महत्त्व है। इसलिये इनके नाम और विधान दिये जाते हैं—

	१. दस महादान[1]			२. आठ महादान[2]	
क्र०सं०	वस्तु-नाम	देवता	क्र०सं०	वस्तु-नाम	देवता
१.	सवत्सा नयी गाय	रुद्र	१.	तिल	प्रजापति
२.	भूमि	विष्णु	२.	लोहा	महाभैरव
३.	तिल	प्रजापति	३.	स्वर्ण	अग्नि
४.	स्वर्ण	अग्नि	४.	कपास	वनस्पति
५.	घृत	मृत्युंजय	५.	लवण	सोम

१. (क) गोभूतिलहिरण्याज्यं वासो धान्यं गुडानि च। रौप्यं लवणमित्याहुर्दशदानान्यनुक्रमात्॥ (निर्णयसिन्धुमें मदनरत्नका वचन)

(ख) 'महादानेषु दत्तेषु गतस्तत्र सुखी भवेत्।' (ग०पु०, प्रेतखण्ड १९।३)

२. तिलं लौहं हिरण्यञ्च कार्पासं लवणं तथा। सप्तधान्यं क्षितिर्गाव एकैकं पावनं स्मृतम्॥ (ग०पु० २।४।३९)

६.	वस्त्र	बृहस्पति	६.	सप्तधान्य*	प्रजापति
७.	धान्य	प्रजापति	७.	भूमि	विष्णु
८.	गुड़	सोम	८.	गाय	रुद्र
९.	चाँदी	चन्द्र			
१०.	लवण	सोम			

एक साथ दस महादानका संकल्प

एक साथ दस वस्तुओं (सवत्सा गौ, भूमि, तिल, स्वर्ण, घृत, वस्त्र, धान्य, गुड़, चाँदी तथा लवण)–के महादानोंका संकल्प यहाँ दिया जा रहा है।

दायें हाथमें त्रिकुश, जल, अक्षत तथा पुष्प लेकर संकल्प करे—

प्रतिज्ञा-संकल्प—ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः नमः परमात्मने पुरुषोत्तमाय ॐ तत्सत् अद्य ब्रह्मणो द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे ....क्षेत्रे (यदि काशी हो तो **अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रे आनन्दवने गौरीमुखे त्रिकण्टकविराजिते महाश्मशाने**

१. (क) जौ, धान, तिल, कँगनी, मूँग, चना, साँवा—ये सप्तधान्य कहलाते हैं—

यवधान्यतिलाः कङ्गुः मुद्गचणकश्यामकाः । एतानि सप्तधान्यानि सर्वकार्येषु योजयेत्॥

(ख) मतान्तरसे जौ, गेहूँ, धान, तिल, टाँगुन, साँवा तथा चना—ये सप्तधान्य कहलाते हैं—

यवगोधूमधान्यानि तिलाः कङ्कुस्तथैव च। श्यामाकं चीनकञ्चैव सप्तधान्यमुदाहृतम्॥ (षट्त्रिंशन्मत)

भगवत्या उत्तरवाहिन्या भागीरथ्या गङ्गाया वामभागे) ....संवत्सरे उत्तरायणे/दक्षिणायने ....ऋतौ ....मासे ....पक्षे ....तिथौ ....वासरे ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/ गुप्तोऽहम् आत्मनः जीवच्छ्राद्धे शास्त्रोक्तफलप्राप्तिपूर्वकश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं दशमहादानान्तर्गतपरिगणितानां गोभूतिलसुवर्णघृतवस्त्रधान्यगुडरजतलवणसंज्ञकानां वस्तूनां मध्ये यथासम्भवं विद्यमानवस्तूनामविद्यमानवस्तुनिष्क्रयद्रव्यस्य च दानं करिष्ये। हाथका संकल्पजल छोड़ दे।

वरण-संकल्प—दायें हाथमें त्रिकुश, जल, अक्षत, पुष्प तथा वरण-द्रव्य लेकर संकल्प करे—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं शास्त्रोक्तफलप्राप्ति-पूर्वकश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं दशमहादानान्तर्गतपरिगणितानां गोभूतिलसुवर्णघृतवस्त्रधान्यगुडरजतलवणसंज्ञकानां वस्तूनां मध्ये यथासम्भवं विद्यमानवस्तुदानस्य अविद्यमानवस्तुनिष्क्रयद्रव्यदानस्य च प्रतिग्रहीतृत्वेन ....गोत्रं ....शर्माणं भवन्तं वृणे। संकल्पजल तथा वरण-द्रव्य ब्राह्मणको दे दे।

ब्राह्मण '**वृतोऽस्मि**' बोले।

दानका संकल्प*—दायें हाथमें त्रिकुश, जल, अक्षत लेकर संकल्प करे—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं शास्त्रोक्तफल-प्राप्तिपूर्वकश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं दशमहादानान्तर्गतरुद्रदैवत्यां गाम्/गोनिष्क्रयद्रव्यम्, विष्णुदैवत्यां भूमिम्/भूमिनिष्क्रय-द्रव्यम्, प्रजापतिदैवतं तिलम्/तिलनिष्क्रयद्रव्यम्, अग्निदैवतं स्वर्णम्/स्वर्णनिष्क्रयद्रव्यम्, मृत्युञ्जयदैवतं घृतम्/

* जिस वस्तुका निष्क्रय दिया जाय, उसके लिये संकल्पमें इस प्रकार कहना चाहिये। यथा—'**रुद्रदैवतं गोनिष्क्रयद्रव्यम्।**'

घृतनिष्क्रयद्रव्यम्, बृहस्पतिदैवतं वस्त्रम्/वस्त्रनिष्क्रयद्रव्यम्, प्रजापतिदैवतं धान्यम्/धान्यनिष्क्रयद्रव्यम्, सोमदैवतं गुडम्/गुडनिष्क्रयद्रव्यम्, चन्द्रदैवतं रजतम्/रजतनिष्क्रयद्रव्यम्, सोमदैवतं लवणम्/लवणनिष्क्रयद्रव्यं ....गोत्राय ....शर्मणे दशमहादानप्रतिग्रहीतृत्वेन वृताय ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे। संकल्पका जल छोड़ दे।

ब्राह्मण '**ॐ स्वस्ति**' यह प्रतिवचन बोले।

दानसांगताका संकल्प—दायें हाथमें त्रिकुश, जल, अक्षत तथा दक्षिणा लेकर संकल्प करे—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं शास्त्रोक्तफलप्राप्तिपूर्वक-श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं दशमहादानान्तर्गतपरिगणितानां गोभूतिलसुवर्णघृतवस्त्रधान्यगुडरजतलवणसंज्ञकानां वस्तूनां मध्ये यथासम्भवं विद्यमानवस्तुदानस्य अविद्यमानवस्तुनिष्क्रयद्रव्यदानस्य च प्रतिष्ठासाङ्गतासिद्ध्यर्थं इमां दक्षिणां ....गोत्राय ....शर्मणे ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे—ऐसा कहकर दक्षिणा ब्राह्मणको निवेदित कर दे।

स्मरण और समर्पण—

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुध्याऽऽत्मना वानुसृतस्वभावात्।
करोमि यद्यत्सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पये तत्॥

ॐ श्रीविष्णवे नमः। ॐ श्रीविष्णवे नमः। ॐ श्रीविष्णवे नमः।

श्रीविष्णुस्मरणात् परिपूर्णताऽस्तु। ॐ तत्सत् श्रीकृष्णार्पणमस्तु।

दस महादानकी वस्तुओंके दानकी पृथक्-पृथक् विधि

जो व्यक्ति एक-एक वस्तुका दान एक-एक ब्राह्मणको करना चाहें, उनके लिये प्रत्येक वस्तुके दानका निम्नलिखित प्रकारसे अलग-अलग संकल्प दिया जा रहा है—

१. गोदान*

प्रतिज्ञा-संकल्प—दायें हाथमें त्रिकुश, अक्षत, जल लेकर संकल्प करे—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः नमः परमात्मने पुरुषोत्तमाय ॐ तत्सत् अद्य ब्रह्मणो द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे ....क्षेत्रे (यदि काशी हो तो **अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रे आनन्दवने गौरीमुखे त्रिकण्टकविराजते महाश्मशाने भगवत्या उत्तरवाहिन्या भागीरथ्या गङ्गाया वामभागे) ....संवत्सरे उत्तरायणे/दक्षिणायने ....ऋतौ ....मासे ....पक्षे ....तिथौ ....वासरे ....गोत्रः ....शर्मा/ वर्मा/गुप्तोऽहं जीवच्छ्राद्धे शास्त्रोक्तफलप्राप्तिपूर्वकश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं दशमहादानान्तर्गतं परिगणितं रुद्रदेवताकगवी-दानम्** (अथवा) **गोनिष्क्रयद्रव्यदानं करिष्ये। तदङ्गत्वेन ब्राह्मणवरणं ब्राह्मणपूजनादिकं च करिष्ये।** संकल्पका जल आदि छोड़ दे।

वरण-संकल्प—दायें हाथमें त्रिकुश, अक्षत, जल और वरण-द्रव्य लेकर संकल्प करे—

* विस्तारपूर्वक गोदानकी पूरी विधि गीताप्रेसद्वारा प्रकाशित 'अन्त्यकर्म-श्राद्धप्रकाश' पुस्तकमें पृ०सं० ७४ में देखें।

ॐ अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं गोदानकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः ....गोत्रं ....शर्माणं ब्राह्मणं भवन्तं गोदानप्रतिग्रहीतृत्वेन/गोनिष्क्रयद्रव्यप्रतिग्रहीतृत्वेन वृणे। संकल्पका जल और वरण-द्रव्य ब्राह्मणको दे दे।

ब्राह्मण—'वृतोऽस्मि' बोले।

ब्राह्मणपूजन तथा गोपूजन—ब्राह्मण तथा (यदि प्रत्यक्ष गौ हो तो) गोका प्रोक्षणकर पूजन कर ले। अथवा **'सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि'** कहकर गोनिष्क्रयद्रव्यका पूजन कर ले।

दान-संकल्प—यदि प्रत्यक्ष गौ हो तो दाहिने हाथमें गोपुच्छ, त्रिकुश, अक्षत, जल लेकर संकल्प करे—

ॐ अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं रुद्रदैवतां गाम्/गोनिष्क्रयद्रव्यम् ....गोत्राय ....शर्मणे ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे ॐ तत्सत्, न मम। कहकर संकल्पजल एवं गोपुच्छ ब्राह्मणके हाथमें पकड़वा दे अथवा गोनिष्क्रयद्रव्य ब्राह्मणको दे दे।

गो-प्रार्थना—हाथ जोड़कर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए गायकी प्रार्थना करे—

नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एव च। नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नमः॥

गावो ममाग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः। गावो मे सर्वतः सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम्॥

ब्राह्मण-वचन—ग्रहीता ब्राह्मण **'ॐ स्वस्ति'** प्रतिवचन कहे।

सांगता-दक्षिणा-संकल्प—दायें हाथमें त्रिकुश, अक्षत, जल तथा दक्षिणा लेकर संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं गोदानस्य/गोनिष्क्रयद्रव्यदानस्य साङ्गताप्रतिष्ठासंसिद्ध्यर्थं इमां दक्षिणां ....गोत्राय ....शर्मणे ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे। ॐ तत्सत्, न मम। कहकर संकल्पका जल छोड़ दे तथा दक्षिणा ब्राह्मणके लिये निवेदित करे।

विष्णुस्मरण—भगवान्का नाम-स्मरण कर ले।

ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः।

२. भूमिदान

जिस भूमिका दान देना है, उस भूमिके मृत्तिकापिण्ड (ढेले)-को अपने आगे पात्रमें रख ले। यदि मृत्तिकापिण्ड न लाया गया हो तो अक्षतको ही किसी पात्रमें रख ले। यदि भूमिका निष्क्रय-द्रव्य देना हो तो निष्क्रय-द्रव्य अपने सामने रख ले। इसके बाद दायें हाथमें त्रिकुश, जल, अक्षत लेकर संकल्प करे—

प्रतिज्ञा-संकल्प—ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/ गुप्तोऽहं जीवच्छ्राद्धे महापातकोपपातकादिसर्वविधपातकानां निरासार्थं श्रुतिस्मृतिपुराणेतिहासकल्पोक्तफलप्राप्त्यर्थं श्रीभगवत्प्रीत्यर्थं विष्णुलोकप्राप्त्यर्थं च दशमहादानान्तर्गतपरिगणितं भूमिदानम्/भूमिनिष्क्रयद्रव्यदानं करिष्ये। तदङ्गत्वेन ब्राह्मणवरणं भूब्राह्मणपूजनादिकं च करिष्ये। संकल्पका जल छोड़ दे।

वरण-संकल्प—ब्राह्मणको उत्तराभिमुख बैठाकर दायें हाथमें त्रिकुश, जल, अक्षत, पुष्प और वरण-द्रव्य लेकर संकल्प करे—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं भूमिदानकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः ....गोत्रं ....शर्माणं ब्राह्मणं भवन्तं भूमिदानप्रतिग्रहीतृत्वेन/भूमिनिष्क्रयद्रव्यप्रतिग्रहीतृत्वेन वृणे। ऐसा संकल्पकर वरण-द्रव्य ब्राह्मणके हाथमें दे दे।

ब्राह्मण-वचन—वरण-द्रव्य प्राप्तकर ब्राह्मण बोले—'**वृतोऽस्मि।**'

ब्राह्मण-पूजन—गन्ध, अक्षत, पुष्प तथा दक्षिणासे ब्राह्मणकी पूजा करे।

भूमि-पूजन—इसके बाद अपने आगे रखे हुए मृत्पिण्ड, अक्षतपुंज या निष्क्रय-द्रव्यकी पूजा करे—

भूम्यै नमः/भूमिनिष्क्रयद्रव्याय नमः, प्रोक्षणं समर्पयामि (जलका छींटा दे), **चन्दनं समर्पयामि** (चन्दन चढ़ाये), **अक्षतान् समर्पयामि** (अक्षत चढ़ाये), **मालां समर्पयामि** (पुष्प तथा पुष्पमाला चढ़ाये)।

भूमि-प्रार्थना—इस मन्त्रसे भूमिकी प्रार्थना करे—

सर्वभूताश्रया भूमिर्वराहेण समुद्धृता। अनन्तसस्यफलदा ह्यतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

दान-संकल्प—दायें हाथमें त्रिकुश, जल, अक्षत लेकर भूमिदानका संकल्प करे—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं सर्वविधपातकानां निरासार्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं विष्णुलोकप्राप्त्यर्थं च सुपूजितां विष्णुदैवतां भूमिम्/भूनिष्क्रयद्रव्यम् ....गोत्राय ....शर्मणे ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे।

इस तरह भूमिदानका संकल्पकर निम्न मन्त्र बोलते हुए संकल्प-जल ब्राह्मणके हाथमें दे दे—

यथा भूमिप्रदानस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम्। दानान्यन्यानि मे शान्तिर्भूमिदानाद् भवत्विह॥

ब्राह्मण-वचन—भूमिदान लेकर ब्राह्मण बोले—'**ॐ स्वस्ति।**'

सांगता-दक्षिणा-संकल्प—दायें हाथमें त्रिकुश, जल, दक्षिणा आदि लेकर दानकी सांगता-सिद्धिके लिये संकल्प करे—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं भूमिदानस्य/भूनिष्क्रयद्रव्यदानस्य साङ्गताप्रतिष्ठासंसिद्ध्यर्थं इमां दक्षिणां ....गोत्राय ....शर्मणे ....ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे।

इस तरह संकल्प लेकर दक्षिणा ब्राह्मणके हाथमें दे दे और भगवान्‌का स्मरण कर ले।

३. तिलदान

तिल या तिल-निष्क्रय-द्रव्यको किसी पात्रमें अपने सामने रखकर हाथमें त्रिकुश, जल, अक्षत, पुष्प लेकर तिलदानका संकल्प करे—

प्रतिज्ञा-संकल्प—ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं जीवच्छ्राद्धे महापातकोपपातकादिसर्वविधपातकानां निरासार्थं श्रुतिस्मृतिपुराणेतिहासकल्पोक्तफलप्राप्त्यर्थं श्रीभगवत्प्रीत्यर्थं विष्णुलोकप्राप्त्यर्थं च दशमहादानान्तर्गतपरिगणितं तिलदानम्/तिलनिष्क्रयद्रव्यदानं करिष्ये। तदङ्गत्वेन ब्राह्मणवरणं ब्राह्मणपूजनं तिलपूजनं च करिष्ये। संकल्पका जल छोड़ दे।

वरण-संकल्प—दायें हाथमें त्रिकुश, जल, अक्षत, पुष्प और वरण-द्रव्य लेकर संकल्प करे—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ .....गोत्रः .....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं तिलदानकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः .....गोत्रं .....शर्माणं ब्राह्मणं तिलदानप्रतिग्रहीतृत्वेन/तिलनिष्क्रयद्रव्यप्रतिग्रहीतृत्वेन भवन्तं वृणे।

इस तरह संकल्पकर वरण-द्रव्य ब्राह्मणके हाथमें दे दे।

ब्राह्मण-वचन—ब्राह्मण वरण-द्रव्य प्राप्तकर बोले—'**वृतोऽस्मि।**'

ब्राह्मण-पूजन—गन्ध, अक्षत, पुष्प तथा दक्षिणासे ब्राह्मणकी पूजा करे।

तिलपूजन—निम्न मन्त्रसे तिलकी पूजा करे—

विष्णोर्देहसमुद्भूताः कुशाः कृष्णतिलास्तथा। धर्मस्य रक्षणायालमेतत् प्राहुर्दिवौकसः॥

तिलेभ्यो नमः/तिलनिष्क्रयद्रव्याय नमः, प्रोक्षणं समर्पयामि (जलका छींटा दे)। **सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि** (गन्ध, अक्षत, पुष्प आदि चढ़ाये)।

तिलदानका संकल्प—दायें हाथमें त्रिकुश, जल, अक्षत आदि लेकर तिलदानका संकल्प करे।

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ .....गोत्रः .....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं सर्वविधपातकानां निरासार्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं श्रीविष्णुलोकप्राप्त्यर्थं च प्रजापतिदैवतं तिलं/तिलनिष्क्रयद्रव्यं .....गोत्राय .....शर्मणे ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे।

इस तरह तिलदानका संकल्प लेकर निम्नलिखित मन्त्रको पढ़ते हुए तिल ब्राह्मणके हाथमें दे दे—

महर्षेर्गोत्रसम्भूताः कश्यपस्य तिलाः स्मृताः। तस्मादेषां प्रदानेन मम पापं व्यपोहतु॥

ब्राह्मण-वचन—तिलदान ग्रहणकर ब्राह्मण बोले—'**ॐ स्वस्ति।**'

सांगता-दक्षिणा-संकल्प—दायें हाथमें त्रिकुश, जल, अक्षत आदि लेकर दानकी सांगतासिद्धिके लिये संकल्प करे—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं तिलदानस्य/तिलनिष्क्रयद्रव्यदानस्य साङ्गताप्रतिष्ठासंसिद्ध्यर्थं इमां दक्षिणां ....गोत्राय ....शर्मणे ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे।

इस तरह संकल्पकर दक्षिणा ब्राह्मणको दे दे और भगवान्‌का स्मरण कर ले।

४. स्वर्णदान

स्वर्णको या तन्निष्क्रय-द्रव्यको अक्षत-पुंजपर रखकर दायें हाथमें त्रिकुश, जल, अक्षत, पुष्प लेकर संकल्प करे—

प्रतिज्ञा-संकल्प—ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं जीवच्छ्राद्धे अनेकजन्मार्जितानां सर्वविधपातकानां निरासार्थं श्रुतिस्मृतिपुराणेतिहासकल्पोक्तफलप्राप्त्यर्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं श्रीविष्णुलोकप्राप्त्यर्थं च दशमहादानान्तर्गतपरिगणितं स्वर्णदानम्/स्वर्णनिष्क्रयद्रव्यदानं करिष्ये। तदङ्गत्वेन ब्राह्मणवरणं ब्राह्मणपूजनादिकं च करिष्ये। संकल्पका जल छोड़ दे।

वरण-संकल्प—दायें हाथमें त्रिकुश, जल, अक्षत, पुष्प और वरण-द्रव्य लेकर ब्राह्मण-वरणके लिये संकल्प करे—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं स्वर्णदानप्रतिग्रहीतृत्वेन/

स्वर्णनिष्क्रयद्रव्यप्रतिग्रहीतृत्वेन एभिर्वरणद्रव्यैः ....गोत्रं ....शर्माणं ब्राह्मणं भवन्तं वृणे। (संकल्पकर वरण-द्रव्य ब्राह्मणके हाथमें दे दे।)

ब्राह्मण-वचन—वरण-द्रव्य प्राप्तकर ब्राह्मण बोले—'**वृतोऽस्मि।**'

ब्राह्मणपूजन—गन्ध, अक्षत, पुष्प तथा दक्षिणासे ब्राह्मणकी पूजा करे।

स्वर्णपूजन—निम्नलिखित मन्त्रसे स्वर्ण (या स्वर्ण-निष्क्रयद्रव्य)-की पूजा करे—

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः। अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

स्वर्णाय नमः/स्वर्णनिष्क्रयद्रव्याय नमः, प्रोक्षणं समर्पयामि (जलसे छींटा दे)। **सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि** (गन्ध, अक्षत, पुष्पमाला आदि चढ़ाये)।

स्वर्णदानका संकल्प—हाथमें त्रिकुश, जल आदि लेकर स्वर्णदान (या तन्निष्क्रय-द्रव्यके दान)-का संकल्प करे—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं सर्वविधपातकानां निरासार्थं शास्त्रोक्तफलप्राप्त्यर्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं श्रीविष्णुलोकप्राप्त्यर्थं च स्वर्णमग्निदैवतम्/स्वर्णनिष्क्रयद्रव्यम् ....गोत्राय ....शर्मणे ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे। (इस तरह संकल्पकर ब्राह्मणके हाथमें देयद्रव्य संकल्प-जलके साथ दे दे।)

ब्राह्मण-वचन—स्वर्ण या तन्निष्क्रय-द्रव्य प्राप्तकर ब्राह्मण बोले—'**ॐ स्वस्ति।**'

सांगता-दक्षिणा-संकल्प—दायें हाथमें त्रिकुश, जल, अक्षत, पुष्प लेकर सांगतासिद्धिके लिये संकल्प करे—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं स्वर्णदानस्य/स्वर्णनिष्क्रयद्रव्यदानस्य साङ्गताप्रतिष्ठासंसिद्ध्यर्थं इमां दक्षिणां ....गोत्राय ....शर्मणे ....ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे।

संकल्पकर दक्षिणा ब्राह्मणको दे दे तथा विष्णु-स्मरण कर ले।

५. घृतदान

पात्रमें घी रखकर या घृतनिष्क्रयद्रव्य हाथमें रखकर त्रिकुश, जल, अक्षत, पुष्प लेकर घृतदानका संकल्प करे—

प्रतिज्ञा-संकल्प—ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं जीवच्छ्राद्धे अनेकजन्मार्जितानां ज्ञाताज्ञातसर्वविधपातकानां निरासार्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं विष्णुलोकप्राप्त्यर्थं च दशमहादानान्तर्गतपरिगणितं घृतदानम्/घृतनिष्क्रयद्रव्यदानं करिष्ये तदङ्गत्वेन ब्राह्मणवरणं ब्राह्मणपूजनं च करिष्ये। संकल्पका जल छोड़ दे।

वरण-संकल्प—दायें हाथमें त्रिकुश, जल, अक्षत और वरणद्रव्यादि लेकर संकल्प करे—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं घृतदानकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः ....गोत्रं ....शर्माणं ब्राह्मणं घृतदानप्रतिग्रहीतृत्वेन/घृतनिष्क्रयद्रव्यप्रतिग्रहीतृत्वेन भवन्तं वृणे। (संकल्पकर वरण-द्रव्य ब्राह्मणको दे दे।)

ब्राह्मण-वचन—ब्राह्मण '**वृतोऽस्मि**' बोले।

ब्राह्मणपूजन—गन्ध, अक्षत, पुष्प तथा दक्षिणासे ब्राह्मणका पूजन करे।

घृतपूजन—निम्नलिखित मन्त्रसे घृतकी पूजा करे—

आज्याय नमः/घृतनिष्क्रयद्रव्याय नमः, प्रोक्षणं समर्पयामि (जलसे छींटा दे) **सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि** (गन्ध, अक्षत, पुष्प आदि चढ़ाये)।

दान-संकल्प—दायें हाथमें त्रिकुश, जल आदि लेकर संकल्प करे—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहम् अनेकजन्मार्जितानां सर्वविधपातकानां निरासार्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं श्रीविष्णुलोकप्राप्त्यर्थं च मृत्युञ्जयदैवतं घृतम्/घृतनिष्क्रयद्रव्यं ....गोत्राय ....शर्मणे ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे।

इस तरह घृतदानका संकल्पकर निम्नलिखित मन्त्रको पढ़ते हुए उसे ब्राह्मणको दे दे—

कामधेनोः समुद्भूतं सर्वक्रतुषु संस्थितम्। देवानामाज्यमाहारस्ततः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

ब्राह्मण-वचन—घृत या घृतनिष्क्रय मूल्य प्राप्तकर ब्राह्मण बोले—'**ॐ स्वस्ति।**'

सांगता-दक्षिणा-संकल्प—दायें हाथमें त्रिकुश, जल, अक्षत, पुष्प लेकर सांगतासिद्धिके लिये संकल्प करे—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं घृतदानस्य साङ्गताप्रतिष्ठासंसिद्ध्यर्थं इमां दक्षिणां ....गोत्राय ....शर्मणे ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे।

ऐसा संकल्पकर दक्षिणा ब्राह्मणको दे दे तथा विष्णुस्मरण कर ले।

६. वस्त्रदान

वस्त्र-उपवस्त्रके रूपमें दो नये वस्त्रोंको या वस्त्र-निष्क्रयद्रव्य तथा त्रिकुश, अक्षत, जल दायें हाथमें लेकर वस्त्रदानका संकल्प करे—

प्रतिज्ञा-संकल्प—ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं जीवच्छ्राद्धे अनेकजन्मार्जितानां ज्ञाताज्ञातसर्वविधपातकानां निरासार्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं विष्णुलोकप्राप्त्यर्थं च दशमहादानान्तर्गतपरिगणितं वस्त्रदानम्/वस्त्रनिष्क्रयद्रव्यदानं करिष्ये। तदङ्गत्वेन ब्राह्मणवरणं ब्राह्मणपूजनादिकं च करिष्ये। संकल्पका जल छोड़ दे।

वरण-संकल्प—दायें हाथमें त्रिकुश, जल, अक्षत और वरण-द्रव्यादि लेकर संकल्प करे—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं वस्त्रदानकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः ....गोत्रं ....शर्माणं ब्राह्मणं वस्त्रदानप्रतिग्रहीतृत्वेन/वस्त्रनिष्क्रयद्रव्यप्रतिग्रहीतृत्वेन भवन्तं वृणे। संकल्प-जल तथा वरण-द्रव्य ब्राह्मणके हाथमें दे दे।

ब्राह्मण-वचन—ब्राह्मण '**वृतोऽस्मि**' बोले।

ब्राह्मणपूजन—गन्ध, अक्षत, पुष्प तथा दक्षिणासे ब्राह्मणका पूजन करे।

वस्त्रपूजन—वस्त्राय नमः/वस्त्रनिष्क्रयद्रव्याय नमः, प्रोक्षणं समर्पयामि (जलसे छींटा दे)। **सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि** (गन्ध, अक्षत, पुष्प आदि चढ़ाये)।

दान-संकल्प—दाहिने हाथमें त्रिकुश, जल, अक्षत लेकर संकल्प करे—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं शास्त्रोक्तफलप्राप्त्यर्थं बृहस्पतिदैवतं वस्त्रद्वयम्/वस्त्रनिष्क्रयद्रव्यं ....गोत्राय ....शर्मणे ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे। संकल्पजल ब्राह्मणको दे दे।

इस तरह वस्त्रदानका संकल्पकर निम्नलिखित मन्त्र पढ़ते हुए ब्राह्मणको दे दे—

शीतवातोष्णसंत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्। देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

ब्राह्मण-वचन—वस्त्र या तन्निष्क्रय-द्रव्य प्राप्तकर ब्राह्मण बोले—'**ॐ स्वस्ति।**'

सांगता-दक्षिणा-संकल्प—दायें हाथमें त्रिकुश, जल, अक्षत, पुष्प लेकर सांगतासिद्धिके लिये संकल्प करे—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं वस्त्रदानस्य साङ्गताप्रतिष्ठासंसिद्ध्यर्थं इमां दक्षिणां ....गोत्राय ....शर्मणे ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे।

संकल्पकर दक्षिणा ब्राह्मणको दे दे तथा विष्णु-स्मरण कर ले।

७. सप्तधान्यदान *

सप्तधान्य या उसके मूल्यको पात्रमें अपने सामने रखकर दायें हाथमें त्रिकुश, जल, अक्षत, पुष्प लेकर निम्न प्रतिज्ञा-संकल्प करे—

प्रतिज्ञा-संकल्प—ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/ गुप्तोऽहं जीवच्छ्राद्धे अनेकजन्मार्जितानां ज्ञाताज्ञातसर्वविधपातकानां निरासार्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं विष्णुलोकप्राप्त्यर्थं

---

* (क) शस्यं क्षेत्रगतं प्राहुः सतुषं धान्यमुच्यते। आमान्नं वितुषं प्रोक्तं सिद्धमन्नं प्रकीर्तितम्॥

च दशमहादानान्तर्गतपरिगणितं सप्तधान्यदानम्/सप्तधान्यनिष्क्रयद्रव्यदानं करिष्ये। तदङ्गत्वेन ब्राह्मणवरणं ब्राह्मणपूजनादिकं च करिष्ये। संकल्पजल छोड़ दे।

वरण-संकल्प—दाहिने हाथमें त्रिकुश, जल, अक्षत तथा वरणद्रव्य लेकर संकल्प करे—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ ""गोत्रः ""शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं सप्तधान्यदानकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः ""गोत्रं ""शर्माणं ब्राह्मणं सप्तधान्यदानप्रतिग्रहीतृत्वेन/सप्तधान्यनिष्क्रयद्रव्यप्रतिग्रहीतृत्वेन भवन्तं वृणे। (संकल्पकर वरण-द्रव्य ब्राह्मणको दे दे।)

ब्राह्मण-वचन—ब्राह्मण बोले—'**वृतोऽस्मि।**'

ब्राह्मणपूजन—गन्ध, अक्षत, पुष्प तथा दक्षिणा से ब्राह्मण-पूजन करे।

धान्यपूजन—सप्तधान्याय नमः/सप्तधान्यनिष्क्रयद्रव्याय नमः, प्रोक्षणं समर्पयामि। (जलसे छींटा दे) **सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि** (गन्ध, अक्षत, पुष्प आदि चढ़ाये)।

दान-संकल्प—दायें हाथमें त्रिकुश, जल, अक्षत लेकर संकल्प करे—

खेतमें जो तैयार फसल खड़ी है, उसे शस्य कहते हैं, तुषयुक्त अनाजको धान्य कहते हैं (जैसे धान), तुषा (छिलका)-रहित अनाजको आमान्न (कच्चा अन्न) तथा आगमें पके हुए अनाजको सिद्धान्न कहते हैं।

(ख) यवगोधूमधान्यानि तिलाः कङ्गुस्तथैव च। श्यामाकं चीनकं चैव सप्तधान्यमुदाहृतम्॥

यवधान्यतिलाः कंगुः मुद्गश्चणकश्यामकाः। एतानि सप्तधान्यानि सर्वकार्येषु योजयेत्॥ (षट्त्रिंशन्मत)

जौ, गेहूँ, धान, तिल, टाँगुन, साँवाँ तथा चना अथवा जौ, धान, तिल, कँगनी, मूँग, चना तथा साँवाँ—ये सप्तधान्य कहलाते हैं।

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं शास्त्रोक्तफलप्राप्त्यर्थं प्रजापतिदैवतं सप्तधान्यम्/सप्तधान्यनिष्क्रयद्रव्यम् ....गोत्राय ....शर्मणे ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे।

इस तरह संकल्पकर जल छोड़ दे और निम्नलिखित मन्त्रको बोलते हुए धान्य ब्राह्मणको दे दे—

सर्वदेवमयं धान्यं सर्वोत्पत्तिकरं महत् । प्राणिनां जीवनोपायमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

ब्राह्मण-वचन—धान्य या तन्निष्क्रय-द्रव्य प्राप्तकर ब्राह्मण बोले—'**ॐ स्वस्ति।**'

सांगता-दक्षिणा-संकल्प—दायें हाथमें कुश, जल, अक्षत तथा दक्षिणाद्रव्य लेकर संकल्प करे—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं सप्तधान्यदानस्य/सप्तधान्यनिष्क्रयद्रव्यदानस्य साङ्गताप्रतिष्ठासंसिद्ध्यर्थं इमां दक्षिणां ....गोत्राय ....शर्मणे ब्राह्मणाय सम्प्रददे।

संकल्पकर दक्षिणा ब्राह्मणको दे दे तथा विष्णु-स्मरण कर ले।

८. गुड़दान

गुड़ या गुड़के मूल्यको पात्रमें अपने सामने रखकर दायें हाथमें त्रिकुश, जल, अक्षत आदि लेकर गुड़दानका संकल्प करे—

प्रतिज्ञा-संकल्प—ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं जीवच्छ्राद्धे अनेकजन्मार्जितानां ज्ञाताज्ञातसर्वविधपातकानां निरासार्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं विष्णुलोकप्राप्त्यर्थं च दशमहादानान्तर्गतपरिगणितं गुडदानम्/गुडनिष्क्रयद्रव्यदानं करिष्ये। तदङ्गत्वेन ब्राह्मणवरणं ब्राह्मणपूजनादिकं

च करिष्ये। संकल्पजल छोड़ दे।

वरण-संकल्प—दायें हाथमें त्रिकुश, जल, अक्षत तथा वरणद्रव्य लेकर संकल्प करे—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं गुडदानकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः ....गोत्रं ....शर्माणं ब्राह्मणं गुडदानप्रतिग्रहीतृत्वेन/गुडनिष्क्रयद्रव्यप्रतिग्रहीतृत्वेन भवन्तं वृणे। संकल्पकर वरण-द्रव्य ब्राह्मणको दे दे।

ब्राह्मण-वचन—ब्राह्मण बोले—'**वृतोऽस्मि।**'

ब्राह्मणपूजन—गन्ध, अक्षत, पुष्प तथा दक्षिणासे ब्राह्मणका पूजन करे।

गुड़पूजन—गुडाय नमः/गुडनिष्क्रयद्रव्याय नमः, प्रोक्षणं समर्पयामि (जलसे छींटा दे)। **सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।** गन्ध, अक्षत, पुष्प आदि चढ़ाये।

दान-संकल्प—दायें हाथमें त्रिकुश, जल, अक्षत लेकर संकल्प करे—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं शास्त्रोक्तफलप्राप्त्यर्थं सोमदैवतं गुडम्/गुडनिष्क्रयद्रव्यं ....गोत्राय ....शर्मणे ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे।

इस तरह संकल्पकर जल छोड़ दे और निम्नलिखित मन्त्र बोलते हुए गुड़ ब्राह्मणको दे दे—

यथा देवेषु विश्वात्मा प्रवरश्च जनार्दनः। सामवेदस्तु वेदानां महादेवस्तु योगिनाम्॥
प्रणवः सर्वमन्त्राणां नारीणां पार्वती यथा। तथा रसानां प्रवरः सदैवेक्षुरसो मतः।
मम तस्मात् परां शान्तिं ददस्व गुड सर्वदा॥

ब्राह्मण-वचन—गुड़ या तन्निष्क्रय-द्रव्य प्राप्तकर ब्राह्मण बोले—'**ॐ स्वस्ति।**'

सांगता-दक्षिणा-संकल्प—दायें हाथमें त्रिकुश, जल, अक्षत तथा दक्षिणाद्रव्य लेकर संकल्प करे—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं गुडदानस्य/ गुडनिष्क्रयद्रव्यदानस्य साङ्गताप्रतिष्ठासंसिद्ध्यर्थं इमां दक्षिणां ....गोत्राय ....शर्मणे ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे।

संकल्पकर ब्राह्मणको दक्षिणा दे दे तथा विष्णु-स्मरण कर ले।

९. रजतदान

चाँदीको या रजतनिष्क्रय-द्रव्यको पात्रमें अपने सामने रखकर दायें हाथमें त्रिकुश, जल आदि लेकर संकल्प करे—

प्रतिज्ञा-संकल्प—**ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/ गुप्तोऽहं जीवच्छ्राद्धे अनेकजन्मार्जितानां ज्ञाताज्ञातसर्वविधपातकानां निरासार्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं विष्णुलोकप्राप्त्यर्थं च दशमहादानान्तर्गतपरिगणितं रजतदानम्/रजतनिष्क्रयद्रव्यदानं करिष्ये। तदङ्गत्वेन ब्राह्मणवरणं ब्राह्मणपूजनादिकं च करिष्ये।** संकल्पका जल छोड़ दे।

वरण-संकल्प—दाहिने हाथमें त्रिकुश, अक्षत, जल तथा वरणद्रव्य लेकर संकल्प करे—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं रजतदानकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः ....गोत्रं ....शर्माणं ब्राह्मणं रजतदानप्रतिग्रहीतृत्वेन/रजतनिष्क्रयद्रव्यप्रतिग्रहीतृत्वेन भवन्तं वृणे।

संकल्पकर वरण-द्रव्य ब्राह्मणको दे दे।

ब्राह्मण-वचन—ब्राह्मण बोले—'**वृतोऽस्मि।**'

ब्राह्मणपूजन—गन्ध, अक्षत, पुष्प और दक्षिणासे ब्राह्मण-पूजन करे।

रजतपूजन—रजताय नमः/रजतनिष्क्रयद्रव्याय नमः, प्रोक्षणं समर्पयामि (जलसे छींटा दे)। **सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।** गन्ध, अक्षत, पुष्प आदि चढ़ाये।

दान-संकल्प—दायें हाथमें त्रिकुश, जल, अक्षत लेकर संकल्प करे—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं शास्त्रोक्तफलप्राप्त्यर्थं चन्द्रदैवतं रजतम्/रजतनिष्क्रयद्रव्यम् ....गोत्राय ....शर्मणे ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे।

इस तरह संकल्पकर जल छोड़ दे और निम्नलिखित मन्त्र बोलते हुए रजत ब्राह्मणको दे दे—

प्रीतिर्यतः पितॄणां च विष्णुशङ्करयोः सदा। शिवनेत्रोद्भवं रौप्यमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

ब्राह्मण-वचन—ब्राह्मण बोले—'**ॐ स्वस्ति।**'

सांगता-दक्षिणा-संकल्प—दायें हाथमें त्रिकुश, जल, अक्षत तथा दक्षिणाद्रव्य लेकर संकल्प करे—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं रजतदानस्य/ रजतनिष्क्रयद्रव्यदानस्य साङ्गताप्रतिष्ठासंसिद्ध्यर्थं इमां दक्षिणां ....गोत्राय ....शर्मणे ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे।

संकल्पजल छोड़ दे, दक्षिणा ब्राह्मणको दे दे और विष्णुस्मरण कर ले।

१०. लवणदान

लवण या लवण-निष्क्रयद्रव्यको पात्रमें अपने सामने रखकर दायें हाथमें त्रिकुश, जल आदि लेकर लवणदानका संकल्प करे—

प्रतिज्ञा-संकल्प—ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं जीवच्छ्राद्धे अनेकजन्मार्जितानां ज्ञाताज्ञातसर्वविधपातकानां निरासार्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं विष्णुलोकप्राप्त्यर्थं च दशमहादानान्तर्गतपरिगणितं लवणदानम्/लवणनिष्क्रयद्रव्यदानं करिष्ये। तदङ्गत्वेन ब्राह्मणवरणं ब्राह्मणपूजनादिकं च करिष्ये। संकल्पजल छोड़ दे।

वरण-संकल्प—दाहिने हाथमें त्रिकुश, जल, अक्षत तथा वरणद्रव्य लेकर संकल्प करे—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं लवणदानकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः ....गोत्रं ....शर्माणं ब्राह्मणं लवणदानप्रतिग्रहीतृत्वेन/लवणनिष्क्रयद्रव्यप्रतिग्रहीतृत्वेन भवन्तं वृणे। संकल्पकर वरण-द्रव्य ब्राह्मणको दे दे।

ब्राह्मण-वचन—ब्राह्मण बोले—'**वृतोऽस्मि।**'

ब्राह्मणपूजन—गन्ध, अक्षत, पुष्प और दक्षिणासे ब्राह्मणका पूजन करे।

लवणपूजन—लवणाय नमः/लवणनिष्क्रयद्रव्याय नमः, प्रोक्षणं समर्पयामि (जलसे छींटा दे)। **सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि** (गन्ध, अक्षत, पुष्प आदि चढ़ाये)।

दान-संकल्प—दाहिने हाथमें त्रिकुश, अक्षत तथा जल लेकर संकल्प करे—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं शास्त्रोक्तफलप्राप्त्यर्थं सोमदैवतं लवणम्/लवणनिष्क्रयद्रव्यम् ....गोत्राय ....शर्मणे ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे।

इस तरह संकल्पकर निम्नलिखित मन्त्र बोलते हुए संकल्पजल छोड़ दे और लवण ब्राह्मणके हाथमें दे दे—

यस्मादन्नरसाः सर्वे नोत्कृष्टा लवणं विना। शम्भोः प्रीतिकरं यस्मादतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

ब्राह्मण-वचन—लवण या तन्निष्क्रय-द्रव्य लेकर ब्राह्मण बोले—'**ॐ स्वस्ति।**'

दक्षिणा-संकल्प—दाहिने हाथमें त्रिकुश, जल, अक्षत तथा दक्षिणाद्रव्य लेकर संकल्प करे—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं लवणदानस्य/ लवणनिष्क्रयद्रव्यदानस्य साङ्गताप्रतिष्ठासंसिद्ध्यर्थं इमां दक्षिणां ....गोत्राय ....शर्मणे ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे।

इस तरह संकल्प लेकर दक्षिणा ब्राह्मणके हाथमें दे दे और भगवान्‌का स्मरण कर ले।

स्मरण और समर्पण—तदनन्तर निम्न प्रार्थना करे और समस्त कर्म भगवान्‌को अर्पित कर दे।

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुध्याऽऽत्मना वा नुसृतस्वभावात्। करोमि यद्यत्सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पये तत्॥

ॐ श्रीविष्णवे नमः। ॐ श्रीविष्णवे नमः। ॐ श्रीविष्णवे नमः।

श्रीविष्णुस्मरणात् परिपूर्णताऽस्तु। ॐ तत्सत् श्रीकृष्णार्पणमस्तु।

संक्षिप्त अष्टमहादानविधि

[यहाँ एक साथ अष्टमहादान करनेका संकल्प दिया गया है। जो लोग आठ वस्तुओंका अलग-अलग दान करना चाहें, वे दस-महादानप्रकरणमें दी गयी विधिके अनुसार तत्तद् वस्तुओंके दानका अलग-अलग संकल्प कर सकते हैं।]

तिल, लोहा, स्वर्ण, कपास, लवण, सप्तधान्य (जौ, धान, तिल, कँगनी, मूँग, चना तथा साँवाँ), भूमि और गौ—इन आठों वस्तुओंको यथास्थान रखकर दायें हाथमें त्रिकुश, जल, अक्षत आदि लेकर एक साथ दान करनेका संकल्प करे। प्रत्यक्ष वस्तुके न होनेपर उनका निष्क्रय-द्रव्य रखकर भी संकल्प कर सकते हैं।

प्रतिज्ञा-संकल्प—ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः नमः परमात्मने पुरुषोत्तमाय ॐ तत्सत् अद्यैतस्य विष्णोराज्ञया जगत्सृष्टिकर्मणि प्रवर्तमानस्य परार्धद्वयजीविनो ब्रह्मणो द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे ....क्षेत्रे (यदि काशी हो तो **अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रे आनन्दवने गौरीमुखे त्रिकण्टकविराजिते महाश्मशाने भगवत्या उत्तरवाहिन्या भागीरथ्या गङ्गाया वामभागे**) **....संवत्सरे उत्तरायणे/दक्षिणायने ....ऋतौ ....मासे ....पक्षे ....तिथौ ....वासरे ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं जीवच्छ्राद्धे शास्त्रोक्तफलप्राप्तिपूर्वकश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं श्रीविष्णुलोकप्राप्त्यर्थं च अष्टमहादानान्तर्गतपरिगणितानां तिललौहहिरण्यकार्पासलवणसप्तधान्यभूमिगोसंज्ञकानां वस्तूनां मध्ये यथासम्भवं विद्यमानवस्तूनामविद्यमान-वस्तुनिष्क्रयद्रव्यस्य च दानं करिष्ये। तदङ्गत्वेन ब्राह्मणवरणं ब्राह्मणपूजनं देयवस्तुपूजनं च करिष्ये।** संकल्पजल

छोड़ दे।

वरण-संकल्प—दाहिने हाथमें त्रिकुश, जल, अक्षत तथा वरणद्रव्य लेकर संकल्प करे—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं क्रियमाणे अष्टमहादानकर्मणि शास्त्रोक्तफलप्राप्त्यर्थं एभिर्वरणद्रव्यैः ....गोत्रं ....शर्माणं ब्राह्मणमष्टमहादानप्रतिग्रहीतृत्वेन भवन्तं वृणे। कहकर वरणसामग्री ब्राह्मणके हाथमें दे दे।

ब्राह्मण-वचन—ब्राह्मण बोले—'**वृतोऽस्मि।**'

ब्राह्मणपूजन—गन्ध, अक्षत, पुष्प तथा दक्षिणासे ब्राह्मण-पूजन करे।

आठ वस्तुओंका पूजन—ॐ तिलाद्यष्टवस्तुभ्यो नमः, प्रोक्षणं समर्पयामि (जलका छींटा दे)। **सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि** (गन्ध, अक्षत, पुष्प आदि चढ़ाये)।

दान-संकल्प*—दायें हाथमें त्रिकुश, जल, अक्षत तथा वरणद्रव्य लेकर संकल्प करे—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं शास्त्रोक्तफलप्राप्तिपूर्वक-श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं श्रीविष्णुलोकप्राप्त्यर्थं च प्रजापतिदैवतं तिलम्/तिलनिष्क्रयद्रव्यम्, महाभैरवदैवतं लौहम्/लौहनिष्क्रयद्रव्यम्, अग्निदैवतं स्वर्णम्/स्वर्णनिष्क्रयद्रव्यम्, वनस्पतिदैवतं कार्पासम्/कार्पासनिष्क्रयद्रव्यम्, सोमदैवतं

---

* जिस वस्तुका निष्क्रय दिया जाय उसके लिये संकल्पमें इस प्रकार कहना चाहिये। जैसे—तिलके लिये—'प्रजापतिदैवतं तिलनिष्क्रयद्रव्यम्।'

लवणम्/लवणनिष्क्रयद्रव्यम्, प्रजापतिदैवतं सप्तधान्यम्/सप्तधान्यनिष्क्रयद्रव्यम्, विष्णुदैवतां भूमिम्/भूमिनिष्क्रयद्रव्यम्, रुद्रदैवतां गाम्/गोनिष्क्रयद्रव्यम् एतानि अष्टवस्तूनि ....गोत्राय ....शर्मणे ब्राह्मणाय सम्प्रददे। संकल्पजल छोड़ दे।

ब्राह्मण-वचन—दान लेकर ब्राह्मण बोले—'**ॐ स्वस्ति।**'

दक्षिणा-संकल्प—दायें हाथमें त्रिकुश, जल, अक्षत और दक्षिणा-द्रव्य लेकर संकल्प करे—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं कृतस्य अष्टमहादानस्य साङ्गताप्रतिष्ठासंसिद्ध्यर्थं इमां दक्षिणां ....गोत्राय ....शर्मणे ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे। (संकल्पकर दक्षिणा ब्राह्मणको दे दे।)

स्मरण और समर्पण—तदनन्तर निम्न प्रार्थना करे और समस्त कर्म भगवान्‌को अर्पित कर दे।

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुध्याऽऽत्मना वानुसृतस्वभावात्।

करोमि यद्यत्सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पये तत्॥

ॐ श्रीविष्णवे नमः। ॐ श्रीविष्णवे नमः। ॐ श्रीविष्णवे नमः।

श्रीविष्णुस्मरणात् परिपूर्णताऽस्तु। ॐ तत्सत् श्रीकृष्णार्पणमस्तु।

पंचधेनुदानविधि

सब प्रकारके अभ्युदयोंकी प्राप्ति तथा सद्गतिके लिये पाँच प्रकारकी गौओंके दानका विधान है। पाँच गौओंके नाम इस प्रकार हैं—(१) ऋणापनोदधेनु, (२) पापापनोदधेनु, (३) उत्क्रान्तिधेनु, (४) वैतरणीधेनु तथा (५) मोक्षधेनु। इनके दानका उद्देश्य इस प्रकार है—

जन्म लेनेके साथ ही मनुष्यपर तीन ऋण लग जाते हैं—१. देव-ऋण, २. पितृ-ऋण तथा ३. मनुष्य-ऋण। इनके अतिरिक्त मनुष्य आवश्यकतानुसार अन्य ऋण भी ले लेता है। इन सभी ऋणोंके पापको नष्ट करनेके लिये और भगवान्‌की प्रसन्नताके लिये '**ऋणापनोदधेनु**' का दान दिया जाता है। इसी तरह ज्ञात-अज्ञात पापोंसे छुटकारा पानेके लिये एवं भगवान्‌की प्रसन्नताके लिये '**पापापनोदधेनु**' का दान दिया जाता है। अन्तिम समयमें प्राणोत्सर्गमें अत्यधिक कष्टकी अनुभूति होती है। सुखपूर्वक प्राणोत्सर्गके लिये '**उत्क्रान्तिधेनु**' का दान दिया जाता है। इसी प्रकार यममार्गमें स्थित घोर वैतरणी नदीको पार करनेके लिये '**वैतरणीधेनु**' का दान दिया जाता है और मोक्षप्राप्तिके लिये '**मोक्षधेनु**' का दान दिया जाता है।

पंचधेनुका दान निष्क्रयरूपमें करना हो तो '**सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि, गणेशाम्बिकाभ्यां नमः**'—ऐसा कहकर गणेशाम्बिका-पूजनके अनन्तर संकल्पमात्रसे कर देना चाहिये। वह संकल्प आगे दिया जा रहा है।

पंचधेनुनिष्क्रयद्रव्यदान

प्रतिज्ञा-संकल्प—हाथमें त्रिकुश, अक्षत, जल लेकर बोले—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः नमः परमात्मने पुरुषोत्तमाय ॐ तत्सत् अद्यैतस्य विष्णोराज्ञया जगत्सृष्टिकर्मणि प्रवर्तमानस्य परार्धद्वयजीविनो ब्रह्मणो द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे ....क्षेत्रे (यदि काशी हो तो **अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रे आनन्दवने गौरीमुखे त्रिकण्टकविराजिते महाश्मशाने भगवत्या उत्तरवाहिन्या भागीरथ्या गङ्गाया वामभागे**) **....संवत्सरे उत्तरायणे/दक्षिणायने ....ऋतौ ....मासे ....पक्षे ....तिथौ ....वासरे ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं जीवच्छ्राद्धे ऐहिकामुष्मिकानेकजन्मार्जितसमस्तपापापनोदनार्थं देवर्षिपितृमनुष्यादिऋणापनोदनार्थं ज्ञाताज्ञातमनोवाक्कायकृतसकल-पापक्षयार्थं प्राणप्रयाणकाले ससुखं प्राणोत्क्रमणार्थं यममार्गस्थितां महाघोरां शतयोजनविस्तीर्णां वैतरणीं सुखेन संतरणार्थं भगवत्प्रसादात् मोक्षप्राप्तये श्रीमहाविष्णुप्रीत्यर्थं ऋणापनोदधेनुपापापनोदधेनूत्क्रान्तिधेनुवैतरणीधेनुमोक्षधेनूनां रुद्रदैवतानां निष्क्रयभूतद्रव्यस्य दानं करिष्ये। तदङ्गत्वेन ब्राह्मणवरणं ब्राह्मणपूजनादिकं च करिष्ये।** कहकर संकल्पजल छोड़ दे।

वरण-संकल्प—दायें हाथमें त्रिकुश, अक्षत, जल तथा वरण-द्रव्य लेकर संकल्प करे—

ॐ अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं पञ्चधेनुदानकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः

.....गोत्रं .....शर्माणं ब्राह्मणं भवन्तं पञ्चधेनुनिष्क्रयद्रव्यप्रतिग्रहीतृत्वेन वृणे। संकल्पका जल और वरण-द्रव्य ब्राह्मणको दे दे।

ब्राह्मण—'वृतोऽस्मि' बोले।

ब्राह्मण-पूजन—गन्ध, अक्षत, पुष्पसे ब्राह्मणकी पूजा करे।

गोनिष्क्रयद्रव्यपूजन—धेनुनिष्क्रयद्रव्याय नमः, प्रोक्षणं समर्पयामि (जलका छींटा दे)। **सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।** (गन्ध, अक्षत, पुष्प आदि चढ़ाये।)

पंचधेनुनिष्क्रयद्रव्यदानका संकल्प—दायें हाथमें त्रिकुश, अक्षत, जल तथा निष्क्रय-द्रव्य लेकर संकल्प करे—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ .....गोत्रः .....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं जीवच्छ्राद्धे ऐहिकामुष्मिकानेकजन्मार्जितसमस्तपापापनोदनार्थं देवर्षिपितृमनुष्यादिऋणापनोदनार्थं ज्ञाताज्ञातमनोवाक्कायकृतसकलपापक्षयार्थं प्राणप्रयाणकाले ससुखं प्राणोत्क्रमणार्थं यममार्गस्थितां महाघोरां शतयोजनविस्तीर्णां वैतरणीं सुखेन संतरणार्थं भगवत्प्रसादात् मोक्षप्राप्तये श्रीमहाविष्णुप्रीत्यर्थं ऋणापनोदधेनुपापापनोदधेनूत्क्रान्तिधेनुवैतरणीधेनुमोक्षधेनूनां रुद्रदैवतानां निष्क्रयभूतं द्रव्यं .....गोत्राय .....शर्मणे ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे। कहकर संकल्पजल तथा निष्क्रयद्रव्य ब्राह्मणको दे दे।

ब्राह्मणवचन—निष्क्रयद्रव्य लेकर ब्राह्मण '**ॐ स्वस्ति**' बोले।

सांगता-संकल्प—दायें हाथमें त्रिकुश, अक्षत, जल तथा सांगताके लिये दक्षिणा लेकर संकल्प करे—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ ....गोत्रः ....शर्मा/ वर्मा/गुप्तोऽहं कृतस्य पञ्चधेनुनिष्क्रयद्रव्यदानकर्मणः साङ्गताप्रतिष्ठासंसिद्ध्यर्थम् इमां दक्षिणां ....गोत्राय ....शर्मणे ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे। कहकर द्रव्य दे दे।

विष्णुस्मरण—निम्न मन्त्रसे प्रार्थना करे तथा समस्त कर्म भगवान्‌को अर्पित कर दे—

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु । न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुध्याऽऽत्मना वानुसृतस्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पये तत्॥

ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः।

पंचधेनुदानका पृथक्-पृथक् विधान

(१) ऋणापनोदधेनु-दान

प्रतिज्ञा-संकल्प—दाहिने हाथमें त्रिकुश, अक्षत, जल लेकर निम्न संकल्प करे—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः नमः पुराणपुरुषोत्तमाय ॐ तत्सत् अद्यैतस्य अचिन्त्यशक्तेर्महाविष्णोराज्ञया जगत्सृष्टिकर्मणि प्रवर्तमानस्य परार्धद्वयजीविनो ब्रह्मणो द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशान्तर्गते प्रजापतिक्षेत्रे .....स्थाने (काशीमें करना हो तो **अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रे गौरीमुखे त्रिकण्टकविराजिते महाश्मशाने आनन्दवने भगवत्या उत्तरवाहिन्या भागीरथ्या गङ्गाया वामभागे) .....संवत्सरे .....अयने .....ऋतौ .....मासे .....पक्षे .....तिथौ .....वासरे एवं ग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ .....गोत्रः .....शर्मा/ वर्मा/गुप्तोऽहं जीवच्छ्राद्धे ऐहिकामुष्मिकानेक-जन्मार्जितदेवर्षिपितृमनुष्यादिसमस्तऋणापनोदनार्थं श्रीविष्णुप्रीतये ऋणापनोदधेनुदानं/ऋणापनोदधेनुनिष्क्रयद्रव्यदानं करिष्ये**—ऐसा कहकर संकल्पजल छोड़ दे।

वरण-संकल्प—दायें हाथमें त्रिकुश, अक्षत, जल तथा वरण-द्रव्य लेकर संकल्प करे—

ॐ अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ .....गोत्रः .....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं ऋणापनोदधेनुदानकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः .....गोत्रं .....शर्माणं ब्राह्मणं भवन्तं ऋणापनोदधेनुदानप्रतिग्रहीतृत्वेन/ऋणापनोदधेनुनिष्क्रयद्रव्यदानप्रतिग्रहीतृत्वेन

वृणे—कहकर संकल्पका जल और वरण-द्रव्य ब्राह्मणको दे दे।

ब्राह्मण—'**वृतोऽस्मि**' बोले।

ब्राह्मण-पूजन—गन्ध, अक्षत, पुष्प तथा दक्षिणासे ब्राह्मणकी पूजा करे।

गो अथवा निष्क्रयद्रव्यपूजन—ऋणापनोदधेनवे नमः/ऋणापनोदधेनुनिष्क्रयद्रव्याय नमः, प्रोक्षणं समर्पयामि (जलका छींटा दे)। **सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।** (गन्ध, अक्षत, पुष्प आदि चढ़ाये।)

गो-प्रार्थना—निम्नलिखित मन्त्रोंसे गोप्रार्थना करे—

गावो ममाग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः। गावो मे सर्वतः सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम्॥

गवामङ्गेषु तिष्ठन्ति भुवनानि चतुर्दश। यस्मात्तस्माच्छिवं मे स्यादिह लोके परत्र च॥

दानका संकल्प—दायें हाथमें त्रिकुश, अक्षत और पुष्प (यदि प्रत्यक्ष हो तो गोपुच्छ) लेकर संकल्प करे—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ ....गोत्रः ....शर्मा/ वर्मा/गुप्तोऽहम् ऐहिकामुष्मिकानेकजन्मार्जितदेवर्षिपितृमनुष्यादिसमस्तऋणापनोदनार्थं श्रीविष्णुप्रीतये इमां रुद्रदैवतां ऋणापनोदधेनुं/ऋणापनोदधेनुनिष्क्रयद्रव्यं ....गोत्राय ....शर्मणे ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे—ऐसा कहकर संकल्पजल गोपुच्छ अथवा निष्क्रयद्रव्य ब्राह्मणको दे दे तथा निम्न प्रार्थना करे—

ऐहिकामुष्मिकं यच्च सप्तजन्मार्जितं त्वृणम्। तत्सर्वं शुद्धिमायातु गामेतां ददतो मम॥

ब्राह्मण—'**ॐ स्वस्ति।**' बोले।

दक्षिणासंकल्प—दायें हाथमें त्रिकुश, अक्षत, जल तथा सांगताके लिये दक्षिणा-द्रव्य लेकर संकल्प करे—

ॐ अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं ऋणापनोदधेनुदानस्य/ऋणापनोदधेनुनिष्क्रयद्रव्यदानस्य साङ्गताप्रतिष्ठासंसिद्ध्यर्थं इमां दक्षिणां ....गोत्राय ....शर्मणे ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे—कहकर संकल्पका जल और दक्षिणा ब्राह्मणको दे दे।

विष्णुस्मरण—निम्न मन्त्रसे भगवान् विष्णुका स्मरण करे—

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुध्याऽऽत्मना वानुसृतस्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पये तत्॥

ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः।

(२) पापापनोदधेनु-दान

प्रतिज्ञा-संकल्प—दाहिने हाथमें त्रिकुश, अक्षत, जल लेकर निम्न संकल्प करे—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ ....गोत्रः ....शर्मा/ वर्मा/गुप्तोऽहं जीवच्छ्राद्धे ज्ञाताज्ञातमनोवाक्कायकृतानां एतत्कालपर्यन्तं संचितानां सर्वेषां पापानां संक्षयार्थं श्रीविष्णुप्रीतये पापापनोदधेनुदानं/पापापनोदधेनुनिष्क्रयद्रव्यदानं करिष्ये—ऐसा कहकर संकल्पजल छोड़ दे।

वरण-संकल्प—दायें हाथमें त्रिकुश, अक्षत, जल तथा वरण-द्रव्य लेकर संकल्प करे—

ॐ अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं पापापनोदधेनुदानकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः ....गोत्रं ....शर्माणं ब्राह्मणं भवन्तं पापापनोदधेनुदानप्रतिग्रहीतृत्वेन/पापापनोदधेनुनिष्क्रयद्रव्यदानप्रतिग्रहीतृत्वेन वृणे—कहकर संकल्पका जल और वरण-द्रव्य ब्राह्मणको दे दे।

ब्राह्मण—'**वृतोऽस्मि**' बोले।

ब्राह्मण-पूजन—गन्ध, अक्षत, पुष्प तथा दक्षिणासे ब्राह्मणकी पूजा करे।

गो अथवा निष्क्रयद्रव्यपूजन—**पापापनोदधेनवे नमः/पापापनोदधेनुनिष्क्रयद्रव्याय नमः, प्रोक्षणं समर्पयामि** (जलका छींटा दे)। **सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।** (गन्ध, अक्षत, पुष्प आदि चढ़ाये।)

गो-प्रार्थना—निम्नलिखित मन्त्रोंसे गोप्रार्थना करे—

गावो ममाग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः। गावो मे सर्वतः सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम्॥
गवामङ्गेषु तिष्ठन्ति भुवनानि चतुर्दश। यस्मात्तस्माच्छिवं मे स्यादिह लोके परत्र च॥

दानका संकल्प—दायें हाथमें त्रिकुश, अक्षत और पुष्प (यदि प्रत्यक्ष हो तो गोपुच्छ) लेकर संकल्प करे—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ ....गोत्रः ....शर्मा/ वर्मा/गुप्तोऽहं ज्ञाताज्ञातमनो-

वाक्कायकृतानां एतत्कालपर्यन्तं संचितानां सर्वेषां पापानामपनोदनार्थं श्रीविष्णुप्रीतये इमां रुद्रदैवतां पापापनोदधेनुं/ पापापनोदधेनुनिष्क्रयद्रव्यं ....गोत्राय ....शर्मणे ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे—ऐसा कहकर संकल्पजल, गोपुच्छ अथवा निष्क्रयद्रव्य ब्राह्मणको दे दे तथा निम्न प्रार्थना करे—

आजन्मोपार्जितं पापं मनोवाक्कायसम्भवम्। तत्सर्वं नाशमायातु गोप्रदानेन केशव॥

ब्राह्मण—'**ॐ स्वस्ति**' बोले।

दक्षिणासंकल्प—दायें हाथमें त्रिकुश, अक्षत, जल तथा सांगताके लिये दक्षिणा-द्रव्य लेकर संकल्प करे—

ॐ अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं पापापनोदधेनुदानस्य/ पापापनोदधेनुनिष्क्रयद्रव्यदानस्य साङ्गताप्रतिष्ठासंसिद्ध्यर्थं इमां दक्षिणां ....गोत्राय ....शर्मणे ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे—कहकर संकल्पका जल और दक्षिणा ब्राह्मणको दे दे।

विष्णुस्मरण—निम्न मन्त्रसे भगवान् विष्णुका स्मरण करे—

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुध्याऽऽत्मना वानुसृतस्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पये तत्॥

ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः।

(३) उत्क्रान्तिधेनु-दान

प्रतिज्ञा-संकल्प—दाहिने हाथमें त्रिकुश, अक्षत, जल लेकर निम्न संकल्प करे—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ ....गोत्रः ....शर्मा/ वर्मा/गुप्तोऽहं जीवच्छ्राद्धे प्राणप्रयाणसमये सुखेन प्राणोत्क्रमणार्थं श्रीविष्णुप्रीतये उत्क्रान्तिधेनुदानं/उत्क्रान्तिधेनुनिष्क्रयद्रव्यदानं करिष्ये—ऐसा कहकर संकल्प-जल छोड़ दे—

वरण-संकल्प—दायें हाथमें त्रिकुश, अक्षत, जल तथा वरण-द्रव्य लेकर संकल्प करे—

ॐ अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं उत्क्रान्तिधेनुदानकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः ....गोत्रं ....शर्माणं ब्राह्मणं भवन्तं उत्क्रान्तिधेनुदानप्रतिग्रहीतृत्वेन/उत्क्रान्तिधेनुनिष्क्रयद्रव्यदानप्रतिग्रहीतृत्वेन वृणे—कहकर संकल्पका जल और वरण-द्रव्य ब्राह्मणको दे दे।

ब्राह्मण—'**वृतोऽस्मि**' बोले।

ब्राह्मण-पूजन—गन्ध, अक्षत, पुष्प तथा दक्षिणासे ब्राह्मणकी पूजा करे।

गो अथवा निष्क्रयद्रव्यपूजन—उत्क्रान्तिधेनवे नमः/उत्क्रान्तिधेनुनिष्क्रयद्रव्याय नमः, प्रोक्षणं समर्पयामि (जलका छींटा दे)। **सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।** (गन्ध, अक्षत, पुष्प आदि चढ़ाये।)

गो-प्रार्थना—निम्नलिखित मन्त्रोंसे गोप्रार्थना करे—

गावो ममाग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः। गावो मे सर्वतः सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम्॥

गवामङ्गेषु तिष्ठन्ति भुवनानि चतुर्दश। यस्मात्तस्माच्छिवं मे स्यादिह लोके परत्र च॥

दानका संकल्प—दायें हाथमें त्रिकुश, अक्षत और पुष्प (यदि प्रत्यक्ष हो तो गोपुच्छ) लेकर संकल्प करे—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ ....गोत्रः ....शर्मा/ वर्मा/गुप्तोऽहं प्राणप्रयाणसमये सुखेन प्राणोत्क्रमणार्थं श्रीविष्णुप्रीतये इमां रुद्रदैवतां उत्क्रान्तिधेनुं/उत्क्रान्तिधेनुनिष्क्रयद्रव्यं ....गोत्राय ....शर्मणे ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे—ऐसा कहकर संकल्पजल, गोपुच्छ अथवा निष्क्रयद्रव्य ब्राह्मणको दे दे।

ब्राह्मण—'**ॐ स्वस्ति**' बोले।

दक्षिणासंकल्प—दायें हाथमें त्रिकुश, अक्षत, जल तथा सांगताके लिये दक्षिणा-द्रव्य लेकर संकल्प करे—

ॐ अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं उत्क्रान्तिधेनुदानस्य/ उत्क्रान्तिधेनुनिष्क्रयद्रव्यदानस्य साङ्गताप्रतिष्ठासंसिद्ध्यर्थं इमां दक्षिणां ....गोत्राय ....शर्मणे ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे—कहकर संकल्पका जल और दक्षिणा ब्राह्मणको दे दे।

विष्णुस्मरण—निम्न मन्त्रसे भगवान् विष्णुका स्मरण करे—

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुध्याऽऽत्मना वानुसृतस्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पये तत्॥

ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः।

(४) वैतरणीधेनु-दान

प्रतिज्ञा-संकल्प—दाहिने हाथमें त्रिकुश, अक्षत, जल लेकर निम्न संकल्प करे—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ ....गोत्रः ....शर्मा/ वर्मा/गुप्तोऽहं जीवच्छ्राद्धे यममार्गे स्थितां महाघोरां वैतरणीं सन्तर्तुकामः श्रीविष्णुप्रीतये वैतरणीधेनुदानं/वैतरणीधेनुनिष्क्रयद्रव्यदानं करिष्ये—ऐसा कहकर संकल्पजल छोड़ दे—

वरण-संकल्प—दायें हाथमें त्रिकुश, अक्षत, जल तथा वरण-द्रव्य लेकर संकल्प करे—

ॐ अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं वैतरणीधेनुदानकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः ....गोत्रं ....शर्माणं ब्राह्मणं भवन्तं वैतरणीधेनुदानप्रतिग्रहीतृत्वेन/वैतरणीधेनुनिष्क्रयद्रव्यदानप्रतिग्रहीतृत्वेन वृणे—कहकर संकल्पका जल और वरण-द्रव्य ब्राह्मणको दे दे।

ब्राह्मण—'वृतोऽस्मि' बोले।

ब्राह्मण-पूजन—गन्ध, अक्षत, पुष्प तथा दक्षिणासे ब्राह्मणकी पूजा करे।

गो अथवा निष्क्रयद्रव्यपूजन—वैतरणीधेनवे नमः/वैतरणीधेनुनिष्क्रयद्रव्याय नमः, प्रोक्षणं समर्पयामि (जलका छींटा दे)। **सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।** (गन्ध, अक्षत, पुष्प आदि चढ़ाये।)

गो-प्रार्थना—निम्नलिखित मन्त्रोंसे गोप्रार्थना करे—

गावो ममाग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः। गावो मे सर्वतः सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम्॥
गवामङ्गेषु तिष्ठन्ति भुवनानि चतुर्दश। यस्मात्तस्माच्छिवं मे स्यादिह लोके परत्र च॥

दानका संकल्प—दायें हाथमें त्रिकुश, अक्षत और पुष्प (यदि प्रत्यक्ष हो तो गोपुच्छ) लेकर संकल्प करे—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ ....गोत्रः ....शर्मा/ वर्मा/गुप्तोऽहं यममार्गे स्थितां महाघोरां वैतरणीं सुखेन सन्तर्तुकामः श्रीविष्णुप्रीतये इमां रुद्रदैवतां वैतरणीधेनुं/वैतरणीधेनुनिष्क्रयद्रव्यं ....गोत्राय ....शर्मणे ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे—ऐसा कहकर संकल्पजल गोपुच्छ अथवा निष्क्रयद्रव्य ब्राह्मणको दे दे तथा निम्न प्रार्थना करे—

यमद्वारे महाघोरे या सा वैतरणी नदी। तर्तुकामो ददाम्येनां तुभ्यं वैतरणीञ्च गाम्॥

ब्राह्मण—'**ॐ स्वस्ति**' बोले।

दक्षिणासंकल्प—दायें हाथमें त्रिकुश, अक्षत, जल तथा सांगताके लिये दक्षिणा-द्रव्य लेकर संकल्प करे—

ॐ अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं वैतरणीधेनुदानस्य/वैतरणीधेनु-निष्क्रयद्रव्यदानस्य साङ्गताप्रतिष्ठासंसिद्ध्यर्थं इमां दक्षिणां ....गोत्राय ....शर्मणे ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे—कहकर संकल्पका जल और दक्षिणा ब्राह्मणको दे दे।

विष्णुस्मरण—निम्न मन्त्रसे भगवान् विष्णुका स्मरण करे—

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुध्याऽऽत्मना वानुसृतस्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पये तत्॥

ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः।

(५) मोक्षधेनु-दान

प्रतिज्ञा-संकल्प—दाहिने हाथमें त्रिकुश, अक्षत, जल लेकर निम्न संकल्प करे—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ ....गोत्रः ....शर्मा/ वर्मा/गुप्तोऽहं जीवच्छ्राद्धे भगवत्प्रसादान्मोक्षप्राप्तये श्रीविष्णुप्रीतये मोक्षधेनुदानं/मोक्षधेनुनिष्क्रयद्रव्यदानं करिष्ये—ऐसा कहकर संकल्पजल छोड़ दे—

वरण-संकल्प—दायें हाथमें त्रिकुश, अक्षत, जल तथा वरण-द्रव्य लेकर संकल्प करे—

ॐ अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं मोक्षधेनुदानकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः ....गोत्रं ....शर्माणं ब्राह्मणं भवन्तं मोक्षधेनुदानप्रतिग्रहीतृत्वेन/मोक्षधेनुनिष्क्रयद्रव्यदानप्रतिग्रहीतृत्वेन वृणे—कहकर संकल्पका जल और वरण-द्रव्य ब्राह्मणको दे दे।

ब्राह्मण—'**वृतोऽस्मि**' बोले।

ब्राह्मण-पूजन—गन्ध, अक्षत, पुष्प तथा दक्षिणासे ब्राह्मणकी पूजा करे।

गो अथवा निष्क्रयद्रव्यपूजन—मोक्षधेनवे नमः/मोक्षधेनुनिष्क्रयद्रव्याय नमः, प्रोक्षणं समर्पयामि (जलका छींटा दे)। **सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।** (गन्ध, अक्षत, पुष्प आदि चढ़ाये।)

गो-प्रार्थना—निम्नलिखित मन्त्रोंसे गोप्रार्थना करे—

गावो ममाग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः। गावो मे सर्वतः सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम्॥
गवामङ्गेषु तिष्ठन्ति भुवनानि चतुर्दश। यस्मात्तस्माच्छिवं मे स्यादिह लोके परत्र च॥

दानका संकल्प—दायें हाथमें त्रिकुश, अक्षत और पुष्प (यदि प्रत्यक्ष हो तो गोपुच्छ) लेकर संकल्प करे—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ ......गोत्रः ......शर्मा/ वर्मा/गुप्तोऽहं भगवत्प्रसादान्मोक्षप्राप्तये श्रीविष्णुप्रीतये मोक्षधेनुं/मोक्षधेनुनिष्क्रयद्रव्यं ......गोत्राय ......शर्मणे ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे—ऐसा कहकर संकल्पजल, गोपुच्छ अथवा निष्क्रयद्रव्य ब्राह्मणको दे दे तथा निम्न प्रार्थना करे—

मोक्षं देहि हृषीकेश मोक्षं देहि जनार्दन। मोक्षधेनुप्रदानेन मुकुन्दः प्रीयतां मम॥

ब्राह्मण—'**ॐ स्वस्ति**' बोले।

दक्षिणासंकल्प—दायें हाथमें त्रिकुश, अक्षत, जल तथा सांगताके लिये दक्षिणा-द्रव्य लेकर संकल्प करे—

ॐ अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ ......गोत्रः ......शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं मोक्षधेनुदानस्य/मोक्षधेनुनिष्क्रयद्रव्यदानस्य साङ्गताप्रतिष्ठासंसिद्ध्यर्थं इमां दक्षिणां ......गोत्राय ......शर्मणे ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे—कहकर संकल्पका जल और दक्षिणा ब्राह्मणको दे दे।

विष्णुस्मरण—निम्न मन्त्रसे भगवान् विष्णुका स्मरण करे—

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्। स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

यत्पादपङ्कजस्मरणात् यस्य नामजपादपि। न्यूनं कर्म भवेत् पूर्णं तं वन्दे साम्बमीश्वरम्॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुध्याऽऽत्मना वानुसृतस्वभावात्।

करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पये तत्॥

ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः।

ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। ॐ साम्बसदाशिवाय नमः।

तदनन्तर यथाशक्ति पुरुषसूक्त, श्रीमद्भागवत, श्रीमद्भगवद्गीता तथा विष्णुसहस्रनाम आदि पुण्यस्तोत्रोंका पाठ करना चाहिये।

॥ इस प्रकार कृष्णद्वादशी (प्रथम दिन)-का कृत्य पूर्ण हुआ॥

कृष्णत्रयोदशी (द्वितीय दिन)-के कृत्योंकी सामग्री

[क] जलधेनुकलशोंकी सामग्री

(१) शालग्रामपूजनकी सामग्री।

(२) कलश—तीन (सुवर्ण अथवा ताम्रके) जलधेनुके लिये।

(३) ताम्रकलशोंमें छोड़नेके लिये सुवर्णखण्ड।

(४) जलधेनुकलशके चतुर्थांश परिमाणमें तीन कलश (जलधेनुवत्सकलश)।

(५) जलधेनुकलशोंके ऊपर रखनेके लिये दधि, मधु तथा घृतपूर्ण तीन कांस्यपात्र।

(६) जलधेनुवत्सकलशोंके ऊपर रखनेके लिये भी दधि, मधु तथा घृतपूर्ण तीन कांस्यपात्र।

(७) वेदीके ऊपर जलधेनुकलशोंको स्थापित करनेके लिये २५ कुशोंसे निर्मित तीन विष्टर।

(८) वेदीनिर्माणके लिये बालुका अथवा शुद्ध मिट्टी।

(९) पृथक्-पृथक् तीनों विष्टरोंके समीपमें रखनेकी सामग्री—कुष्ठ, जटामांसी, मुरा, उषीर (खस), तिल, गन्ध, आमलक, प्रियंगुपत्र, यज्ञोपवीत, छत्र तथा उपानह।

(१०) तीनों वेदियोंके चारों कोनोंमें रखनेके लिये तिलपूर्णताम्रपात्र—१२।

(११) जलधेनुकलश तथा वत्सकलशके नीचे रखनेके लिये सप्तधान्य।

(१२) कलशमें छोड़नेके लिये—शुद्ध जल, पंचरत्न, दूर्वा, पंचपल्लव तथा कलशको वेष्टित करनेके लिये सफेद वस्त्र, मौली आदि।

(१३) जलधेनुकलशों तथा वत्सकलशोंके पूजनके लिये सामग्री—गन्ध, पुष्प, धूप, दीप आदि।

[ख] वसुरुद्रादित्यपार्वणश्राद्धकी सामग्री

(१) गंगाजल अथवा शुद्ध जल।
(२) बालू अथवा शुद्ध मिट्टी (वेदी बनानेके लिये)।
(३) खीर बनानेके लिये हँडिया।
(४) गोहरी।
(५) तीन पिण्डोंके लिये गाढ़ी खीर बनानेहेतु चावल २५० ग्राम, दूध ५०० ग्राम तथा देशी शक्कर १०० ग्राम।
(६) काला तिल ५० ग्राम।
(७) जौ ५० ग्राम।
(८) चावल ५० ग्राम।
(९) दूध १०० ग्राम।
(१०) शहद ५० ग्राम।
(११) घृत ५० ग्राम।
(१२) सुपारी १० नग।
(१३) पान १० नग।
(१४) दीपकके लिये तिलका तेल, रूई, दियासलाई।
(१५) पीली सरसों १० ग्राम।
(१६) कच्चा सूत एक गोला।
(१७) जनेऊ १० नग।
(१८) ऋतुफल १० नग (केला छोड़कर)।
(१९) पलाशके पत्तल ५ नग।
(२०) कुश।
(२१) पलाशके दोने या हाथके मिट्टीके बने दीये ३० नग।
(२२) श्रीखण्ड (सफेद चन्दन)।
(२३) वसुरुद्रादित्य तथा विश्वेदेवोंके लिये वस्त्र ५ नग (धोती-उत्तरीय)।

कृष्णत्रयोदशी (द्वितीय दिन)-का कृत्य

जलधेनुकलशोंका स्थापन एवं पूजन

कृष्णत्रयोदशी[१]को प्रातःकाल स्नान आदि नित्यक्रियाओंको सम्पन्न करके धुले हुए वस्त्र तथा उपवस्त्र[२] धारण कर ले। किसी महातीर्थ अथवा पुण्यसलिलाके तटपर अथवा गोमयसे लिपी हुई भूमि[३]पर आकर सव्य पूर्वाभिमुख हो आसनपर बैठ जाय। पूजन आदि सभी सामग्रियोंको यथास्थान रख ले। तदनन्तर शिखाबन्धन आदि कार्य करे।

शिखाबन्धन—गायत्रीमन्त्र पढ़कर अथवा शिखाबन्धन मन्त्रसे शिखा बाँध ले।

तिलक-धारण—मृत्तिका, गोपीचन्दन आदिसे ऊर्ध्वपुण्ड्र अथवा भस्म आदिसे त्रिपुण्ड्र लगा ले।

सिंचन-मार्जन—निम्न मन्त्रसे अपने ऊपर तथा श्राद्धीय वस्तुओंपर जल छिड़के—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

---

१. जीवच्छ्राद्धं प्रवक्ष्यामि शौनकोऽहं द्विजन्मनाम्। कृष्णपक्षे त्रयोदश्यां स्नात्वोपोष्य समाहितः॥ (श्राद्धपद्धतिमें पृ० ३९३)

२. (क) स्नान, दान, जप, होम, स्वाध्याय, पितृतर्पण, श्राद्ध तथा भोजन आदिमें द्विजको अधोवस्त्र तथा उत्तरीय वस्त्रके रूपमें गमछा आदि अवश्य धारण करना चाहिये—

स्नानं दानं जपं होमं स्वाध्यायं पितृतर्पणम्। नैकवस्त्रो द्विजः कुर्यात् श्राद्धभोजनसत्क्रियाः॥ (श्राद्धचिन्तामणिमें योगियाज्ञवल्क्यका वचन)

(ख) कच्छ (लाँग)-से रहित, बिना उत्तरीय वस्त्र (गमछा, दुपट्टा आदि) धारण किये, नग्न तथा अवस्त्र—अप्रशस्त (अर्थात् काला, नीला अथवा बिना धुला हुआ) वस्त्र पहनकर श्रौत एवं स्मार्तकर्म नहीं करना चाहिये—

विकच्छोऽनुत्तरीयश्च नग्नश्चावस्त्र एव च। श्रौतस्मार्ते नैव कुर्यात्। (धर्मसिन्धु)

३. पर्वते वा नदीतीरे वने वायतनेऽपि वा। जीवच्छ्राद्धं प्रकर्तव्यं मृत्युकाले प्रयत्नतः॥ (लिंगपुराण)

पवित्रीधारण—निम्न मन्त्रसे पवित्री पहन ले—

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः।
तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्॥

आचमन—**ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः**—इन मन्त्रोंको बोलकर आचमन करे। '**ॐ हृषीकेशाय नमः**' कहकर हाथ धो ले।

प्राणायाम—प्राणायाम करे।

तदनन्तर हाथमें त्रिकुश, अक्षत, जल लेकर निम्न प्रतिज्ञासंकल्प करे—

प्रतिज्ञासंकल्प—**ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः नमः पुराणपुरुषोत्तमाय ॐ तत्सत् अद्यैतस्य अचिन्त्यशक्तेर्महाविष्णोराज्ञया जगत्सृष्टिकर्मणि प्रवर्तमानस्य परार्धद्वयजीविनो ब्रह्मणो द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशान्तर्गते प्रजापतिक्षेत्रे ....स्थाने (** काशीमें करना हो तो **अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रे गौरीमुखे त्रिकण्टकविराजिते महाश्मशाने आनन्दवने भगवत्या उत्तरवाहिन्या भागीरथ्या गङ्गाया वामभागे) ....संवत्सरे ....अयने ....ऋतौ ....मासे ....पक्षे ....तिथौ ....वासरे एवं ग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/ वर्मणः/गुप्तस्य मरणोत्तरभाविप्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वकोत्तमोत्तमलोकप्राप्त्यर्थम् और्ध्वदैहिकफलावाप्तये जीवन्मुक्त्यर्थं च चिकीर्षिते जीवच्छ्राद्धे तदङ्गतया आदौ शालग्रामपूजनं जलधेनूनामावाहनपूजनादिकं च करिष्ये।**

इस प्रकार संकल्पकर जलादि ईशान दिशामें छोड़ दे।

शालग्रामपूजन

तदनन्तर गणेशाम्बिकास्मरणपूर्वक शालग्रामशिला अथवा भगवान् विष्णुका अथवा जलमें भगवान् विष्णुका यथालब्धोपचारोंसे **'ॐ विष्णवे नमः'** इस नाममन्त्रसे पूजन करे।

जलधेनुओंका स्वरूप

शालग्रामपूजनके अनन्तर तीन जलधेनुओंका स्थापनपूर्वक पूजन करना चाहिये। जलधेनुके रूपमें शालग्रामशिलाके आगे तीन जलपूर्ण कलश स्थापित करके उन्हींमें धेनु (गौओं)-की भावना की जाती है और इन्हीं कलशोंको जलमयीधेनु कहा जाता है।

जलधेनुरूप कलशोंकी स्थापना

शालग्रामशिलाके आगे अर्थात् पूर्व दिशामें तीन चौकोर वेदी बनाकर उन्हींके ऊपर उत्तर-दक्षिण तथा मध्यक्रमसे उपस्करसहित सतिल पृथक्-पृथक् तीन जलधेनुओंकी[१] पच्चीस कुशोंसे निर्मित विष्टरों[२]के ऊपर स्थापना की जाती है।

---

१. (क) शालग्रामे मूर्तौ जलादौ वा विष्णुं सम्पूज्य तदग्रे उत्तरतो दक्षिणतो मध्ये च ····तिस्रः सदक्षिणाः सतिलाः सवत्सा जलधेनूः (जलानि धेनव इवेत्युपमितसमासः जलमयीधेनुरित्यर्थः) क्रमेण संस्थापयेत्। (पूजयेन्निवेदयेच्चेत्यर्थः)। (प्रथमामुत्तरतो द्वितीयां दक्षिणतस्तृतीयां मध्ये निक्षिपेदिति हेमाद्रौ कौस्तुभे उद्योते च)

(ख) दक्षिणाग्रविष्टरत्रयनिधानम्। विष्टरोपरि ····कलशत्रयस्य स्थापनम्। (श्राद्धपद्धति पृ० ३९३—३९५)

२. पञ्चाशत् कुशैः ब्रह्मा तदर्धेन तु विष्टरः। ऊर्ध्वकेशो भवेद् ब्रह्मा लम्बकेशश्च विष्टरः॥
दक्षिणावर्तको ब्रह्मा वामावर्तस्तु विष्टरः॥

जलधेनुमण्डल तथा वसुरुद्रादित्यपार्वणश्राद्धका स्वरूप

* वेदीके चारों कोनोंमें चार-चार तिलपूर्णताम्रपात्र हैं। § जलधेनुकलशोंके नीचे कुशका बना हुआ विष्टरासन है।
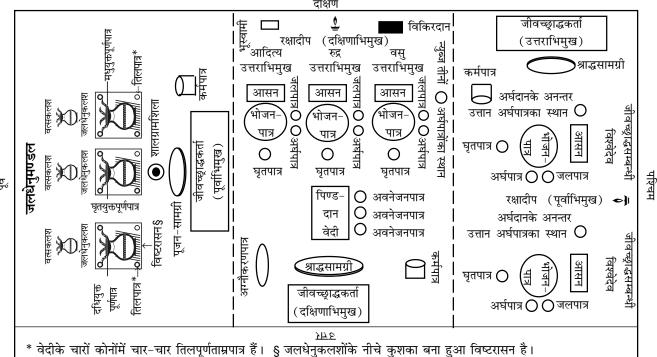
सर्वप्रथम जहाँ विष्टरकी स्थापना करनी है, उस भूमिका स्पर्शकर एक विष्टर लेकर उत्तर दिशावाली वेदीपर दक्षिणाग्र स्थापित कर दे। इसी प्रकार दूसरा विष्टर लेकर दक्षिण दिशावाली वेदीपर दक्षिणाग्र स्थापित कर दे। ऐसे ही तीसरा विष्टर लेकर दोनों वेदियोंकी मध्यवाली वेदीपर दक्षिणाग्र स्थापित कर दे।

विष्टरोंकी स्थापना करनेके अनन्तर तीन कलशोंकी स्थापना करे।

विष्टरपर कलशस्थापन—सर्वप्रथम उत्तरवाली वेदीके विष्टरके ऊपर निम्न मन्त्रद्वारा कलश रखे—

ॐ आ जिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः। पुनरूर्जा नि वर्तस्व सा नः सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्मा विशताद्रयिः॥

कलशमें जल—निम्न मन्त्रसे कलशको जलसे परिपूर्ण कर दे—

ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनी स्थो वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमा सीद॥

कलशमें पंचरत्न—निम्न मन्त्रसे कलशमें पंचरत्न छोड़े—

ॐ परि वाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्। दधद्रत्नानि दाशुषे।

कलशमें दूर्वा—निम्न मन्त्रसे दूर्वा छोड़े—

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवा नो दूर्वे प्र तनु सहस्रेण शतेन च॥

कलशमें पंचपल्लव—निम्न मन्त्रसे पंचपल्लव छोड़े—

ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता। गोभाज इत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम्॥

श्वेतवस्त्रोंसे वेष्टन—तदनन्तर निम्न मन्त्रसे दो श्वेत वस्त्रोंसे कलशको आवेष्टित कर दे—

ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वः कामधुक्षः॥

इस प्रकार उत्तरवाला जलधेनुकलश स्थापितकर उसी प्रकार दक्षिणवाली वेदीपर तथा पुनः मध्यवाली वेदीपर भी कलश स्थापित करे।

जलधेनुवत्सकलशोंकी स्थापना

प्रत्येक जलधेनुकलशके पूर्वभागमें जलधेनुकलशके चतुर्थांशके परिमाणमें एक-एक छोटा कलश भी स्थापित करे। ये तीनों कलश जलधेनुवत्सकलश कहलाते हैं।[१]

जलधेनुओंके समीप विभिन्न वस्तुओंका स्थापन

प्रत्येक जलधेनुकलशके पूर्व तथा पश्चिम भागमें सप्तधान्य छोड़े। तदनन्तर तीन कांस्यपात्रोंमेंसे एकमें दधि, दूसरेमें मधु तथा तीसरेमें घृत छोड़े। इन पात्रोंको पूर्णपात्रके रूपमें उत्तर, दक्षिण तथा मध्य क्रमसे तीन कलशोंके ऊपर रखे। अर्थात् उत्तरवाले कलशमें दधियुक्त कांस्यपूर्णपात्र, दक्षिणवाले कलशमें मधुयुक्त कांस्यपूर्णपात्र और मध्यवाले कलशमें घृतयुक्त कांस्यपूर्णपात्र रखे। विष्टरके समीपमें कुष्ठ (औषधिविशेष), मांसी (जटामांसी), मुरा, उशीर (खस), तिल, गन्ध, आमलक, प्रियंगुपत्र, यज्ञोपवीत, छत्र तथा उपानह भी रख दे[२] तथा प्रत्येक जलधेनुमय कलशके चारों ओर चार तिलपूर्ण ताम्रपात्र रखे।

---

१. चतुर्थांशेन वत्सं तु ····। जलधेनुं सवत्सकामिति विष्णुधर्मोत्तरात् च। पूजयेत् वत्सकं तद्वत्कृतं जलमयं बुध इति। (जीवच्छ्राद्धपद्धति पृ० ३९५)

२. कुष्ठमांसीमुरोशीरतिलगन्धामलकैर्युतम्। प्रियङ्गुपत्रसहितं सितयज्ञोपवीतिनम्॥ सच्छत्रं स उपानत्कमिति विष्णुधर्मोत्तरात्। (जीवच्छ्राद्धपद्धति, पृ० ३९५)

कलशोंमें वरुण तथा विष्णुका विविध उपचारोंसे पूजन करे। अथवा

सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि वरुणाय नमः।

सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि, विष्णवे नमः। बोलकर पूजन कर ले।

कलशका परिमाण—कलश एक हजार पल[१] अथवा ५१२ पल सुवर्णका हो अथवा अभावमें ताम्रके तीन कलश स्थापितकर उसमें कुछ स्वर्ण छोड़ दे।

जलधेनुओंका पूजन

इस प्रकार यथाविधि जलधेनुओंकी स्थापना करके निम्न रीतिसे संकल्पपूर्वक तीनों कलशोंका यथाक्रम पूजन करे—

(१) उत्तरस्थानीय जलधेनुके पूजनका संकल्प—दायें हाथमें त्रिकुश, अक्षत तथा जल लेकर पूजनका निम्न संकल्प करे—

ॐ अद्य पूर्वोच्चारितग्रहगणगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं कृष्णात्रयोदश्यां वसुस्थानीयब्राह्मणदक्षिणार्थं जीवच्छ्राद्धाङ्गभूताया उत्तरदिक्स्थसोमोद्देश्यकसवत्सजलधेनोः पूजनं करिष्ये। हाथका जलादि छोड़ दे।

---

१. (क) एक पल=चार तोला।

(ख) पलसहस्रपरिमाणः कुम्भ इति दानविवेके, द्वादशपलाधिकानि पञ्चपलशतानि कुम्भ इति मयूखे। अभावे क्षिप्तसुवर्णस्य ताम्रकलशत्रयस्य स्थापनम्। (श्राद्धपद्धति पृ० ३९४-३९५)

आवाहन-प्रतिष्ठा—तदनन्तर निम्न मन्त्रसे जलधेनुका अक्षत-पुष्पसे आवाहन करे—

भो सोमोद्देश्ये सवत्से जलधेनो इहागच्छ सुप्रतिष्ठिता वरदा भव।

पूजन—ॐ सोमोद्देश्यायै सवत्सायै जलधेनवे नमः—इस मन्त्रसे यथाविधि जलधेनुका पूजन करे।

(२) दक्षिणस्थानीय जलधेनुके पूजनका संकल्प—दायें हाथमें त्रिकुश, अक्षत तथा जल लेकर पूजनका निम्न संकल्प करे—

ॐ अद्य पूर्वोच्चारितग्रहगणगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं कृष्णत्रयोदश्यां रुद्रस्थानीयब्राह्मणदक्षिणार्थं जीवच्छ्राद्धाङ्गभूताया दक्षिणदिक्स्थाग्न्युद्देश्यकसवत्सजलधेनोः पूजनं करिष्ये। कहकर हाथका जलादि छोड़ दे।

आवाहन-प्रतिष्ठा—तदनन्तर निम्न मन्त्रसे जलधेनुका आवाहन करे—

भो अग्न्युद्देश्ये सवत्से जलधेनो इहागच्छ सुप्रतिष्ठिता वरदा भव।

पूजन—ॐ अग्न्युद्देश्यायै सवत्सायै जलधेनवे नमः—इस मन्त्रसे यथाविधि पूजन करे।

(३) मध्यस्थानीय जलधेनुके पूजनका संकल्प—दायें हाथमें त्रिकुश, अक्षत तथा जल लेकर पूजनका निम्न संकल्प करे—

ॐ अद्य पूर्वोच्चारितग्रहगणगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं कृष्णत्रयोदश्यां

सूर्यस्थानीयब्राह्मणदक्षिणार्थं जीवच्छ्राद्धाङ्गभूताया मध्यस्थायाः यमोद्देश्यकसवत्सजलधेनोः पूजनं करिष्ये। हाथका जलादि छोड़ दे।

आवाहन तथा प्रतिष्ठा—निम्न मन्त्रसे जलधेनुका आवाहन करे—

भो यमोद्देश्ये सवत्से जलधेनो इहागच्छ सुप्रतिष्ठिता वरदा भव।

पूजन—ॐ यमोद्देश्यायै सवत्सायै जलधेनवे नमः—इस मन्त्रसे यथाविधि पूजन करे।

जलधेनुओंका विष्णुके लिये निवेदन

इस प्रकार तीनों जलधेनुओंका आवाहनपूर्वक पूजन करनेके अनन्तर यथाक्रमसे तीनों धेनुओंको हाथमें जल लेकर निम्न वाक्योंको पढ़ते हुए विष्णुके लिये निवेदन कर दे*—

(१) ॐ सोमाय पितृमते स्वधा नमः—ऐसा कहकर उत्तरवाली जलधेनु विष्णुको निवेदित करे।

(२) ॐ अग्नये कव्यवाहनाय स्वधा नमः—ऐसा कहकर दक्षिणवाली जलधेनु विष्णुको निवेदित करे।

(३) ॐ यमायाङ्गिरसे स्वधा नमः—ऐसा कहकर मध्यवाली जलधेनु विष्णुको निवेदित करे।

---

* यहाँ निवेदनसे तात्पर्य संकल्पमात्र समझना चाहिये न कि ब्राह्मणके लिये दान; क्योंकि वसुरुद्रादित्यके श्राद्ध हो जानेके अनन्तर ही इन जलधेनुओंका ब्राह्मणके लिये दान करनेका विधान है—**'अत्र निवेदनं विष्णवे संकल्पमात्रं न तु ब्राह्मणाय दानं तस्य श्राद्धान्ते विधानात्।'** (श्राद्धपद्धति पृ० ३९६)

वसुरुद्रादित्यपार्वणश्राद्ध-प्रयोग

जलधेनुका पूजन तथा विष्णुको निवेदन करनेके अनन्तर वसुरुद्रादित्यका पार्वणश्राद्ध करनेके लिये गोबरसे लिपी हुई अथवा धुली हुई श्राद्धभूमिपर आ जाय। सभी श्राद्धीय सामग्रियोंको यथास्थान रख ले। सर्वप्रथम पाकका निर्माण करे।

पाकनिर्माण—श्राद्धदेशके ईशानकोणमें पिण्डदानके लिये खीरका निर्माण कर ले। पिण्डके लिये गाढ़ी खीर बनानी चाहिये। केवल एक बार[1] धुले हुए चावलसे खीर बनानी चाहिये।

श्राद्धकार्यमें लोहेके पात्रका निषेध है।[2]

पाक-निर्माणके अनन्तर पाकमें तुलसीदल छोड़कर भगवान्‌का भोग लगा दे। तदनन्तर हाथ-पैर धोकर श्राद्धस्थलपर कुश या ऊनका आसन बिछाकर सव्य पूर्वाभिमुख होकर बैठ जाय।

विश्वेदेवोंके लिये पात्रासादन—जीवच्छ्राद्धमें विश्वेदेवोंके दो आसन होते हैं। अतः श्राद्धभूमिके पश्चिमकी

---

१. देवताओंके लिये तीन बार तथा पितरोंके लिये एक बार पाकद्रव्यका प्रोक्षण आदि करना चाहिये—

कण्डनं प्रेषणं चैव तथैवोल्लेखनं सदा। सकृदेव पितॄणां स्याद्देवानां तु त्रिरुच्यते॥ (वीरमित्रोदयसंस्कारप्रकाशमें वायुपुराणका वचन)

२. श्राद्धमें लोहेके पात्रका उपयोग कदापि नहीं करना चाहिये। लोहपात्रमें भोजन करना भी नहीं चाहिये और ब्राह्मणको भी भोजन कराना नहीं चाहिये। भोजनालय या पाकशालामें उसका कोई उपयोग न करे। केवल शाक, फल आदिके काटनेमें उसका उपयोग कर सकते हैं। लोहेके दर्शनमात्रसे पितर वापस लौट जाते हैं—

न कदाचित् पचेदन्नमयःस्थालीषु पैतृकम्। अयसो दर्शनादेव पितरो विद्रवन्ति हि॥

कालायसं विशेषेण निन्दन्ति पितृकर्मणि। फलानां चैव शाकानां छेदनार्थानि यानि तु॥

महानसेऽपि शस्तानि तेषामेव हि संनिधिः। (श्राद्धकल्पलता चमत्कारखण्ड)

ओर दक्षिणोत्तरक्रमसे पलाशके दो पत्ते बिछाकर उन दोनोंपर आसनके लिये त्रिकुश पूर्वाग्र स्थापित कर दे।

उन दोनों आसनोंके सामने भोजनपात्रके रूपमें पलाश आदिका एक-एक पत्ता रख दे और भोजनपात्रोंके उत्तर दिशामें एक-एक अर्घपात्र (दोनिया या हाथका बना मिट्टीका दीया),[1] एक-एक जलपात्र (दोनिया अथवा हाथका बना मिट्टीका दीया) तथा भोजनपात्रके सामने एक-एक घृतपात्र (दोनिया) भी रख दे।

वसुरुद्रादित्योंके लिये पात्रासादन—जीवच्छ्राद्धमें वसु, रुद्र तथा आदित्यके लिये तीन पृथक्-पृथक् आसन आदि होते हैं। विश्वेदेवोंके आसनोंसे कुछ दूर दक्षिण-पूर्व दिशामें पश्चिम-पूर्वक्रमसे पृथक्-पृथक् तीन पत्तोंपर दक्षिणाग्र तीन मोटकरूप आसन रखे। तीनों आसनोंके सम्मुख एक-एक भोजनपात्र तथा भोजनपात्रके पश्चिम दिशामें एक-एक जलपात्र, एक-एक अर्घपात्र तथा भोजनपात्रके सामने एक-एक घृतपात्र (दोनिया या हाथका बना मिट्टीका दीया) भी रख दे।

रक्षादीप-प्रज्वालन—इस श्राद्धमें दो रक्षादीप होंगे। एक विश्वेदेवोंके निमित्त तथा दूसरा वसुरुद्रादित्यके निमित्त। विश्वेदेवके आसनोंके पश्चिम-मध्यमें जौपर रखकर पूर्वाभिमुख[2] तिलके तेल अथवा घृतका एक दीपक जला

---

१. जो आसुर पात्रके द्वारा तिलोदक प्रदान करता है, उसे उसके पितर ग्रहण नहीं करते। कुम्हारके चाकपर बनाये गये पात्रको 'आसुर पात्र' कहते हैं, अतः उसका प्रयोग नहीं करना चाहिये। हाथसे बनाये गये मिट्टीके पात्रका ही प्रयोग करना चाहिये—

आसुरेण तु पात्रेण यस्तु दद्यात् तिलोदकम्। पितरस्तस्य नाश्नन्ति दशवर्षाणि पञ्च च॥
कुलालचक्रघटितमासुरं पात्रमुच्यते। तदेष हस्तघटितं स्थाल्यादि दैविकं भवेत्॥ (पा०गृ०सू० गदाधरभाष्य)

२. देवोंके निमित्त तथा द्विजके घरमें दीपकका मुख पूर्व या उत्तर और पितरोंके निमित्त दक्षिण करना चाहिये—

प्राङ्मुखोदङ्मुखं दीपं देवागारे द्विजालये। कुर्याद् याम्यमुखं पैत्र्ये अद्भिः संकल्प्य सुस्थिरम्॥ (निर्णयसिन्धु)

दे। इसी प्रकार वसुरुद्रादित्यके आसनके दक्षिणमें मध्यमें तिलोंपर रखकर तिलके तेलका दूसरा दीपक दक्षिणाभिमुख जला दे। तदनन्तर निम्न प्रार्थना करे—

भो दीप ब्रह्मरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत्। यावत् कर्मसमाप्तिः स्यात् तावत् त्वं सुस्थिरो भव॥

गन्ध, अक्षत, पुष्पसे दोनों दीपकोंका पूजन कर ले। हाथ धोकर आसनपर बैठ जाय।

गदाधर आदिकी प्रार्थना—अंजलिमें फूल लेकर गयाधाम, गदाधर तथा पितरोंका स्मरणकर निम्न मन्त्रसे प्रार्थना करे—

श्राद्धारम्भे गयां ध्यात्वा ध्यात्वा देवं गदाधरम्। स्वपितॄन् मनसा ध्यात्वा ततः श्राद्धं समाचरेत्॥

ॐ गयायै नमः। ॐ गदाधराय नमः—कहकर फूल भूमिपर छोड़ दे।

तदनन्तर तीन बार '**ॐ श्राद्धभूम्यै नमः**' कहकर भूमिपर जौ एवं पुष्प छोड़े।

भूमिसहित विष्णु-पूजन—श्राद्ध आरम्भ करनेके पूर्व विष्णुभगवान्का पूजन करनेका विधान है। अतः शालग्रामशिलापर षोडशोपचार अथवा पंचोपचार पूजन करना चाहिये। यदि सम्भव न हो तो निम्न श्लोकसे विष्णुभगवान्का स्मरण-पूजन करते हुए पुष्पांजलि समर्पितकर श्राद्ध आरम्भ करना चाहिये—

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्॥

'**ॐ भूमिपत्नीसहिताय विष्णवे नमः**'—कहकर भगवान् विष्णुको प्रणामकर पुष्प अर्पित कर दे।

कर्मपात्रका निर्माण—श्राद्धकर्ममें जलका उपयोग करनेके लिये कर्मपात्रका निर्माण कर ले। अक्षतोंके ऊपर जलसे भरा एक कलश रखकर उसमें चन्दन, तुलसी, जौ, पुष्प तथा कुश छोड़ दे और त्रिकुशसे जलको दक्षिणावर्त आलोडित करते हुए निम्न मन्त्रोंको पढ़े—

ॐ यद्देवा देवहेडनं देवासश्चकृमा वयम्। अग्निर्मा तस्मादेनसो विश्वान् मुञ्चत्वꣳहसः॥

ॐ यदि दिवा यदि नक्तमेनासि चकृमा वयम्। वायुर्मा तस्मादेनसो विश्वान् मुञ्चत्वꣳहसः॥

ॐ यदि जाग्रद्यदि स्वप्न एनाꣳसि चकृमा वयम्। सूर्यो मा तस्मादेनसो विश्वान् मुञ्चत्वꣳहसः॥

प्रोक्षण—कर्मपात्रके जलसे कुशद्वारा अपना तथा सभी श्राद्धसामग्री एवं पाकका प्रोक्षण करे और बोले—

'श्वादिदुष्टदृष्टिनिपातदूषितपाकादिकं पूतं भवतु।'

दिग्-रक्षण—बायें हाथमें पीली सरसों लेकर दाहिने हाथसे ढककर निम्न मन्त्र बोले—

नमो नमस्ते गोविन्द पुराणपुरुषोत्तम। इदं श्राद्धं हृषीकेश रक्ष त्वं सर्वतो दिशः॥

तदनन्तर दाहिने हाथसे सरसोंको पूर्व-दक्षिण आदि दिशाओंमें निम्न मन्त्रोंको पढ़ते हुए छोड़े—

पूर्वमें—**प्राच्यै नमः**। दक्षिणमें—**अवाच्यै नमः**। पश्चिममें—**प्रतीच्यै नमः**। उत्तरमें—**उदीच्यै नमः**। आकाशमें—**अन्तरिक्षाय नमः**। भूमिपर—**भूम्यै नमः**।

हाथ जोड़कर प्रार्थना करे—

पूर्वे नारायणः पातु वारिजाक्षस्तु दक्षिणे। प्रद्युम्नः पश्चिमे पातु वासुदेवस्तथोत्तरे।
ऊर्ध्वं गोवर्धनो रक्षेदधस्ताच्च त्रिविक्रमः॥

नीवीबन्धन—किसी पत्र-पुटक या पानके पत्तेपर तिल, त्रिकुशका टुकड़ा लपेटकर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए उसे दक्षिण कटिभागमें[1] खोंस ले, बाँध ले—

ॐ निहन्मि सर्वं यदमेध्यकृद् भवेद्धताश्च सर्वेऽसुरदानवा मया।
यक्षाश्च रक्षांसि पिशाचगुह्यका हता मया यातुधानाश्च सर्वे॥
ॐ सोमस्य नीविरसि विष्णोः शर्मासि शर्मयजमानस्येन्द्रस्य योनिरसि सुसस्याः कृषीस्कृधि॥

प्रतिज्ञासंकल्प—दाहिने हाथमें त्रिकुश, तिल तथा जल लेकर निम्न रीतिसे जीवच्छ्राद्धका प्रतिज्ञा-संकल्प करे—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः नमः पुराणपुरुषोत्तमाय ॐ तत्सत् अद्यैतस्य अचिन्त्यशक्तेर्महाविष्णोराज्ञया जगत्सृष्टिकर्मणि प्रवर्तमानस्य परार्धद्वयजीविनो ब्रह्मणो द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशान्तर्गते प्रजापतिक्षेत्रे ....स्थाने (काशीमें करना हो तो **अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रे गौरीमुखे त्रिकण्टकविराजिते महाश्मशाने आनन्दवने भगवत्या उत्तरवाहिन्या भागीरथ्या गङ्गाया वामभागे) ....संवत्सरे ....अयने ....ऋतौ ....मासे ....पक्षे ....तिथौ ....वासरे एवं ग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ....गोत्रः ....शर्मा[2]/वर्मा/गुप्तोऽहम् ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य शास्त्रबोधित-**

---

१. पितृणां दक्षिणे पार्श्वे विपरीता तु दैविके। दक्षिणे कटिदेशे तु कुशत्रयतिलैः सह। तर्जयन्तीह दैत्यानां यथा नृणामयस्तथा॥

२. ब्राह्मणको अपने नामके साथ '**शर्मा**', क्षत्रियको '**वर्मा**' तथा वैश्यको '**गुप्त**' जोड़ना चाहिये।

मरणोत्तरभाविप्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वकोत्तमोत्तमलोकप्राप्त्यर्थं और्ध्वदैहिकफलावाप्तये जीवन्मुक्त्यर्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं च जीवच्छ्राद्धं करिष्ये। तत्रादौ विश्वेदेवपूजनपूर्वकं वसुरुद्रादीनां पार्वणं च करिष्ये।

संकल्पका जल आदि सामने छोड़ दे।

पितृगायत्रीका पाठ—पितृगायत्रीका[1] तीन बार पाठ करे—

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च । नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः॥

आसनदान[2]

(क) विश्वेदेवोंके लिये आसनदान—प्रदक्षिणक्रमसे वसुरुद्रादित्योंके आसनोंकी परिक्रमा करते हुए विश्वेदेवोंके आसनोंके दक्षिणकी ओर रखे हुए अपने आसनपर सव्य उत्तराभिमुख हो बैठ जाय। तदनन्तर आसनदानका संकल्प करे—

पहला संकल्प—दाहिने हाथमें त्रिकुश, जौ, जल लेकर निम्न संकल्प करे—

ॐ अद्य ''''गोत्रस्य ''''जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धसम्बन्धिनां विश्वेषां देवानामिदमासनं वो नमः।

---

१. जिस प्रकार सन्ध्योपासनामें ब्रह्मगायत्रीका त्रिकाल जप आवश्यक है, उसी प्रकार श्राद्धमें पितरोंके गायत्रीमन्त्रका जप आवश्यक है। श्राद्धके प्रारम्भ, मध्य तथा अन्तमें निम्न पितृगायत्रीमन्त्रका जप करना चाहिये—

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च। नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः॥

आद्यावसाने श्राद्धस्य त्रिरावृत्त्या जपेत् सदा। पिण्डनिर्वपणे वाऽपि जपेदेवं समाहितः॥ (ब्रह्मपु० २२०।१४३-१४४)

२. अक्षय्यासनयोः षष्ठी द्वितीयावाहने तथा। अन्नदाने चतुर्थी च शेषाः सम्बुद्धयः स्मृताः॥ (निर्णयसिन्धु)

ऐसा संकल्प पढ़कर दक्षिण दिशावाले विश्वेदेवोंके कुशत्रयरूप आसनपर देवतीर्थसे संकल्पका जल छोड़ दे।

इसी प्रकार हाथमें त्रिकुश, जौ, जल लेकर संकल्प करे—

दूसरा संकल्प—ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धसम्बन्धिनां विश्वेषां देवानामिदमासनं वो नमः।

—कहकर संकल्पजल उत्तरमें स्थित दूसरे विश्वेदेवोंके पूर्वाग्र कुशत्रयरूप आसनपर छोड़ दे।

(ख) वसुरुद्रादित्योंके लिये आसनदान—विश्वेदेवोंके आसनकी परिक्रमा करते हुए वसुरुद्रादित्यके आसनके समीप अपने आसनपर आ जाय। अपसव्य दक्षिणाभिमुख[1] तथा बायाँ घुटना[2] जमीनसे लगाकर वसुरुद्रादित्यके आसनदानके लिये हाथमें मोटक, तिल, जल लेकर संकल्प करे—

(१) वसुओंके लिये आसनदानका संकल्प—ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे वसूनां दक्षिणाग्रं मोटकरूपमिदमासनं युष्मभ्यं स्वधा[3]—ऐसा कहकर पश्चिमवाले आसनपर संकल्पजल छोड़ दे।

---

१. सामान्य रूपसे पितृकर्म अपसव्य और दक्षिणकी ओर मुँह करके करनेका विधान है—अपसव्येन कृत्वैतद् वाग्यतः पित्र्यदिङ्मुखः। (छन्दोगपरिशिष्ट)

२. पितृकार्यमें बायाँ घुटना और देवकार्यमें दाहिना घुटना जमीनपर लगाना चाहिये—दक्षिणं पातयेज्जानुं देवान् परिचरन् सदा। पातयेदितरं जानुं पितॄन् परिचरन् सदा॥

३. (क)जीवच्छ्राद्धे सर्वत्र प्रेतशब्दो न प्रयोज्यः। सर्वत्र जीवच्छ्राद्धे प्रेतशब्दोच्चारणं नास्ति। (श्राद्धमयूख पृ० ८६-८७)

(ख) जीवच्छ्राद्धे सर्वत्र प्रेतशब्दोच्चारणं नास्तीति मयूखकौस्तुभोद्योतकृदादिभिरुक्तत्वात्प्रेतशब्दोच्चारणाभावेन स्वधा शब्दोच्चारणं भवत्येवेति। (श्राद्धपद्धति पृ० ४११)

(२) रुद्रोंके लिये आसनदानका संकल्प—ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे रुद्राणां दक्षिणाग्रं मोटकरूपमिदमासनं युष्मभ्यं स्वधा—ऐसा कहकर मध्यवाले आसनपर संकल्पजल छोड़ दे।

(३) आदित्योंके लिये आसनदानका संकल्प—ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे आदित्यानां दक्षिणाग्रं मोटकरूपमिदमासनं युष्मभ्यं स्वधा—ऐसा कहकर पूर्ववाले आसनपर संकल्पजल छोड़ दे।

विश्वेदेवमण्डलमें जाना—वसुरुद्रादित्योंको आसनदान करके उनकी प्रदक्षिणा करते हुए पुनः विश्वेदेवोंके समीप अपने आसनपर सव्य उत्तराभिमुख हो बैठ जाय और विश्वेदेवोंका आवाहन करे।

विश्वेदेवोंका आवाहन—हाथमें जौ लेकर निम्न मन्त्रसे विश्वेदेवोंका आवाहन करे—

विश्वान् देवानावाहयिष्ये।

ॐ विश्वे देवास आ गत शृणुता म इमꣳ हवम्। एदं बर्हिर्निषीदत।
ॐ विश्वे देवाः शृणुतेमꣳ हवं मे ये अन्तरिक्षे य उप द्यवि ष्ठ।
ये अग्निजिह्वा उत वा यजत्रा आसद्यास्मिन्बर्हिषि मादयध्वम्॥
आगच्छन्तु महाभागा विश्वेदेवा महाबलाः।
ये यत्र योजिताः श्राद्धे सावधाना भवन्तु ते॥

तदनन्तर **ॐ यवोऽसि यवयास्मद् द्वेषो यवयारातीः**—इस मन्त्रसे दोनों आसनों[१] पर जौ छोड़े।

वसुरुद्रादित्योंका आवाहन—विश्वेदेवोंकी प्रदक्षिणा करते हुए वसुरुद्रादित्यके आसनके सामने अपने आसनपर बायाँ घुटना जमीनपर टेककर अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर बैठ जाय। तिल लेकर निम्न मन्त्रोंसे वसुरुद्रादित्योंका आवाहन करे—

पितॄनावाहयिष्ये।

ॐ उशन्तस्त्वा नि धीमह्युशन्तः समिधीमहि। उशन्नुशत आ वह पितॄन् हविषे अत्तवे॥

ॐ आ यन्तु नः पितरः सोम्यासोऽग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः।
अस्मिन् यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधि ब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान्॥

तदनन्तर '**ॐ अपहता असुरा रक्षाꣳसि वेदिषदः॥**' —मन्त्र पढ़कर वसुरुद्रादित्योंके आसनोंपर तिल छोड़े।

विश्वेदेवोंके मण्डलमें आना—तदनन्तर वसुरुद्रादित्योंकी प्रदक्षिणा करते हुए पुनः विश्वेदेवोंके आसनके समीप अपने आसनपर सव्य उत्तराभिमुख हो बैठ जाय तथा अर्घपात्रका निर्माण करे।

दो अर्घपात्रोंका निर्माण—दो अर्घपात्रों (दोनियों)-में निम्न मन्त्रसे दो कुशपत्रोंका एक-एक पवित्रक पूर्वाग्र रखते हुए निम्न मन्त्र पढ़े—

---

१. आवाहयेदनुज्ञातो विश्वे देवास इत्यृचा॥ यवैरन्ववकीर्याथ भाजने सपवित्रके। शन्नो देव्या पयः क्षिप्त्वा यवोऽसीति यवांस्तथा॥ (वीरमित्रोदय श्रा०प्र०१९७में याज्ञवल्क्यका वचन)

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः।
तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्॥

तदनन्तर निम्न मन्त्रसे दोनों अर्घपात्रोंमें जल डाले—

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्त्रवन्तु नः॥

निम्न मन्त्रसे दोनों अर्घपात्रोंमें जौ डाले—

'ॐ यवोऽसि यवयास्मद् द्वेषो यवयारातीः।'

गन्ध-पुष्प मौन होकर छोड़े।

इसके बाद विश्वेदेवोंके प्रथम अर्घपात्रको बायें हाथमें लेकर दाहिने हाथसे अर्घपात्रसे पवित्रक निकालकर विश्वेदेवके भोजनपात्रपर पूर्वाग्र रख दे और '**ॐ नमो नारायणाय**' कहकर एक आचमनी जल पवित्रकके ऊपर छोड़ दे।

अर्घपात्रको दाहिने हाथसे ढककर निम्न मन्त्र पढ़कर अभिमन्त्रित करे—

ॐ या दिव्या आपः पयसा सम्बभूवुर्या आन्तरिक्षा उत पार्थवीर्याः।
हिरण्यवर्णा यज्ञियास्ता न आपः शिवाः शꣳस्योनाः सुहवा भवन्तु॥

अर्घदान*का संकल्प—दाहिने हाथमें त्रिकुश, जौ, जल तथा प्रथम अर्घपात्रको लेकर दक्षिण दिशाके

---

* अर्घदान, अक्षय्योदकदान, पिण्डदान, अवनेजनदान, प्रत्यवनेजनदान और स्वधावाचनमें एकतन्त्रकी विधि नहीं है—
अर्घेऽक्षय्योदके चैव पिण्डदानेऽवनेजने। तन्त्रस्य तु निवृत्तिः स्यात् स्वधावाचन एव च॥ (कात्यायनस्मृति २४।१५, वीरमित्रोदय-श्राद्धप्रकाश)

विश्वेदेवोंके अर्घदानका संकल्प करे—

(क) ॐ अद्य .....गोत्रस्य/.....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धसम्बन्धिनो विश्वेदेवा एषोऽर्घः वो नमः। कहकर अर्घका जल देवतीर्थसे पवित्रकपर छोड़ दे, पवित्रकको अर्घपात्रमें पूर्वाग्र रख ले और अर्घपात्रको विश्वेदेवोंके दक्षिण दिशाके आसनके दक्षिण भागमें **'विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्थानमसि'** कहकर उत्तान (सीधा) रख दे।

पूर्वोक्त रीतिसे दूसरे अर्घपात्रको भी अभिमन्त्रित कर ले।

दाहिने हाथमें त्रिकुश, जौ, जल तथा द्वितीय अर्घपात्रको लेकर उत्तरवाले विश्वेदेवोंके अर्घदानका संकल्प करे—

(ख) ॐ अद्य .....गोत्रस्य/.....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धसम्बन्धिनो विश्वेदेवा एषोऽर्घः वो नमः कहकर पूर्वकी तरह अर्घदान आदि करे और अर्घपात्रको **विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्थानमसि**—कहकर उत्तरवाले आसनके दक्षिण भागमें रख दे।

विश्वेदेवोंका पूजन—पहले दक्षिणवाले विश्वेदेवोंका निम्न रीतिसे पूजन करके फिर उत्तरवाले विश्वेदेवोंका पूजन इस प्रकार करना चाहिये—

इदमाचमनीयम्—कहकर आचमनीय जल दे। आचार्य **(स्वाचमनीयम्)** बोले।

इदं स्नानीयम् (सुस्नानीयम्)—कहकर स्नानीय जल दे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं वस्त्रम् (सुवस्त्रम्)—कहकर वस्त्र या सूत्र चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इमे यज्ञोपवीते (सुयज्ञोपवीते)—कहकर यज्ञोपवीत चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदमुपवस्त्रम् (सुवस्त्रम्)—कहकर उपवस्त्र चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

एष गन्धः (सुगन्धः)—कहकर गन्ध अर्पित करे।

इमे यवाक्षताः (सुयवाक्षताः)—कहकर यवाक्षत चढ़ाये।

इदं माल्यम् (सुमाल्यम्)—कहकर माला चढ़ाये।

एष धूपः (सुधूपः)—कहकर धूप आघ्रापित करे।

एष दीपः (सुदीपः)—कहकर दीपक दिखाये।

हस्तप्रक्षालनम् (हाथ धो ले।)

इदं नैवेद्यम् (सुनैवेद्यम्)—कहकर नैवेद्य अर्पित करे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं फलम् (सुफलम्)—कहकर फल अर्पित करे।

इदं ताम्बूलम् (सुताम्बूलम्)—कहकर ताम्बूल प्रदान करे।

एषा दक्षिणा (सुदक्षिणा)—कहकर दक्षिणा चढ़ाये।

अर्चनदानका संकल्प—हाथमें त्रिकुश, जौ, जल लेकर दक्षिणवाले विश्वेदेवोंके अर्चनदानका संकल्प करे—

(क) ॐ अद्य ....गोत्रस्य/.....जीवशर्मण:/वर्मण:/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धसम्बन्धिनो विश्वेदेवा एतान्यर्चनानि वो नमः। कहकर संकल्पजल छोड़ दे।

इसी प्रकार दूसरा संकल्प करे—

(ख) ॐ अद्य ....गोत्रस्य/.....जीवशर्मण:/वर्मण:/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धसम्बन्धिनो विश्वेदेवा एतान्यर्चनानि वो नमः। कहकर संकल्पजल छोड़ दे।

विश्वेदेवमण्डलकरण—दोनों विश्वेदेवोंके भोजनपात्रोंके सहित आसनोंके चारों ओर दक्षिणावर्त जलसे घेरते हुए दो पृथक्-पृथक् चौकोर* मण्डल बनाये। उस समय निम्न मन्त्र पढ़े—

ॐ यथा चक्रायुधो विष्णुस्त्रैलोक्यं परिरक्षति। एवं मण्डलतोयं तु सर्वभूतानि रक्षतु॥

अग्नौकरण—विश्वेदेवोंके आसनोंकी परिक्रमा करते हुए वसुरुद्रादित्यमण्डलमें अपने आसनपर आकर पूर्वाभिमुख बैठ जाय। एक दोनियेमें जल भरकर सामने रख ले। बने हुए पाकमें घृत छोड़कर पाकान्नसे दो आहुतियाँ

---

*देवताओंके लिये चतुष्कोण और जीव तथा पितरोंके लिये वृत्ताकार मण्डल बनाना चाहिये— (क) दैवे चतुरस्त्रं पित्र्ये वर्तुलं मण्डलम्। (निर्णयसिन्धुमें बह्वृचपरिशिष्ट) (ख) देवताओंके लिये दक्षिणावर्त तथा जीव एवं पितरोंके लिये वामावर्त मण्डल बनानेकी विधि है—प्रदक्षिणं तु देवानां पितॄणामप्रदक्षिणम्। (वीरमित्रोदय-श्राद्धप्रकाशमें कात्यायनका वचन)

दोनियेके जलमें* निम्न मन्त्रोंसे दे—

(१) ॐ अग्नये कव्यवाहनाय स्वाहा।

(२) ॐ सोमाय पितृमते स्वाहा।

इस प्रकार अग्नौकरणकर वसुरुद्रादित्यकी परिक्रमा करते हुए विश्वेदेवमण्डलमें अपने आसनपर उत्तराभिमुख बैठ जाय। तदनन्तर अन्नपरिवेषण करे।

अन्नपरिवेषण—दोनों विश्वेदेवोंके लिये रखे हुए दो पृथक्-पृथक् भोजनपात्रोंसे जौ आदि हटा ले। बने हुए पाक तथा भोजन-सामग्रीसे प्रथम भोजनपात्रपर अन्नोंको परोसे। जलपात्रमें जल तथा घृतपात्रमें घृत छोड़ दे और निम्न मन्त्र पढ़ते हुए परोसे गये अन्नपर दोनों हाथोंसे मधु छोड़े—

ॐ मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः॥ मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳ रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता॥ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ२ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥ ॐ मधु मधु मधु॥

इसी प्रकार दूसरे विश्वेदेवोंके भोजनपात्र, जलपात्र, घृतपात्र आदिमें भोजन आदि परोसकर '**मधु वाता०**' से

---

* '**अग्न्यभावे तु विप्रस्य पाणौ वाथ जलेऽपि वा।**' (वीरमित्रोदय-श्राद्धप्रकाशमें मत्स्यपुराणका वचन)

यहाँ अग्न्यभावका अर्थ अग्न्याधानाभाव है। जो अग्निहोत्री हैं, वे दक्षिणाग्निमें अग्नौकरण करें और अग्निके अभावमें अर्थात् अग्न्याधानके अभावमें जो अग्निहोत्री नहीं हैं, वे सपात्रकश्राद्धमें ब्राह्मणके दाहिने हाथमें अग्नौकरण करें और सपात्रकश्राद्ध न होनेपर दोनियेमें स्थित जलमें अग्नौकरण करें।

मधु छोड़े।

पात्रालम्भन[१]—उत्तान बायें हाथपर उत्तान दायाँ हाथ स्वस्तिकाकार रखकर भोजनपात्रको स्पर्श करते हुए निम्न मन्त्र पढ़े—

ॐ पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे अमृते अमृतं जुहोमि स्वाहा। ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम्। समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा॥ ॐ कृष्ण हव्यमिदं रक्ष मदीयम्।

अंगुष्ठनिवेशन[२]—तदनन्तर संकल्पपर्यन्त बायें हाथसे अन्नपात्रका स्पर्श किये हुए ही दाहिने अँगूठेको अन्नादिमें रखकर बोले—

अन्नमें—**इदमन्नम्।** जलमें—**इमा आपः।** घीमें—**इदमाज्यम्।** तदनन्तर अन्नको पुनः स्पर्शकर बोले—**इदं हव्यम्।**

---

१. (क) दक्षिणं तु करं कृत्वा वामोपरि निधाय च। देवपात्रमथालभ्य पृथ्वी ते पात्रमुच्चरेत्॥ (ख) पित्र्येऽनुत्तानपाणिभ्यामुत्तानाभ्यां च दैवते। (यम)

२. (क) उत्तान हाथके अँगूठेसे अन्नस्पर्श करनेपर वह श्राद्ध आसुरश्राद्ध हो जाता है और पितरोंको उपलब्ध नहीं होता। इसलिये अनुत्तान हाथके अँगूठेसे अन्न आदिका स्पर्श करना चाहिये—

उत्तानेन तु हस्तेन कुर्यादन्नावगाहनम्। आसुरं तद्भवेच्छ्राद्धं पितॄणां नोपतिष्ठते॥

(ख) जो अज्ञानवश उत्तान हाथसे अंगुष्ठनिवेशन करता है तो वह अन्न राक्षसोंको प्राप्त होता है—

उत्तानेन तु हस्तेन द्विजाङ्गुष्ठनिवेशनम्। यः करोति नरो मोहात् तद्वै रक्षांसि गच्छति॥ (धौम्य)

इसके बाद विश्वेदेवोंके भोजनपात्रमें अन्नके ऊपर निम्न मन्त्रसे जौ छींटे—

ॐ यवोऽसि यवयास्मद् द्वेषो यवयारातीः।

अन्नदानका संकल्प—दाहिने हाथमें त्रिकुश, जौ, जल लेकर संकल्प करे—

ॐ अद्य ""गोत्रस्य/""जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धसम्बन्धिभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्य इदमन्नं सोपस्करं वो नमः। कहकर संकल्पजल छोड़ दे।

दूसरे विश्वेदेवोंके भोजनपात्रपर भी पूर्वकी भाँति पात्रालम्भन, अंगुष्ठनिवेशन आदि करके निम्न रीतिसे अन्नदानका संकल्प करे—

अन्नदानका संकल्प—ॐ अद्य ""गोत्रस्य/""जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धसम्बन्धिभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्य इदमन्नं सोपस्करं वो नमः। कहकर संकल्पजल छोड़ दे।

वसुरुद्रादित्यमण्डलमें आना—विश्वेदेवोंकी प्रदक्षिणा करते हुए वसुरुद्रादित्यमण्डलके पास अपने आसनपर आकर अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर तीन पृथक्-पृथक् अर्घपात्रोंको बनाये।

तीन अर्घपात्रोंका निर्माण—वसु, रुद्र तथा आदित्यके पास रखे हुए अर्घपात्रों (दोनियों)-में क्रमसे दो कुशपत्रोंका बना एक-एक पवित्रक दक्षिणाग्र निम्न मन्त्र पढ़ते हुए रखे—

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः।
तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्॥

निम्न मन्त्रसे क्रमशः तीनों अर्घपात्रोंमें जल छोड़े—

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्त्रवन्तु नः॥

तीनों अर्घपात्रोंमें तिल छोड़ते हुए निम्न मन्त्र पढ़े—

ॐ तिलोऽसि सोमदैवत्यो गोसवो देवनिर्मितः।
प्रत्नमद्भिः पृक्तः स्वधया पितॄँल्लोकान् प्रीणाहि नः स्वाहा॥

और तीनों अर्घपात्रोंमें गन्ध-पुष्प मौन होकर छोड़े।

अर्घदान—इस प्रकार तीन अर्घपात्रोंका निर्माणकर तीन संकल्पोंके द्वारा पृथक्-पृथक् अर्घदान निम्न रीतिसे करना चाहिये।

पहले वसुवाले अर्घपात्रको बायें हाथमें रखकर उसका पवित्रक निकालकर वसुके भोजनपात्रपर उत्तराग्र रख दे और '**ॐ नमो नारायणाय**' मन्त्रसे एक आचमनी जल पवित्रकपर छोड़ दे।

अर्घपात्रको दाहिने हाथसे ढककर निम्न मन्त्र पढ़कर अभिमन्त्रित करे—

ॐ या दिव्या आपः पयसा सम्बभूवुर्या आन्तरिक्षा उत पार्थवीर्याः।
हिरण्यवर्णा यज्ञियास्ता न आपः शिवाः शꣳस्योनाः सुहवा भवन्तु॥

तदनन्तर अर्घदानका संकल्प करे—

(१) वसुओंके लिये अर्घदानका संकल्प—मोटक, तिल, जल तथा प्रथम वसुवाले अर्घपात्रको दाहिने हाथमें लेकर संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्रस्य/....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे वसवः एष हस्तार्घः वः स्वधा।

—बोलकर पितृतीर्थसे पवित्रकपर अर्घका आधा जल गिरा दे। पवित्रक उठाकर अर्घपात्रमें दक्षिणाग्र रख दे और अर्घपात्रको यथास्थान सुरक्षित रख दे।

इसी प्रकार रुद्र तथा आदित्यके अर्घपात्रोंको पृथक्-पृथक् अभिमन्त्रित आदि करे और आगे लिखी रीतिसे अर्घदानका संकल्प करे।

(२) रुद्रके लिये अर्घदानका संकल्प—दाहिने हाथमें मोटक, तिल, जल तथा द्वितीय अर्घपात्र लेकर संकल्प करे।

ॐ अद्य ....गोत्रस्य/....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे रुद्राः एष हस्तार्घः वः स्वधा। कहकर पहलेकी भाँति पवित्रकपर अर्घका आधा जल गिरा दे तथा पवित्रक उठाकर अर्घपात्रमें दक्षिणाग्र रख दे और अर्घपात्र यथास्थान स्थापित कर दे।

(३) आदित्यके लिये अर्घदानका संकल्प—ॐ अद्य ....गोत्रस्य/....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे आदित्याः एष हस्तार्घः वः स्वधा। कहकर पहलेकी भाँति अर्घदानप्रक्रिया पूर्णकर अर्घपात्र यथास्थान स्थापित कर दे।

वसु, रुद्र तथा आदित्यके अर्घपात्रोंका संयोजन—आदित्यके अर्घपात्रका जल आदि रुद्रके

अर्घपात्रमें और रुद्रके अर्घपात्रका जल आदि वसुके अर्घपात्रमें छोड़ दे। तदनन्तर वसुके सजल अर्घपात्रको रुद्रके अर्घपात्रपर रखे और उन दोनों अर्घपात्रोंको आदित्यके अर्घपात्रपर रखकर तीनों अर्घपात्रोंको वसुके आसनके वामपार्श्व अर्थात् पश्चिम दिशामें **'वसुरुद्रादित्येभ्यः स्थानमसि'** कहकर उलटकर[१] रख दे। इन अर्घपात्रोंको दक्षिणादानपर्यन्त न हिलाये और न उठाये।[२]

वसुरुद्रादित्यका पूजन—वसु, रुद्र तथा आदित्यके आसनोंपर पृथक्-पृथक् विविध उपचारोंसे पूजन करे। यथा—

इदमाचमनीयम्—कहकर आचमनीय जल दे। आचार्य **(स्वाचमनीयम्)** बोले।

इदं स्नानीयम् (सुस्नानीयम्)—कहकर स्नानीय जल दे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं वस्त्रम् (सुवस्त्रम्)—कहकर वस्त्र या सूत्र चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इमे यज्ञोपवीते (सुयज्ञोपवीते)—कहकर यज्ञोपवीत चढ़ाये।

---

१. विद्वान्‌को चाहिये कि अर्घप्रदानके बाद एकोद्दिष्टश्राद्धमें पात्रको उत्तान (सीधा) रखे और पार्वणश्राद्धमें उलटा (अधोमुख) रखे—
उत्तानं स्थापयेत् पात्रमेकोद्दिष्टे सदा बुधः । न्युब्जन्तु पार्वणे कुर्यात्०॥ (वीरमित्रोदय)

२. नोद्धरेत् न च चालयेत्। (यमस्मृति)

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदमुपवस्त्रम् (सुवस्त्रम्)—कहकर उपवस्त्र चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

एष गन्धः (सुगन्धः)—कहकर गन्ध अर्पित करे।

इमे तिलाक्षताः (सुतिलाक्षताः)—कहकर तिलाक्षत चढ़ाये।

इदं माल्यम् (सुमाल्यम्)—कहकर माला चढ़ाये।

एष धूपः (सुधूपः)—कहकर धूप आघ्रापित करे।

एष दीपः (सुदीपः)—कहकर दीपक दिखाये।

हस्तप्रक्षालनम् (हाथ धो ले।)

इदं नैवेद्यम् (सुनैवेद्यम्)—कहकर नैवेद्य अर्पित करे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं फलम् (सुफलम्)—कहकर फल अर्पित करे।

इदं ताम्बूलम् (सुताम्बूलम्)—कहकर ताम्बूल प्रदान करे।

एषा दक्षिणा (सुदक्षिणा)—कहकर दक्षिणा चढ़ाये।

अर्चनदानका संकल्प—हाथमें मोटक, तिल, जल लेकर पहले वसुओंके लिये अर्चनदानका संकल्प करे—

(क) ॐ अद्य ....गोत्रस्य/....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे वसवः एतान्यर्चनानि युष्मभ्यं स्वधा—कहकर संकल्पजल आसनपर छोड़ दे।

इसी प्रकार हाथमें मोटक, तिल, जल लेकर रुद्रोंके लिये अर्चनदानका संकल्प करे—

(ख) ॐ अद्य ....गोत्रस्य/....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे रुद्राः एतान्यर्चनानि युष्मभ्यं स्वधा—कहकर संकल्पजल आसनपर छोड़ दे।

ऐसे ही हाथमें मोटक, तिल, जल लेकर आदित्योंके लिये अर्चनदानका संकल्प करे—

(ग) ॐ अद्य ....गोत्रस्य/....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे आदित्याः एतान्यर्चनानि युष्मभ्यं स्वधा—कहकर संकल्पजल आसनपर छोड़ दे।

सव्य होकर आचमन कर ले पुनः अपसव्य दक्षिणाभिमुख हो जाय।

मण्डलकरण—निम्न मन्त्र पढ़ते हुए जलद्वारा वामावर्त भोजनपात्रसहित सभी आसनोंके चतुर्दिक् गोल मण्डल बनाये। सर्वप्रथम वसुके भोजनपात्रसहित आसनके चारों ओर एक गोल मण्डल बनाये। इसी प्रकार रुद्र तथा आदित्यके भोजनपात्रोंसहित आसनोंके चारों ओर भी गोल मण्डल बनाना चाहिये—

ॐ यथा चक्रायुधो विष्णुस्त्रैलोक्यं परिरक्षति। एवं मण्डलतोयं तु सर्वभूतानि रक्षतु॥

भूस्वामीके पितरोंको अन्नप्रदान—दक्षिण दिशाकी भूमिको जलसे सींच दे। एक दोनेमें पाकसे सभी अन्न परोसकर उसमें घृत, तिल, मधु छोड़कर तथा दूसरे दोनेमें जल लेकर जलसे सिंचित भूमिमें वह अन्न तथा जल भूस्वामीके पितरोंके निमित्त यह बोलकर पितृतीर्थसे रख दे—**ॐ इदमन्नमेतद्भूस्वामिपितृभ्यो नमः।**

अन्नपरिवेषण—वसुरुद्रादित्यके लिये स्थापित तीनों भोजनपात्रोंपर पड़े तिल आदि हटाकर पात्रोंको साफ कर ले।[१] तदनन्तर बने हुए पाक तथा तीनों भोजनपात्रोंपर पृथक्-पृथक् अन्न परोसे। बायें भागमें पूर्वस्थापित जलपात्रोंमें जल तथा सामने स्थित घृतपात्रोंमें घी छोड़ दे। तदनन्तर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए तीन भोजनपात्रोंमें परोसे गये अन्नपर दोनों हाथोंसे पितृतीर्थसे मधु छोड़े—

ॐ मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः॥ मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳ रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता॥ मधुमान्नो वनस्पति-र्मधुमाँ२ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥ ॐ मधु मधु मधु॥

पात्रालम्भन—अनुत्तान दक्षिण हाथके ऊपर अनुत्तान बायें हाथको स्वस्तिकाकार रखकर[२] वसुवाले प्रथम अन्नपात्रका स्पर्श करते हुए निम्न मन्त्र बोले—

---

१. अन्नपरिवेषणसे पूर्व भोजनपात्रोंसे तिल आदि हटा लेना चाहिये। ऐसा न करनेपर अर्थात् अन्नपात्रोंमें तिल देखकर पितर निराश होकर वापस लौट जाते हैं—अन्नपात्रे तिलान् दृष्ट्वा निराशाः पितरो गताः।

२. (क)दक्षिणोपरि वामं च पित्र्यपात्रस्य लम्भनम्। पात्रालम्भनं कुर्याद् दत्त्वा चान्नं यथाविधिः॥(श्राद्धकाशिकामें पद्मपुराणका वचन)

(ख)पित्र्येऽनुत्तानपाणिभ्यामुत्तानाभ्यां च दैवते। (यम)

ॐ पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे अमृते अमृतं जुहोमि स्वाहा। ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम्। समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा॥ ॐ कृष्ण कव्यमिदं रक्ष मदीयम्।

अंगुष्ठनिवेशन (अन्नावगाहन)*—बायें हाथसे भोजनपात्रका स्पर्श किये हुए ही दाहिने हाथका अँगूठा अन्नादिमें रखकर बोले—

अन्नमें—**इदमन्नम्।** जलमें—**इमा आपः।** घीमें—**इदमाज्यम्।** पुनः अन्न छूकर बोले—**इदं कव्यम्।**

तिलविकिरण—भोजनपात्रमें अन्नके ऊपर निम्न मन्त्रसे तिल छोड़ दे—

'ॐ अपहता असुरा रक्षाꣳसि वेदिषदः॥'

अन्नदानका संकल्प—संकल्पपर्यन्त अन्नपात्रका बायें हाथसे स्पर्श किये रहे। दाहिने हाथमें मोटक, तिल, जल लेकर अन्नदानका निम्न संकल्प करे—

ॐ अद्य ''''गोत्रस्य/''''जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे वसुभ्यः एतदन्नं युष्मभ्यं स्वधा—ऐसा कहकर संकल्पजल भोजनपात्रपर छोड़ दे।

---

* (क) उत्तान हाथके अँगूठेसे अन्नस्पर्श करनेपर वह श्राद्ध आसुरश्राद्ध हो जाता है और पितरोंको उपलब्ध नहीं होता। इसलिये अनुत्तान हाथके अँगूठेसे अन्न आदिका स्पर्श करना चाहिये—

उत्तानेन तु हस्तेन कुर्यादन्नावगाहनम्। आसुरं तद्भवेच्छ्राद्धं पितॄणां नोपतिष्ठते॥

(ख) जो अज्ञानवश उत्तान हाथसे अंगुष्ठनिवेशन करता है तो वह अन्न राक्षसोंको प्राप्त होता है—

उत्तानेन तु हस्तेन द्विजाङ्गुष्ठनिवेशनम्। यः करोति नरो मोहात् तद्वै रक्षांसि गच्छति॥ (धौम्य)

इसी प्रकार रुद्र तथा आदित्यके अन्नपात्रोंपर भी आलम्भन, अंगुष्ठनिवेशन, तिलविकिरण तथा संकल्पकी क्रियाएँ करे। संकल्पके अनन्तर बायाँ हाथ हटा ले। अन्नदानके संकल्पमें **वसुभ्यः**के स्थानपर **रुद्रेभ्यः** तथा **आदित्येभ्यः** जोड़ ले। अन्नदानके अनन्तर निम्न मन्त्र पढ़े—

अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद् भवेत्। अच्छिद्रमस्तु तत्सर्वं पित्रादीनां प्रसादतः॥

सव्य होकर हाथ धो ले और आचमन करे।

पितृगायत्रीका पाठ—तीन बार निम्न पितृगायत्रीका पाठ करे—

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च। नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः॥

वेदशास्त्रादिका पाठ—पैरोंके नीचे पूर्वाग्र तीन कुश रखकर निम्नलिखित वेदशास्त्रादिका पाठ करे। यथासम्भव पुरुषसूक्त, पितृसूक्त, रुचिस्तव तथा रक्षोघ्नसूक्त आदिका पाठ करना चाहिये।

श्रुतिपाठ—**ॐ अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्॥**

ॐ इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्व मघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा व स्तेन ईशत माघशꣳसो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि॥

ॐ अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये। नि होता सत्सि बर्हिषि॥

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्त्रवन्तु नः॥

स्मृतिपाठ—

मनुमेकाग्रमासीनमभिगम्य महर्षयः। प्रतिपूज्य यथान्यायमिदं वचनमब्रुवन्॥
योगीश्वरं याज्ञवल्क्यं सम्पूज्य मुनयोऽब्रुवन्। वर्णाश्रमेतराणां नो ब्रूहि धर्मानशेषतः॥
मन्वत्रिविष्णुहारीतयाज्ञवल्क्योशनोऽङ्गिराः। यमापस्तम्बसंवर्ताः कात्यायनबृहस्पती॥
पराशरव्यासशङ्खलिखिता दक्षगौतमौ। शातातपो वसिष्ठश्च धर्मशास्त्रप्रयोजकाः॥

पुराण—

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्। देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत्॥
सप्त व्याधा दशार्णेषु मृगाः कालञ्जरे गिरौ। चक्रवाकाः शरद्वीपे हंसाः सरसि मानसे॥
तेऽभिजाताः कुरुक्षेत्रे ब्राह्मणा वेदपारगाः। प्रस्थिता दीर्घमध्वानं यूयं किमवसीदथ॥

महाभारत—

दुर्योधनो मन्युमयो महाद्रुमः स्कन्धः कर्णः शकुनिस्तस्य शाखाः।
दुःशासनः पुष्पफले समृद्धे मूलं राजा धृतराष्ट्रोऽमनीषी॥
युधिष्ठिरो धर्ममयो महाद्रुमः स्कन्धोऽर्जुनो भीमसेनोऽस्य शाखाः।
माद्रीसुतौ पुष्पफले समृद्धे मूलं कृष्णो ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च॥

विकिरदान—अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर नैर्ऋत्यकोण*की भूमिको जलसे सींच दे तथा उसपर कुश बिछा दे। बने हुए पाकसे अन्न लेकर मोटक, तिल और जलसहित अन्न पितृतीर्थसे निम्न मन्त्र पढ़ते हुए उसे सिंचित भूमिपर बिछाये गये कुशोंपर रख दे—

असंस्कृतप्रमीतानां त्यागिनां कुलभागिनाम्। उच्छिष्टभागधेयानां दर्भेषु विकिरासनम्॥
अग्निदग्धाश्च ये जीवा येऽप्यदग्धाः कुले मम। भूमौ दत्तेन तृप्यन्तु तृप्ता यान्तु परां गतिम्॥

पवित्री, मोटक आदि वहीं छोड़ दे। हाथ-पैर धोकर सव्य पूर्वाभिमुख हो जाय, आचमन कर ले, हरिस्मरण करनेके बाद नयी पवित्री धारण कर ले।

पिण्डवेदी-निर्माण—अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर दक्षिणकी ओर ढालवाली उत्तर-दक्षिण लम्बी एक हाथ लम्बी-चौड़ी एक वेदी वसु, रुद्र तथा आदित्यके आसनोंके ठीक सामने मध्यमें बनाये।

वेदीको जलसे सींचकर पवित्र कर ले। उस समय बोले—

ॐ अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची ह्यवन्तिका। पुरी द्वारावती ज्ञेयाः सप्तैता मोक्षदायिकाः॥

रेखाकरण—दायें हाथसे तीन कुशोंकी जड़ तथा बायें हाथकी तर्जनी एवं अंगुष्ठसे कुशोंके अग्रभागको पकड़कर कुशोंके मूलभागसे उत्तरसे दक्षिणकी ओर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए वेदीपर एक सीधमें तीन रेखाएँ खींचे—

ॐ अपहता असुरा रक्षाꣳसि वेदिषदः॥

* आभ्युदयिक (वृद्धि)-श्राद्धमें पूर्वमें, पार्वणश्राद्धमें नैर्ऋत्यमें, सांवत्सरिकश्राद्धमें अग्निकोणमें तथा प्रेतश्राद्धमें दक्षिण दिशामें विकिरदान करना चाहिये—आभ्युदयिके तु पूर्वे नैर्ऋत्ये पार्वणे तथा। अग्निकोणे क्षयाहे स्यात् प्रेतश्राद्धे च दक्षिणे॥

उन कुशोंको ईशानकोणकी ओर फेंक दे।

उल्मुकस्थापन[1]—वेदीके चारों ओर निम्न मन्त्रसे बायीं ओरसे अंगारको घुमाये तथा उसे पिण्डवेदीके दक्षिणकी ओर श्राद्धपर्यन्त स्थापित रखे।

ॐ ये रूपाणि प्रतिमुञ्चमाना असुराः सन्तः स्वधया चरन्ति।
परापुरो निपुरो ये भरन्त्यग्निष्टाँल्लोकात्प्रणुदात्यस्मात्॥

इस प्रक्रियाकी सिद्धि अंगार तथा गोहरीके अभावमें ज्वालामुखी धूप आदिसे भी की जा सकती है।

कुशास्तरण[2]—समूल तीन कुशोंको एक साथ जड़सहित दो भागोंमें एक ही बारमें विभक्तकर वेदीके मध्यमें खींची गयी रेखाओंपर दक्षिणाग्र बिछा दे।

अवनेजनपात्रस्थापन—अवनेजनपात्रके रूपमें उत्तर-दक्षिण क्रमसे तीन दोनिये पिण्डवेदीके पश्चिम भागमें रख दे। तीनों दोनियोंमें पृथक्-पृथक् जल, तिल, पुष्प तथा गन्ध छोड़ दे।

अवनेजनदानका संकल्प—हाथमें मोटक, तिल, जल तथा वसुवाला प्रथम अवनेजनपात्र (दोनिया) लेकर निम्न संकल्प करे—

---

१. उल्लेखनानन्तरं पश्चादुल्मुकनिधानमाह कात्यायनः—उल्मुकं परस्तात् करोति ये रूपाणीति रेखायाः परस्ताद्दक्षिणप्रदेशे उल्मुकं निदधातीत्यर्थः। स्कन्दपुराणेऽपि ये रूपाणीति मन्त्रेण न्यसेदुल्मुकमन्तिके। अन्तिके दक्षिणाशायामित्यर्थः। (गौडीयश्राद्धप्रकाश पृ० ३०)

अंगारको घुमानेके अनन्तर पिण्डवेदीके दक्षिणदिशामें स्थापित करना चाहिये।

२. दर्भग्रहणमिहोपमूलसकृदाछिन्नोपलक्षणार्थम्। (पा०गृ०सू० श्राद्धसूत्रकण्डिका ३, **दर्भेषु** पर कर्काचार्यजीका भाष्य)

(१) वसुओंके लिये—ॐ अद्य ....गोत्रस्य/....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे वसवः पिण्डस्थाने अत्रावनेनिग्ध्वं युष्मभ्यं स्वधा।

कहकर दोनियेके आधे जलको वेदीकी उत्तरवाली प्रथम रेखामें स्थापित कुशोंपर गिरा दे और सजल दोनियेको प्रत्यवनेजनके लिये यथास्थान सुरक्षित रख ले।

(२) रुद्रोंके लिये—इसी प्रकार हाथमें मोटक, तिल, जल तथा रुद्रवाला दोनिया लेकर संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्रस्य/....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे रुद्राः पिण्डस्थाने अत्रावनेनिग्ध्वं युष्मभ्यं स्वधा।

उसी प्रकार आधा जल वेदीकी मध्यरेखामें स्थापित कुशोंपर गिराकर दोनिया यथास्थान सुरक्षित रख ले।

(३) आदित्योंके लिये—इसी प्रकार हाथमें मोटक, तिल, जल तथा आदित्यवाला दोनिया लेकर संकल्प करे—**ॐ अद्य ....गोत्रस्य/....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे आदित्याः पिण्डस्थाने अत्रावनेनिग्ध्वं युष्मभ्यं स्वधा।**

उसी प्रकार दोनियाका आधा जल वेदीपर दक्षिणवाली रेखामें स्थापित कुशोंपर गिराकर दोनिया यथास्थान सुरक्षित रख ले।

पिण्डनिर्माण तथा पिण्डदान—पाकमें तिल, घृत तथा मधु मिलाकर कपित्थ (कैथ)-फलके बराबर तीन गोल-गोल पिण्ड बना ले और उन्हें किसी पत्तलपर रख दे।

बायाँ घुटना मोड़कर जमीनपर टिकाकर प्रथम पिण्ड तथा मोटक, तिल, जल लेकर निम्न संकल्प करे—

(१) वसुओंके लिये पिण्डदानका संकल्प—ॐ अद्य ....गोत्रस्य/....जीवशर्मणः/वर्मणः/

गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे वसवः एष पिण्डः युष्मभ्यं स्वधा—कहकर पिण्डको पितृतीर्थसे वेदीमें स्थित कुशोंके मूलभागमें (प्रथम अवनेजनस्थानपर) बायें हाथकी सहायतासे सँभालकर रख दे।

(२) रुद्रोंके लिये पिण्डदानका संकल्प—ॐ अद्य ....गोत्रस्य/....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे रुद्राः एष पिण्डः युष्मभ्यं स्वधा—कहकर पिण्डको कुशोंके मध्यमें (द्वितीय अवनेजनस्थानपर) बायें हाथकी सहायतासे सँभालकर रख दे।

(३) आदित्योंके लिये पिण्डदानका संकल्प—ॐ अद्य ....गोत्रस्य/....जीवशर्मणः/वर्मणः/ गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे आदित्याः एष पिण्डः युष्मभ्यं स्वधा—कहकर पिण्डको कुशोंके अग्रभागपर (तृतीय अवनेजनस्थानपर) बायें हाथकी सहायतासे सँभालकर रख दे।

लेपभाग[1]—लेपभागभुक् पितरोंके लिये कुशाके अग्रभागमें पिण्डसे बचे हुए अन्नको '**लेपभागभुजः पितरस्तृप्यन्ताम्**' कहकर रख दे। अन्तमें पिण्डाधार कुशोंके मूलमें तीन बार हाथ पोंछ ले।

सव्य होकर आचमनकर भगवान्‌का स्मरण कर ले।

श्वासनियमन—अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर आसनपर बैठे हुए ही श्वास खींचते हुए बायीं ओरसे उत्तराभिमुख हो यह मन्त्र पढ़े—**अत्र पितरो मादयध्वं यथाभागमावृषायध्वम्।**

---

१. (क) लेपभाजश्चतुर्थाद्याः पित्राद्याः पिण्डभागिनः। पिण्डदः सप्तमस्तेषां सापिण्ड्यं साप्तपौरुषम्॥ (मत्स्यपु० १८। २९)
(ख) उत्तरे कुशमूलं तु पितृमूलं तु दक्षिणे। कुशमूलेषु यो दद्यान्निराशाः पितरो गताः॥ (पा०गृह्यसूत्र षड्भाष्योपेतश्राद्धसूत्र-कण्डिका ३)
(ग) दत्ते पिण्डे ततो हस्तं त्रिर्मृज्याल्लेपभागिनाम्। कुशाग्रे तत्प्रदातव्यं प्रीयन्तां लेपभागिनः॥ (ब्रह्मोक्त)

श्वास रोककर उसी क्रमसे दक्षिणाभिमुख होकर पिण्डके पास श्वास छोड़े और **अमीमदन्त पितरो यथाभागमावृषायिषत** यह मन्त्र पढ़े।

प्रत्यवनेजनदान—अवनेजनदानसे बचे हुए जलसे तीन अवनेजनपात्रोंसे ही पितृतीर्थसे प्रत्यवनेजनका दान करे। यदि अवनेजनपात्रमें जल न बचा हो तो दोनियेमें जल डाल ले। तीनोंका पृथक्-पृथक् संकल्प इस प्रकार है—

(१) वसुओंके लिये—हाथमें मोटक, तिल, जल तथा प्रथम अवनेजनपात्र लेकर निम्न संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्रस्य/....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे वसवः श्राद्धपिण्डे अत्र प्रत्यवनेनिग्ध्वं वः स्वधा। बोलकर प्रत्यवनेजन-जल वसुओंके पिण्डपर गिरा दे।

(२) रुद्रोंके लिये—हाथमें मोटक, तिल, जल तथा द्वितीय अवनेजनपात्र लेकर निम्न संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्रस्य/....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे रुद्राः श्राद्धपिण्डे अत्र प्रत्यवनेनिग्ध्वं वः स्वधा। बोलकर प्रत्यवनेजन-जल रुद्रोंके पिण्डपर गिरा दे।

(३) आदित्योंके लिये—हाथमें मोटक, तिल, जल तथा तृतीय अवनेजनपात्र लेकर निम्न संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्रस्य/....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे आदित्याः श्राद्धपिण्डे अत्र प्रत्यवनेनिग्ध्वं वः स्वधा। बोलकर प्रत्यवनेजन-जल आदित्योंके पिण्डपर गिरा दे।

नीवीविसर्जन—नीवीको निकालकर ईशानकोणकी ओर फेंक दे। सव्य होकर आचमन करे और भगवान्का स्मरण करे। पुनः अपसव्य हो जाय।

सूत्रदान—बायें हाथसे सूत्र पकड़कर दाहिने हाथमें लेकर निम्न मन्त्र पढ़े—

ॐ नमो वः पितरो रसाय नमो वः पितरः शोषाय नमो वः पितरो जीवाय नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे नमो वः पितरः पितरो नमो वो गृहान्नः पितरो दत्त सतो वः पितरो देष्म। और '**एतद्वः पितरो वासः**' कहकर सभी पिण्डोंपर पृथक्-पृथक् सूत्र चढ़ाये।

सूत्रदानका संकल्प—तदनन्तर मोटक, तिल, जल हाथमें लेकर वसुओं, रुद्रों और आदित्योंके लिये सूत्रदानका पृथक्-पृथक् संकल्प करे—

(क) ॐ अद्य ""गोत्रस्य/""जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे वसवः एतद्वो वासः स्वधा। ऐसा कहकर वसुओंके पिण्डपर संकल्पजल छोड़े।

(ख) ॐ अद्य ""गोत्रस्य/""जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे रुद्राः एतद्वो वासः स्वधा। ऐसा कहकर रुद्रोंके पिण्डपर संकल्पजल छोड़े।

(ग) ॐ अद्य ""गोत्रस्य/""जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे आदित्याः एतद्वो वासः स्वधा। ऐसा कहकर आदित्योंके पिण्डपर संकल्पजल छोड़े।

पिण्डपूजन—तदनन्तर तीनों पिण्डोंपर पृथक्-पृथक् उपचारोंसे एक तन्त्रसे पूजन करे—

इदमाचमनीयम्—कहकर आचमनीय जल दे। आचार्य **(स्वाचमनीयम्)** बोले।

इदं स्नानीयम् (सुस्नानीयम्)—कहकर स्नानीय जल दे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं वस्त्रम् (सुवस्त्रम्)—कहकर वस्त्र या सूत्र चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इमे यज्ञोपवीते (सुयज्ञोपवीते)—कहकर यज्ञोपवीत चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदमुपवस्त्रम् (सुवस्त्रम्)—कहकर उपवस्त्र चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

एष गन्धः (सुगन्धः)—कहकर गन्ध अर्पित करे।

इमे तिलाक्षताः (सुतिलाक्षताः)—कहकर तिलाक्षत चढ़ाये।

इदं माल्यम् (सुमाल्यम्)—कहकर माला चढ़ाये।

एष धूपः (सुधूपः)—कहकर धूप आघ्रापित करे।

एष दीपः (सुदीपः)—कहकर दीपक दिखाये।

हस्तप्रक्षालनम् (हाथ धो ले।)

इदं नैवेद्यम् (सुनैवेद्यम्)—कहकर नैवेद्य अर्पित करे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं फलम् (सुफलम्)—कहकर फल अर्पित करे।

इदं ताम्बूलम् (सुताम्बूलम्)—कहकर ताम्बूल प्रदान करे।

एषा दक्षिणा (सुदक्षिणा)—कहकर दक्षिणा चढ़ाये।

अर्चनदानका संकल्प—हाथमें मोटक, तिल, जल लेकर वसुओंके लिये अर्चनदानका संकल्प करे—

(क) ॐ अद्य ....गोत्रस्य/....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे वसवः श्राद्धपिण्डे एतान्यर्चनानि

युष्मभ्यं स्वधा। कहकर संकल्पका जल वसुओंके पिण्डपर छोड़ दे। पुनः हाथमें मोटक, तिल, जल लेकर रुद्रोंके लिये अर्चनदानका संकल्प करे—

(ख) ॐ अद्य ""गोत्रस्य/""जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे रुद्राः श्राद्धपिण्डे एतान्यर्चनानि युष्मभ्यं स्वधा। कहकर संकल्पका जल रुद्रोंके पिण्डपर छोड़ दे। तदनन्तर हाथमें मोटक, तिल, जल लेकर आदित्योंके लिये अर्चनदानका संकल्प करे—

(ग) ॐ अद्य ""गोत्रस्य/""जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे आदित्याः श्राद्धपिण्डे एतान्यर्चनानि युष्मभ्यं स्वधा। कहकर संकल्पका जल आदित्योंके पिण्डपर छोड़ दे।

षड्ऋतु-नमस्कार—तदनन्तर पितृस्वरूप छः ऋतुओंको निम्न मन्त्रसे नमस्कार करे*—

(१) ॐ वसन्ताय नमः, (२) ॐ ग्रीष्माय नमः, (३) ॐ वर्षायै नमः, (४) ॐ शरदे नमः, (५) ॐ हेमन्ताय नमः तथा **(६) ॐ शिशिराय नमः।**

विश्वेदेवोंके लिये अक्षय्योदकदान—वसुरुद्रादित्यमण्डलसे वसुरुद्रादित्यकी परिक्रमा करते हुए विश्वेदेवोंके समीप अपने आसनपर आ जाय। सव्य उत्तराभिमुख होकर विश्वेदेवोंके दोनों भोजनपात्रोंपर—

ॐ शिवा आपः सन्तु—कहकर जल छोड़े। **ॐ सौमनस्यमस्तु**—कहकर पुष्प छोड़े।

ॐ अक्षतं चारिष्टं चास्तु—कहकर जौ छोड़े।

---

* वसन्ताय नमस्तुभ्यं ग्रीष्माय च नमो नमः।वर्षाभ्यश्च शरच्छंज्ञऋतवे च नमः सदा॥
हेमन्ताय नमस्तुभ्यं नमस्ते शिशिराय च।माससंवत्सरेभ्यश्च दिवसेभ्यो नमो नमः॥ (ब्रह्मपुराण)

अक्षय्योदकदानका संकल्प—(क) हाथमें त्रिकुश, जौ, जल लेकर दक्षिण दिशामें स्थित विश्वेदेवके लिये अक्षय्योदकदानका संकल्प करे—

ॐ अद्य ......गोत्रस्य/......जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे जीवच्छ्राद्धसम्बन्धिनां विश्वेषां देवानां दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु। कहकर संकल्पजल देवतीर्थसे प्रथम विश्वेदेवके भोजनपात्रपर छोड़ दे।

(ख) इसी प्रकार उत्तरवाले विश्वेदेवके निमित्त संकल्प करे—

ॐ अद्य ......गोत्रस्य/......जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे जीवच्छ्राद्धसम्बन्धिनां विश्वेषां देवानां दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु। कहकर संकल्पजल देवतीर्थसे दूसरे विश्वेदेवके भोजनपात्रपर छोड़ दे।

वसुरुद्रादित्यके लिये अक्षय्योदकदान—विश्वेदेवोंके आसनोंकी परिक्रमा करते हुए वसुरुद्रादित्यमण्डलमें आकर अपने आसनपर बैठ जाय। अपसव्य दक्षिणाभिमुख हो जाय। वसुरुद्रादित्यके तीनों भोजनपात्रोंपर पृथक्-पृथक् क्रमशः पितृतीर्थसे—

ॐ शिवा आपः सन्तु—कहकर जल छोड़े। **ॐ सौमनस्यमस्तु**—कहकर पुष्प छोड़े।

ॐ अक्षतं चारिष्टं चास्तु—कहकर अक्षत छोड़े।

अक्षय्योदकदानका संकल्प—मोटक, तिल, जल लेकर पृथक्-पृथक् संकल्प करे—

(१) वसुओंके लिये—ॐ अद्य ......गोत्रस्य/......जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे वसूनां दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु। कहकर पितृतीर्थसे वसुओंके भोजनपात्रपर संकल्पजल छोड़ दे।

(२) रुद्रोंके लिये—ॐ अद्य ''''गोत्रस्य/''''जीवशर्मण:/वर्मण:/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे रुद्राणां दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु। कहकर पितृतीर्थसे रुद्रोंके भोजनपात्रपर संकल्पजल छोड़ दे।

(३) आदित्योंके लिये—ॐ अद्य ''''गोत्रस्य/''''जीवशर्मण:/वर्मण:/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे आदित्यानां दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु। कहकर पितृतीर्थसे आदित्योंके भोजनपात्रपर संकल्पजल छोड़ दे।

जलधारा—सव्य होकर दक्षिण दिशाकी ओर देखते हुए तीनों पिण्डोंपर निम्न मन्त्रसे पूर्वाग्र जलधारा दे—

ॐ अघोरा: पितर: सन्तु।

आशीष-प्रार्थना—सव्य पूर्वाभिमुख होकर अंजलि बनाकर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए वसुरुद्रादित्यसे आशीर्वाद माँगे—

ॐ गोत्रं नो वर्द्धतां दातारो नोऽभिवर्द्धन्ताम्। वेदा: सन्ततिरेव च। श्रद्धा च नो मा व्यगमद् बहुदेयं च नोऽस्तु। अन्नं च नो बहु भवेदतिथींश्च लभेमहि। याचितारश्च न: सन्तु मा च याचिष्म कञ्चन। एता: सत्या आशिष: सन्तु॥

ब्राह्मणवाक्य—सन्त्वेता: सत्या आशिष:।

पिण्डोंपर जलधारा या दुग्धधारा देना—अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर एक पवित्रीमें तीन कुशोंको फँसाकर वसुरुद्रादित्यके पिण्डोंपर पृथक्-पृथक् दक्षिणाग्र रखे और उसपर निम्न मन्त्रसे जलधारा या दुग्धधारा दे—

ॐ ऊर्जं वहन्तीरमृतं घृतं पय: कीलालं परिस्त्रुतम्। स्वधा स्थ तर्पयत मे पितॄन्॥

पिण्डाघ्राण—नम्र होकर पिण्डोंको सूँघे और उठाकर किसी पत्तल आदिपर रख दे तथा श्राद्धके अन्तमें जलमें

प्रवाहित कर दे या गायको खिला दे।[१] पिण्डाधार कुशों तथा उल्मुकको अन्य अग्निमें छोड़ दे।

विश्वेदेवोंके अर्घपात्रोंका संचालन—वसुरुद्रादित्यकी प्रदक्षिणा करते हुए विश्वेदेवमण्डलमें जाकर अपने आसनपर बैठ जाय। सव्य उत्तराभिमुख होकर विश्वेदेवोंके दोनों अर्घपात्रोंका संचालन कर दे।

दक्षिणादानका संकल्प—हाथमें त्रिकुश, जौ, जल तथा दक्षिणायुक्त तिलपूरित ताम्रपात्र[२] लेकर विश्वेदेवोंके निमित्त दक्षिणादानका संकल्प करे—

ॐ अद्य ......गोत्रः ......शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं ......गोत्रस्य/......जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धसम्बन्धीनां विश्वेषां देवानां श्राद्धप्रतिष्ठासाङ्गतासंसिद्ध्यर्थमिदं तिलपूरितं ताम्रपात्रद्वयं दक्षिणाद्रव्यसमन्वितं ......गोत्राभ्यां ......नामधेयब्राह्मणाभ्यां भवद्भ्यां सम्प्रददे। ऐसा कहकर दक्षिणा दो ब्राह्मणोंको दे दे। यदि बादमें देना हो तो **दातुमुत्सृज्ये** कहकर यथास्थान रख दे।

वस्वादिमण्डलमें आना—विश्वेदेवोंकी प्रदक्षिणा करते हुए वस्वादिमण्डलमें आकर अपने आसनपर बैठ जाय। अपसव्य दक्षिणाभिमुख हो जाय।

अर्घपात्रोंका संचालन कर दे। तदनन्तर सव्य पूर्वाभिमुख होकर जलधेनुदान करे।

---

१. ततः कर्मणि निर्वृत्ते तान् पिण्डांस्तदनन्तरम्। ब्राह्मणोऽग्निरजो गौर्वा भक्षयेदप्सु वा क्षिपेत्॥ (श्राद्धचिन्तामणिमें देवलका वचन)

२. विश्वेदेवोंकी दक्षिणाके लिये दिये जानेवाले ये दोनों तिलपूरित ताम्रपात्र जलधेनुकलशके चारों ओर रखे ताम्रपात्रोंसे भिन्न हैं—**इदं तिलपूरितं ताम्रपात्रद्वयं जलधेन्वङ्गतिलपात्रेभ्यो भिन्नम्।** जलधेनुकलशके चारों ओर रखे तिलपात्रोंको पितृब्राह्मणोंको दिया जाता है—**जलधेन्वङ्गभूततिलपात्रचतुष्टयस्य तु पितृविप्रेभ्यो दानम्।** (श्राद्धपद्धति पृ० ४०१)

दक्षिणादानसे पूर्व जलधेनुदान

जलधेनुदानका संकल्प—हाथमें त्रिकुश, तिल तथा जल लेकर संकल्प करे—

(क) ॐ अद्य ……गोत्रः ……शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं ……गोत्रस्य/……जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य कृतैतज्जीवच्छ्राद्ध-प्रतिष्ठार्थमिमामुत्तरदिक्संस्थां सोमोद्देश्यकां तिलपात्रचतुष्टयोपेतां छत्रोपानहाद्युपस्करसहितां सवत्सां जलधेनुं वसुस्थानीयब्राह्मणाय दक्षिणात्वेन भवते सम्प्रददे। ऐसा कहकर संकल्पजल तथा सामग्री ब्राह्मणको दे दे। यदि बादमें दक्षिणा देनी हो तो **दातुमुत्सृज्ये** कहकर यथास्थान रख दे।

(ख) ॐ अद्य ……गोत्रः ……शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं ……गोत्रस्य/……जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य कृतैतज्जीवच्छ्राद्ध-प्रतिष्ठार्थमिमां दक्षिणदिक्संस्थाम् अग्न्युद्देश्यकां तिलपात्रचतुष्टयोपेतां छत्रोपानहाद्युपस्करसहितां सवत्सां जलधेनुं रुद्रस्थानीयब्राह्मणाय दक्षिणात्वेन भवते सम्प्रददे। ऐसा कहकर संकल्पजल तथा सामग्री ब्राह्मणको दे दे। यदि दक्षिणा बादमें देनी हो तो **दातुमुत्सृज्ये** कहकर यथास्थान रख दे।

(ग) ॐ अद्य ……गोत्रः ……शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं ……गोत्रस्य/……जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य कृतैतज्जीवच्छ्राद्ध-प्रतिष्ठार्थमिमां मध्यस्थां यमोद्देश्यकां तिलपात्रचतुष्टयोपेतां छत्रोपानहाद्युपस्करसहितां सवत्सां जलधेनुमादित्यस्थानीय-ब्राह्मणाय दक्षिणात्वेन भवते सम्प्रददे। ऐसा कहकर संकल्पजल तथा सामग्री ब्राह्मणको दे दे। यदि दक्षिणा बादमें देनी हो तो **दातुमुत्सृज्ये** कहकर यथास्थान रख दे।

वसुरुद्रादित्योंका विसर्जन—अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर निम्न मन्त्रको पढ़ते हुए वसुरुद्रादित्यके आसनोंपर तिल छींटकर विसर्जन करे—

ॐ वाजे वाजेऽवत वाजिनो नो धनेषु विप्रा अमृता ऋतज्ञाः।
अस्य मध्वः पिबत मादयध्वं तृप्ता यात पथिभिर्देवयानैः॥

विश्वेदेवोंका विसर्जन—वसुरुद्रादित्यकी परिक्रमा करते हुए वस्वादिमण्डलसे विश्वेदेवमण्डलमें आ जाय। सव्य उत्तराभिमुख होकर हाथमें जौ लेकर '**विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्**' कहकर विश्वेदेवोंके आसनोंपर जौ छोड़ते हुए विसर्जन करे।

पितृगायत्रीका पाठ—विश्वेदेवोंकी परिक्रमा करते हुए वस्वादिमण्डलमें आकर अपने आसनपर सव्य पूर्वाभिमुख हो जाय और निम्न पितृगायत्रीमन्त्रका तीन बार पाठ करे—

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च। नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः॥

रक्षादीपनिर्वापण*—अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर रक्षादीप बुझाये। हाथ-पैर धो ले।

आचार्यको दक्षिणादान—सव्य पूर्वाभिमुख होकर हाथमें त्रिकुश, तिल, जल लेकर दक्षिणादानका संकल्प

* दीपनिर्वापणात्पुंसः कूष्माण्डच्छेदनात् स्त्रियाः। वंशहानिः प्रजायेत तस्मान्नैवं समाचरेत्॥ (जल आदि अथवा किसी मिट्टीके पात्रसे ढककर दीप बुझाना चाहिये।)

करे—

ॐ अद्य ⋯⋯गोत्रः ⋯⋯शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहम् ⋯⋯गोत्रस्य ⋯⋯जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धाङ्गतया सम्पादितस्य वसुरुद्रादित्यपार्वणश्राद्धस्य साङ्गताप्रतिष्ठासंसिद्ध्यर्थं ⋯⋯गोत्राय ⋯⋯शर्मणे आचार्याय इमां दक्षिणां भवते सम्प्रददे। कहकर आचार्यको दक्षिणा प्रदान करे।

ब्राह्मणभोजनका संकल्प—हाथमें त्रिकुश, तिल तथा जल लेकर बोले—**ॐ अद्य ⋯⋯गोत्रः ⋯⋯शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं ⋯⋯गोत्रस्य/⋯⋯जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य कृतैतज्जीवच्छ्राद्धाङ्गभूतवस्वादिश्राद्धप्रतिष्ठार्थं यथासंख्याकान् ब्राह्मणान् यथाकाले भोजयिष्ये तेभ्यो दक्षिणादिकं च दातुं प्रतिजाने।** कहकर संकल्पजल छोड़ दे।

तदनन्तर '**ॐ नमो नारायणाय**' इस अष्टाक्षरमन्त्रका जप करे।

पूर्वमें यदि आवाहन करके भगवान् विष्णुका पूजन किया गया हो तो '**क्षमस्व स्वस्थानं गच्छ**' ऐसा कहकर अक्षत, पुष्प छोड़कर उनका विसर्जन कर दे। यदि शालग्राममें विष्णुपूजन किया गया हो तो विसर्जन नहीं होगा।

कर्मका समर्पण—**अनेन कृतेन जीवच्छ्राद्धाङ्गभूतवसुरुद्रादित्यपार्वणेन कर्मणा श्रीमन्नारायणः प्रीयताम् न मम।** कहकर जल छोड़ दे।

भगवत्-स्मरण—

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्। स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु । न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

यत्पादपङ्कजस्मरणाद् यस्य नामजपादपि । न्यूनं कर्म भवेत् पूर्णं तं वन्दे साम्बमीश्वरम्॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुध्याऽऽत्मना वानुसृतस्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पये तत्॥

ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः।

ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। ॐ साम्बसदाशिवाय नमः।

॥ जीवच्छ्राद्धाङ्गभूतवसुरुद्रादित्यपार्वणश्राद्ध-प्रयोग पूर्ण हुआ॥

भगवत्स्मरणपूर्वक रात्रिजागरण

यथासमय ब्राह्मणोंको भोजन कराकर स्वयं भी भोजन करे। सायंकालीन सन्ध्या-वन्दनादि कृत्य सम्पन्न करके '**ॐ कामकुलेशानाय विष्णवे नमः**'—इस मन्त्रका उच्चारणकर कामकुलेशानविशेषणक भगवान् नारायणका स्मरण करते हुए रात्रिमें यथाशक्ति जागरण करे।

॥ इस प्रकार कृष्णत्रयोदशी (द्वितीय दिन)-का कृत्य पूर्ण हुआ॥

कृष्णचतुर्दशी (तृतीय दिन)-के कृत्योंकी सामग्री

(क) प्रतिकृति (पुत्तल)-निर्माणकी सामग्री

(१) मार्गमें बिखेरनेके लिये जौ, वस्त्र तथा लोहेके टुकड़े।

(२) प्रतिकृति (पुत्तल)-को भूमिपर स्थापित करनेके लिये कुशासन।

(३) पुत्तलको लपेटनेके लिये कुशासनपर बिछानेहेतु श्वेत वस्त्र।

(४) प्रतिकृति (पुत्तल) बनानेके लिये कुशा—३६०।

(५) पुत्तलके अंगोंको संयत करनेके लिये ऊनका सूत—एक गोला।

(६) पुत्तलके अनुलेपनके लिये जौके आटेकी पीठी तथा घृत।

(७) **प्रतिकृति (पुत्तल)-के अंगोंपर स्थापित की जानेवाली सामग्री**—नारियल, अनारका दाना, कंकत (कंघी), दो कौड़ी, तिलपुष्प, आमका फल, दो जम्बीरी नींबू, शिलाजीत, हरिताल, समुद्रफेन, शहद, गोमूत्र, पारा, दो गोल बैगन (पीपलका पत्ता), गाजर, वटवृक्षकी जटाएँ, ऊनका सूत तथा जौके आटेकी पीठी।

(८) प्रतिकृतिको स्नान करानेके लिये गंगाजल अथवा तीर्थजल।

(९) पुत्तलके अलंकरणके लिये वस्त्र, यज्ञोपवीत, उपवस्त्र, चन्दन, पुष्प, पुष्पमाला, तुलसीदल आदि।

(१०) पुत्तलके लेपनके लिये दधि, मधु तथा घृत।

(११) गुग्गुल।

(१२) पुत्तलके नाभिपर स्थापित करनेके लिये घृतका दीपक।

(ख) षट्पिण्डदानकी सामग्री

(१) छः पिण्डोंके निर्माणके लिये जौका आटा ५०० ग्राम, तिल १०० ग्राम, मधु ५० ग्राम, घृत ५० ग्राम तथा दुग्ध ५०० ग्राम।

(२) पलाशके पत्तल ५।

(३) पलाश आदिके बने दोनिये अथवा हाथसे बने मिट्टीके दीये १०।

(४) कुश २५।

(५) चन्दन।

(६) श्वेत पुष्प।

(७) प्रतिकृति (पुत्तल)-को स्थापित करनेके लिये बाँसकी शिबिका।

(८) पुत्तलको आच्छादित करनेके लिये श्वेत वस्त्र।

(९) पुत्तलके दाहके लिये यज्ञीय काष्ठ (पलाश, आम, पीपल, वट, पाकड़, गूलर आदि)तथा चन्दन।

(१०) गोहरी, घृत, सरपत घास।

(११) बलि-प्रदानके लिये ५०० ग्राम मुद्ग-तण्डुल (मूँग और चावल)-का पाक।

(१२) मिट्टीके कसोरे १०।

(१३) मधु, दुग्ध तथा घृत (तीन कसोरोंमें रखनेके लिये)।

(१४) घटस्फोटके लिये—मिट्टीका घड़ा १।

(ग) दशगात्र-पिण्डदानकी सामग्री

(१) दस पिण्डोंके निर्माणके लिये ५०० ग्राम तिल-तण्डुल (तिल-चावल)-का पाक और तिल ५० ग्राम, मधु ५० ग्राम, घृत ५० ग्राम तथा दुग्ध ५०० ग्राम।

(२) तिलके तेलका दीपक।

(३) पीली सरसों १० ग्राम।

(४) पिण्डवेदीके लिये बालू अथवा शुद्ध मिट्टी।

(५) दोनिये या हाथके बने मिट्टीके दीये १५।

(६) तिलतोयपूर्णपात्र (दोनिये या हाथके बने मिट्टीके दीये) ६०।

(७) **पिण्डपूजनके लिये**—ऊर्णासूत्र (ऊनका सूत), गन्ध (सफेद चन्दन), अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, उशीर (खस) तथा भृंगराजपत्र।

(७) पिण्डपर चढ़ानेके लिये कच्चा सूत।

(८) विसर्जित दस पिण्डोंको रखनेके लिये कसोरे १०।

(९) दस त्रिकाष्ठिका बनानेके लिये सरकण्डा तथा माला, फूल, दीपक।

कृष्णचतुर्दशी (तृतीय दिन)-का कृत्य

कृष्णचतुर्दशीको प्रातःकाल नित्यक्रिया सम्पन्नकर जीवच्छ्राद्धकर्ता यदि ब्राह्मण हो तो ग्रामके पूरबकी ओरसे, क्षत्रिय हो तो उत्तरकी ओरसे, वैश्य हो तो पश्चिमकी ओरसे और शूद्र अथवा स्त्री हो तो दक्षिणकी ओरसे निम्न मन्त्रका पाठ करते हुए जौ, वस्त्र तथा लोहेके टुकड़ोंको मार्गमें बिखेरते हुए किसी नदी, तालाब अथवा जलाशयके तटपर जाय—

ॐ जितं ते पुण्डरीकाक्ष नमस्ते विश्वभावन। नमस्तेऽस्तु हृषीकेश महापुरुष पूर्वज॥

वहाँ पहुँचकर किसी पवित्र स्थानपर कुशा आदि सभी सामग्रियोंको रखकर सर्वप्रथम प्रतिकृति (पुत्तल)-का निर्माण करे। साथ ही भूमिका संस्कारकर पुत्तलके दाहके लिये पर्याप्त यज्ञीय काष्ठ*से किसी त्रैवर्णिकद्वारा चिताका निर्माण भी कराये।

पुत्तलनिर्माण-विधि

सव्य होकर आचमन तथा प्राणायाम कर ले। तदनन्तर पुत्तल (जीवकी प्रतिकृति) बनानेके लिये निम्न मन्त्रद्वारा भूमिपर कुशासन उत्तर-दक्षिण लम्बाईमें बिछा दे—

ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्त्वा गातुमित। मनसस्पत इमं देव यज्ञ्ँ स्वाहा वाते धाः॥

तदनन्तर कुशासनके ऊपर पुत्तलको लपेटनेके लिये श्वेत वस्त्र बिछा दे और उसके ऊपर कुश और तिल छोड़ दे।

---

* पलाशफल्गुन्यग्रोधाः प्लक्षाश्वत्थविकङ्कताः। उदुम्बरस्तथा बिल्वश्चन्दनो यज्ञियाश्च ये॥
सरलो देवदारुश्च शालश्च खदिरस्तथा। समिदर्थे प्रशस्ताः स्युरेते वृक्षा विशेषतः॥ (आह्निकसूत्रावलीमें वायुपुराणका वचन)

कुशोंसे जीवकी प्रतिकृति (पुत्तल)-का निर्माण

इसके बाद तीन सौ साठ* कुशोंसे जीवकी प्रतिकृति (पुत्तल) मनुष्यकी आकृतिके समान बनाकर उसके सभी अंगोंको ऊनके सूतसे भलीभाँति बाँध ले।

पुत्तलका निर्माण हो जानेके अनन्तर पुत्तलको उत्तरदिशाकी ओर सिर करके कुशासनके ऊपर बिछे श्वेत वस्त्रके ऊपर निम्न मन्त्रको पढ़ते हुए रख दे—

ॐ अक्रन् कर्म कर्मकृतः सह वाचा मयोभुवा। देवेभ्यः कर्म कृत्वास्तं प्रेत सचाभुवः॥

पुत्तलका अनुलेपन

तदनन्तर जौके आटेमें जल मिलाकर उससे निम्न मन्त्र पढ़ते हुए पुत्तलको भलीभाँति अनुलिप्त कर ले—

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥

घृतका लेपन

निम्न मन्त्रसे पुत्तलका घृतसे लेपन करे—

ॐ घृतवती भुवनानामभिश्रियोर्वी पृथ्वी मधुदुघे सुपेशसा।
द्यावापृथिवी वरुणस्य धर्मणा विष्कभिते अजरे भूरिरेतसा॥

---

* 'षष्ट्यधिकशतत्रयमितैर्दर्भैः पालाशसमिद्भिर्वा शरीरं कृत्वा०' (धर्मसिन्धु उ०तृ०परि०)

पुत्तलके अंगोंके रूपमें विविध वस्तुओंका स्थापन

(१) **सिरके स्थानपर**—नारियल रखे।

(२) **दाँतोंके स्थानपर**—दाडिम (अनार)-के दानोंको रखे।

(३) **कानोंके स्थानपर**—कंकत (कंघी) रखे।

(४) **नेत्रोंके स्थानपर**—दो कौड़ी रखे।

(५) **नासिकाके स्थानपर**—तिलपुष्प रखे।

(६) **नाभिके स्थानपर**—आमका फल रखे।

(७) **स्तनोंके स्थानपर**—जम्बीर (नीबू)-के दो फल रखे।

(८) **वातके स्थानपर**—मनःशिला (शिलाजीत) रखे।

(९) **पित्तके स्थानपर**—हरिताल रखे।

(१०) **कफके स्थानपर**— समुद्रफेन रखे।

(११) **रुधिरके स्थानपर**—मधु (शहद) रखे।

(१२) **पुरीषके स्थानपर**—पुरीष (गुह्यदेश)-गोमय रखे।

(१३) **मूत्रके स्थानपर**—गोमूत्र रखे।

(१४) **रेत (वीर्य)-के स्थानपर**—पारद (पारा) रखे।

(१५) **वृषण (अण्डकोष)-के स्थानपर**—दो गोल वृन्ताक (बैगन) रखे।

(१६) **लिंगके स्थानपर**—गाजर रखे। (स्त्री हो तो योनिके स्थानपर पीपलका पत्ता रखे)।

(१७) **केशों (बालों)-के स्थानपर**—वटवृक्षकी जटाएँ रखे।

(१८) **लोमोंके स्थानपर**—ऊनका सूत रखे।

(१९) **मांसके स्थानपर**—जौके आटेकी पीठी रखे।

पुत्तलके स्नानीय जलमें तीर्थोंका आवाहन

तदनन्तर पुत्तलको स्नान करानेके लिये जलमें निम्न मन्त्रोंसे तीर्थोंका आवाहन करे—

गयादीनि च तीर्थानि ये च पुण्याः शिलोच्चयाः। कुरुक्षेत्रं च गङ्गां च यमुनां च सरिद्वराम्॥
कौशिकीं चन्द्रभागां च सर्वपापप्रणाशिनीम्। भद्रावकाशां गण्डकीं सरयूं तमसां तथा॥
वैष्णवं च वराहं च तीर्थं पिण्डारकं तथा। पृथिव्यां यानि तीर्थानि चतुरः सागरांस्तथा॥

तदनन्तर उस तीर्थजलसे पुत्तलका अभिषेकात्मक (मार्जन) स्नान कराये।

श्वेतवस्त्रसे वेष्टन

पूर्वमें पुत्तलके नीचे बिछाये गये श्वेत वस्त्रसे पुत्तलको आवेष्टित कर ले। चन्दनोदकसे पुत्तलका सेचन करे, पुत्तलको वस्त्र, यज्ञोपवीत, उपवस्त्र, चन्दन, पुष्प, माला तथा तुलसी आदिसे अलंकृत कर दे। अनुपनीत, स्त्री तथा शूद्रकी प्रतिकृतिको यज्ञोपवीतके अतिरिक्त अन्य वस्तुओंसे ही अलंकृत करे। दधि-मधु-घृतका लेपन कर दे और गुग्गुलका धूप जला दे। घीका दीपक जला दे।

प्रतिकृति (पुत्तल)-में प्राणकी भावना

निम्न मन्त्रसे पुत्तलमें जीवके प्राणोंकी भावना करे—

पुनर्मनः पुनरायुर्म आ ऽगन् पुनः प्राणः पुनरात्मा म आऽ गन् पुनश्चक्षुः पुनः श्रोत्रं म आऽ गन्। वैश्वानरो अदब्धस्तनूपा अग्निर्नः पातु दुरितादवद्यात्॥

तदनन्तर निम्न अनुवाकसे पुत्तलके सभी अंगोंकी भावना करे—

शिरो मे श्रीर्यशो मुखं त्विषिः केशाश्च श्मश्रूणि। राजा मे प्राणो अमृतꣳ सम्राट् चक्षुर्विराट् श्रोत्रम्॥

पुत्तलकी प्रतिष्ठा

कुशसे प्रतिकृतिका स्पर्श करते हुए निम्न मन्त्रसे पुत्तलकी प्रतिष्ठा करे—

सप्त ऋषयः प्रतिहिताः शरीरे सप्त रक्षन्ति सदमप्रमादम्।
सप्तापः स्वपतो लोकमीयुस्तत्र जागृतो अस्वप्नजौ सत्रसदौ च देवौ॥

तदनन्तर बोले—**ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त अस्यां प्रतिकृतौ सुप्रतिष्ठितो भव।** पुत्तलपर तिल छोड़े।

प्रतिकृतिके नाभिदेशमें घृतदीपप्रज्वालन

इसके बाद पुत्तलके नाभिदेशमें घृतका छोटा-सा दीपक जलाकर रख दे और उस दीपकमें उस जीवके प्राणकी भावना करे। तत्पश्चात् जीवको ब्रह्मविद्या[१]का श्रवण कराये।

१. ईशा वास्यमिदꣳ सर्वं यत्किं च जगत्यां जगत्। तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्॥ इत्यादि मन्त्र

तदनन्तर भगवन्नाम-संकीर्तन करते हुए दीपके पूर्णतया जलकर शान्त हो जानेकी प्रतीक्षा करे। दीपकके शान्त हो जानेपर उस जीवके प्राणोत्क्रमणकी भावना करे। दीप बुझनेके समय तुलसी और तिल लेकर निम्न मन्त्रको उच्चारण करते हुए पुत्तलपर छोड़ना चाहिये—

असि यमो अस्यादित्यो अर्वन्नासि त्रितो गुह्येन व्रतेन। असि सोमेन समया विपृक्त आहुसते त्रीणि दिवि बन्धनानि॥

उपर्युक्त विधिसे प्रतिकृतिके निर्माणकी प्रक्रियाओंको पूर्ण करनेके अनन्तर प्रतिकृतिदाहके पूर्वमें शास्त्रबोधित विधिके अनुसार षट् पिण्डदान करना चाहिये, जिसे आगे दिया जा रहा है—

षट्पिण्डदान

पिण्डनिर्माण—अपसव्य दक्षिणाभिमुख[1] होकर जौके आटेमें तिल, मधु, घृत तथा दुग्ध मिलाकर छः पिण्ड बनाकर उन्हें किसी पत्तल आदिपर रख ले।

(१) शवनिमित्तिक[2] पहला पिण्डदान

प्रतिज्ञासंकल्प—दायें हाथमें त्रिकुश, तिल, जल लेकर प्रथम पिण्डके दानका प्रतिज्ञासंकल्प करे—

ॐ अद्य ...गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं जीवच्छ्राद्धे ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य मरणोत्तर-

---

१. अपसव्येन कृत्वैतद् वाग्यतः पित्र्यदिङ्मुखः। छन्दोगपरिशिष्टके इस वचनसे सभी पितृकर्म अपसव्य और दक्षिणकी ओर मुख करके ही होते हैं।

२. पारस्करगृह्यसूत्र श्राद्धसूत्रकण्डिका ४।४ के गदाधरभाष्यके—'मृतस्थाने शवनाम्ना पिण्डदानम्। अमुकगोत्र अमुकशव इति प्रयोगः।'—इस वचनके अनुसार यहाँ निमित्तक शब्दका प्रयोग किया गया है।

भाविप्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वकशास्त्रोक्तफलप्राप्त्यर्थं भूम्यादिदेवतातुष्ट्यर्थं च मृतिस्थानीयशवनिमित्तकप्रथमपिण्डदानं करिष्ये। कहकर संकल्पजल छोड़ दे।

अवनेजनदान—जलसे भूमिको सींच दे। वहाँ दक्षिणाग्र तीन कुश बिछा दे। इसके बाद हाथमें मोटक, जल, तिल तथा जल, तिल, चन्दन और श्वेतपुष्पयुक्त अवनेजनपात्र लेकर अवनेजनदानका संकल्प करे—

ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त मरणोत्तरभाविमृतिस्थानीयपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते स्वधा।* कहकर संकल्पजल पितृतीर्थसे प्रोक्षित भूमिपर गिरा दे तथा अवनेजनपात्रका आधा जल गिरा दे।

पिण्डदान—मोटक, तिल, जल और पिण्ड लेकर (बायें हाथसे दाहिने हाथका स्पर्श करते हुए) पिण्डदानका संकल्प करे—

ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त भूम्यधिष्ठानदेवताप्रीत्यर्थं मरणोत्तरभाविमृतिस्थानीयपिण्डस्ते स्वधा। कहकर कुशोंके मध्य पितृतीर्थसे पिण्ड रख दे।

प्रत्यवनेजन—अवनेजनपात्रमें जल, तिल, सफेद चन्दन तथा फूल छोड़कर (यदि उसमें जल अवशिष्ट हो तो छोड़ना आवश्यक नहीं) दायें हाथमें रख ले। पुनः मोटक, तिल, जल लेकर प्रत्यवनेजनका संकल्प करे—

ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त मरणोत्तरभाविमृतिस्थानीयपिण्डोपरि अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व

---

* (क) जीवच्छ्राद्धे सर्वत्र प्रेतशब्दो न प्रयोज्यः, सर्वत्र जीवच्छ्राद्धे प्रेतशब्दोच्चारणं नास्ति। (श्राद्धमयूख पृ० ८६-८७) (ख)जीवच्छ्राद्धे सर्वत्र प्रेतशब्दोच्चारणं नास्तीति मयूखकौस्तुभोद्योतकृदादिभिरुक्तत्वात्प्रेतशब्दोच्चारणाभावेन स्वधा शब्दोच्चारणं भवत्येवेति। (श्राद्धपद्धति पृ० ४११)

ते स्वधा। कहकर पिण्डपर संकल्पजल छोड़ दे। पिण्डको उठाकर पुत्तलके समीप रख दे। तदनन्तर सव्य होकर भगवान्से प्रार्थना करे—

अनादिनिधनो देवः शङ्खचक्रगदाधरः। अक्षय्यः पुण्डरीकाक्ष जीवमोक्षप्रदो भव॥

(२) पान्थनिमित्तक दूसरा पिण्डदान

प्रतिज्ञासंकल्प—दायें हाथमें त्रिकुश, तिल, जल लेकर द्वितीय पिण्डके दानका प्रतिज्ञासंकल्प करे—

ॐ अद्य .....गोत्रः .....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं जीवच्छ्राद्धे .....गोत्रस्य .....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य मरणोत्तरभाविप्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वकशास्त्रोक्तफलप्राप्त्यर्थं गृहवास्त्वधिदेवतातुष्ट्यर्थं च निर्गमद्वारीयपान्थनिमित्तक-द्वितीयपिण्डदानं करिष्ये। कहकर संकल्पजल छोड़ दे।

अवनेजनदान—जलसे भूमिको सींच दे। वहाँ दक्षिणाग्र तीन कुश बिछा दे। इसके बाद हाथमें मोटक, जल, तिल तथा जल, तिल, चन्दन और श्वेतपुष्पयुक्त अवनेजनपात्र लेकर अवनेजनदानका संकल्प करे—

ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे .....गोत्र .....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त मरणोत्तरभाविद्वारदेशीयपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते स्वधा। कहकर संकल्पजल पितृतीर्थसे प्रोक्षित भूमिपर गिरा दे तथा अवनेजनपात्रका आधा जल गिरा दे।

पिण्डदान—मोटक, तिल, जल और पिण्ड लेकर (बायें हाथसे दाहिने हाथका स्पर्श करते हुए) पिण्डदानका संकल्प करे—

ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे .....गोत्र .....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त गृहवास्त्वधिदेवतातुष्ट्यर्थं मरणोत्तरभाविद्वारदेशीय-

पिण्डस्ते स्वधा। कहकर कुशोंके मध्य पितृतीर्थसे पिण्ड रख दे।

प्रत्यवनेजन—अवनेजनपात्रमें जल, तिल, सफेद चन्दन तथा सफेद फूल छोड़कर (यदि उसमें जल अवशिष्ट हो तो छोड़ना आवश्यक नहीं) दायें हाथमें रख ले। पुनः मोटक, तिल, जल लेकर प्रत्यवनेजनका संकल्प करे—

ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त मरणोत्तरभाविद्वारदेशीयपिण्डोपरि अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते स्वधा। कहकर पिण्डपर संकल्पजल छोड़ दे। पिण्डको उठाकर पुत्तलके समीप रख दे। तदनन्तर सव्य होकर भगवान्से प्रार्थना करे—

अनादिनिधनो देवः शङ्खचक्रगदाधरः। अक्षय्यः पुण्डरीकाक्ष जीवमोक्षप्रदो भव॥

(३) खेचरनिमित्तक तीसरा पिण्डदान

प्रतिज्ञासंकल्प—दायें हाथमें त्रिकुश, तिल, जल लेकर तृतीय पिण्डके दानका प्रतिज्ञासंकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं जीवच्छ्राद्धे ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य मरणोत्तरभाविप्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वकशास्त्रोक्तफलप्राप्त्यर्थं उपघातकभूतापसारणार्थं च चतुष्पथीयखेचरनिमित्तक-तृतीयपिण्डदानं करिष्ये। कहकर संकल्पजल छोड़ दे।

अवनेजनदान—जलसे भूमिको सींच दे। वहाँ दक्षिणाग्र तीन कुश बिछा दे। इसके बाद हाथमें मोटक, जल, तिल तथा जल, तिल, चन्दन और श्वेतपुष्पयुक्त अवनेजनपात्र लेकर अवनेजनदानका संकल्प करे—

ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त मरणोत्तरभाविचतुष्पथीयपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते

स्वधा। कहकर संकल्पजल पितृतीर्थसे प्रोक्षित भूमिपर गिरा दे तथा अवनेजनपात्रका आधा जल गिरा दे।

पिण्डदान—मोटक, तिल, जल और पिण्ड लेकर (बायें हाथसे दाहिने हाथका स्पर्श करते हुए) पिण्डदानका संकल्प करे—

ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे ""गोत्र ""जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त उपघातकभूतापसारणार्थं मरणोत्तरभाविचतुष्पथीय-पिण्डस्ते स्वधा। कहकर कुशोंके मध्य पितृतीर्थसे पिण्ड रख दे।

प्रत्यवनेजन—अवनेजनपात्रमें जल, तिल, सफेद चन्दन तथा फूल छोड़कर (यदि उसमें जल अवशिष्ट हो तो छोड़ना आवश्यक नहीं) दायें हाथमें रख ले। पुनः मोटक, तिल, जल लेकर प्रत्यवनेजनका संकल्प करे—

ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे ""गोत्र ""जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त मरणोत्तरभाविचतुष्पथीयपिण्डोपरि अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते स्वधा। कहकर पिण्डपर संकल्पजल छोड़ दे। पिण्डको उठाकर पुत्तलके समीप रख दे। तदनन्तर सव्य होकर भगवान्से प्रार्थना करे—

अनादिनिधनो देवः शङ्खचक्रगदाधरः। अक्षय्यः पुण्डरीकाक्ष जीवमोक्षप्रदो भव॥

(४) भूतनिमित्तक चौथा पिण्डदान

प्रतिज्ञासंकल्प—दायें हाथमें त्रिकुश, तिल, जल लेकर चतुर्थ पिण्डके दानका प्रतिज्ञासंकल्प करे—

ॐ अद्य ""गोत्रः ""शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं जीवच्छ्राद्धे ""गोत्रस्य ""जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य मरणोत्तरभावि-प्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वकशास्त्रोक्तफलप्राप्त्यर्थं देहस्याहवनीययोग्यताभावसम्पादकयक्षराक्षसपिशाचादितुष्ट्यर्थं च विश्राम-

स्थानीयभूतनिमित्तकचतुर्थपिण्डदानं करिष्ये। कहकर संकल्पजल छोड़ दे।

अवनेजनदान—जलसे भूमिको सींच दे। वहाँ दक्षिणाग्र तीन कुश बिछा दे। इसके बाद हाथमें मोटक, जल, तिल तथा जल, तिल, चन्दन और श्वेतपुष्पयुक्त अवनेजनपात्र लेकर अवनेजनदानका संकल्प करे—

ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त मरणोत्तरभाविविश्रामस्थानीयपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते स्वधा। कहकर संकल्पजल पितृतीर्थसे प्रोक्षित भूमिपर गिरा दे तथा अवनेजनपात्रका आधा जल गिरा दे।

पिण्डदान—मोटक, तिल, जल और पिण्ड लेकर (बायें हाथसे दाहिने हाथका स्पर्श करते हुए) पिण्डदानका संकल्प करे—

ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त देहस्याहवनीययोग्यताभावसम्पादकयक्षराक्षस-पिशाचादितुष्ट्यर्थं मरणोत्तरभाविविश्रामस्थानीयपिण्डस्ते स्वधा। कहकर कुशोंके मध्य पितृतीर्थसे पिण्ड रख दे।

प्रत्यवनेजन—अवनेजनपात्रमें जल, तिल, सफेद चन्दन तथा सफेद फूल छोड़कर (यदि उसमें जल अवशिष्ट हो तो छोड़ना आवश्यक नहीं) दायें हाथमें रख ले। पुनः मोटक, तिल, जल लेकर प्रत्यवनेजनका संकल्प करे—

ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त मरणोत्तरभाविविश्रामस्थानीयपिण्डोपरि अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते स्वधा। कहकर पिण्डपर संकल्पजल छोड़ दे। पिण्डको उठाकर पुत्तलके समीप रख दे। तदनन्तर सव्य होकर भगवान्‌से प्रार्थना करे—

अनादिनिधनो देवः शङ्खचक्रगदाधरः। अक्षय्यः पुण्डरीकाक्ष जीवमोक्षप्रदो भव॥

पुत्तलको चितास्थानके समीप ले जाना तथा चितापर स्थापित करना

तदनन्तर पुत्तलको उठाकर शववाहक शिविकामें स्थापित करके भगवन्नामका उच्चारण करते हुए चार व्यक्तियोंकी सहायतासे चिताके समीप ले जाय और दक्षिण सिर* करके उसे चितापर रख दे और वस्त्रसे आच्छादित कर दे।

(५) साधकनिमित्तक पाँचवाँ पिण्डदान

प्रतिज्ञासंकल्प—दायें हाथमें त्रिकुश, तिल, जल लेकर पंचम पिण्डके दानका प्रतिज्ञासंकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं जीवच्छ्राद्धे ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य मरणोत्तरभाविप्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वकशास्त्रोक्तफलप्राप्त्यर्थं श्मशानवासिभूतादिप्रीत्यर्थं च साधकनिमित्तकपञ्चमपिण्डदानं करिष्ये। कहकर संकल्पजल छोड़ दे।

अवनेजनदान—जलसे भूमिको सींच दे। वहाँ दक्षिणाग्र तीन कुश बिछा दे। इसके बाद हाथमें मोटक, जल, तिल तथा जल, तिल, चन्दन और श्वेतपुष्पयुक्त अवनेजनपात्र लेकर अवनेजनदानका संकल्प करे—

ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त पञ्चमपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते स्वधा। कहकर

---

* (क) भूप्रदेशे शुचौ देशे पश्चाच्चित्यादिलक्षणे। तत्रोत्तानं निपात्यैनं दक्षिणाशिरसं मुखे॥ (छन्दोगपरिशिष्टमें कात्यायनका मत)
चितामें शवको दक्षिण सिर करके उत्तान देह रख दे।

(ख) आदिपुराणके इस वचन—'**अधोमुखो दक्षिणादिक् चरणस्तु पुमानिति। स्वगोत्रजैः गृहीत्वा तु चितामारोप्यते शवः॥ उत्तानदेहा नारी तु सपिण्डैरपि बन्धुभिः।**'— के अनुसार पुरुषको उत्तरकी तरफ सिर तथा अधोमुख (नीचेकी तरफ मुख करके) चितापर स्थापित करना चाहिये तथा स्त्रीको उत्तर सिर तथा उत्तानदेह करके रखना चाहिये। शुद्धितत्त्वादि ग्रन्थोंमें ऐसी ही व्यवस्था है।

पारस्करगृह्यसूत्रके 'विवाहश्मशानयोः ग्रामं प्रविशतात्'—इस वचनसे देशाचारके अनुसार करना चाहिये।

संकल्पजल पितृतीर्थसे प्रोक्षित भूमिपर गिरा दे तथा अवनेजनपात्रका आधा जल गिरा दे।

पिण्डदान—मोटक, तिल, जल और पिण्ड लेकर (बायें हाथसे दाहिने हाथका स्पर्श करते हुए) पिण्डदानका संकल्प करे—

ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त श्मशानवासिभूतादिप्रीत्यर्थं साधकनिमित्तक एष पिण्डस्ते स्वधा। कहकर कुशोंके मध्य पितृतीर्थसे पिण्ड रख दे।

प्रत्यवनेजन—अवनेजनपात्रमें जल, तिल, सफेद चन्दन तथा फूल छोड़कर (यदि उसमें जल अवशिष्ट हो तो छोड़ना आवश्यक नहीं) दायें हाथमें रख ले। पुनः मोटक, तिल, जल लेकर प्रत्यवनेजनका संकल्प करे—

ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त साधकनिमित्तकपिण्डोपरि अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते स्वधा। कहकर पिण्डपर संकल्पजल छोड़ दे और पिण्डको उठाकर पुत्तलके हाथमें रख दे। तदनन्तर सव्य होकर भगवान्से प्रार्थना करे—

अनादिनिधनो देवः शङ्खचक्रगदाधरः। अक्षय्यः पुण्डरीकाक्ष जीवमोक्षप्रदो भव॥

क्रव्यादाग्निस्थापन तथा पूजन

भूमिका संस्कारकर उसपर दक्षिणाभिमुख होकर लौकिकाग्निको स्वयं* जलाकर उस क्रव्याद नामक अग्निकी निम्न मन्त्रसे प्रतिष्ठा करे—

---

* कर्पूर अथवा घीकी बत्तीसे स्वतः अग्नि तैयार कर लेनी चाहिये। अन्य किसीसे अग्नि नहीं लेनी चाहिये।
चाण्डालाग्निरमेध्याग्निः सूतिकाग्निश्च कर्हिचित्। पतिताग्निश्चिताग्निश्च न शिष्टग्रहणोचितः॥ (निर्णयसिन्धुमें देवलका वचन)
अर्थात् चाण्डालकी अग्नि, अमेध्याग्नि (अपवित्र अग्नि), सूतिकाग्नि, पतिताग्नि और चिताग्निको शिष्ट लोग कभी भी ग्रहण न करें।

ॐ क्रव्यादनामाग्निं प्रतिष्ठापयामि।

तदनन्तर **ॐ क्रव्यादाग्नये नमः**—मन्त्रसे गन्ध, अक्षत, पुष्पसे उस स्थापित अग्निकी पूजा करे और निम्न मन्त्रसे अग्निकी प्रार्थना करे—

त्वं भूतकृज्जगद्योने त्वं लोकपरिपालकः। उक्तः संहारकस्तस्मादेनं स्वर्गं मृतं नय॥

तदनन्तर अपद्रव्यरहित घृतसे निम्न मन्त्रोंद्वारा उस अग्निमें तीन आहुतियाँ प्रदान करे—

(१) ॐ निरग्निभूम्यै स्वाहा। (२) ॐ यमाय स्वाहा। (३) ॐ रुद्राय स्वाहा।

पुत्तलदाह (सिरकी ओर अग्नि-ज्वालन)

इसके बाद अपसव्य हो जाय। फिर क्रव्याद नामक अग्निको सरपत आदिपर रखकर निम्नलिखित मन्त्रोंको पढ़ते हुए चिताकी तीन या एक परिक्रमाकर सिरकी ओर अग्नि प्रज्वलित करे* और शिरोदेशमें घृत छोड़ दे—

कृत्वा तु दुष्कृतं कर्म जानता वाऽप्यजानता। मृत्युकालवशं प्राप्तं नरं पञ्चत्वमागतम्॥
धर्माऽधर्मसमायुक्तं लोभमोहसमावृतम्। दहेयं सर्वगात्राणि दिव्यान् लोकान् स गच्छतु॥

(वाराहपुराण, निर्णयसिन्धु)

असौ स्वर्गाय लोकाय स्वाहा।

* शिरःस्थाने प्रदापयेत्। (वाराहपुराण)

कपालक्रिया

जब पुत्तल आधा जल जाय, तब कपालक्रिया करे। बाँससे पुत्तलके सिरपर चोट पहुँचानी चाहिये और उसपर घृत डाल देना चाहिये।[१]

चितामें सात समिधाएँ डालना[२]

एक-एक बित्तेकी सात यज्ञीय लकड़ियाँ लेकर चिताकी सात प्रदक्षिणा करे। प्रत्येक प्रदक्षिणाके अन्तमें '**क्रव्यादाय नमस्तुभ्यम्**' मन्त्रसे एक-एक समिधा चितामें डालता जाय।

बलिप्रदान करनेके लिये पाकनिर्माण

चितादाहके अनन्तर चिताके समीपवर्ती स्थानका संशोधन करके दूसरी अग्निमें बलि प्रदान करनेके लिये मुद्गतण्डुल (मूँग और चावल)-मिश्रित पाक बनाये।[३]

पृथ्वी, यम तथा रुद्रके लिये बलि (मुद्गतण्डुलचरु)-समर्पण

चिताके समीपमें पश्चिम-पूर्व क्रमसे मिट्टीके तीन कसोरे रखकर उन्हें क्रमशः मधु-जल, दूध-जल तथा घृत-जलसे

१. अर्धे दग्धेऽथवा पूर्णे स्फोटयेत् तस्य मस्तकम्। गृहस्थानां तु काष्ठेन यतीनां श्रीफलेन च॥ (गरुडपुराण-सारोद्धार १०।५६)

२. गच्छेत् प्रदक्षिणाः सप्त समिद्भिः सप्तभिः सह॥ (आदि०)

३. श्रपयेच्चापरे वह्नौ मुद्गमिश्रं चरुं ततः। तिलतण्डुलमिश्रं च द्वितीयं च पवित्रकम्॥
अत्र आद्यश्चरुर्बल्यर्थोऽपरः पिण्डार्थ इति वक्ष्यते। (जीवच्छ्राद्धपद्धति, पृ० ४०८)

भर दे। पहलेसे बने हुए मूँग और चावलमिश्रित चरुको तीन पृथक्-पृथक् मिट्टीके कसोरोंमें भर दे। उनमेंसे चरुयुक्त एक कसोरेको हाथमें लेकर मधुजलपूरित कसोरेके सामने '**ॐ पृथिव्यै नमस्तुभ्यम्**' कहकर पृथ्वीके लिये बलिके रूपमें निवेदित करे अर्थात् वहाँपर स्थापित कर दे। इसी प्रकार चरुयुक्त दूसरा कसोरा हाथमें लेकर दूधजलपूरित कसोरेके सामने '**ॐ यमाय नमस्तुभ्यम्**' कहकर यमके लिये बलिके रूपमें निवेदित कर दे तथा चरुयुक्त अन्तिम तीसरा कसोरा हाथमें लेकर घृतजलपूरित कसोरेके सामने '**ॐ रुद्राय श्मशानपतये नमस्तुभ्यम्**' कहकर रुद्रके लिये बलिके रूपमें निवेदित करे।

चिताभूमिकी शान्ति

पुत्तलदाहके लिये जलायी गयी चिताकी आगसे सन्तप्त हुई भूमिके तापको शान्त करनेके लिये दूधसे मिश्रित जलसे भरे हुए कुम्भका जल '**ॐ क्रव्यादवह्नितप्तायै भूम्यै नमः**' कहकर उस भूमिपर गिरा दे।

यम आदिके लिये तिलांजलिदान

तदनन्तर स्नान करके नाभिमात्र जलमें स्थित होकर अपसव्य दक्षिणाभिमुख हो जाय और यम आदिके लिये सात सतिल जलांजलियाँ निम्नलिखित क्रमसे प्रदान करे (प्रत्येकको एक-एक तिलांजलि दे)—

(१) ॐ यमाय स्वधा नमः।

(२) ॐ धर्मराजाय स्वधा नमः।

(३) ॐ मृत्यवे स्वधा नमः।

(४) ॐ अन्तकाय स्वधा नमः।

(५) ॐ वैवस्वताय स्वधा नमः।

(६) ॐ कालाय स्वधा नमः।

(७) ॐ सर्वप्रहरणाय स्वधा नमः।

घटस्फोट

जलसे बाहर आकर तिल और जलसे पूर्ण घड़ेको निम्न मन्त्र पढ़ते हुए भूमिपर गिरा दे—

'ॐ नमो रुद्राय श्मशानपतये नमः।'

जीवके लिये तिलोदकदान

अपसव्यकी स्थितिमें ही भूमिपर बायें घुटनेको गिराकर दक्षिणाग्र तीन कुशोंको बिछा ले और निम्न रीतिसे तिलोदक प्रदान करे—

'ॐ शुक्रवाहाय रुद्राय स्वधा नमः'। इस प्रकार श्मशानपति रुद्रका स्मरण करके **'ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे ......गोत्र ......जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त मरणोत्तरदेहविपर्ययकालपानार्हमेतत्तिलोदकं तुभ्यमस्तु'** कहकर कुशत्रयपर तिलोदक प्रदान करे।

(६) अस्थिसंचयननिमित्तक छठा पिण्डदान

प्रतिज्ञासंकल्प—दायें हाथमें त्रिकुश, तिल, जल लेकर छठे पिण्डके दानका प्रतिज्ञासंकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं ....गोत्रस्य ....शर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य मरणोत्तरभाविप्रेतत्वनिवृत्ति-पूर्वकशास्त्रोक्तफलप्राप्त्यर्थम् अस्थिसंचयननिमित्तकपिण्डदानं करिष्ये। कहकर संकल्पजल छोड़ दे।

अवनेजनदान—जलसे भूमिको सींच दे। वहाँ दक्षिणाग्र तीन कुश बिछा दे। इसके बाद हाथमें मोटक, तिल, जल तथा जल, तिल, चन्दन और श्वेतपुष्पयुक्त अवनेजनपात्र लेकर अवनेजनदानका संकल्प करे—

ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त अस्थिसंचयननिमित्तकपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते स्वधा। कहकर संकल्पजल पितृतीर्थसे प्रोक्षित भूमिपर गिरा दे तथा अवनेजनपात्रका आधा जल गिरा दे।

पिण्डदान—मोटक, तिल, जल और पिण्ड लेकर (बायें हाथसे दाहिने हाथका स्पर्श करते हुए) पिण्डदानका संकल्प करे—

ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त अस्थिसंचयननिमित्तक एष पिण्डस्ते स्वधा। कहकर कुशोंके मध्य पितृतीर्थसे पिण्ड रख दे।

प्रत्यवनेजन—अवनेजनपात्रमें जल, तिल, सफेद चन्दन तथा सफेद फूल छोड़कर (यदि उसमें जल अवशिष्ट हो तो छोड़ना आवश्यक नहीं) दायें हाथमें रख ले। पुनः मोटक, तिल, जल लेकर प्रत्यवनेजनका संकल्प करे—

ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त अस्थिसंचयननिमित्तकपिण्डोपरि अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते स्वधा। कहकर पिण्डपर संकल्पजल छोड़ दे। पिण्डको उठाकर जलमें डाल दे। तदनन्तर सव्य होकर भगवान्से प्रार्थना करे—

अनादिनिधनो देवः शङ्खचक्रगदाधरः। अक्षय्यः पुण्डरीकाक्ष जीवमोक्षप्रदो भव॥

दशगात्रपिण्डदानविधि

पाकनिर्माण—दशगात्रके पिण्डदानके लिये श्राद्धदेशको स्वच्छकर गोबरसे लीप दे, तदनन्तर दशगात्रके दस पिण्डोंके लिये तिलतण्डुलमिश्रित पाक*का निर्माण कर ले। पाकमें तिल, मधु, घृत तथा उष्ण दूध मिलाकर गोल-गोल दस पिण्ड बनाकर किसी पत्तलपर रख दे।

पिण्डदान

श्राद्धस्थलपर आकर श्राद्धदेशका मार्जनकर सव्य पूर्वाभिमुख होकर आसनपर बैठ जाय। भूमिपर दक्षिण दिशाकी ओर तिल छोड़कर उनके ऊपर दक्षिणाभिमुख तिलके तेलका दीपक रखे। निम्न मन्त्र पढ़कर उसे जला दे—

भो दीप ब्रह्मरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत्। यावत् कर्मसमाप्तिः स्यात् तावत् त्वं सुस्थिरो भव॥

दीपक श्राद्धतक बुझे नहीं, यह ध्यान रखे।

दो कुशोंकी पवित्री दाहिने हाथकी अनामिकामें और तीन कुशोंकी पवित्री बायें हाथकी अनामिकामें धारण करे। तदनन्तर निम्न मन्त्र पढ़कर तीन आचमन करे—

ॐ केशवाय नमः, ॐ नारायणाय नमः, ॐ माधवाय नमः। तदनन्तर **ॐ हृषीकेशाय नमः** बोलकर अँगूठेके मूल भागसे ओठोंको दो बार पोंछकर हाथ धो ले। इसके बाद—

---

* श्रपयेच्चापरे वह्नौ मुद्गमिश्रं चरुं ततः। तिलतण्डुलमिश्रं च द्वितीयं च पवित्रकम्॥
अत्र आद्यश्चरुर्बल्यर्थोऽपरः पिण्डार्थ इति वक्ष्यते। (जीवच्छ्राद्धपद्धति, पृ० ४०८)

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

'**ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु**' —ऐसा बोलकर अपने ऊपर तथा श्राद्धसामग्रीपर कुशोंसे जल छिड़क दे।

बायें हाथमें पीली सरसों लेकर दाहिने हाथसे ढककर निम्न मन्त्र बोले—

नमो नमस्ते गोविन्द पुराणपुरुषोत्तम। इदं श्राद्धं हृषीकेश रक्ष त्वं सर्वतो दिशः॥

तदनन्तर दाहिने हाथसे सरसोंको पूर्व-पश्चिम आदि दिशाओंमें निम्न मन्त्रोंसे छिड़क दे—

पूर्वमें—**प्राच्यै नमः**, दक्षिणमें—**अवाच्यै नमः**, पश्चिममें—**प्रतीच्यै नमः**, उत्तरमें—**उदीच्यै नमः**, आकाशमें—**अन्तरिक्षाय नमः**, भूमिपर—**भूम्यै नमः**।

तदनन्तर तिल तथा पुष्प लेकर '**श्राद्धभूम्यै नमः**' कहकर भूमिपर छोड़ दे।

दायें हाथमें त्रिकुश, तिल तथा जल लेकर अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर दस पिण्डदानोंका प्रतिज्ञा-संकल्प इस प्रकार करे—

प्रतिज्ञा-संकल्प—ॐ अद्य ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं जीवच्छ्राद्धे ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य मरणोत्तरभाविप्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वकशास्त्रोक्तफलप्राप्त्यर्थं कर्तव्यौर्ध्वदैहिकक्रियायाम् आतिवाहिकशरीरा-वयवादिसम्पादकशिरःपूरकादिपूर्णत्वतृप्तताक्षुद्विपर्ययपूरकान्तदशपिण्डदानानि करिष्ये। कहकर संकल्पजल छोड़ दे।

वेदीनिर्माण—तदनन्तर प्रादेश (अँगूठेसे तर्जनीके बीचकी लम्बाई)-मात्र लम्बी और प्रादेशमात्र चौड़ी दक्षिणकी ओर ढालवाली चार अँगुल ऊँची दस वेदियाँ पश्चिम-पूर्वक्रमसे बनाकर उनपर जल छिड़क दे।

कुशास्तरण—समूल तीन कुशोंको एक साथ जड़सहित दो भागोंमें एक ही बारमें विभक्त करके प्रत्येक वेदीपर दक्षिणाग्र बिछा दे।

अवनेजनपात्रस्थापन—प्रत्येक वेदीकी पश्चिम दिशामें एक-एक अवनेजनपात्र (पत्तेके दोने या हाथसे बने मिट्टीके दीये) रख दे और उनमें जल, तिल, सफेद चन्दन और सफेद फूल छोड़ दे।

अवनेजनदानका संकल्प—हाथमें मोटक, तिल, जल तथा प्रथम वेदीवाले सजल अवनेजनपात्रको लेकर निम्न संकल्पसे अवनेजनदान करे—

(१) ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त कर्तव्यौर्ध्वदैहिकक्रियायां शिरःपूरकप्रथमपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते स्वधा—कहकर वेदीके मध्य स्थापित कुशोंपर अवनेजनका आधा जल गिराकर उस सजल पात्रको यथास्थान रख दे।

इसी प्रकार क्रमशः निम्न संकल्पोंके द्वारा सभी वेदियोंपर स्थापित कुशोंपर संकल्पका आधा जल गिराकर अवनेजनपात्रको प्रत्यवनेजनके लिये यथास्थान रखता जाय—

(२) ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त कर्तव्यौर्ध्वदैहिकक्रियायां कर्णाक्षिनासिका-पूरकद्वितीयपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते स्वधा।

(३) ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त कर्तव्यौर्ध्वदैहिकक्रियायां गलांसभुजवक्षः-पूरकतृतीयपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते स्वधा।

(४) ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे ……गोत्र ……जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त कर्तव्यौर्ध्वदैहिकक्रियायां नाभिलिङ्गगुद-पूरकचतुर्थपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते स्वधा।

(५) ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे ……गोत्र ……जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त कर्तव्यौर्ध्वदैहिकक्रियायां जानुजङ्घापाद-पूरकपञ्चमपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते स्वधा।

(६) ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे ……गोत्र ……जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त कर्तव्यौर्ध्वदैहिकक्रियायां सर्वमर्मपूरकषष्ठ-पिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते स्वधा।

(७) ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे ……गोत्र ……जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त कर्तव्यौर्ध्वदैहिकक्रियायां सर्वनाडीपूरक-सप्तमपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते स्वधा।

(८) ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे ……गोत्र ……जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त कर्तव्यौर्ध्वदैहिकक्रियायां दन्तलोमादि-पूरकाष्टमपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते स्वधा।

(९) ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे ……गोत्र ……जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त कर्तव्यौर्ध्वदैहिकक्रियायां वीर्य (स्त्री हो तो वीर्यके स्थानपर **रजः** बोले)-**पूरकनवमपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते स्वधा।**

(१०) ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे ……गोत्र ……जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त कर्तव्यौर्ध्वदैहिकक्रियायां पूर्णतातृप्तता-क्षुद्विपर्ययपूरकदशमपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते स्वधा।

पिण्डदान—बायाँ घुटना मोड़कर तथा जमीनपर टिकाकर दायें हाथमें मोटक, तिल, जल तथा बनाये गये दस

पिण्डोंमेंसे एक पिण्ड लेकर बायें हाथसे दायें हाथका स्पर्श किये हुए पिण्डदानका निम्न संकल्प करे—

(१) ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त कर्तव्यौर्ध्वदैहिकक्रियायां शिरःपूरकप्रथमपिण्डस्ते स्वधा—कहकर पिण्डको पितृतीर्थसे बायें हाथकी सहायतासे सम्भालकर प्रथम वेदीके मध्य कुशोंपर अवनेजनस्थानपर स्थापित कर दे।

इसी प्रकार अन्य वेदियोंपर भी निम्न संकल्पोंद्वारा पिण्डदान करके क्रमशः वेदियोंपर कुशाके ऊपर पिण्ड रख दे—

(२) ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त कर्तव्यौर्ध्वदैहिकक्रियायां कर्णाक्षिनासिका-पूरकद्वितीयपिण्डस्ते स्वधा।

(३) ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त कर्तव्यौर्ध्वदैहिकक्रियायां गलांसभुजवक्षः-पूरकतृतीयपिण्डस्ते स्वधा।

(४) ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त कर्तव्यौर्ध्वदैहिकक्रियायां नाभिलिङ्ग (यदि स्त्री हो तो लिंगके स्थानपर **योनि** कहे)-**गुदपूरकचतुर्थपिण्डस्ते स्वधा।**

(५) ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त कर्तव्यौर्ध्वदैहिकक्रियायां जानुजङ्घापाद-पूरकपञ्चमपिण्डस्ते स्वधा।

(६) ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त कर्तव्यौर्ध्वदैहिकक्रियायां सर्वमर्मपूरकषष्ठपिण्डस्ते स्वधा।

(७) ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त कर्तव्यौर्ध्वदैहिकक्रियायां सर्वनाडीपूरकसप्तमपिण्डस्ते स्वधा।

(८) ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त कर्तव्यौर्ध्वदैहिकक्रियायां दन्तलोमादिपूरकाष्टमपिण्डस्ते स्वधा।

(९) ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त कर्तव्यौर्ध्वदैहिकक्रियायां वीर्य (यदि स्त्री हो तो वीर्यके स्थानपर **रजः** कहे)-**पूरकनवमपिण्डस्ते स्वधा।**

(१०) ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त कर्तव्यौर्ध्वदैहिकक्रियायां पूर्णतातृप्तताक्षुद्विपर्ययपूरकदशमपिण्डस्ते स्वधा।

प्रत्यवनेजनदान—अवनेजनपात्रोंमें जल न बचा हो तो जल डाल ले। दायें हाथमें प्रथम प्रत्यवनेजनपात्र तथा मोटक, तिल, जल लेकर प्रत्यवनेजनदानका संकल्प करे—

(१) ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त कर्तव्यौर्ध्वदैहिकक्रियायां शिरःपूरकप्रथमपिण्डेऽत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते स्वधा—कहकर जलको पिण्डपर गिरा दे। प्रत्यवनेजनपात्रको अलग रख दे।

इसी प्रकार शेष नौ पिण्डोंपर भी क्रमशः निम्न संकल्पोंद्वारा अवनेजनदान करे—

(२) ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त कर्तव्यौर्ध्वदैहिकक्रियायां कर्णाक्षि-

नासिकापूरकद्वितीयपिण्डेऽत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते स्वधा।

(३) ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त कर्तव्यौर्ध्वदैहिकक्रियायां गलांसभुजवक्षः-पूरकतृतीयपिण्डेऽत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते स्वधा।

(४) ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त कर्तव्यौर्ध्वदैहिकक्रियायां नाभिलिङ्ग (योनि)-गुदपूरकचतुर्थपिण्डेऽत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते स्वधा।

(५) ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त कर्तव्यौर्ध्वदैहिकक्रियायां जानुजङ्घा-पादपूरकपञ्चमपिण्डेऽत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते स्वधा।

(६) ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त कर्तव्यौर्ध्वदैहिकक्रियायां सर्वमर्मपूरकषष्ठपिण्डेऽत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते स्वधा।

(७) ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त कर्तव्यौर्ध्वदैहिकक्रियायां सर्वनाडीपूरक-सप्तमपिण्डेऽत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते स्वधा।

(८) ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त कर्तव्यौर्ध्वदैहिकक्रियायां दन्तलोमादि-पूरकाष्टमपिण्डेऽत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते स्वधा।

(९) ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त कर्तव्यौर्ध्वदैहिकक्रियायां वीर्य/रजः-पूरकनवमपिण्डेऽत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते स्वधा।

(१०) ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त कर्तव्यौर्ध्वदैहिकक्रियायां पूर्णतातृप्तताक्षुद्धिपर्ययपूरकदशमपिण्डेऽत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते स्वधा।

पिण्डपूजन—प्रत्यवनेजनदानके अनन्तर क्रमशः सभी पिण्डोंपर मौन होकर पितृतीर्थसे ऊनका धागा, सफेद चन्दन (तर्जनीसे), तिल तथा सफेद फूल चढ़ा दे। धूप और दीपक दिखाकर नैवेद्य अर्पित करे। हाथ धो ले। इसके बाद भृंगराजपत्र और खस पिण्डोंपर चढ़ा दे। तदनन्तर हाथमें मोटक, तिल तथा जल लेकर अर्चनदानका संकल्प करे—

अर्चनदानका संकल्प—ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त शिरःपूरकादिपूर्णत्वतृप्तताक्षुद्धिपर्ययपूरकान्तदशपिण्डेषु एतानि ऊर्णासूत्रगन्धाक्षतपुष्पधूपदीपनैवेद्योशीरभृङ्गराजपत्राणि तुभ्यं स्वधा— कहकर संकल्पजल सभी पिण्डोंपर छोड़ दे।

अक्षय्योदकदान—'सर्वेषामक्षय्योऽस्तु'* कहकर सभी पिण्डोंपर जल छोड़ दे।

तदनन्तर भगवान् विष्णुका स्मरण करे।

वर्धमान तिलतोयांजलिदान

इसके पश्चात् सभी पिण्डोंपर वर्धमान क्रमसे अर्थात् प्रथम पिण्डपर एक, द्वितीय पिण्डपर दो, तृतीय पिण्डपर तीन—इस प्रकारसे एक-एक अंजलि बढ़ाते हुए दसवें पिण्डपर दस तिलतोयांजलि प्रदान करनी चाहिये। तिलतोयांजलियोंके समान ही वर्धमान क्रमसे तिलतोयपूर्णपात्र भी प्रदान करने चाहिये, इस प्रकार तिलतोयांजलियोंकी कुल संख्या ५५ और

* धूपो दीपो बलिर्गन्धः सर्वेषामस्तु चाक्षयम्। दशपिण्डांस्ततो दत्त्वा विष्णुं सौम्यमुखं स्मरेत्॥ (जीवच्छ्राद्धपद्धति)

तिलतोयपूर्णपात्रोंकी कुल संख्या ५५ होती है। तिलतोयांजलि पिण्डपर देनी चाहिये और तिलतोयपूर्णपात्रोंको पिण्डके समीपमें रखना चाहिये।

दोनों हाथों (अंजलि)-में मोटक, तिल, जल लेकर अंजलिदानका संकल्प करे—

(१) ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे .....गोत्र .....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त शिरःपूरकप्रथमपिण्डोपरि एष तिलतोयाञ्जलिस्ते स्वधा। कहकर तिलतोयांजलि पिण्डपर गिरा दे।

इसी प्रकारसे निम्न संकल्पोंद्वारा वर्धमान तिलतोयांजलियाँ पिण्डोंपर देता जाय—

(२) ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे .....गोत्र .....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त कर्णाक्षिनासिकापूरकद्वितीयपिण्डोपरि एतौ तिलतोयाञ्जली ते स्वधा।

(३) ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे .....गोत्र .....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त गलांसभुजवक्षःपूरकतृतीयपिण्डोपरि एते तिलतोयाञ्जलयस्ते स्वधा।

(४) ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे .....गोत्र .....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त नाभिलिङ्गगुदपूरकचतुर्थपिण्डोपरि एते चत्वारस्तिलतोयाञ्जलयस्ते स्वधा।

(५) ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे .....गोत्र .....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जानुजङ्घापादपूरकपञ्चमपिण्डोपरि एते पञ्चतिलतोयाञ्जलयस्ते स्वधा।

(६) ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त सर्वमर्मपूरकषष्ठपिण्डोपरि एते षट्तिलतोयाञ्जलयस्ते स्वधा।

(७) ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त सर्वनाडीपूरकसप्तमपिण्डोपरि एते सप्ततिलतोयाञ्जलयस्ते स्वधा।

(८) ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्ते दन्तलोमादिपूरकाष्टमपिण्डोपरि एते अष्टतिलतोयाञ्जलयस्ते स्वधा।

(९) ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे .....गोत्र ....जीववशर्मन्/वर्मन्/गुप्त वीर्य/रजःपूरकनवमपिण्डोपरि एते नवतिलतोयाञ्जलयस्ते स्वधा।

(१०) ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त पूर्णतातृप्तताक्षुद्विपर्ययपूरकदशमपिण्डोपरि एते दशतिलतोयाञ्जलयस्ते स्वधा।

तिलतोयपूर्णपात्रदान

दोनियेमें तिल तथा जल रखकर पूर्ववत् वर्धमान क्रमसे तिलतोयपूर्णपात्रोंको प्रत्येक पिण्डके समीप रख दे। अर्थात् प्रथम पिण्डके समीप एक, द्वितीय पिण्डके समीप दो, इसी प्रकार क्रमशः बढ़ाते हुए दशम पिण्डके समीप दस तिलतोयपूर्णपात्र रखने चाहिये। हाथमें मोटक, तिल, जल लेकर निम्न रीतिसे तिलतोयपूर्णपात्रदानका संकल्प करे—

(१) ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त शिरःपूरकप्रथमपिण्डसमीपे इदं तिलतोयपूर्णपात्रं ते स्वधा—कहकर प्रथम पिण्डके समीपमें रखे तिलतोयपूर्णपात्रपर संकल्पजल छोड़ दे।

इसी प्रकारसे पिण्डके समीप रखे हुए अन्य तिलतोयपूर्णपात्रोंपर निम्न संकल्पोंद्वारा जल छोड़ता जाय—

(२) ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त कर्णाक्षिनासिकापूरकद्वितीयपिण्डसमीपे इमे तिलतोयपूर्णपात्रे ते स्वधा।

(३) ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त गलांसभुजवक्षःपूरकतृतीयपिण्डसमीपे इमानि त्रीणि तिलतोयपूर्णपात्राणि ते स्वधा।

(४) ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त नाभिलिङ्गगुदपूरकचतुर्थपिण्डसमीपे इमानि चत्वारि तिलतोयपूर्णपात्राणि ते स्वधा।

(५) ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जानुजङ्घापादपूरकपञ्चमपिण्डसमीपे इमानि पञ्चतिलतोयपूर्णपात्राणि ते स्वधा।

(६) ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त सर्वमर्मपूरकषष्ठपिण्डसमीपे इमानि षट्तिलतोयपूर्णपात्राणि ते स्वधा।

(७) ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त सर्वनाडीपूरकसप्तमपिण्डसमीपे इमानि

सप्ततिलतोयपूर्णपात्राणि ते स्वधा।

(८) ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे ......गोत्र ......जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त दन्तलोमादिपूरकाष्टमपिण्डसमीपे इमानि अष्टतिलतोयपूर्णपात्राणि ते स्वधा।

(९) ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे ......गोत्र ......जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त वीर्य/रजःपूरकनवमपिण्डसमीपे इमानि नवतिलतोयपूर्णपात्राणि ते स्वधा।

(१०) ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धे ......गोत्र ......जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त पूर्णतातृप्तताक्षुद्विपर्ययपूरकदशमपिण्डसमीपे इमानि दशतिलतोयपूर्णपात्राणि ते स्वधा।

पिण्डविसर्जन

इस प्रकार तिलतोयपूर्णपात्रदानके अनन्तर प्रत्येक पिण्डके समीपमें एक-एक जलपूर्ण कुम्भ अथवा जलपूर्ण कसोरा रख दे। उनमें प्रत्येकमें एक-एक पिण्ड रख दे और फिर सभी पिण्डयुक्त कुम्भोंको नाभिमात्र जलमें जाकर विसर्जित कर दे।

जीवके उद्देश्यसे जल-दुग्धदान

स्नान करके घर आ जाय और सायंकाल आवासस्थानके द्वारके समीप दो त्रिकाष्ठिकाओंपर दो पात्र रखकर एकको जलसे तथा दूसरेको दूधसे भर दे। समीपमें एक पत्तेपर माला-फूल रख ले और एक दीपक जलाकर रख ले।

इसके पश्चात् निम्न वाक्य पढ़कर त्रिकाष्ठिकापर रखे हुए जल, दूध, माला और दीपक जीवको समर्पित करे—

(१) ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त अत्र स्नाहि—कहकर जलपात्र निवेदित करे।

(२) ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त इदं दुग्धं पिब—कहकर दुग्धपात्र निवेदित करे।

(३) ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त इदं माल्यं परिधेहि—कहकर माला निवेदित करे।

(४) ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त अनेन दीपेन पश्य—कहकर दीपक निवेदित करे।

रात्रिशयनका विधान तथा एक रात्रिका अशौच

तदनन्तर रात्रिमें दक्षिणाग्र कुशोंके ऊपर उत्तरकी ओर सिर करके शयन करे। उस दिन एक रात्रिका अशौच होगा।* उस दिन हाथसे पकाया हुआ नमकरहित भोजन मिट्टीके पात्र अथवा पत्तलपर करना चाहिये। प्रातःकाल अशौचकी निवृत्तिके अनन्तर क्षौर, स्नान आदिसे शुद्ध होकर वस्त्रपरिवर्तन कर ले तथा नूतन यज्ञोपवीत धारणकर अमावास्या (चतुर्थ दिन)-का कृत्य करे।

॥ इस प्रकार कृष्णचतुर्दशी (तृतीय दिन)-का कृत्य पूर्ण हुआ॥

---

* 'प्रातराद्यश्राद्धविधानात्तदहरेकरात्रमाशौचम्' (जीवच्छ्राद्धपद्धति पृ० ४१४)

अमावास्या (चतुर्थ दिन)-के कृत्योंकी सामग्री

(क) मध्यमषोडशीश्राद्धकी सामग्री

मध्यमषोडशीमें सोलह पिण्डदान होंगे, पंद्रह पिण्ड देवताओंके निमित्त बनेंगे तथा एक पिण्ड जीवके निमित्त बनेगा। तदनुसार यहाँ सामग्री लिखी गयी है—

(१) श्राद्धकर्ताके लिये आसन—३ तथा तीन कर्मपात्र।

(२) गंगाजल अथवा शुद्ध जल।

(३) सोलह वेदी बनानेके लिये बालू या शुद्ध मिट्टी।

(४) **खीर बनानेके लिये**—(क) एक बड़ी हँड़िया ढक्कनसहित (जिसमें २ किलो दूध आ सके), (ख) एक छोटी हँड़िया ढक्कनसहित (जिसमें आधा किलो जल आ सके), (ग) गोहरी, (घ)दूध—ढाई किलो, (ङ) चावल—१ किलो, (च) शक्कर देशी—१५० ग्राम।

(५) काला तिल—५० ग्राम,।

(६) जौ—१०० ग्राम।

(७) चावल—५० ग्राम।

(८) दूध—१०० ग्राम।

(९) शक्कर देशी—५० ग्राम।

(१०) शहद—५० ग्राम।

(११) सुपारी—३५ नग।

(१२) पान—३५ नग।

(१३) रूई।

(१४) धूप—१ पैकेट।

(१५) गोघृत—१०० ग्राम।

(१६) तिलका तेल—२०० ग्राम (रक्षादीपके लिये)।

(१७) दियासलाई—१।

(१८) पीली सरसों—१० ग्राम।

(१९) कच्चा सूत—१ गोला।

(२०) जनेऊ—३२ नग।

(२१) ऋतुफल—३३ नग (केला छोड़कर)।

(२२) नैवेद्य (पेड़ा-मिसरी आदि)—३३ नग।

(२३) सफेद सुगन्धित पुष्पकी माला—३५ नग।

(२४) पुष्प, तुलसीपत्र।

(२५) लौंग-इलायची—३५-३५ नग।

(२६) पलाश आदिकी दोनिया अथवा हाथसे बना मिट्टीका दीया—७० नग।

(२७) पलाशका पत्तल—१६।

(२८) कुश—१२०।

(२९) सफेद चन्दन (घिसा हुआ)।

(३०) मिट्टीका हाथका बना दीया अथवा पलाशका बना दोनिया—७० नग, कसोरा—१० नग।

(३१) बाल्टी, लोटा तथा पूजन-सामग्री रखनेके लिये थाली, पूजनपात्र, पंचपात्र, अर्घी तथा तष्टा (घरसे)।

(३२) दक्षिणाके लिये देवोंके निमित्त १५ स्वर्णखण्ड तथा प्रेतके निमित्त १ रजतखण्ड।

(ख) आद्यश्राद्ध (महैकोद्दिष्टश्राद्ध)-की सामग्री

आद्यश्राद्ध (महैकोद्दिष्टश्राद्ध)-में एक पिण्डदान होता है, जिसकी सामग्री यहाँ लिखी जा रही है—

(१) गंगाजल अथवा शुद्ध जल।

(२) बालू अथवा शुद्ध मिट्टी (वेदीके लिये)।

(३) **पिण्डके लिये खीर बनानेके लिये**—(क) हँड़िया छोटी, ढक्कनसहित—१, (ख) चावल—१०० ग्राम, (ग) दूध—२५० ग्राम, (घ) देशी शक्कर—५० ग्राम, (ङ) गोहरी।

(४) काला तिल—१० ग्राम।

(५) शहद—२५ ग्राम।

(६) सुपारी—२ नग।

(७) पान—४ नग।

(८) घीकी बत्ती—२।

(९) सफेद चन्दन (घिसा हुआ)।

(१०) धूप—१ पैकेट।

(११) घी—२५ ग्राम।

(१२) पीली सरसों—१० ग्राम।

(१३) कच्चा सूत—एक हाथ लम्बा।

(१४) नैवेद्य (पेड़ा)—२ नग।

(१५) ऋतुफल—२ नग (केला छोड़कर)।

(१६) तिलका तेल —२५ ग्राम (रक्षादीपके लिये)।

(१७) सफेद फूलकी माला—२।

(१८) पुष्प, तुलसीपत्र।

(१९) जनेऊ—२।

(२०) लौंग-इलायची—२-२ नग।

(२१) पलाशका पत्तल—२।

(२२) पलाशकी दोनिया अथवा हाथसे बना मिट्टीका दीया—१०।

(२३) दियासलाई—१।

(२४) मिट्टीकी प्याली—५।

(२५) कुश—१५।

(२६) ऊन या कुशका आसन—१।

(२७) जल रखनेके लिये लोटा, बाल्टी, अर्घी, पंचपात्र अथवा लोटिया, सामान रखनेके लिये थाली तथा जल गिरानेके लिये तष्टा (घरसे)।

(२८) दक्षिणाके लिये एक रजतखण्ड।

(ग) जीवशय्यादानकी सामग्री

(१) चारपाई।

(२) गद्दा।

(३) बिछानेके लिये चद्दर।

(४) तकिया, मसनद।

(५) रजाई।

(६) कम्बल, ओढ़नेकी चादर।

(७) पहननेके लिये पाँच वस्त्र—धोती, दुपट्टा, कुर्तेका कपड़ा, बनियाइन, साफा।

(८) ऋतुफल (केला छोड़कर) ।

(९) मिठाई।

(१०) पंचमेवा।

(११) पान।

(१२) शीशा।

(१३) कंघी, तेल।

(१४) इत्र, चन्दन।

(१५) आसन।

(१६) खड़ाऊँ।

(१७) जूता।

(१८) जपमालीसहित माला (तुलसी और रुद्राक्ष)।

(१९) श्रीमद्भगवद्गीता-पुस्तक—१।

(२०) छाता।

(२१) घड़ी।

(२२) छड़ी।

(२३) पंखा, दीपक, लालटेन, टार्च।

(२४) पाँच बर्तन—थाली, लोटा, गिलास, कटोरी, चम्मच।

(२५) भोजन बनानेके लिये बर्तन— भगौना—२ (छोटा-बड़ा), कड़ाही, कलछी-३, तवा, चिमटा, स्टोव, चकला, बेलन, सँड़सी, पाटा।

२६-स्त्रीकी शय्यामें—शीशा, कंघी, सिन्दूर, बिन्दी, चूड़ी, तेल, आलता, आभूषण, बिछिया, पहननेके लिये वस्त्र—धोती आदि, स्वर्णाभूषण आदि।

२७-जलके लिये ताँबेका घट या बाल्टी।

२८-भोजन-सामग्री—सूखा अन्न।

२९-चार कोनोंमें रखनेके लिये चार पीतलकी कटोरी अथवा मिट्टीका कसोरा तथा उनमें रखनेकी सामग्री—घृत, कुमकुम, गेहूँ और जल।

३०-स्वर्ण-निर्मित जीवकी प्रतिमा (कांचन-पुरुष)।

३१-जीवोपभोगयोग्य वस्त्र।

३२-शय्यापर रखनेके लिये स्वर्ण-रजत-आभूषण आदि।

३३-ब्राह्मणवरण-सामग्री—धोती, गमछा, जनेऊ, सुपारी, आसन तथा कुछ द्रव्य।

३४-शय्या-पूजनकी सामग्री—रोली, नारा (कलावा या मौली), अबीर, चन्दन, चावल, धूप, दीप, नैवेद्य, पान, सुपारी आदि।

३५-वर्षाशन—एक वर्षके लिये भोजनहेतु यथाशक्ति आमान्न—घी, तेल, नमक, चावल, दाल, आटा, चीनी आदि।

(घ) वृषोत्सर्गकी सामग्री

(क) पूजन-सामग्री— (१) गंगाजल अथवा शुद्ध जल।

(२) वेदी बनानेके लिये बालू अथवा शुद्ध मिट्टी।

(३) सफेद चन्दन (घिसा हुआ)।

(४) ढक्कनसहित चौड़े मुँहकी २ हँड़िया—एकमें चावल और दूध एवं दूसरेमें आटा तथा दूध पकानेके लिये (हवनके लिये)।

(५) गोहरी (चरु पकानेके लिये तथा हवनके लिये)।

(६) जौका आटा—२५० ग्राम (चरुके लिये)।

(७) यदि जौके आटेका वृषभ बनाना हो तो जौका

आटा—ढाई किलो।

(८) चावल—३ किलो।

(९) दूध—१ किलो।

(१०) शक्कर देशी—२०० ग्राम।

(११) रोली—२० ग्राम।

(१२) नारा (कलावा या मौली)।

(१३) अबीर—५० ग्राम।

(१४) सुपारी—१० नग।

(१५) धूप—१ पैकेट।

(१६) घृत—आधा किलो।

(१७) कपूर—१० ग्राम।

(१८) दियासलाई—१ नग।

(१९) पान—१० नग।

(२०) लौंग, इलायची—१०-१० नग।

(२१) हल्दी-चूर्ण—५० ग्राम।

(२२) सर्वौषधि।

(२३) नैवेद्य (पेड़ा-मिसरी आदि)—१५ नग।

(२४) ऋतुफल—१५ नग (केला छोड़कर)।

(२५) पुष्पमाला—१० नग।

(२६) पुष्प, तुलसीपत्र।

(२७) पंचपल्लव।

(२८) काला तिल—१०० ग्राम।

(२९) जौ—१०० ग्राम।

(३०) पलाशका पत्तल—१० नग।

(३१) कुश—२५ नग।

(३२) मिट्टीकी प्याली—२५ नग।

(३३) मिट्टीका सकोरा (कसोरा)—१० नग।

(३४) पंचगव्य एक कटोरी।

(३५) पंचामृत एक कटोरी।

(३६) पीतल या ताँबे अथवा मिट्टीका कलश—१ नग (ढक्कनसहित)।

(३७) रुद्रकी प्रतिमा—१ नग (ताँबेकी)।

(३८) सफेद वस्त्र (वृषभ तथा बछियाको ओढ़ानेके लिये) अथवा धोती-गमछा।

(३९) वृषभ आदिके लिये गलेकी घंटी, नूपुर, अलंकार आदि आभूषण तथा डोरी।

(४०) लोहेका छोटा त्रिशूल तथा चक्र अथवा चन्दन या कुमकुम (आकृति बनानेके लिये)।

(४१) कच्चा सूत—सौ हाथ लम्बा (प्रत्यक्ष वृषभ-दान करना हो तो)

(ख) हवन-सामग्री—(१) आमकी लकड़ी—२ किलो, पलाशकी लकड़ी—डेढ़ किलो, (२) आज्यस्थाली—काँसेकी—१ नग (घृतपात्र), (३) पूर्णपात्र-पीतलका-१ नग (छोटा भगोना), (४) यज्ञपात्र (स्रुवा, प्रणीता तथा प्रोक्षणी आदि)।

(ग) नीलवृषश्राद्धके लिये २८ पिण्डोंके लिये तिल, घृत तथा शर्करामिश्रित जौका आटा।

(ङ) उत्तमषोडशीश्राद्धकी सामग्री

उत्तमषोडशीमें सोलह पिण्डदान होंगे। ये सभी पिण्ड जीवके निमित्त होंगे। इसमें एक ही पाक बनेगा। तदनुसार यहाँ सामग्री लिखी जा रही है—

(१) गंगाजल अथवा शुद्ध जल।

(२) बालू अथवा शुद्ध मिट्टी (वेदी बनानेके लिये)।

(३) हँड़िया—१ ढक्कनसहित जिसमें ढाई किलो दूध आ सके (खीर बनानेके लिये)।

(४) गोहरी।

(५) दूध—ढाई किलो।

(६) चावल—१ किलो।

(७) शक्कर देशी—१५० ग्राम।

(८) काला तिल—१०० ग्राम।

(९) शहद—५० ग्राम।

(१०) सुपारी—३५ नग।

(११) पान—३५ नग।

(१२) रूई।

(१३) धूप—१ पैकेट।

(१४) गोघृत—१०० ग्राम।

(१५) तिलका तेल—१०० ग्राम (रक्षादीपके लिये)।

(१६) दियासलाई—१ नग।

(१७) पीली सरसों—१० ग्राम।

(१८) कच्चा सूत—१ गोला।

(१९) जनेऊ—३२ नग (स्त्रीश्राद्धमें जनेऊ नहीं लगेगा)।

(२०) ऋतुफल—३३ नग (केला छोड़कर)।

(२१) नैवेद्य (पेड़ा-मिसरी आदि)—३३ नग।

(२२) सफेद सुगन्धित पुष्पकी माला—३५ नग।

(२३) पुष्प, तुलसीपत्र।

(२४) लौंग-इलायची—३५-३५ नग।

(२५) पलाशकी दोनिया अथवा हाथसे बना मिट्टीका दीया—७० नग।

(२६) सफेद चन्दन घिसा हुआ।

(२८) पलाशका पत्तल—१६ नग।

(२९) सकोरा—१० नग।

(३०) कुश—१२० नग।

(३१) बाल्टी, लोटा तथा पूजन-सामग्री रखनेके लिये थाली, पूजनपात्र, पंचपात्र, अर्घी तथा तष्टा (घरसे)।

(३२) बैठनेके लिये आसन—कम्बल।

(३३) दक्षिणाके लिये सोलह रजतखण्ड।

अमावास्या (चतुर्थ दिन)-का कृत्य

मध्यमषोडशीश्राद्धविधि*

अमावास्याको जीवच्छ्राद्धकर्ता पवित्र होकर श्राद्धस्थलपर आ जाय। सभी श्राद्धीय सामग्रियोंको यथास्थान रख ले। सर्वप्रथम पाकनिर्माण करना चाहिये।

पाकनिर्माण—ईशानकोणमें हाथसे बनाये गये मिट्टीके दो बर्तनोंमें देवताओंके लिये २ किलो तथा जीवके लिये २५० ग्राम दूधमें चावल डालकर खीरके दो पृथक्-पृथक् पाक तैयार कर ले। जीवके निमित्त केवल एक पिण्डके लिये खीर बनानी चाहिये। पाकनिर्माण हो जानेके अनन्तर उसमें तुलसीदल छोड़कर भगवान् विष्णुका भोग लगा दे।

शिखाबन्धन—हाथ-पाँव धोकर श्राद्धकर्ता अपने आसनपर पूर्वाभिमुख बैठ जाय, गायत्रीमन्त्रसे शिखाबन्धन कर ले।

तिलकधारण—मृत्तिका, गोपीचन्दन आदिसे ऊर्ध्वपुण्ड्र अथवा भस्मसे त्रिपुण्ड्र लगा ले।

सिंचन-मार्जन—निम्न मन्त्रसे अपने ऊपर तथा श्राद्धीय वस्तुओंपर जल छिड़ककर पवित्र हो जाय—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

---

* मध्यमषोडशी तथा वृषोत्सर्ग आदि चतुर्थ दिनका कृत्य यदि मण्डप बनाकर करनेका विचार हो तो इसकी विधि गीताप्रेसद्वारा प्रकाशित अन्त्यकर्मश्राद्धप्रकाशके परिशिष्टमें पृ०सं० ४११में देखनी चाहिये।

मध्यमषोडशश्राद्धका स्वरूप

पवित्रीधारण—निम्न मन्त्रसे पवित्री पहन ले—

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्॥

आचमन—ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः। इन मन्त्रोंको बोलकर आचमन करे। **ॐ हृषीकेशाय नमः** कहकर हाथ धो ले।

प्राणायाम—प्राणायाम करे।

आसनों और पात्रोंका रखना—श्राद्धस्थलके पूर्वभागमें दक्षिण दिशासे प्रारम्भकर उत्तरकी ओर क्रमसे विष्णु आदि नौ देवताओंके नौ आसन पश्चिमाभिमुख लगाये। दसवाँ आसन जीवके लिये इसी पंक्तिमें उत्तराभिमुख लगाये। पुनः छः आसन देवताओंके लिये इसी पंक्तिमें पश्चिमाभिमुख बिछाये।

देवताओंके आसनके सामने भोजनपात्रके रूपमें पलाशका पत्तल, भोजनपात्रके दक्षिण जलपात्र और अर्घपात्र तथा भोजनपात्रके सामने घृतपात्र रखे। जीवके लिये भी भोजनपात्रके पश्चिम जलपात्र तथा अर्घपात्र और भोजनपात्रके सामने घृतपात्र रखे।

जीवच्छ्राद्धकर्ताका आसन—इसके बाद जीवच्छ्राद्धकर्ता अपना बैठनेका आसन देवश्राद्धके लिये पूर्वाभिमुख तथा जीवश्राद्धके लिये दक्षिणाभिमुख लगाये।

रक्षादीप-प्रज्वालन—इस श्राद्धमें तीन दीपक तिल-तेलके जलेंगे। नौ देवताओंके लिये उनके आसनोंके पूर्व

दिशामें जौके ऊपर पूर्वाभिमुख दीपक जलाकर रख दें और जीवके लिये उसके आसनके दक्षिण तिलके ऊपर दक्षिणाभिमुख दीपक जलाकर रख दे। इसी प्रकार आगेके देवताओंके लिये उनके पूर्व जौके ऊपर पूर्वाभिमुख दीपक जलाकर रख दे। निम्न मन्त्रसे दीपकोंकी प्रार्थना करे—

भो दीप ब्रह्मरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत्। यावत् कर्मसमाप्तिः स्यात् तावत् त्वं सुस्थिरो भव॥

गदाधर आदिकी प्रार्थना—अंजलिमें फूल लेकर गयाधाम, गदाधर तथा पितरोंका स्मरणकर निम्न मन्त्रसे प्रार्थना करे—

श्राद्धारम्भे गयां ध्यात्वा ध्यात्वा देवं गदाधरम्। स्वपितॄन् मनसा ध्यात्वा ततः श्राद्धं समाचरेत्॥

ॐ गयायै नमः। ॐ गदाधराय नमः। कहकर फूल भूमिपर रख दे।

तदनन्तर तीन बार '**ॐ श्राद्धभूम्यै नमः**' कहकर भूमिपर जौ एवं पुष्प छोड़े।

भूमिसहित विष्णु-पूजन—श्राद्ध आरम्भ करनेके पूर्व विष्णुभगवान्का पूजन करनेका विधान है। अतः शालग्रामशिलापर षोडशोपचार अथवा पंचोपचारपूजन करना चाहिये। यदि सम्भव न हो तो निम्न श्लोकसे विष्णुभगवान्का स्मरण-पूजन करते हुए पुष्पांजलि समर्पितकर श्राद्ध आरम्भ करना चाहिये—

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्॥

ॐ भूमिपत्नीसहिताय विष्णवे नमः—कहकर भगवान् विष्णुको प्रणामकर पुष्प अर्पित करे।

कर्मपात्रका निर्माण—श्राद्धकर्ममें जलका उपयोग करनेके लिये कर्मपात्रका निर्माण कर ले। अक्षतोंके ऊपर जलसे भरा एक कलश रखकर उसमें चन्दन, तुलसी, जौ, पुष्प तथा कुश छोड़ दे और त्रिकुशसे जलको दक्षिणावर्त आलोडित करते हुए निम्न मन्त्रोंको पढ़े—

ॐ यद्देवा देवहेडनं देवासश्चकृमा वयम्। अग्निर्मा तस्मादेनसो विश्वान् मुञ्चत्वꣳहसः॥

ॐ यदि दिवा यदि नक्तमेनाꣳसि चकृमा वयम्। वायुर्मा तस्मादेनसो विश्वान् मुञ्चत्वꣳहसः॥

ॐ यदि जाग्रद्यदि स्वप्न एनाꣳसि चकृमा वयम्। सूर्यो मा तस्मादेनसो विश्वान् मुञ्चत्वꣳहसः॥

प्रोक्षण—कर्मपात्रके जलसे कुशद्वारा अपना तथा सभी श्राद्धसामग्री एवं पाकका प्रोक्षण करे और बोले—**'श्वादिदुष्टदृष्टिनिपातदूषितपाकादिकं पूतं भवतु।'**

दिग्-रक्षण—बायें हाथमें पीली सरसों लेकर दाहिने हाथसे ढककर निम्न मन्त्र बोले—

नमो नमस्ते गोविन्द पुराणपुरुषोत्तम। इदं श्राद्धं हृषीकेश रक्ष त्वं सर्वतो दिशः॥

तदनन्तर दाहिने हाथसे सरसोंको पूर्व-दक्षिण आदि दिशाओंमें निम्न मन्त्रोंको पढ़ते हुए छोड़े—पूर्वमें—**प्राच्यै नमः**। दक्षिणमें—**अवाच्यै नमः**। पश्चिममें—**प्रतीच्यै नमः**। उत्तरमें—**उदीच्यै नमः**। आकाशमें—**अन्तरिक्षाय नमः**। भूमिपर—**भूम्यै नमः**।

हाथ जोड़कर प्रार्थना करे—

पूर्वे नारायणः पातु वारिजाक्षस्तु दक्षिणे। प्रद्युम्नः पश्चिमे पातु वासुदेवस्तथोत्तरे।
ऊर्ध्वं गोवर्धनो रक्षेदधस्ताच्च त्रिविक्रमः॥

नीवीबन्धन *—किसी पत्र-पुटक या पानके पत्तेपर तिल, त्रिकुशका टुकड़ा लपेटकर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए दक्षिण कटिभागमें उसे खोंस ले, बाँध ले—

ॐ निहन्मि सर्वं यदमेध्यकृद् भवेद्धताश्च सर्वेऽसुरदानवा मया।
यक्षाश्च रक्षांसि पिशाचगुह्यका हता मया यातुधानाश्च सर्वे॥

ॐ सोमस्य नीविरसि विष्णोः शर्मासि शर्मयजमानस्येन्द्रस्य योनिरसि सुसस्याः कृषीस्कृधि।

प्रतिज्ञासंकल्प—दाहिने हाथमें त्रिकुश, जौ तथा जल लेकर निम्नलिखित वाक्य बोले—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः नमः परमात्मने पुरुषोत्तमाय ॐ तत्सत् अद्यैतस्य विष्णोराज्ञया जगत्सृष्टिकर्मणि प्रवर्तमानस्य ब्रह्मणो द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे तत्प्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे ....क्षेत्रे (यदि काशी हो तो **अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रे गौरीमुखे त्रिकण्टकविराजिते महाश्मशाने भगवत्या उत्तरवाहिन्या भागीरथ्या वामभागे) बौद्धावतारे ....संवत्सरे उत्तरायणे/दक्षिणायने ....ऋतौ ....मासे ....पक्षे ....तिथौ ....वासरे ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे मरणोत्तरभाविप्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वकविष्णुलोकाद्युत्तमलोकप्राप्त्यर्थं पितृपङ्क्तिप्रवेशाधिकारसिद्ध्यर्थं च विष्णवादितत्पुरुषान्तदेवानां जीवस्य च मध्यमषोडशश्राद्धानि करिष्ये।** हाथका जलादि भूमिपर छोड़ दे।

---

* पितॄणां दक्षिणे पार्श्वे विपरीता तु दैविके। इति स्मृत्यन्तरात्। (निर्णयसिन्धु तृतीय परिच्छेद उत्तरार्ध)

पितृगायत्रीका पाठ[१]—पितृगायत्रीका तीन बार पाठ करे—

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च। नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः॥

प्रथम नौ देवताओंके लिये आसनदानका संकल्प—देवताओंके लिये बिछाये गये आसनोंपर पूर्वाग्र तीन-तीन कुशोंको आसनके रूपमें रख दे। दाहिना घुटना जमीनमें लगाकर[२] हाथमें त्रिकुश, जौ, जल लेकर प्रथम नौ देवताओंको आसन-प्रदान करनेके लिये निम्न संकल्प पढ़े—

ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धे विष्णवादिपुरुषान्त-देवानामिमानि आसनानि विभज्य वो नमः।

—यह संकल्प पढ़कर हाथका जल, जौ आदि नौ आसनोंपर देवतीर्थसे छोड़ दे।

आवाहन[३]—देवताओंके नौ आसनोंपर इस मन्त्रसे जौ छोड़कर आवाहन करे—

---

१. (क) गायत्रीं प्रणवं चापि जप्त्वा श्राद्धमुपक्रमेत्। (प्रचेता)

(ख) देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च। नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव भवन्त्विति॥

आद्यावसाने श्राद्धस्य त्रिरावृत्त्या जपेत् सदा। पिण्डनिर्वपणे वाऽपि जपेदेवं समाहितः॥ (ब्रह्मपु० २२०।१४३-१४४)

'देवताभ्यः०' इस पितृगायत्रीमन्त्रका श्राद्धके प्रारम्भ, मध्य तथा अन्तमें जप करना चाहिये।

२. दक्षिणं पातयेज्जानुं देवान् परिचरन् सदा। पातयेदितरं जानुं पितॄन् परिचरन् सदा॥ (वीरमित्रोदय-श्राद्धप्रकाशमें कात्यायनका वचन)

३. आवाहयेदनुज्ञातो विश्वे देवास इत्यृचा॥ यवैरन्ववकीर्याथ भाजने सपवित्रके।

शन्नो देव्या पयः क्षिप्त्वा यवोऽसीति यवांस्तथा॥ (वीरमित्रोदय-श्रा०प्र०में याज्ञवल्क्यका वचन)

ॐ यवोऽसि यवयास्मद् द्वेषो यवयारातीः।

यहाँकी पवित्री उतारकर यहीं रख दे।

जीवके लिये आसनदानका संकल्प—जीवके सम्मुख अपने आसनपर बैठ जाय। यहाँकी पवित्री पहन ले। अपसव्य तथा दक्षिणाभिमुख होकर तथा बायाँ घुटना जमीनसे लगाकर जीवके आसनपर दक्षिणाग्र मोटकरूप आसन रख दे। फिर मोटक, तिल, जल लेकर निम्न संकल्प पढ़ते हुए पितृतीर्थसे आसनदान दे और तिल, जल आसनपर छोड़ दे—

ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धे जीवस्य इदमासनं ते स्वधा।

आवाहन—निम्न मन्त्रसे जीवके आसनपर तिल छोड़कर आवाहन करे—

ॐ अपहता असुरा रक्षाꣳसि वेदिषदः। यहाँकी पवित्री उतार दे।

ग्यारहवेंसे सोलहवेंतक छः देवताओंके लिये आसनदानका संकल्प—देवताओंके सम्मुख अपने आसनपर आ जाय। सव्य पूर्वाभिमुख होकर यहाँकी पवित्री पहन ले। छः आसनोंपर पूर्वाग्र तीन-तीन कुश रख दे। दाहिना घुटना जमीनपर लगाकर हाथमें त्रिकुश, जल, जौ लेकर निम्न संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धे विष्णवादितत्पुरुषान्त-देवानामिमानि आसनानि विभज्य वो नमः। संकल्पका जौ-जल देवतीर्थसे आसनोंपर छोड़ दे।

आवाहन—देवताओंके छः आसनोंपर निम्न मन्त्रसे जौ छोड़कर आवाहन करे—

ॐयवोऽसि यवयास्मद् द्वेषो यवयारातीः।

देवार्घपात्रका निर्माण—प्रथम नौ देवताओंके आसनके समीप अपने आसनपर बैठ जाय। सर्वप्रथम विष्णुवाले भोजनपात्रके दक्षिण दिशामें रखे हुए अर्घपात्रमें पवित्रक, जल, जौ आदि निम्न मन्त्रोंसे छोड़े—

(क) पवित्रक-प्रक्षेप—निम्न मन्त्रसे विष्णुवाले प्रथम अर्घपात्रमें पूर्वाग्र पवित्रक रखे—

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः।
तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्॥

(ख) जल-प्रक्षेप—निम्न मन्त्रसे विष्णुवाले प्रथम अर्घपात्रमें जल डाले—

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्रवन्तु नः॥

(ग) यव-प्रक्षेप—निम्न मन्त्रसे विष्णुवाले प्रथम अर्घपात्रमें जौ डाले—

ॐ यवोऽसि यवयास्मद् द्वेषो यवयारातीः।

(घ) चन्दन और पुष्प-प्रक्षेप—विष्णुवाले प्रथम अर्घपात्रमें चन्दन, पुष्प मौन होकर छोड़े।

देवार्घपात्रका अभिमन्त्रण—अर्घ देनेसे पहले अर्घपात्रको बायें हाथमें रखकर पवित्रकको दायें हाथसे निकालकर भोजनपात्रपर पूर्वाग्र रखे और उस पवित्रकपर जलपात्रसे एक आचमनी जल '**ॐ नमो नारायणाय**' कहकर छोड़ दे। अर्घपात्रको दाहिने हाथसे ढककर निम्न मन्त्र बोलकर अभिमन्त्रित करे—

ॐ या दिव्या आपः पयसा सम्बभूवुर्या आन्तरिक्षा उत पार्थवीर्याः।

हिरण्यवर्णा यज्ञियास्ता न आपः शिवाः शꣳ स्योनाः सुहवा भवन्तु॥

अर्घदान[1]—तदनन्तर अर्घपात्रको दाहिने हाथमें रख ले तथा त्रिकुश, जौ, जल लेकर नीचे लिखे संकल्पको पढ़कर अर्घदान करे—

१. विष्णु-अर्घदान—ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यम-षोडशश्राद्धविहितविष्णुश्राद्धे विष्णो एषोऽर्घस्ते नमः। ऐसा कहकर विष्णुके भोजनपात्रमें रखे हुए पवित्रकपर देवतीर्थसे जल गिरा दे। पवित्रकको पुनः अर्घपात्रमें पूर्वाग्र रख दे और अर्घपात्रको '**ॐ विष्णवे स्थानमसि**' कहकर देवके दाहिने अर्थात् देवासनके उत्तरमें ऊर्ध्वमुख[2] (सीधा) स्थापित कर दे।

इसी प्रक्रियासे निम्नलिखित सभी देवताओंके लिये अर्घपात्रोंका उपर्युक्त मन्त्रोंसे निर्माण करके पूर्वोक्त रीतिसे अभिमन्त्रण कर ले, तदनन्तर निम्न संकल्पोंद्वारा उन्हें अर्घ प्रदान करे और पवित्रक तथा अर्घपात्रको भी निर्दिष्ट स्थानपर रखे।

---

१. अर्घेऽक्षय्योदके चैव पिण्डदानेऽवनेजने। तन्त्रस्य तु निवृत्तिः स्यात् स्वधावाचन एव च॥ (कात्यायनस्मृति २४।१५, वीरमित्रोदय-श्राद्धप्रकाश)
अर्घदान, अक्षय्योदकदान, पिण्डदान, अवनेजनदान, प्रत्यवनेजनदान और स्वधावाचनमें एकतन्त्रकी विधि नहीं है।

२. विद्वान्को चाहिये कि अर्घप्रदानके बाद एकोद्दिष्टश्राद्धमें पात्रको उत्तान (सीधा) रखे और पार्वणश्राद्धमें उलटा (अधोमुख) रखे—
उत्तानं स्थापयेत् पात्रमेकोद्दिष्टे सदा बुधः। न्युब्जन्तु पार्वणे कुर्यात्०॥ (वीरमित्रोदय)

२. शिव-अर्घदान—ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मण:/वर्मण:/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडश-श्राद्धविहितशिवश्राद्धे शिव एषोऽर्घस्ते नम:।

३. यमराज-अर्घदान—ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मण:/वर्मण:/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गत-मध्यमषोडशश्राद्धविहितयमश्राद्धे यमराज एषोऽर्घस्ते नम:।

४. सोमराज-अर्घदान—ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मण:/वर्मण:/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गत-मध्यमषोडशश्राद्धविहितसोमराजश्राद्धे सोमराज एषोऽर्घस्ते नम:।

५. हव्यवाहन-अर्घदान—ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मण:/वर्मण:/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गत-मध्यमषोडशश्राद्धविहितहव्यवाहनश्राद्धे हव्यवाहन एषोऽर्घस्ते नम:।

६. कव्यवाहन-अर्घदान—ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मण:/वर्मण:/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गत-मध्यमषोडशश्राद्धविहितकव्यवाहनश्राद्धे कव्यवाहन एषोऽर्घस्ते नम:।

७. काल-अर्घदान—ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मण:/वर्मण:/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यम-षोडशश्राद्धविहितकालश्राद्धे काल एषोऽर्घस्ते नम:।

८. रुद्र-अर्घदान—ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मण:/वर्मण:/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडश-श्राद्धविहितरुद्रश्राद्धे रुद्र एषोऽर्घस्ते नम:।

९. पुरुष-अर्घदान—ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मण:/वर्मण:/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडश-श्राद्धविहितपुरुषश्राद्धे पुरुष एषोऽर्घस्ते नम:।

यहाँकी पवित्री यहीं छोड़ दे।

जीवके अर्घपात्रका निर्माण—जीवमण्डलमें अपने आसनपर बैठकर अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर यहाँकी पवित्री धारणकर बायाँ घुटना जमीनमें लगाकर जीवके अर्घपात्रमें निम्न मन्त्रसे दक्षिणाग्र पवित्रक रखे—

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः।
तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्॥

निम्न मन्त्रसे अर्घपात्रमें जल छोड़े—

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्त्रवन्तु नः॥

निम्न मन्त्रसे तिल छोड़े—

ॐ तिलोऽसि सोमदैवत्यो गोसवो देवनिर्मितः। प्रत्नमद्भिः पृक्तः स्वधया पितॄँल्लोकान् प्रीणाहि नः स्वाहा॥

इसके बाद मौन होकर चन्दन-पुष्प छोड़े।

जीवके अर्घपात्रका अभिमन्त्रण—अर्घपात्रको बायें हाथमें रखकर उसके पवित्रकको दाहिने हाथसे निकालकर भोजनपात्रमें उत्तराग्र रख दे और उस पवित्रकपर एक आचमनी जल '**ॐ नमो नारायणाय**' कहकर छोड़े। अर्घपात्रको दाहिने हाथसे ढककर निम्न मन्त्र बोलकर अभिमन्त्रित करे—

ॐ या दिव्या आपः पयसा सम्बभूवुर्या आन्तरिक्षा उत पार्थवीर्याः।
हिरण्यवर्णा यज्ञियास्ता न आपः शिवाः शꣳ स्योनाः सुहवा भवन्तु॥

१०. जीव-अर्घदान—तदनन्तर दाहिने हाथमें अर्घपात्र रखकर हाथमें मोटक, तिल, जल लेकर निम्न संकल्प बोले—

ॐ अद्य .....गोत्रस्य .....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धविहितजीवश्राद्धे जीव एषोऽर्घस्ते स्वधा।

इस तरह संकल्पकर भोजनपात्रपर रखे हुए पवित्रकपर अर्घका जल पितृतीर्थसे गिरा दे। फिर उस पवित्रकको उठाकर अर्घपात्रमें दक्षिणाग्र रख दे। इसके बाद इस अर्घपात्रको उठाकर जीवासनके बायें भाग (पश्चिम दिशा)-में '**जीवाय स्थानमसि**' कहकर सीधा रख दे। यहाँकी पवित्री यहीं छोड़ दे।

तदनन्तर देवमण्डलमें आकर आसनपर बैठ जाय। सव्य पूर्वाभिमुख होकर यहाँकी पवित्री धारण कर ले। शेष छहों देवार्घपात्रोंका पूर्वोक्त रीतिसे निर्माण तथा अभिमन्त्रणकर हाथमें त्रिकुश, जौ, जल तथा अर्घपात्र लेकर निम्न संकल्पवाक्योंको पढ़कर अर्घदान करे—

११. विष्णु-अर्घदान—ॐ अद्य .....गोत्रस्य .....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यम-षोडशश्राद्धविहितविष्णुश्राद्धे विष्णो एषोऽर्घस्ते नमः। बोलकर विष्णुभोजनपात्रमें रखे हुए पवित्रकपर देवतीर्थसे जल गिरा दे। पवित्रकको पूर्वाग्र अर्घपात्रमें रख दे तथा '**ॐ विष्णवे स्थानमसि**' कहकर अर्घपात्रको देवासनके उत्तरमें सीधा स्थापित कर दे। इसी प्रक्रियासे निम्न सभी देवताओंको अर्घ प्रदान करे और पवित्रकको देवार्घपात्रमें रखकर अर्घपात्रको देवासनके उत्तर में सीधा रख दे।

१२. ब्रह्मा-अर्घदान—ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडश-श्राद्धविहितब्रह्मश्राद्धे ब्रह्मन् एषोऽर्घस्ते नमः।

१३. विष्णु-अर्घदान—ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यम-षोडशश्राद्धविहितविष्णुश्राद्धे विष्णो एषोऽर्घस्ते नमः।

१४. शिव-अर्घदान—ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यम-षोडशश्राद्धविहितशिवश्राद्धे शिव एषोऽर्घस्ते नमः।

१५. यम-अर्घदान—ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यम-षोडशश्राद्धविहितयमश्राद्धे यम एषोऽर्घस्ते नमः।

१६. तत्पुरुष-अर्घदान—ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यम-षोडशश्राद्धविहिततत्पुरुषश्राद्धे तत्पुरुष एषोऽर्घस्ते नमः।

देवमण्डलकी पवित्री यहीं उतार दे।

आसनोंपर देवपूजन—नौ देवताओंके पूजनके लिये प्रथम देवमण्डलमें आकर सव्य-पूर्वाभिमुख हो आसनपर बैठ जाय, यहाँकी पवित्री पहन ले तथा निम्न मन्त्रोंद्वारा आसनोंपर देवोंका एक साथ ही विविध उपचारोंसे पूजन करे। यथा—

जीवच्छ्राद्धकर्ता बोले—'**इदमाचमनीयम्**', आचार्य बोले—(**स्वाचमनीयम्**) कहकर आचमनीय जल दे।

इदं स्नानीयम् (सुस्नानीयम्)—कहकर स्नानीय जल दे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं वस्त्रम् (सुवस्त्रम्)—कहकर वस्त्र या सूत्र चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इमे यज्ञोपवीते (सुयज्ञोपवीते)—कहकर यज्ञोपवीत चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदमुपवस्त्रम् (सुवस्त्रम्)—कहकर उपवस्त्र या सूत्र चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

एष गन्धः (सुगन्धः)—कहकर गन्ध अर्पित करे।

इमे यवाक्षताः (सुयवाक्षताः)—कहकर जौ चढ़ाये।

इदं माल्यम् (सुमाल्यम्)—कहकर माला चढ़ाये।

एष धूपः (सुधूपः)—कहकर धूप आघ्रापित करे।

एष दीपः (सुदीपः)—कहकर दीपक दिखाये और हाथ धो ले।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं नैवेद्यम् (सुनैवेद्यम्)—कहकर नैवेद्य अर्पित करे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं फलम् (सुफलम्)—कहकर फल समर्पित करे।

इदं ताम्बूलम् (सुताम्बूलम्)—कहकर ताम्बूल प्रदान करे।

एषा दक्षिणा (सुदक्षिणा)—कहकर दक्षिणा चढ़ाये।

प्रत्येक आसनपर संकल्प-जल छोड़ना—त्रिकुश, जौ, जल लेकर संकल्पकर नौ देवताओंके आसनोंपर संकल्पजल छोड़नेके लिये निम्न संकल्प एक बार बोले—

अर्चनदानका संकल्प—ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गत-मध्यमषोडशश्राद्धे विष्ण्वादिपुरुषान्तदेवा एतान्यर्चनानि युष्मभ्यं नमः। कहकर नौ देवताओंके आसनोंपर पृथक्-पृथक् देवतीर्थसे जल छोड़ दे और यहाँकी पवित्री छोड़ दे।

जीवमण्डलमें अपने आसनपर आकर यहाँकी पवित्री पहन ले। अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर पूर्वोक्त '**इदमाच-मनीयम्**' इत्यादि वाक्योंको पढ़कर जीवासनपर सभी पूजन-सामग्री चढ़ाये। **इमे यवाक्षताः (सुयवाक्षताः)**-के स्थानपर **इमे तिलाक्षताः (सुतिलाक्षताः)** कहकर तिल चढ़ाये। तदनन्तर मोटक, तिल, जल लेकर अर्चनदानका संकल्प करे—

जीवके लिये अर्चनदानका संकल्प—ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धे जीव एतान्यर्चनानि ते स्वधा।

ऐसा कहकर पितृतीर्थसे जल जीवासनपर छोड़ दे। यहाँकी पवित्री उतार दे।

पुनः दूसरे देवमण्डलमें जाकर वहाँकी पवित्री पहनकर सव्य पूर्वाभिमुख हो बैठ जाय और पूर्वोक्त रीतिसे '**इदमाचमनीयम्**' इत्यादि वाक्योंको पढ़कर सभी आसनोंपर सभी पूजन-सामग्री चढ़ाये और फिर हाथमें त्रिकुश, जौ, जल लेकर निम्न संकल्प एक बार बोलकर शेष छः देवासनोंपर जल छोड़ दे—

अर्चनदानका संकल्प—ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यम-षोडशश्राद्धे विष्ण्वादितत्पुरुषान्तदेवा एतान्यर्चनानि युष्मभ्यं नमः।

मण्डलकरण[1]—प्रथम नौ देवताओंके आसनसहित भोजनपात्रोंके चारों ओर पृथक्-पृथक् जलसे दक्षिणावर्त[2] चतुष्कोण (चौकोर) मण्डल निम्न मन्त्र पढ़ते हुए बनाये—

ॐ यथा चक्रायुधो विष्णुस्त्रैलोक्यं परिरक्षति। एवं मण्डलतोयं तु सर्वभूतानि रक्षतु॥

देवमण्डलकी पवित्री उतार दे। जीवमण्डलमें बैठकर यहाँकी पवित्री धारणकर अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर तथा बायाँ घुटना जमीनमें लगाकर जीवके आसनसहित भोजनपात्रके चारों ओर उपर्युक्त मन्त्र पढ़ते हुए वामावर्त गोल मण्डल बनाये। यहाँकी पवित्री उतार दे।

पुनः देवमण्डलमें बैठकर यहाँकी पवित्री धारणकर सव्य पूर्वाभिमुख होकर शेष छः देवताओंके आसनसहित

---

१. (क) दैवे चतुरस्रं पित्र्ये वर्तुलं मण्डलम्। (बह्वृचपरिशिष्ट)

बह्वृचपरिशिष्टमें बताया गया है कि देवताओंके लिये चतुष्कोण और जीव तथा पितरोंके लिये वृत्ताकार मण्डल बनाना चाहिये।

(ख) गन्धोदके तथा दीपमाल्यदामप्रदीपकम्। अपसव्यं ततः कृत्वा पितॄणामप्रदक्षिणम्॥ (ग०पु०, आ०काण्ड ९९।१३)

२. प्रदक्षिणं तु देवानां पितॄणामप्रदक्षिणम्। (वीरमित्रोदय-श्राद्धप्रकाशमें कात्यायनका वचन)

भोजनपात्रोंके चारों ओर पृथक्-पृथक् दक्षिणावर्त चतुष्कोण (चौकोर) मण्डल पूर्वोक्त मन्त्र पढ़ते हुए बनाये।

भूस्वामीके पितरोंको अन्नप्रदान—भूस्वामीके पितरोंको अन्न प्रदान करनेके लिये अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर किसी पात्रमें सब प्रकारके अन्न तथा साथमें जल, घृत, तिल लेकर—'**ॐ इदमन्नमेतद् भूस्वामिपितृभ्यो नमः**' बोलकर उस अन्नादिको दक्षिण दिशामें जलसे सिंचित भूमिपर कुशके ऊपर रख दे और जल गिरा दे।

अन्नपरिवेषण—सभी भोजनपात्रोंसे जौ एवं तिल हटा दे।* सव्य पूर्वाभिमुख होकर देवतीर्थसे नौ देवताओंके भोजनपात्रोंपर देवपाकसे अन्न परोसकर जलपात्रोंमें जल तथा घृतपात्रोंमें घृत रख दे। देवमण्डलकी पवित्री उतारकर जीवमण्डलमें आ जाय तथा यहाँकी पवित्री पहन ले। अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर जीवके लिये बने पाकसे जीवके भोजनपात्रपर पितृतीर्थसे अन्न परोसकर पात्रोंमें जल तथा घृत रख दे। जीवमण्डलकी पवित्री उतारकर देवमण्डलमें आ जाय, यहाँकी पवित्री पहन ले। सव्य होकर छः देवताओंके पात्रोंपर अन्नपरिवेषणकर दोनियोंमें जल तथा घृत रख दे।

मधु-प्रक्षेप—सव्यापसव्य होकर सभी देवभोजनपात्रों तथा जीवभोजनपात्रपर निम्न मन्त्र बोलते हुए दोनों हाथोंसे मधु डाले—

ॐ मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः॥ मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳ रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता॥ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ२ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥ ॐ मधु मधु मधु॥

---

* अन्नपात्रे तिलान् दृष्ट्वा निराशाः पितरो गताः॥

पात्रालम्भन[1]—उत्तान बायें हाथके ऊपर दाहिना हाथ उत्तान स्वस्तिकाकार रखकर विष्णुवाले प्रथम अन्नपात्रका स्पर्शकर निम्नलिखित मन्त्र बोले—

ॐ पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे अमृते अमृतं जुहोमि स्वाहा।
ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम्। समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा॥
ॐ कृष्ण हव्यमिदं रक्ष मदीयम्।

अन्नावगाहन[2]—बायें हाथको भोजनपात्रमें संकल्पपर्यन्त लगाये रखे और अनुत्तान दायें हाथके अँगूठेसे अन्न छूकर बोले—'**इदमन्नम्।**' जल छूकर बोले—'**इमा आपः।**' घी छूकर बोले—'**इदमाज्यम्।**' पुनः अन्न छूकर बोले—'**इदं हव्यम्।**'
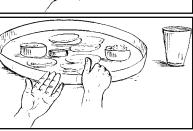
जौ बिखेरना—निम्न मन्त्र पढ़कर विष्णुके अन्नपर दाहिने हाथसे जौ

---

१. (क) दक्षिणं तु करं कृत्वा वामोपरि निधाय च। देवपात्रमथालभ्य पृथ्वी ते पात्रमुच्चरेत्॥
दक्षिणोपरि वामं च पित्र्यपात्रस्य लम्भनम्। पात्रालम्भनं कुर्याद् दत्त्वा चान्नं यथाविधिः॥ (श्राद्धकाशिकामें प०पु०का वचन)
(ख) पित्र्येऽनुत्तानपाणिभ्यामुत्तानाभ्यां च दैवते। (यम) एवमेव हेमाद्रिमदनरत्नप्रभृतयः।

२. उत्तानेन तु हस्तेन कुर्यादन्नावगाहनम्। आसुरं तद्भवेच्छ्राद्धं पितॄणां नोपतिष्ठते॥
उत्तान हाथके अँगूठेसे अन्नस्पर्श करनेपर वह श्राद्ध आसुरश्राद्ध हो जाता है और पितरोंको उपलब्ध नहीं होता। इसलिये अनुत्तान हाथके अँगूठेसे अन्न आदिका स्पर्श करना चाहिये।

छोड़े—**ॐ यवोऽसि यवयास्मद् द्वेषो यवयारातीः।**

हव्यदान-संकल्प—बायें हाथसे भोजनपात्रका स्पर्श किये हुए ही दायें हाथमें त्रिकुश, जल, जौ लेकर निम्नलिखित संकल्प करे—

१. ॐ अद्य ...गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धविहितविष्णुश्राद्धे विष्णवे इदमन्नं सोपस्करममृतस्वरूपं हव्यं स्वाहा सम्पद्यताम्, न मम। कहकर विष्णुके भोजनपात्रके पास संकल्प-जल छोड़ दे।

इसी प्रकार पृथक्-पृथक् आठ देवोंके भोजनपात्रोंका आलम्भन, अन्नावगाहन तथा अन्नपर जौ-विकिरण करे और हव्यदानका पृथक्-पृथक् संकल्प करे।

२. ॐ अद्य ...गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धविहितशिवश्राद्धे शिवाय इदमन्नं सोपस्करममृतस्वरूपं हव्यं स्वाहा सम्पद्यताम्, न मम। कहकर शिवके भोजनपात्रके पास संकल्प-जल छोड़ दे।

३. ॐ अद्य ...गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धविहितयमराजश्राद्धे यमराजाय इदमन्नं सोपस्करममृतस्वरूपं हव्यं स्वाहा सम्पद्यताम्, न मम। कहकर यमराजके भोजनपात्रके पास संकल्प-जल छोड़ दे।

४. ॐ अद्य ...गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धविहितसोमराजश्राद्धे

सोमराजाय इदमन्नं सोपस्करममृतस्वरूपं हव्यं स्वाहा सम्पद्यताम्, न मम। कहकर सोमराजके भोजनपात्रके पास संकल्प-जल छोड़ दे।

५. ॐ अद्य ....गोत्रस्य .....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धविहितहव्यवाहनश्राद्धे हव्यवाहनाय इदमन्नं सोपस्करममृतस्वरूपं हव्यं स्वाहा सम्पद्यताम्, न मम। कहकर हव्यवाहनके भोजनपात्रके पास संकल्प-जल छोड़ दे।

६. ॐ अद्य ....गोत्रस्य .....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धविहितकव्यवाहनश्राद्धे कव्यवाहनाय इदमन्नं सोपस्करममृतस्वरूपं हव्यं स्वाहा सम्पद्यताम्, न मम। कहकर कव्यवाहनके भोजनपात्रके पास संकल्प-जल छोड़ दे।

७. ॐ अद्य ....गोत्रस्य .....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धविहितकालश्राद्धे कालाय इदमन्नं सोपस्करममृतस्वरूपं हव्यं स्वाहा सम्पद्यताम्, न मम। कहकर कालके भोजनपात्रके पास संकल्प-जल छोड़ दे।

८. ॐ अद्य ....गोत्रस्य .....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धविहितपुरुषश्राद्धे रुद्राय इदमन्नं सोपस्करममृतस्वरूपं हव्यं स्वाहा सम्पद्यताम्, न मम। कहकर रुद्रके भोजनपात्रके पास संकल्प-जल छोड़ दे।

९. ॐ अद्य ....गोत्रस्य .....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धविहितरुद्रश्राद्धे

पुरुषाय इदमन्नं सोपस्करममृतस्वरूपं हव्यं स्वाहा सम्पद्यताम्, न मम। कहकर पुरुषके भोजनपात्रके पास संकल्प-जल छोड़ दे।

यहाँकी पवित्री तथा त्रिकुश यहीं छोड़ दे।

जीवमण्डलमें जाकर यहाँकी पवित्री पहन ले। अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर पात्रालम्भन करे—

पात्रालम्भन—अनुत्तान दक्षिण हाथके ऊपर अनुत्तान (उलटे) बायें हाथको स्वस्तिकाकार रखकर जीवके अन्नपात्रको स्पर्श करते हुए निम्न मन्त्र बोले—

ॐ पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे अमृते अमृतं जुहोमि स्वाहा। ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम्। समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा॥

ॐ कृष्ण कव्यमिदं रक्ष मदीयम्।

अन्नावगाहन—बायें हाथसे भोजनपात्रका स्पर्श किये हुए ही दाहिने हाथका अँगूठा अन्नादिमें रखकर बोले—

अन्नमें—**इदमन्नम्।** जलमें—**इमा आपः।** घीमें—**इदमाज्यम्।** पुनः अन्न छूकर बोले—**इदं कव्यम्।**

तिलविकिरण—जीवके भोजनपात्रमें अन्नके ऊपर निम्न मन्त्रसे तिल छोड़ दे—

'ॐ अपहता असुरा रक्षा꣡ꣳसि वेदिषदः॥'
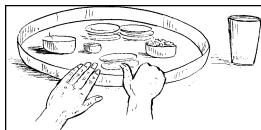
तदनन्तर मोटक, तिल, जल लेकर निम्न संकल्प करे—

१०. कव्यदान-संकल्प—ॐ अद्य .....गोत्रस्य .....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गत-मध्यमषोडशश्राद्धविहितजीवश्राद्धे जीवाय इदमन्नं सोपस्करममृतस्वरूपं कव्यं ते स्वधा।* कहकर पितृतीर्थसे संकल्पजल छोड़ दे। यहाँकी पवित्री उतार दे।

हव्यदान-संकल्प—आगेके देवमण्डलमें आकर सव्य पूर्वाभिमुख हो जाय, यहाँकी पवित्री धारण कर ले। पूर्ववत् देवरीतिसे पृथक्-पृथक् सभी देवताओंका पात्रालम्भन, अन्नावगाहन तथा अन्नपर जौ विकिरण करके पृथक्-पृथक् हव्यदानका संकल्प निम्न रीतिसे करे—

११. ॐ अद्य .....गोत्रस्य .....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धविहितविष्णुश्राद्धे विष्णवे इदमन्नं सोपस्करममृतस्वरूपं हव्यं स्वाहा सम्पद्यताम्, न मम। कहकर देवतीर्थसे भोजनपात्रके पास संकल्पजल छोड़ दे।

---

* जीवच्छ्राद्धे सर्वत्र प्रेतशब्दोच्चारणं नास्तीति मयूखकौस्तुभोद्योतकृदादिभिरुक्तत्वात्प्रेतशब्दोच्चारणाभावेन स्वधा शब्दोच्चारणं भवत्येवेति। (श्राद्धपद्धति पृ० ४११)

१२. ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धविहितब्रह्मश्राद्धे ब्रह्मणे इदमन्नं सोपस्करममृतस्वरूपं हव्यं स्वाहा सम्पद्यताम्, न मम। कहकर देवतीर्थसे भोजनपात्रके पास संकल्पजल छोड़ दे।

१३. ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धविहितविष्णुश्राद्धे विष्णवे इदमन्नं सोपस्करममृतस्वरूपं हव्यं स्वाहा सम्पद्यताम्, न मम। कहकर देवतीर्थसे भोजनपात्रके पास संकल्पजल छोड़ दे।

१४. ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धविहितशिवश्राद्धे शिवाय इदमन्नं सोपस्करममृतस्वरूपं हव्यं स्वाहा सम्पद्यताम्, न मम। कहकर देवतीर्थसे भोजनपात्रके पास संकल्पजल छोड़ दे।

१५. ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धविहितयमश्राद्धे यमाय इदमन्नं सोपस्करममृतस्वरूपं हव्यं स्वाहा सम्पद्यताम्, न मम। कहकर देवतीर्थसे भोजनपात्रके पास संकल्पजल छोड़ दे।

१६. ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धविहिततत्पुरुषश्राद्धे तत्पुरुषाय इदमन्नं सोपस्करममृतस्वरूपं हव्यं स्वाहा सम्पद्यताम्, न मम। कहकर देवतीर्थसे भोजनपात्रके पास संकल्पजल छोड़ दे।

प्रार्थना—हाथ जोड़कर प्रार्थना करे—

ॐ अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद् भवेत् । अच्छिद्रमस्तु तत्सर्वं पित्रादीनां प्रसादतः ॥

पितृगायत्रीका जप—निम्न पितृगायत्रीका तीन बार जप करे—

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च । नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः ॥

वेदशास्त्रादिका पाठ—इस अवसरपर यथासम्भव श्रुति, स्मृति, पुराण और इतिहासका पाठ करे, इससे पितरोंको प्रसन्नता होती है। पैरोंके नीचे पूर्वाग्र तीन कुश रख ले।

श्रुतिपाठ—**ॐ अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्॥**

ॐ इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्व मघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा व स्तेन ईशत माघशꣳसो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि॥

ॐ अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये। नि होता सत्सि बर्हिषि॥

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्त्रवन्तु नः॥

स्मृतिपाठ—**मनुमेकाग्रमासीनमभिगम्य महर्षयः। प्रतिपूज्य यथान्यायमिदं वचनमब्रुवन्॥**

योगीश्वरं याज्ञवल्क्यं सम्पूज्य मुनयोऽब्रुवन्। वर्णाश्रमेतराणां नो ब्रूहि धर्मानशेषतः॥

मन्वत्रिविष्णुहारीतयाज्ञवल्क्योशनोऽङ्गिराः । यमापस्तम्बसंवर्ताः कात्यायनबृहस्पती॥

पराशरव्यासशङ्खलिखिता दक्षगौतमौ। शातातपोवसिष्ठश्च धर्मशास्त्रप्रयोजकाः॥

पुराण— नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्। देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत्॥

सप्त व्याधा दशार्णेषु मृगाः कालञ्जरे गिरौ॥

चक्रवाकाः शरद्वीपे हंसाः सरसि मानसे॥

तेऽभिजाताः कुरुक्षेत्रे ब्राह्मणा वेदपारगाः। प्रस्थिता दीर्घमध्वानं यूयं किमवसीदथ॥

महाभारत— दुर्योधनो मन्युमयो महाद्रुमः स्कन्धः कर्णः शकुनिस्तस्य शाखाः।

दुःशासनः पुष्पफले समृद्धे मूलं राजा धृतराष्ट्रोऽमनीषी॥

युधिष्ठिरो धर्ममयो महाद्रुमः स्कन्धोऽर्जुनो भीमसेनोऽस्य शाखाः।

माद्रीसुतौ पुष्पफले समृद्धे मूलं कृष्णो ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च॥

विकिरदान—अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर दक्षिण दिशाकी भूमिको जलसे सींच दे। उसपर कुश बिछा दे। पिण्डदानके लिये निर्मित सामग्रीमेंसे किंचित् सामग्री लेकर उसमें तिल मिलाकर दाहिने हाथमें ले ले तथा त्रिकुश, तिल, जल साथ लेकर सिंचित भूमिपर कुशोंके ऊपर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए उसे पितृतीर्थसे रख दे—

अग्निदग्धाश्च ये जीवा येऽप्यदग्धाः कुले मम। भूमौ दत्तेन तृप्यन्तु तृप्ता यान्तु परां गतिम्॥

असंस्कृतप्रमीतानां त्यागिनां कुलभागिनाम्। उच्छिष्टभागधेयानां दर्भेषु विकिरासनम्॥

तदनन्तर पहिनी हुई पवित्री, त्रिकुश आदिका वहीं परित्याग कर दे। हाथ-पाँव धो ले। अपने आसनपर आ जाय। सव्य पूर्वाभिमुख होकर आचमन कर ले, नयी पवित्री धारण कर ले। श्रीहरिका स्मरणकर पिण्डदानके लिये वेदियोंका

निर्माण करे।

वेदीनिर्माण—भोजनपात्रोंके आगे पश्चिमसे पूर्वकी ओर प्रादेशमात्र लम्बी तथा उत्तर-दक्षिण छः अंगुल चौड़ी नौ वेदियाँ बनाये और अपसव्य होकर जीवके भोजनपात्रके आगे उत्तरसे दक्षिण प्रादेशमात्र लम्बी तथा पश्चिम-पूर्व छः अंगुल चौड़ी एक वेदी बनाये। पुनः सव्य होकर छः देववेदियाँ पूर्ववत् देवरीतिसे बनाये।

अवनेजनपात्र-स्थापन—नौ देववेदियोंकी दक्षिण दिशामें एक-एक अवनेजनपात्र (दोनिये या हाथके बने हुए मिट्टीके दीये) रखे, जीववेदीके पश्चिममें एक अवनेजनपात्र रखे। पुनः छः देववेदियोंकी दक्षिणदिशामें एक-एक अवनेजनपात्र रखे। ये ही अवनेजनपात्र बादमें प्रत्यवनेजनपात्र भी कहलाते हैं।

प्रोक्षण—निम्न मन्त्र पढ़ते हुए पहले नौ वेदियोंको सव्यसे तथा जीववेदीको अपसव्य होकर और पुनः सव्य होकर छः देववेदियोंको जलसे सींचकर प्रोक्षित कर ले—

ॐ अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची ह्यवन्तिका। पुरी द्वारावती ज्ञेयाः सप्तैता मोक्षदायिकाः॥

रेखाकरण—बायें हाथके अंगुष्ठ तथा तर्जनीसे तीन समूल कुशोंके अग्रभागको और दाहिने हाथके अंगुष्ठ तथा तर्जनीसे कुशोंके मूल भागको पकड़कर नौ देववेदियोंपर **ॐ अपहता असुरा रक्षाꣳसि वेदिषदः**—इस मन्त्रसे पश्चिमसे पूर्वकी ओर एक-एक रेखा खींचे। उन कुशोंको ईशान दिशामें फेंक दे। यहाँकी पवित्री छोड़ दे।

जीवासनके पास आकर अपसव्य दक्षिणामुख होकर बैठ जाय। यहाँकी पवित्री पहन ले। पूर्वकी भाँति दसवीं

जीववेदीपर त्रिकुशमूलसे उत्तरसे दक्षिणकी ओर **ॐ अपहता असुरा रक्षाꣳसि वेदिषदः**—इस मन्त्रसे एक रेखा खींचकर कुशोंको ईशानकी ओर फेंक दे। यहाँकी पवित्री यहीं उतार दे।

तदनन्तर छः देवताओंवाले मण्डलमें आ जाय, सव्य-पूर्वाभिमुख होकर आसनपर बैठ जाय। यहाँकी पवित्री धारण कर ले। पूर्व देवरीतिसे सभी वेदियोंपर पश्चिमसे पूर्वकी ओर त्रिकुशमूलसे **ॐ अपहता असुरा रक्षाꣳसि वेदिषदः**—इस मन्त्रसे एक-एक रेखा खींचे। उन कुशोंको ईशान दिशामें फेंक दे।

उल्मुकस्थापन—नौ देववेदियोंके प्रत्येकके चारों ओर दायीं ओरसे प्रदक्षिणक्रमसे अंगारको निम्न मन्त्रसे घुमाये—

ॐ ये रूपाणि प्रतिमुञ्चमाना असुराः सन्तः स्वधया चरन्ति। परापुरो निपुरो ये भरन्त्यग्निष्टाँल्लोकात्प्रणुदात्यस्मात्॥

—और उस अंगारको प्रथम विष्णुवेदीके दक्षिण*की ओर श्राद्धपर्यन्त स्थापित कर दे। यहाँकी पवित्री उतार दे। पुनः जीवासनके सामने अपने आसनपर स्थित हो जाय और अपसव्य दक्षिणामुख होकर वेदीके चारों ओर वामावर्त (बायीं ओरसे) अंगार घुमाकर पिण्डवेदीके दक्षिण रख दे। यहाँकी पवित्री उतार दे। पुनः शेष देवताओंके मण्डलमें जाकर सव्य

---

* उल्लेखनानन्तरं पश्चादुल्मुकनिधानमाह कात्यायनः—उल्मुकं परस्तात् करोति ये रूपाणीति रेखायाः परस्ताद्दक्षिणप्रदेशे उल्मुकं निदधातीत्यर्थः। स्कन्दपुराणेऽपि ये रूपाणीति मन्त्रेण न्यसेदुल्मुकमन्तिके। अन्तिके दक्षिणाशायामित्यर्थः। (गौडीयश्राद्धप्रकाश पृ० ३०)
अंगारको घुमानेके अनन्तर पिण्डवेदीके दक्षिणदिशामें स्थापित करना चाहिये।

पूर्वाभिमुख होकर वहाँकी पवित्री पहन ले और पूर्वोक्त रीतिसे सभी वेदियोंके चारों ओर अंगारको घुमाये तथा ग्यारहवें विष्णुवेदीके दक्षिण रख दे।

वेदियोंपर कुश रखना—सव्य पूर्वाभिमुख रहकर ही पहले नौ देववेदियोंके मध्यमें खींची गयी रेखापर तीन कुशोंको एक साथ जड़सहित दो भागोंमें विभक्तकर पृथक्-पृथक् पूर्वाग्र रख दे, यहाँकी पवित्री उतार दे तथा जीवमण्डलकी पवित्री पहन ले। दसवीं जीववाली वेदीपर अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर तीन कुशोंको जड़सहित दो भागोंमें विभक्तकर दक्षिणाग्र रखे। पवित्री उतारकर नयी पवित्री पहन ले। पुनः सव्य पूर्वाभिमुख होकर आगेकी शेष छः देववेदियोंपर तीन कुशोंको दो भागोंमें विभक्तकर पृथक्-पृथक् पूर्वाग्र रखे।

अवनेजनपात्रनिर्माण—पूर्व स्थापित नौ देव-अवनेजनपात्रोंमें जल, जौ, गन्ध, पुष्प डाल दे। यहाँकी पवित्री उतार दे। जीवमण्डलकी पवित्री धारणकर जीव-अवनेजनपात्रमें अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर जल, तिल, गन्ध, पुष्प डाल दे, पवित्री उतार दे। पुनः आगेके देवमण्डलकी पवित्री पहनकर सव्य पूर्वाभिमुख होकर शेष छः अवनेजनपात्रोंमें जल, जौ, गन्ध, पुष्प डाले। प्रथम देवमण्डलमें आकर दायें हाथमें पहला अवनेजनपात्र (दोनिया अथवा दीया) तथा त्रिकुश, जल, जौ लेकर दाहिने पैरका घुटना जमीनमें सटाकर अवनेजनका निम्न संकल्प करे—

अवनेजनदानका संकल्प—१. ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गत-मध्यमषोडशश्राद्धविहितविष्णुश्राद्धे विष्णो पिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः। कहकर वेदीपर खींची गयी रेखापर

स्थापित कुशपर देवतीर्थसे आधा जल छोड़े और अवनेजनपात्रको वेदीके दक्षिणमें यथास्थान रखे।

२. ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धविहितशिवश्राद्धे शिव पिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः। कहकर वेदीपर खींची गयी रेखापर स्थापित कुशपर देवतीर्थसे आधा जल छोड़े और अवनेजनपात्रको वेदीके दक्षिणमें यथास्थान रखे।

३. ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धविहितयमश्राद्धे यमराज पिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः। कहकर वेदीपर खींची गयी रेखापर स्थापित कुशपर देवतीर्थसे आधा जल छोड़े और अवनेजनपात्रको वेदीके दक्षिणमें यथास्थान रखे।

४. ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धविहितसोमश्राद्धे सोमराज पिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः। कहकर वेदीपर खींची गयी रेखापर स्थापित कुशपर देवतीर्थसे आधा जल छोड़े और अवनेजनपात्रको वेदीके दक्षिणमें यथास्थान रखे।

५. ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धविहितहव्यवाहनश्राद्धे हव्यवाहन पिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः। कहकर वेदीपर खींची गयी रेखापर स्थापित कुशपर देवतीर्थसे आधा जल छोड़े और अवनेजनपात्रको वेदीके दक्षिणमें यथास्थान रखे।

६. ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धविहितकव्यवाहनश्राद्धे

कव्यवाहन पिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः। कहकर वेदीपर खींची गयी रेखापर स्थापित कुशपर देवतीर्थसे आधा जल छोड़े और अवनेजनपात्रको वेदीके दक्षिणमें यथास्थान रखे।

७. ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धविहितकालश्राद्धे काल पिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः। कहकर वेदीपर खींची गयी रेखापर स्थापित कुशपर देवतीर्थसे आधा जल छोड़े और अवनेजनपात्रको वेदीके दक्षिणमें यथास्थान रखे।

८. ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धविहितरुद्रश्राद्धे रुद्र पिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः। कहकर वेदीपर खींची गयी रेखापर स्थापित कुशपर देवतीर्थसे आधा जल छोड़े और अवनेजनपात्रको वेदीके दक्षिणमें यथास्थान रखे।

९. ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धविहितपुरुषश्राद्धे पुरुष पिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः। कहकर वेदीपर खींची गयी रेखापर स्थापित कुशपर देवतीर्थसे आधा जल छोड़े और अवनेजनपात्रको वेदीके दक्षिणमें यथास्थान रखे। देवमण्डलकी पवित्री उतार दे।

१०. जीवमण्डलमें आकर यहाँकी पवित्री धारणकर अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर बायाँ घुटना जमीनमें लगाकर मोटक, तिल, जल, तथा अवनेजनपात्र लेकर निम्न संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धविहितजीवश्राद्धे जीव पिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते स्वधा। कहकर पितृतीर्थसे अवनेजनपात्रका आधा जल वेदीके मध्य स्थापित कुशपर

गिराकर अवनेजनपात्र वेदीके पश्चिमकी ओर सीधा रख दे। यहाँकी पवित्री उतार दे।

आगेके देवमण्डलमें आकर यहाँकी पवित्री धारणकर सव्य पूर्वाभिमुख होकर दाहिना घुटना जमीनमें लगाकर त्रिकुश, जल, जौ लेकर ग्यारहवेंसे सोलहवेंतककी अवनेजनदान-क्रिया पूर्वदेवोंकी भाँति सम्पन्न करे—

११. ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धविहितविष्णुश्राद्धे विष्णो पिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः। कहकर वेदीपर खींची गयी रेखापर स्थापित कुशपर देवतीर्थसे आधा जल छोड़े और अवनेजनपात्रको वेदीके दक्षिणमें यथास्थान रखे।

१२. ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धविहितब्रह्मश्राद्धे ब्रह्मन् पिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः। कहकर वेदीपर खींची गयी रेखापर स्थापित कुशपर देवतीर्थसे आधा जल छोड़े और अवनेजनपात्रको वेदीके दक्षिणमें यथास्थान रखे।

१३. ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धविहितविष्णुश्राद्धे विष्णो पिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः। कहकर वेदीपर खींची गयी रेखापर स्थापित कुशपर देवतीर्थसे आधा जल छोड़े और अवनेजनपात्रको वेदीके दक्षिणमें यथास्थान रखे।

१४. ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धविहितशिवश्राद्धे शिव पिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः। कहकर वेदीपर खींची गयी रेखापर स्थापित कुशपर देवतीर्थसे आधा जल छोड़े और अवनेजनपात्रको वेदीके दक्षिणमें यथास्थान रखे।

१५. ॐ अद्य ……गोत्रस्य ……जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धविहितयमश्राद्धे यम पिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः। कहकर वेदीपर खींची गयी रेखापर स्थापित कुशपर देवतीर्थसे आधा जल छोड़े और अवनेजनपात्रको वेदीके दक्षिणमें यथास्थान रखे।

१६. ॐ अद्य ……गोत्रस्य ……जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धविहिततत्पुरुषश्राद्धे तत्पुरुष पिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः। कहकर वेदीपर खींची गयी रेखापर स्थापित कुशपर देवतीर्थसे आधा जल छोड़े और अवनेजनपात्रको वेदीके दक्षिणमें यथास्थान रखे।

पिण्डनिर्माण—पिण्डान्नमें शर्करा, मधु, घृत, जौ मिलाकर पन्द्रह पिण्ड बना ले। जीवके लिये पकायी गयी खीरमेंसे एक पिण्ड जीवके लिये भी बना ले। जीववाले पिण्डमें शर्करा, मधु, घृत तथा तिल मिला लेना चाहिये।

पिण्डदान—सव्य और पूर्वाभिमुख होकर दाहिना घुटना जमीनमें लगाकर जौ, जल, त्रिकुश और एक-एक पिण्ड दायें हाथमें लेकर निम्न संकल्पके साथ पहले नौ देववेदियोंके मध्यमें स्थित कुशोंपर अवनेजनस्थानपर देवतीर्थसे पिण्ड रखता जाय—

१. ॐ अद्य ……गोत्रस्य ……जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धविहितविष्णुश्राद्धे विष्णो एष पिण्डस्ते नमः।

२. ॐ अद्य ……गोत्रस्य ……जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धविहितशिवश्राद्धे शिव एष पिण्डस्ते नमः।

३. ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धविहितयमश्राद्धे यम एष पिण्डस्ते नमः।

४. ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धविहितसोमश्राद्धे सोमराज एष पिण्डस्ते नमः।

५. ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धविहितहव्यवाहनश्राद्धे हव्यवाहन एष पिण्डस्ते नमः।

६. ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धविहितकव्यवाहनश्राद्धे कव्यवाहन एष पिण्डस्ते नमः।

७. ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धविहितकालश्राद्धे काल एष पिण्डस्ते नमः।

८. ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धविहितरुद्रश्राद्धे रुद्र एष पिण्डस्ते नमः।

९. ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धविहितपुरुषश्राद्धे पुरुष एष पिण्डस्ते नमः।

कुशोंके मूलपर हाथ पोंछना—तदनन्तर पिण्डोंके नीचे बिछे हुए पिण्डाधार कुशोंके मूलमें पृथक्-पृथक्

हाथ पोंछ ले। यहाँकी पवित्री यहाँ उतार दे।

जीवमण्डलमें जाकर पवित्री पहनकर अपसव्य दक्षिणाभिमुख हो बायाँ घुटना जमीनमें लगाकर हाथमें मोटक, तिल, जल और तिल मिलाया हुआ पिण्ड लेकर निम्न संकल्प करे—

१०. ॐ अद्य ……गोत्रस्य ……जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धविहितजीवश्राद्धे जीव एष पिण्डस्ते स्वधा—कहकर पिण्ड बायें हाथकी सहायतासे पितृतीर्थसे जीववेदीके मध्य कुशोंपर अवनेजनस्थानपर सँभालकर रख दे।

तदनन्तर पिण्डोंके नीचे बिछे हुए कुशोंमें हाथ पोंछ ले। यहाँकी पवित्री यहीं उतार दे।

आगेके देवमण्डलमें आकर वहाँकी पवित्री धारणकर पुनः सव्य पूर्वाभिमुख होकर दाहिना घुटना जमीनमें सटाकर त्रिकुश, जौ, जल तथा एक-एक पिण्ड दायें हाथमें लेकर निम्न संकल्प करके वेदीपर रखे कुशोंके मध्यमें अवनेजनस्थानपर बायें हाथकी सहायतासे देवतीर्थसे पिण्ड रखता जाय—

११. ॐ अद्य ……गोत्रस्य ……जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धविहितविष्णुश्राद्धे विष्णो एष पिण्डस्ते नमः।

१२. ॐ अद्य ……गोत्रस्य ……जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धविहितब्रह्मश्राद्धे ब्रह्मन् एष पिण्डस्ते नमः।

१३. ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धविहितविष्णुश्राद्धे विष्णो एष पिण्डस्ते नमः।

१४. ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धविहितशिवश्राद्धे शिव एष पिण्डस्ते नमः।

१५. ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धविहितयमश्राद्धे यम एष पिण्डस्ते नमः।

१६. ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धविहिततत्पुरुषश्राद्धे तत्पुरुष एष पिण्डस्ते नमः।

कुशोंके मूलपर हाथ पोंछना—तदनन्तर पिण्डोंके नीचे बिछे हुए कुशोंके मूलपर पृथक्-पृथक् हाथ पोंछ ले। आचमन कर ले, भगवान्‌का ध्यान कर ले।

प्रत्यवनेजनदानका संकल्प—त्रिकुश, जौ, जल तथा सजल प्रत्यवनेजनपात्र (पात्रमें जल न हो तो छोड़ ले) हाथमें लेकर प्रत्यवनेजनदानका संकल्पकर पिण्डोंपर सम्पूर्ण जल देवतीर्थसे छोड़कर पात्र पूर्ववत् रख दे—

१. ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धविहितविष्णुश्राद्धे विष्णो पिण्डोपरि प्रत्यवनेनिक्ष्व ते नमः।

२. ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धविहितशिवश्राद्धे शिव पिण्डोपरि प्रत्यवनेनिक्ष्व ते नमः।

३. ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धविहितयमश्राद्धे यम पिण्डोपरि प्रत्यवनेनिक्ष्व ते नमः।

४. ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धविहितसोमश्राद्धे सोमराज पिण्डोपरि प्रत्यवनेनिक्ष्व ते नमः।

५. ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धविहितहव्यवाहनश्राद्धे हव्यवाहन पिण्डोपरि प्रत्यवनेनिक्ष्व ते नमः।

६. ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धविहितकव्यवाहनश्राद्धे कव्यवाहन पिण्डोपरि प्रत्यवनेनिक्ष्व ते नमः।

७. ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धविहितकालश्राद्धे काल पिण्डोपरि प्रत्यवनेनिक्ष्व ते नमः।

८. ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धविहितरुद्रश्राद्धे रुद्र पिण्डोपरि प्रत्यवनेनिक्ष्व ते नमः।

९. ॐ अद्य ""गोत्रस्य ""जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धविहितपुरुषश्राद्धे पुरुष पिण्डोपरि प्रत्यवनेनिक्ष्व ते नमः। यहाँकी पवित्री उतार दे।

जीवमण्डलमें जाकर वहाँकी पवित्री पहनकर अपसव्य दक्षिणाभिमुख हो बायाँ घुटना जमीनमें लगाकर मोटक, तिल, जल तथा सजल प्रत्यवनेजनपात्र लेकर निम्न संकल्प बोले—

१०. ॐ अद्य ""गोत्रस्य ""जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धविहितजीवश्राद्धे जीवपिण्डोपरि प्रत्यवनेनिक्ष्व ते स्वधा।

—ऐसा कहकर पितृतीर्थसे प्रत्यवनेजनजल पिण्डपर गिराकर पात्रको पूर्ववत् रख दे। पवित्री उतार दे।

पुनः आगेके देवमण्डलमें आकर यहाँकी पवित्री पहनकर सव्य पूर्वाभिमुख होकर त्रिकुश, जल, जौ तथा प्रत्यवनेजनपात्र लेकर निम्न संकल्पके साथ शेष छः देवपिण्डोंपर देवतीर्थसे प्रत्यवनेजनजल गिराये।

११. ॐ अद्य ""गोत्रस्य ""जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धविहितविष्णुश्राद्धे विष्णो पिण्डोपरि प्रत्यवनेनिक्ष्व ते नमः।

१२. ॐ अद्य ""गोत्रस्य ""जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धविहितब्रह्मश्राद्धे ब्रह्मन् पिण्डोपरि प्रत्यवनेनिक्ष्व ते नमः।

१३. ॐ अद्य ""गोत्रस्य ""जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धविहितविष्णुश्राद्धे

विष्णो पिण्डोपरि प्रत्यवनेनिक्ष्व ते नमः।

१४. ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धविहितशिवश्राद्धे शिव पिण्डोपरि प्रत्यवनेनिक्ष्व ते नमः।

१५. ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धविहितयमश्राद्धे यम पिण्डोपरि प्रत्यवनेनिक्ष्व ते नमः।

१६. ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धविहिततत्पुरुषश्राद्धे तत्पुरुष पिण्डोपरि प्रत्यवनेनिक्ष्व ते नमः।

नीवीविसर्जन—नीवीको खोलकर उसे उत्तरकी ओर फेंक दे, आचमन करे तथा भगवान्‌का स्मरण करे।

पिण्डपूजन—सव्यापसव्यसे निम्न रीतिसे विविध उपचारोंद्वारा देवताओं तथा जीवके पिण्डोंका पृथक्-पृथक् पूजन करे तथा तीन-तीन कच्चे सूतोंको पिण्डपर वस्त्रके निमित्त चढ़ाये। यथा—

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)*—कहकर पिण्डोंपर आचमनीय जल दे।

इदं स्नानीयम् (सुस्नानीयम्)—कहकर पिण्डोंपर स्नानीय जल दे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर पिण्डोंपर आचमनीय जल दे।

* ‘**इदमाचमनीयम्**’ जीवच्छ्राद्धकर्ता बोले तथा कोष्ठमें लिखा ‘**स्वाचमनीयम्**’ कर्म करानेवाले ब्राह्मण बोलें।

इदं वस्त्रम् (सुवस्त्रम्)—कहकर सूत्र चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इमे यज्ञोपवीते (सुयज्ञोपवीते)—कहकर यज्ञोपवीत चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदमुपवस्त्रम् (सुवस्त्रम्)—कहकर उपवस्त्र या सूत्र चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

एष गन्धः (सुगन्धः)—कहकर गन्ध अर्पित करे।

इमे यवाक्षताः (सुयवाक्षताः)—कहकर जौ चढ़ाये, जीवके पिण्डपर **इमे तिलाक्षताः (सुतिलाक्षताः)**—कहकर तिल चढ़ाये।

इदं माल्यम् (सुमाल्यम्)—कहकर माला चढ़ाये।

एष धूपः (सुधूपः)—कहकर धूप आघ्रापित करे।

एष दीपः (सुदीपः)—कहकर दीपक दिखाये और हाथ धो ले।

इदं नैवेद्यम् (सुनैवेद्यम्)—कहकर नैवेद्य अर्पित करे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर पिण्डोंपर आचमनीय जल दे।

इदं फलम् (सुफलम्)—कहकर फल समर्पित करे।

इदं ताम्बूलम् (सुताम्बूलम्)—कहकर ताम्बूल प्रदान करे।

एषा दक्षिणा (सुदक्षिणा)—कहकर दक्षिणा चढ़ाये।

पिण्डार्चनदानका संकल्प—दायें हाथमें त्रिकुश, जौ, जल लेकर प्रथमसे लेकर नौ देवपिण्डोंपर निम्न संकल्प पढ़कर हाथका जल गिराये—

ॐ अद्य ……गोत्रस्य ……जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धे विष्णवादिपुरुषान्तदेवाः पिण्डेषु एतान्यर्चनानि युष्मभ्यं नमः। यहाँकी पवित्री यहीं उतार दे।

दसवें जीवपिण्डपर अर्चनदान—यहाँकी पवित्री धारणकर अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर दसवें पिण्डपर पूजनसामग्री अर्पित करके हाथमें मोटक, तिल तथा जल लेकर अर्चनदानका संकल्प पढ़े और जल पिण्डपर चढ़ा दे—

ॐ अद्य ……गोत्रस्य ……जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धे जीव पिण्डोपरि एतान्यर्चनानि ते स्वधा। यहाँकी पवित्री यहीं उतार दे।

पिण्डार्चनदानका संकल्प—पुनः आगेके देवमण्डलकी पवित्री धारणकर सव्य पूर्वाभिमुख होकर ग्यारहवेंसे सोलहवें पिण्डतक क्रमशः छः पिण्डोंपर निम्न संकल्प पढ़कर हाथका जल गिराये—

ॐ अद्य ……गोत्रस्य ……जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धे विष्णवादितत्पुरुषान्तदेवाः

पिण्डेषु एतान्यर्चनानि युष्मभ्यं नमः।

सद्गतिकी कामना—जीवकी सद्गतिके लिये इस प्रकार बोले—**एभिः पिण्डदानैः ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/ वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे मरणोत्तरभाविप्रेतत्वनिवृत्तिः सद्गतिप्राप्तिश्च भवताम्।**

अक्षय्योदकदान—आचमन करके निम्न प्रकारसे देवतीर्थसे अक्षय्योदकदान करे—

हाथमें जल लेकर '**ॐ शिवा आपः सन्तु**' कहकर पहले नौ देवभोजनपात्रोंपर जल डाले।

हाथमें पुष्प लेकर '**ॐ सौमनस्यमस्तु**' कहकर पहले नौ देवभोजनपात्रोंपर पुष्प डाले।

हाथमें जौ लेकर '**ॐ अक्षतं चारिष्टं चास्तु**' कहकर पहले नौ देवभोजनपात्रोंपर जौ डाले। यहाँकी पवित्री उतार दे।

अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर जीवमण्डलमें आकर यहाँकी पवित्री धारणकर जीवके भोजनपात्रपर पितृतीर्थसे '**ॐ शिवा आपः सन्तु**' कहकर जल, '**ॐ सौमनस्यमस्तु**' कहकर पुष्प एवं '**ॐ अक्षतं चारिष्टं चास्तु**' कहकर अक्षत छोड़े। यहाँकी पवित्री उतार दे।

पुनः सव्य पूर्वाभिमुख हो आगेके देवमण्डलमें आकर यहाँकी पवित्री धारणकर ग्यारहवेंसे लेकर सोलहवें—इस प्रकार छः देवभोजनपात्रोंपर देवतीर्थसे '**ॐ शिवा आपः सन्तु**' कहकर जल छोड़े, '**ॐ सौमनस्यमस्तु**' कहकर पुष्प छोड़े तथा '**ॐ अक्षतं चारिष्टं चास्तु**' कहकर जौ छोड़े।

अक्षय्योदकदानका संकल्प—प्रथम देवमण्डलमें आकर हाथमें त्रिकुश, जौ एवं जल लेकर नीचे लिखे मन्त्रोंसे पहलेके नौ देवभोजनपात्रोंपर पृथक्-पृथक् संकल्पजल डाले—

१. ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धे विष्णोर्दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु।

२. ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धे शिवस्य दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु।

३. ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धे यमस्य दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु।

४. ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धे सोमराजस्य दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु।

५. ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धे हव्यवाहनस्य दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु।

६. ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धे कव्यवाहनस्य दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु।

७. ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धे कालस्य

दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु।

८. ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धे रुद्रस्य दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु।

९. ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धे पुरुषस्य दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु। यहाँकी पवित्री उतार दे।

१०. जीवमण्डलमें आकर यहाँकी पवित्री धारण कर ले। अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर हाथमें मोटक, तिल, जल लेकर निम्न संकल्प पढ़े—

ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धे जीवस्य दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु— कहकर जीवभोजनपात्रपर पितृतीर्थसे संकल्पका जल डाले। यहाँकी पवित्री उतार दे।

आगेके देवमण्डलमें आकर सव्य और पूर्वाभिमुख होकर यहाँकी पवित्री पहनकर हाथमें त्रिकुश, जौ एवं जल लेकर नीचे लिखे संकल्पोंद्वारा देवभोजनपात्रोंपर पृथक्-पृथक् संकल्पजल देवतीर्थसे छोड़े—

११. ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धे विष्णो-र्दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु।

१२. ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धे ब्रह्मणो दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु।

१३. ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मण:/वर्मण:/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धे विष्णोर्दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु।

१४. ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मण:/वर्मण:/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धे शिवस्य दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु।

१५. ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मण:/वर्मण:/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धे यमस्य दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु।

१६. ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मण:/वर्मण:/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशश्राद्धे तत्पुरुषस्य दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु।

पिण्डोंपर जलदान—सर्वप्रथम पहले देवमण्डलके प्रत्येक पिण्डपर पूर्वाग्र कुशत्रय अलग-अलग रखकर एक पात्रमें जल डालकर उसी जलसे निम्न मन्त्रसे पिण्डोंपर पृथक्-पृथक् पूर्वाग्र जलधारा दे—

अनादिनिधनो देवः शङ्खचक्रगदाधरः। अक्षय्यः पुण्डरीकाक्ष जीवमोक्षप्रदो भव॥
नारायण सुरश्रेष्ठ लक्ष्मीकान्त वरप्रद। अनेन तर्पणेनाथ जीवमोक्षप्रदो भव॥
हिरण्यगर्भपुरुष व्यक्ताव्यक्त सनातन। अस्य जीवस्य मोक्षार्थं सुप्रीतो भव सर्वदा॥

जलधारा देनेके अनन्तर कहे—**ॐ विष्णवादिपुरुषान्तदेवा एषा जलधारा युष्मभ्यं नमः। ॐ विष्णवादि-पुरुषान्तदेवाः प्रीयन्ताम्, न मम।**

तदनन्तर जीवके पिण्डपर अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर पूर्वाग्र कुशत्रय रखकर निम्न मन्त्रोंसे पूर्वाग्र जलधारा दे—

अनादिनिधनो देवः शङ्खचक्रगदाधरः। अक्षय्यः पुण्डरीकाक्ष जीवमोक्षप्रदो भव॥
नारायण सुरश्रेष्ठ लक्ष्मीकान्त वरप्रद। अनेन तर्पणेनाथ जीवमोक्षप्रदो भव॥
हिरण्यगर्भपुरुष व्यक्ताव्यक्त सनातन। अस्य जीवस्य मोक्षार्थं सुप्रीतो भव सर्वदा॥

जलधारा देनेके अनन्तर कहे— **'ॐ जीव एषा जलधारा ते स्वधा।'**

आगेके देवमण्डलमें आकर सव्य-पूर्वाभिमुख होकर पिण्डोंपर पूर्वाग्र कुशत्रय रखकर निम्न मन्त्रोंसे पूर्वाग्र जलधारा दे—

अनादिनिधनो देवः शङ्खचक्रगदाधरः। अक्षय्यः पुण्डरीकाक्ष जीवमोक्षप्रदो भव॥
नारायण सुरश्रेष्ठ लक्ष्मीकान्त वरप्रद। अनेन तर्पणेनाथ जीवमोक्षप्रदो भव॥
हिरण्यगर्भपुरुष व्यक्ताव्यक्त सनातन। अस्य जीवस्य मोक्षार्थं सुप्रीतो भव सर्वदा॥

जलधारा देनेके अनन्तर कहे—**'ॐ विष्णवादितत्पुरुषान्तदेवा एषा जलधारा युष्मभ्यं नमः। ॐ विष्णवादितत्पुरुषान्तदेवाः प्रीयन्तां न मम।'**

आशीषप्रार्थना—तदनन्तर निम्न मन्त्रसे प्रार्थना करे—

ॐ गोत्रं नो वर्धतां दातारो नोऽभिवर्धन्ताम्। वेदाः सन्ततिरेव च। श्रद्धा च नो मा व्यगमद् बहुदेयं च नोऽस्तु। अन्नं

च नो बहु भवेदतिथींश्च लभेमहि। याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म कञ्चन। एताः सत्या आशिषः सन्तु॥

ब्राह्मण बोले—**सन्तु एताः सत्या आशिषः।**

पिण्डोंका आघ्राण—नम्र होकर सव्यसे पंद्रह देवपिण्डोंको और अपसव्यसे जीवपिण्डको सूँघे तथा उठाकर किसी पात्रमें रख दे। पिण्डाधार कुशों तथा उल्मुक (अंगार)-को अग्निमें छोड़ दे।

अर्घपात्रोंका संचालन—सव्यापसव्यसे देवों तथा जीवके अर्घपात्रोंको हिला दे।

दक्षिणादान-संकल्प—त्रिकुश, जौ, जल तथा हिरण्यादि दक्षिणा लेकर निम्न प्रकार संकल्प करे—

ॐ अद्य ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे मरणोत्तरभाविप्रेतत्व-निवृत्तिपूर्वकवैकुण्ठाद्युत्तमलोकप्राप्तिकामनया कृतस्य मध्यमषोडशश्राद्धस्य साङ्गताप्रतिष्ठासंसिद्ध्यर्थं हिरण्यं निष्क्रयद्रव्यं ....गोत्राय ....शर्मणे ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे। कहकर दक्षिणा दे दे। यदि अधिक ब्राह्मणोंको देना हो तो **नानानामगोत्रेभ्यः ब्राह्मणेभ्यः विभज्य दातुमुत्सृज्ये** कहे।

पितृगायत्रीका पाठ—तदनन्तर तीन बार पितृगायत्रीका पाठ कर ले—

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च । नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः॥

रक्षादीपनिर्वापण—सव्य होकर देवताओंके रक्षादीपपर दूसरा दीपक रखकर उसे बुझा दे और जीवका रक्षादीप अपसव्य होकर बुझाये। हाथ धो ले तथा आचमन कर ले।

प्रार्थना—तदनन्तर सव्य होकर प्रार्थना करे—

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्। स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

यत्पादपङ्कजस्मरणाद् यस्य नामजपादपि। न्यूनं कर्म भवेत् पूर्णं तं वन्दे साम्बमीश्वरम्॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुध्याऽऽत्मना वानुसृतस्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पये तत्॥

ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः॥

ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। ॐ साम्बसदाशिवाय नमः।

श्राद्धीय वस्तुओंको ब्राह्मणको दे दे अथवा गायको खिला दे या जलमें डाल दे।

॥ जीवच्छ्राद्धान्तर्गतमध्यमषोडशीश्राद्ध पूर्ण हुआ॥

आद्यश्राद्ध (महैकोद्दिष्टश्राद्ध)*

मध्यमषोडशीश्राद्धके बाद तथा उत्तमषोडशीके पूर्व आद्यश्राद्ध (महैकोद्दिष्टश्राद्ध) करना चाहिये, जिसकी विधि यहाँ दी जा रही है—

---

* कुछ लोग उत्तमषोडशीके अन्तर्गत किये जानेवाले प्रथम मासिक श्राद्धको ही आद्यश्राद्ध मान लेते हैं तथा कुछ पद्धतिकारोंने **'षोडशश्राद्धान्तर्गतमाद्यश्राद्धं करिष्ये'** और **'षोडशश्राद्धान्तर्गतसपिण्डीकरणश्राद्धं करिष्ये'**—ऐसे संकल्पवाक्यमें योजना करके आद्यश्राद्ध (महैकोद्दिष्टश्राद्ध) तथा सपिण्डीकरणके प्रेतश्राद्ध (जीवश्राद्ध)-को उत्तमषोडशीके अन्तर्गत बताया है, इससे भ्रम उत्पन्न होता है। गरुडपुराणके अनुसार सपिण्डीकरणश्राद्धान्तर्गत किये जानेवाले प्रेतश्राद्ध (जीवश्राद्ध)-के पूर्व उनचास श्राद्धों (मलिनषोडशीके सोलह+मध्यमषोडशीके सोलह+आद्यश्राद्ध (महैकोद्दिष्टश्राद्ध)-का एक+उत्तमषोडशीके सोलह=उनचास श्राद्ध)-के पिण्डदानोंकी संख्या पूरी होनी चाहिये। जिसकी पूर्तिके लिये उत्तमषोडशीके अतिरिक्त आद्यश्राद्ध (महैकोद्दिष्टश्राद्ध)-का पिण्डदान करना आवश्यक है। पचासवाँ श्राद्ध सपिण्डीकरणका प्रेतश्राद्ध (जीवश्राद्ध) है। अतः इन दोनों श्राद्धोंको षोडशश्राद्धान्तर्गत कहना असंगत है। गरुडपुराण प्रेतखण्ड (३५।३८—४०)-के मूल वचन इस प्रकार हैं—

आद्यं शवविशुद्ध्यर्थं कृत्वान्यच्च त्रिषोडशम्। पितृपङ्क्तिविशुद्ध्यर्थं शतार्द्धेन तु योजयेत्॥
शतार्द्धेन विहीनो यो मिलितः पङ्क्तिभाङ्न हि। चत्वारिंशत् तथैवाष्टश्राद्धं प्रेतत्वनाशनम्॥
सकृदूनशतार्द्धेन सम्भवेत् पङ्क्तिसन्निधः। मेलनीयः शतार्द्धेन सन्धिः श्राद्धेन तत्त्वतः॥

शवकी विशुद्धिके लिये आद्यश्राद्ध (महैकोद्दिष्टश्राद्ध) तथा प्रेतत्वकी निवृत्तिके लिये षोडशत्रय (मलिनषोडशी, मध्यमषोडशी तथा उत्तमषोडशी)-श्राद्ध करने चाहिये। षोडशत्रयश्राद्धसे जीवके प्रेतत्वका नाश हो जाता है। इस प्रकार शवविशुद्धि तथा प्रेतत्वनिवृत्ति हो जानेके कारण ४९ श्राद्धोंसे पितरोंकी पंक्तिका सामीप्य प्राप्त हो जाता है। अतः सपिण्डीकरणश्राद्धके पचासवें प्रेतश्राद्धका मेलन करनेसे पितृपंक्तिकी प्राप्ति हो जाती है।

जीवच्छ्राद्धकर्ता स्नान करके धुले सफेद वस्त्र (धोती और उत्तरीय) धारणकर श्राद्धस्थलपर आ जाय।

पाकनिर्माण—ईशानकोणमें पाकनिर्माण करना चाहिये। मिट्टीके नये बर्तनको जल डालकर अच्छी तरह साफ कर ले। इसमें दूध, जल और चावल छोड़कर प्रज्वलित गोहरीपर रखकर पाक तैयार करे। श्राद्धके लिये प्रयोज्य द्रव्यका एक बार ही प्रक्षालन करना चाहिये।* एक पिण्डके लिये पाकका निर्माण स्वयं या सपिण्ड (परिवार)-द्वारा कराये।

शिखाबन्धन—जीवच्छ्राद्धकर्ता अपने आसनपर पूर्वाभिमुख बैठ जाय, गायत्रीमन्त्रसे शिखाबन्धन कर ले।

तिलक-धारण—मृत्तिका, गोपीचन्दन आदिसे ऊर्ध्वपुण्ड्र अथवा भस्म आदिसे त्रिपुण्ड्र लगा ले।

सिंचन-मार्जन—निम्न मन्त्रसे अपने ऊपर तथा श्राद्धीय वस्तुओंपर जल छिड़कर पवित्र हो जाय।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

पवित्रीधारण—निम्न मन्त्रसे पवित्री पहन ले—

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्॥

---

* कण्डनं पेषणं चैव तथैवोल्लेखनं सदा। सकृदेव पितृणां स्याद्देवानां तु त्रिरुच्यते॥ (वीरमित्रोदय-संस्कारप्रकाशमें वायुपुराणका वचन) नेदं परिगणनम्, प्रत्युत उपलक्षणम्।

आचमन—**ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः।** इन मन्त्रोंको बोलकर आचमन करे। '**ॐ हृषीकेशाय नमः**' कहकर हाथ धो ले।

प्राणायाम—प्राणायाम करे।

पात्रासादन—श्राद्धभूमिके दक्षिण भागमें जीवासनके लिये पलाश आदिके तीन पत्ते, उसके आगे भोजनके लिये एक पत्ता और भोजनपात्रके पश्चिम जलपात्र तथा अर्घपात्रके रूपमें एक-एक दोनिया रखनी चाहिये। भोजनपात्रके सामने घृतपात्र भी रख ले। पलाशके तीन पत्तोंके ऊपर आसनके रूपमें दक्षिणाग्र मोटक स्थापित कर दे।

रक्षादीप-प्रज्वालन—जीवासनके दक्षिण भागमें तिलके तेलसे एक रक्षादीप जलाकर तिल बिछाकर उनपर दक्षिणाग्र रख दे। **सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि** कहकर गन्ध, पुष्प आदिसे दीपककी पूजा करे तथा इस प्रकार प्रार्थना करे—

भो दीप ब्रह्मरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत्। यावत् कर्मसमाप्तिः स्यात् तावत् त्वं सुस्थिरो भव॥

हाथ धोकर आगेका कार्य करे।

गदाधर आदिकी प्रार्थना—अंजलिमें फूल लेकर गयाधाम, गदाधर तथा पितरोंका स्मरणकर निम्न मन्त्रसे प्रार्थना करे—

श्राद्धारम्भे गयां ध्यात्वा ध्यात्वा देवं गदाधरम्। स्वपितॄन् मनसा ध्यात्वा ततः श्राद्धं समाचरेत्॥

ॐ गयायै नमः। ॐ गदाधराय नमः। कहकर फूल भूमिपर रख दे।

तदनन्तर तीन बार '**ॐ श्राद्धभूम्यै नमः**' कहकर भूमिपर जौ एवं पुष्प छोड़े।

भूमिसहित विष्णु-पूजन—श्राद्ध आरम्भ करनेके पूर्व विष्णुभगवान्का पूजन करनेका विधान है। अतः निम्न श्लोकसे विष्णुभगवान्का स्मरण-पूजन करते हुए पुष्पांजलि समर्पितकर श्राद्ध आरम्भ करना चाहिये—

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्॥

ॐ भूमिपत्नीसहिताय विष्णवे नमः—कहकर भगवान् विष्णुको प्रणामकर पुष्प अर्पित कर दे।

कर्मपात्रका निर्माण—श्राद्धकर्ममें जलका उपयोग करनेके लिये कर्मपात्रका निर्माण कर ले। अक्षतोंके ऊपर जलसे भरा एक कलश रखकर उसमें चन्दन, तुलसी, जौ, पुष्प तथा कुश छोड़ दे और त्रिकुशसे जलको दक्षिणावर्त आलोडित करते हुए निम्न मन्त्रोंको पढ़े—

ॐ यद्देवा देवहेडनं देवासश्चकृमा वयम्। अग्निर्मा तस्मादेनसो विश्वान् मुञ्चत्वꣳहसः॥
ॐ यदि दिवा यदि नक्तमेनाꣳसि चकृमा वयम्। वायुर्मा तस्मादेनसो विश्वान् मुञ्चत्वꣳहसः॥
ॐ यदि जाग्रद्यदि स्वप्न एनाꣳसि चकृमा वयम्। सूर्यो मा तस्मादेनसो विश्वान् मुञ्चत्वꣳहसः॥

प्रोक्षण—कर्मपात्रके जलसे कुशद्वारा अपना तथा सभी श्राद्धसामग्री एवं पाकका प्रोक्षण करे और बोले—

आद्यश्राद्धका स्वरूप

‘श्वादिदुष्टदृष्टिनिपातदूषितपाकादिकं पूतं भवतु।’

दिग्-रक्षण—बायें हाथमें पीली सरसों लेकर दाहिने हाथसे ढककर निम्न मन्त्र बोले—

नमो नमस्ते गोविन्द पुराणपुरुषोत्तम। इदं श्राद्धं हृषीकेश रक्ष त्वं सर्वतो दिशः॥

तदनन्तर दाहिने हाथसे सरसोंको पूर्व-दक्षिण आदि दिशाओंमें निम्न मन्त्रोंको पढ़ते हुए छोड़े—पूर्वमें—**प्राच्यै नमः।** दक्षिणमें—**अवाच्यै नमः।** पश्चिममें—**प्रतीच्यै नमः।** उत्तरमें—**उदीच्यै नमः।** आकाशमें—**अन्तरिक्षाय नमः।** भूमिपर—**भूम्यै नमः।**

हाथ जोड़कर प्रार्थना करे—

पूर्वे नारायणः पातु वारिजाक्षस्तु दक्षिणे। प्रद्युम्नः पश्चिमे पातु वासुदेवस्तथोत्तरे।
ऊर्ध्वं गोवर्धनो रक्षेदधस्ताच्च त्रिविक्रमः॥

नीवीबन्धन—किसी पत्र-पुटक या पानके पत्तेपर तिल, त्रिकुशका टुकड़ा लपेटकर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए दक्षिण कटिभागमें उसे खोंस ले, बाँध ले—

ॐ निहन्मि सर्वं यदमेध्यकृद् भवेद्धताश्च सर्वेऽसुरदानवा मया।
यक्षाश्च रक्षांसि पिशाचगुह्यका हता मया यातुधानाश्च सर्वे॥
ॐ सोमस्य नीविरसि विष्णोः शर्मासि शर्मयजमानस्येन्द्रस्य योनिरसि सुसस्याः कृषीस्कृधि।

प्रतिज्ञासंकल्प—दाहिने हाथमें त्रिकुश, तिल तथा जल लेकर निम्न रीतिसे प्रतिज्ञासंकल्प करे—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः नमः परमात्मने पुरुषोत्तमाय ॐ तत्सत् अद्यैतस्य विष्णोराज्ञया जगत्सृष्टिकर्मणि प्रवर्तमानस्य ब्रह्मणो द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे तत्प्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे ....क्षेत्रे (यदि काशी हो तो **अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रे गौरीमुखे त्रिकण्टकविराजिते महाश्मशाने भगवत्या उत्तरवाहिन्या भागीरथ्या वामभागे) बौद्धावतारे ....संवत्सरे उत्तरायणे/दक्षिणायने ....ऋतौ ....मासे ....पक्षे ....तिथौ ....वासरे ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे मरणोत्तरभाविप्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वकपितृपङ्क्तिप्रवेशाधिकारसिद्ध्यर्थं शवविशुद्ध्यर्थं च आद्यश्राद्धं करिष्ये।** हाथका संकल्पजल छोड़ दे।

पितृगायत्रीका पाठ—निम्न पितृगायत्रीका तीन बार पाठ करे—

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च। नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः॥

आसनदानका संकल्प—अपसव्य दक्षिणाभिमुख हो बायाँ घुटना जमीनपर गिराकर मोटक, तिल, जल लेकर आसनदानका निम्न संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतविहिताद्यश्राद्धे जीवस्य इदं मोटकरूपमासनं ते स्वधा। कहकर संकल्पजल एवं मोटकको आसनपर छोड़ दे।

आवाहन—जीवासनपर निम्न मन्त्रसे तिल छोड़ दे—

ॐ अपहता असुरा रक्षा॒ंसि वेदिषदः।

सव्य होकर आचमन कर ले।

छत्रोपानहदान

आवाहनके अनन्तर छत्र और उपानहका दान करना चाहिये; जिसकी विधि इस प्रकार है—

(क) छत्रदान

ब्राह्मणके हाथमें जल देकर '**इदं छत्रं ते ददानि**' कहकर ब्राह्मणसे दान देनेकी आज्ञा प्राप्त करे। ब्राह्मण '**ददस्व**' कहकर आज्ञा प्रदान करे।

ब्राह्मणवरणका संकल्प—हाथमें त्रिकुश, तिल, जल तथा वरणद्रव्य लेकर संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गत-विहिताद्यश्राद्धे करिष्यमाणछत्रदानप्रतिग्रहीतृत्वेन एभिर्वरणद्रव्यैः ....गोत्रं ....शर्माणं भवन्तं वृणे। वरणद्रव्य तथा संकल्पजल ब्राह्मणके हाथमें दे दे।

ब्राह्मणवचन—ब्राह्मण '**वृतोऽस्मि**' कहे।

ब्राह्मण-पूजन एवं प्रार्थना—गन्धाक्षतसे दानग्रहीता ब्राह्मणका पूजनकर निम्न मन्त्रसे प्रार्थना करे—

नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च। जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः॥

देयद्रव्यपूजन—'**देयद्रव्याय नमः**' कहकर गन्धाक्षत आदिसे छत्रका पूजनकर उसे जलसे सींच दे।

छत्रदानका संकल्प—हाथमें त्रिकुश, तिल, जल लेकर संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे मरणोत्तरभाविप्रेतस्य यममार्गे वर्षातपजन्यकष्टनिवारणार्थम् इदमुत्तानाङ्गिरो दैवत्यं छत्रं ....गोत्राय ....शर्मणे ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे। कहकर संकल्पजल तथा छत्र ब्राह्मणके हाथमें दे दे।

ब्राह्मणवचन—ब्राह्मण '**स्वस्ति**' कहे।

साङ्गतासंकल्प—दायें हाथमें त्रिकुश, तिल, जल तथा दक्षिणा लेकर संकल्प करे—

ॐ अद्य कृतस्य उत्तानाङ्गिरो देवताकछत्रदानस्य साङ्गताप्रतिष्ठासंसिद्ध्यर्थमिदं दक्षिणाद्रव्यं ....गोत्राय ....शर्मणे ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे। कहकर दक्षिणा प्रदान करे।

ब्राह्मणवचन—ब्राह्मण '**स्वस्ति**' कहे।

(ख) उपानहदान

ब्राह्मणके हाथमें जल देकर '**इमे उपानहौ ते ददानि**' कहकर ब्राह्मणसे दान देनेकी अनुज्ञा प्राप्त करे।

ब्राह्मण '**ददस्व**' कहकर आज्ञा प्रदान करे।

ब्राह्मणवरण-संकल्प—दाहिने हाथमें त्रिकुश, तिल, जल तथा वरणद्रव्य लेकर संकल्प करे—

ॐ अद्य ……गोत्रः ……शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं ……गोत्रस्य ……जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गत-विहिताद्यश्राद्धे करिष्यमाणोपानद्दानप्रतिग्रहीतृत्वेन एभिर्वरणद्रव्यैः ……गोत्रं ……शर्माणं भवन्तं वृणे। संकल्पका जलादि ब्राह्मणके हाथमें दे दे।

ब्राह्मणवचन—ब्राह्मण '**वृतोऽस्मि**' कहे।

ब्राह्मण-पूजन एवं प्रार्थना—गन्धाक्षतसे दानग्रहीता ब्राह्मणका पूजनकर निम्न मन्त्रसे प्रार्थना करे—

नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च। जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः॥

देयद्रव्यपूजन—'**देयद्रव्याय नमः**' कहकर गन्धाक्षत आदिसे उपानहका पूजनकर उसे जलसे सींच दे।

उपानहदानका संकल्प—हाथमें त्रिकुश, तिल, जल लेकर संकल्प करे—

ॐ अद्य ……गोत्रः ……शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं ……गोत्रस्य ……जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे मरणोत्तरभाविप्रेतस्य यममार्गे संतप्तबालुकाऽसिशर्कराकंटकाकीर्णदुर्गभूसंतरणकामः उत्तानाङ्गिरो दैवत्ये इमे उपानहौ ……गोत्राय ……शर्मणे ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे। कहकर संकल्प-जलादि तथा उपानह ब्राह्मणके हाथमें दे दे।

ब्राह्मणवचन—ब्राह्मण '**स्वस्ति**' कहे।

साङ्गतासंकल्प—दायें हाथमें त्रिकुश, तिल, जल तथा दक्षिणा लेकर संकल्प करे—

ॐ अद्य कृतस्य उपानद्दानकर्मणः साङ्गताप्रतिष्ठासंसिद्ध्यर्थं मनसोद्दिष्टं दक्षिणाद्रव्यं ……गोत्राय ……शर्मणे ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे। कहकर दक्षिणा प्रदान कर दे।

ब्राह्मणवचन—ब्राह्मण '**स्वस्ति**' कहे।

भगवत्स्मरण—भगवान्‌का स्मरण कर ले—**ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः।**

छत्रोपानहदानके अनन्तर श्राद्धकी आगेकी क्रिया सम्पन्न करे—

अर्घपात्रनिर्माण

अर्घपात्रमें पवित्रक रखना—कुशके एक पत्तेका पवित्रक बनाकर निम्नलिखित मन्त्र बोलते हुए अर्घपात्र (पत्तेके दोने)-पर दक्षिणाग्र रख दे—

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः।
तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्॥

अर्घपात्रमें जल डालना—अर्घपात्रमें निम्न मन्त्र बोलकर जल डाल दे—

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्त्रवन्तु नः॥

अर्घपात्रमें तिल डालना—नीचे लिखे मन्त्रको बोलकर अर्घपात्रमें तिल डाले—

ॐ तिलोऽसि सोमदैवत्यो गोसवो देवनिर्मितः।
प्रत्नमद्भिः पृक्तः स्वधया पितॄँल्लोकान् प्रीणाहि नः स्वाहा॥

अर्घपात्रमें चन्दन-फूल रखना—मौन होकर अर्घपात्रमें चन्दन-फूल रख दे।

अर्घपात्रका अभिमन्त्रण—अर्घपात्रको उठाकर बायें हाथमें रखे। फिर अर्घपात्रसे पवित्रक निकालकर

भोजनपात्रपर उत्तराग्र रखकर '**ॐ नमो नारायणाय**' मन्त्र बोलकर एक आचमनी जल पवित्रकपर गिरा दे। दाहिने हाथसे अर्घपात्रको ढककर निम्न मन्त्र बोले—

ॐ या दिव्या आपः पयसा सम्बभूवुर्या आन्तरिक्षा उत पार्थवीर्याः।
हिरण्यवर्णा यज्ञियास्ता न आपः शिवाः शꣳ स्योनाः सुहवा भवन्तु॥

तदनन्तर अर्घपात्रको दाहिने हाथमें रखकर मोटक, तिल, जल लेकर निम्न संकल्प बोले—

अर्घदानका संकल्प—ॐ अद्य ....गोत्रः ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धान्तर्गते आद्यश्राद्धे एषोऽर्घस्ते स्वधा।

—ऐसा बोलकर अर्घपात्रका जल पवित्रकपर गिरा दे। पुनः पवित्रकको उठाकर अर्घपात्रमें दक्षिणाग्र रख ले और '**जीवाय स्थानमसि**' कहकर जीवासनके पश्चिम सीधा (उत्तान) ही रख दे।* दक्षिणादानपर्यन्त उसे न हिलाये, न उठाये।

जीवासनपर पूजन—जीवासनपर जीवके पूजनके लिये निम्न पूजन-सामग्री अर्पित करे—

इदमाचमनीयम्(स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे। इदमाचनीयम् कर्ता कहे। आचार्य **(स्वाचमनीयम्)** बोले।

इदं स्नानीयम् (सुस्नानीयम्)—कहकर स्नानीय जल दे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं वस्त्रम् (सुवस्त्रम्)—कहकर वस्त्र (या सूत्र) चढ़ाये।

---

* **उत्तानं स्थापयेत् पात्रमेकोद्दिष्टे सदा बुधः।** (वीरमित्रोदय)

विद्वान्को चाहिये कि एकोद्दिष्टश्राद्धमें पात्रको उत्तान (सीधा) रखे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इमे यज्ञोपवीते (सुयज्ञोपवीते)—कहकर यज्ञोपवीत चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदमुपवस्त्रम् (सुवस्त्रम्)—कहकर उपवस्त्र (या सूत्र) चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

एष गन्धः (सुगन्धः)—कहकर गन्ध अर्पित करे।

इमे तिलाक्षताः (सुतिलाक्षताः)—कहकर तिलाक्षत चढ़ाये।

इदं माल्यम् (सुमाल्यम्)—कहकर माला चढ़ाये।

एष धूपः (सुधूपः)—कहकर धूप आघ्रापित करे।

एष दीपः (सुदीपः)—कहकर दीपक दिखाये।

हस्तप्रक्षालनम् (हाथ धो ले)।

इदं नैवेद्यम् (सुनैवेद्यम्)—कहकर नैवेद्य अर्पित करे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं फलम् (सुफलम्)—कहकर फल अर्पित करे।

इदं ताम्बूलम् (सुताम्बूलम्)—कहकर ताम्बूल प्रदान करे।

एषा दक्षिणा (सुदक्षिणा)—कहकर दक्षिणा चढ़ाये।

हाथमें मोटक, तिल, जल लेकर अर्चनदानका संकल्प करे—

अर्चनदानका संकल्प—ॐ अद्य ……गोत्र ……जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धान्तर्गते आद्यश्राद्धे एतान्यर्चनानि ते स्वधा कहकर जल छोड़ दे।

मण्डलकरण—सव्य होकर आचमन कर ले। पुनः अपसव्य हो जाय। जीवके भोजनपात्रसहित आसनके चारों ओर अप्रदक्षिणक्रमसे (बायीं ओरसे) जलद्वारा गोल मण्डल बनाये, उस समय निम्न मन्त्र पढ़े—

ॐ यथा चक्रायुधो विष्णुस्त्रैलोक्यं परिरक्षति। एवं मण्डलतोयं तु सर्वभूतानि रक्षतु॥

भूस्वामीके पितरोंको अन्नप्रदान—एक पात्रमें सभी अन्न रखकर दक्षिण दिशामें भूस्वामीके पितरोंके निमित्त वह अन्नपात्र **ॐ इदमन्नमेतद् भूस्वामिपितृभ्यो नमः।** पढ़कर त्रिकुशपर रख दे।

अन्नपरिवेषण—भोजनपात्रपर जो तिल इत्यादि पड़ गये हों, उन्हें साफ कर दे। तदनन्तर उसपर पितृतीर्थसे अन्न परोस दे।

मधु-प्रक्षेप—अन्नके ऊपर पितृतीर्थसे दोनों हाथोंसे निम्न मन्त्र पढ़कर मधु प्रदान करे—

ॐ मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः॥ मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳ रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता॥ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ२ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥ ॐ मधु मधु मधु॥

जलपात्रमें जल तथा घृतपात्रमें घृत रख दे।

पात्रालम्भन[१] —अनुत्तान (उल्टे) दायें हाथपर अनुत्तान बायाँ हाथ स्वस्तिकाकार रखकर भोजनपात्रका स्पर्श करते हुए निम्न मन्त्र पढ़े—

ॐ पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे अमृते अमृतं जुहोमि स्वाहा।

ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम्। समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा॥

ॐ कृष्ण कव्यमिदं रक्ष मदीयम्।

कहकर बायें हाथसे भोजनपात्रका स्पर्श किये हुए ही दाहिने हाथके अनुत्तान अँगूठेसे अन्नावगाहन[२] करके—अन्न छूकर बोले—‘**इदमन्नम्।**’ जल छूकर बोले—‘**इमा आपः।**’ घी छूकर बोले—‘**इदमाज्यम्।**’ पुनः अन्न छूकर बोले—‘**इदं कव्यम्।**’

तदनन्तर अन्नके ऊपर निम्न मन्त्रसे तिल छोड़ दे—

ॐ अपहता असुरा रक्षाꣳसि वेदिषदः।

---

१. (क) दक्षिणोपरि वामं च पित्र्यपात्रस्य लम्भनम्। पात्रालम्भनं कुर्याद् दत्त्वा चान्नं यथाविधि॥ (श्राद्धकाशिकामें पद्मपुराणका वचन)

(ख) पित्र्येऽनुत्तानपाणिभ्यामुत्तानाभ्यां च दैवते। (यम)

२. उत्तानेन तु हस्तेन कुर्यादन्नावगाहनम्। आसुरं तद्भवेच्छ्राद्धं पितॄणां नोपनिष्ठते॥ (श्राद्धकाशिका)

उत्तान हाथसे अन्नावगाहन करनेपर वह श्राद्ध आसुर हो जाता है और पितरोंको प्राप्त नहीं होता।

अन्नदानका संकल्प—हाथमें मोटक, तिल, जल लेकर अन्नदानका संकल्प करे—
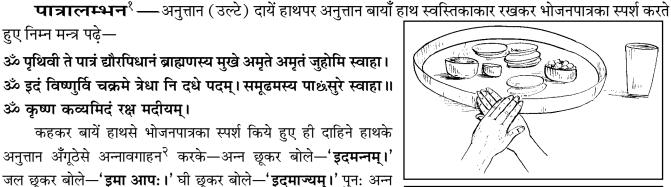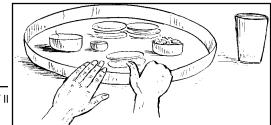
ॐ अद्य ....गोत्राय ....जीवशर्मणे/वर्मणे/गुप्ताय जीवच्छ्राद्धान्तर्गते आद्यश्राद्धे इदमन्नं सोपस्करं ते स्वधा।
इस तरह संकल्प बोलकर हाथमें रखा तिल, जल भोजनपात्रके पास गिराकर निम्न प्रार्थना करे—

अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद् भवेत्। अच्छिद्रमस्तु तत्सर्वं पित्रादीनां प्रसादतः॥

पितृगायत्रीका पाठ—सव्य पूर्वाभिमुख हो जाय, आचमन कर ले। तदनन्तर तीन बार निम्न पितृगायत्रीका पाठ करे—

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च। नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः॥

वेदशास्त्रादिका पाठ—तदनन्तर स्वयं अथवा ब्राह्मणद्वारा निम्न वेदादि मन्त्रोंका पाठ कराये। पैरोंके नीचे पूर्वाग्र तीन कुश रख ले—

श्रुतिपाठ—**ॐ अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्॥**

ॐ इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्व मघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा व स्तेन ईशत माघशꣳसो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि॥

ॐ अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये। नि होता सत्सि बर्हिषि॥

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्त्रवन्तु नः॥

स्मृतिपाठ—**मनुमेकाग्रमासीनमभिगम्य महर्षयः। प्रतिपूज्य यथान्यायमिदं वचनमब्रुवन्॥**

योगीश्वरं याज्ञवल्क्यं सम्पूज्य मुनयोऽब्रुवन्। वर्णाश्रमेतराणां नो ब्रूहि धर्मानशेषतः॥
मन्वत्रिविष्णुहारीतयाज्ञवल्क्योशनोऽङ्गिराः। यमापस्तम्बसंवर्ताः कात्यायनबृहस्पती॥
पराशरव्यासशङ्खलिखिता दक्षगौतमौ। शातातपोवसिष्ठश्च धर्मशास्त्रप्रयोजकाः॥

पुराण— नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्। देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत्॥
सप्त व्याधा दशार्णेषु मृगाः कालञ्जरे गिरौ॥
चक्रवाकाः शरद्वीपे हंसाः सरसि मानसे॥
तेऽभिजाताः कुरुक्षेत्रे ब्राह्मणा वेदपारगाः। प्रस्थिता दीर्घमध्वानं यूयं किमवसीदथ॥

महाभारत—दुर्योधनो मन्युमयो महाद्रुमः स्कन्धः कर्णः शकुनिस्तस्य शाखाः।
दुःशासनः पुष्पफले समृद्धे मूलं राजा धृतराष्ट्रोऽमनीषी॥
युधिष्ठिरो धर्ममयो महाद्रुमः स्कन्धोऽर्जुनो भीमसेनोऽस्य शाखाः।
माद्रीसुतौ पुष्पफले समृद्धे मूलं कृष्णो ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च॥

विकिरदान*—अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर दक्षिण दिशाकी भूमिको जलसे सींच दे। उसपर कुश बिछा दे। पिण्डदानके लिये निर्मित सामग्रीमेंसे किंचित् सामग्री लेकर उसमें घृत, तिल, जल मिलाकर दाहिने हाथमें ले ले तथा मोटक, तिल, जल लेकर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए उसे पितृतीर्थसे सिंचित भूमिपर कुशोंके ऊपर रख दे—

* आभ्युदयिके च पूर्वे प्रेतश्राद्धे तु दक्षिणे। क्षयाहे अग्निकोणे स्यान्नैर्ऋत्ये पार्वणे तथा॥

अग्निदग्धाश्च ये जीवा येऽप्यदग्धाः कुले मम। भूमौ दत्तेन तृप्यन्तु तृप्ता यान्तु परां गतिम्॥

असंस्कृतप्रमीतानां त्यागिनां कुलभागिनाम्। उच्छिष्टभागधेयानां दर्भेषु विकिरासनम्॥

तदनन्तर पहिनी हुई पवित्री, मोटक आदिका वहीं परित्याग कर दे। हाथ-पैर धो ले। अपने आसनपर आ जाय। सव्य पूर्वाभिमुख होकर आचमन कर ले, नयी पवित्री धारण कर ले। श्रीहरिका स्मरणकर अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर पिण्डदानके लिये वेदीका निर्माण करे।

वेदीनिर्माण—प्रादेशमात्र (अंगुष्ठसे तर्जनीके बीचकी दूरी) लम्बी तथा छः अंगुल चौड़ी एक वेदी बना ले। वेदीके उत्तरका भाग ऊँचा और दक्षिणका भाग नीचा होना चाहिये।

निम्न मन्त्र पढ़ते हुए जलसे वेदीका सिञ्चन कर ले—

ॐ अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची ह्यवन्तिका। पुरी द्वारावती ज्ञेयाः सप्तैता मोक्षदायिकाः॥

रेखाकरण—बायें हाथके अंगुष्ठ तथा तर्जनीसे तीन समूल कुशोंके अग्रभागको और दाहिने हाथके अंगुष्ठ तथा तर्जनीसे कुशोंके मूलभागको पकड़कर '**ॐ अपहता असुरा रक्षाꣳसि वेदिषदः**' मन्त्रसे वेदीपर उत्तरसे दक्षिणकी ओर रेखा खींचे और उन कुशोंको ईशानकोणकी ओर फेंक दे।

उल्मुकस्थापन—वेदीके चारों ओर बायीं ओरसे निम्न मन्त्रसे अंगारको घुमाये—

'**ॐ ये रूपाणि प्रतिमुञ्चमाना असुराः सन्तः स्वधया चरन्ति। परापुरो निपुरो ये भरन्त्यग्निष्टाँल्लोकात्प्रणुदात्यस्मात्॥**

तदनन्तर उसे पिण्डवेदीके दक्षिणकी ओर श्राद्धपर्यन्त स्थापित कर दे।

कुशास्तरण—समूल तीन कुशोंको एक साथ जड़सहित दो भागोंमें विभक्त करके वेदीपर खींची गयी रेखापर दक्षिणाग्र बिछा दे।

अवनेजनदानका संकल्प—वेदीके पश्चिम भागमें अवनेजनपात्र (दोना या हाथसे बना मिट्टीका दीया) रखकर उसमें तिल, जल, सफेद चन्दन, सफेद फूल रखकर उसे दायें हाथमें ले ले और मोटक, तिल, जल लेकर अवनेजनदानका नीचे लिखा संकल्प बोले—

ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धान्तर्गते आद्यश्राद्धे पिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते स्वधा। कहकर वेदीके मध्य स्थापित कुशपर आधा जल गिरा दे। आधा जल बचाकर अवनेजनपात्र यथास्थान सीधा रख ले। इसीसे बादमें प्रत्यवनेजन दिया जाता है।

पिण्डनिर्माण—पाकपात्रमेंसे पिण्डदानके लिये पत्तलपर अन्न निकाल ले। उसमें शर्करा, घी, मधु, तिल मिलाकर कपित्थ* (कैथ-फल)-के बराबर एक पिण्ड बना ले। थोड़ा अन्न पाकपात्रमें बलिके लिये छोड़ दे।

पिण्डदानका संकल्प—दायें हाथमें मोटक, तिल, जल और पिण्डको लेकर बायें हाथसे दाहिने हाथको स्पर्श करते हुए बायाँ घुटना टेककर बोले—

ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धान्तर्गते आद्यश्राद्धे एष पिण्डस्ते स्वधा। कहकर पितृतीर्थसे वेदीपर खींची गयी रेखापर बिछाये गये कुशोंके ऊपर अवनेजनस्थानपर पिण्डको रख दे। पिण्डशेषान्न पिण्डके समीप रख दे। पिण्डाधार कुशोंके मूलमें हाथ पोंछ ले। सव्य होकर आचमन करके हरिस्मरण कर ले।

---

* कपित्थस्य प्रमाणेन पिण्डान् दद्यात् समाहितः।

श्वासनियमन—अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर आसनपर बैठे हुए ही श्वास खींचते हुए बायीं ओरसे उत्तराभिमुख हो निम्न मन्त्र पढ़े—

अत्र पितरो* मादयध्वं यथाभागमावृषायध्वम्।

श्वास रोककर उसी क्रमसे दक्षिणाभिमुख होकर भास्वरमूर्ति (तेजःपुंजस्वरूप) जीवका ध्यान करते हुए पिण्डके पास श्वास छोड़े और '**अमीमदन्त पितरो यथाभागमावृषायिषत**' यह मन्त्र पढ़े।

प्रत्यवनेजनदानका संकल्प—पहले रखे हुए अवनेजनपात्रमें यदि जल न बचा हो तो जल डाल दे फिर मोटक, तिल, जल एवं पात्रको दायें हाथमें लेकर संकल्प बोले—

ॐ अद्य ""गोत्र ""जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धान्तर्गते आद्यश्राद्धपिण्डे अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते स्वधा—कहकर जल पिण्डपर गिराकर प्रत्यवनेजनपात्रको यथास्थान रख दे।

नीवीविसर्जन—नीवीका ईशानकोणमें विसर्जन कर दे।

सूत्रदान—सव्य पूर्वाभिमुख होकर आचमन कर ले। फिर अपसव्य दक्षिणाभिमुख हो जाय एवं बायें हाथसे सूत्र लेकर दाहिने हाथमें रखकर निम्न मन्त्रका उच्चारण करे—

---

* श्राद्धकी कई प्रयोगपद्धतियोंमें '**अत्र पितरो मादयध्वम्०**', '**नमो वः पितरः०**', '**अघोराः पितरः०**' '**....स्वधास्थ तर्पयत मे पितॄन्**' आदि वैदिक मन्त्रोंमें ऊह करके विभक्तिका परिवर्तन कर दिया गया है अर्थात् एकोद्दिष्टश्राद्धोंमें '**पितरः०**' इत्यादि बहुवचनान्त पदोंमें ऊह करके उन्हें एकवचनान्त कर दिया गया है और सम्बन्धमें भी **अत्र मातर्मादयध्वम्** तथा **नमस्ते माता रसाय०** इत्यादिमें ऊह करके परिवर्तन कर दिया है। वैदिक मन्त्रोंमें आनुपूर्वी नियत होनेके कारण ऊह करनेसे मन्त्रत्व नहीं रह जायगा अतः उन मन्त्रोंकी कर्मांगता भी नहीं हो सकेगी। इसी आशयसे पातंजलमहाभाष्यमें '**वैदिकाः खल्वपि**'—इसका व्याख्यान करते हुए आचार्य कैयटने '**वेदे त्वानुपूर्वीनियमाद्वाक्यान्युदाहरति**'—ऐसा लिखा है। ऊह न करनेके विषयमें

ॐ नमो वः पितरो रसाय नमो वः पितरः शोषाय नमो वः पितरो जीवाय नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे नमो वः पितरः पितरो नमो वो गृहान्नः पितरो दत्त सतो वः पितरो देष्म।
ऐसा पढ़कर '**ॐ एतद्वः पितरो वासः**' कहते हुए पिण्डपर सूत्र चढ़ाये।

सूत्रदानका संकल्प—हाथमें मोटक, तिल, जल लेकर संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्र ....जीव ....शर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धान्तर्गते आद्यश्राद्धे पिण्डोपरि एतत्ते वासः स्वधा—
ऐसा कहकर पिण्डपर संकल्पजल छोड़े।

पिण्डपूजन—तदनन्तर निम्न रीतिसे विविध उपचारोंद्वारा पिण्डका पूजन करे—

[कर्ताका वचन][आचार्यका वचन]

इदमाचमनीयम् (स्वाचमानीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं स्नानीयम् (सुस्नानीयम्)—कहकर स्नानीय जल दे।

निम्नलिखित प्रमाण ध्यातव्य हैं—

(क) **अनाम्नातेष्वमन्त्रत्वमाम्नातेषु हि विभागः॥**

'**....याज्ञिकप्रसिद्धिरूपस्य मन्त्रलक्षणस्यैतेष्वभावात्। न ह्यध्येतार ऊहादीन् मन्त्रकाण्डेऽधीयते। तस्मात् नास्ति मन्त्रत्वम्।**'

(जैमिनीयन्यायमाला अ० २, पाद १, अधि० ९, सूत्र ३४ तथा व्याख्या)

(ख) '**....एवञ्च पूर्वोक्ते मन्त्रजाते पितृशब्दस्य सपिण्डीकरणान्तश्राद्धजन्यपितृत्वपरत्वात्तस्य च मातामहादिष्वपि सद्भावान्नोहः।** तथा '**पूयति वा एतदृचोऽक्षरं यदेनदूहति तस्मादृचं नोहेत्' इति प्रतिषेधादपि नोहः। तथा अनृग्रूपेष्वपि मन्त्रेषु 'एतद्वः पितरो वासोऽमीमदन्त पितरः' इत्यादिष्वपि पूर्वोक्तन्यायान्नोहः।**' (भगवन्तभास्कर, श्राद्धमयूख)

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं वस्त्रम् (सुवस्त्रम्)—कहकर वस्त्र (या सूत्र) चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इमे यज्ञोपवीते (सुयज्ञोपवीते)—कहकर यज्ञोपवीत चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदमुपवस्त्रम् (सुवस्त्रम्)—कहकर उपवस्त्र (या सूत्र) चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

एष गन्धः (सुगन्धः)—कहकर गन्ध अर्पित करे।

इमे तिलाक्षताः (सुतिलाक्षताः)—कहकर तिलाक्षत चढ़ाये।

इदं माल्यम् (सुमाल्यम्)—कहकर माला चढ़ाये।

एष धूपः (सुधूपः)—कहकर धूप आघ्रापित करे।

एष दीपः (सुदीपः)—कहकर दीपक दिखाये।

हस्तप्रक्षालनम् (हाथ धो ले)।

इदं नैवेद्यम् (सुनैवेद्यम्)—कहकर नैवेद्य अर्पित करे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं फलम् (सुफलम्)—कहकर फल अर्पित करे।

इदं ताम्बूलम् (सुताम्बूलम्)—कहकर ताम्बूल प्रदान करे।

एषा दक्षिणा (सुदक्षिणा)—कहकर दक्षिणा चढ़ाये।

तदनन्तर हाथमें मोटक, तिल, जल लेकर अर्चनदानका निम्न संकल्प बोले—

पिण्डार्चनदानका संकल्प—ॐ अद्य ''''गोत्र ''''जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धान्तर्गते आद्यश्राद्धे पिण्डोपरि एतान्यर्चनानि ते स्वधा। कहकर हाथका संकल्प जलादि छोड़ दे।

अक्षय्योदकदान—भोजनपात्रपर '**ॐ शिवा आपः सन्तु**' कहकर जल छोड़े। '**ॐ सौमनस्यमस्तु**' कहकर पुष्प छोड़े और '**ॐ अक्षतं चारिष्टं चास्तु**' कहकर चावल (अक्षत) छोड़े।

अक्षय्योदकदानका संकल्प—हाथमें मोटक, तिल, जल लेकर अक्षय्योदकदानका संकल्प करे—

ॐ अद्य ''''गोत्रस्य ''''जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गते आद्यश्राद्धे जीवस्य दत्तैतदन्न-पानादिकमक्षय्यमस्तु। कहकर जल गिरा दे।

जलधारा—सव्य होकर दक्षिण दिशाकी ओर देखते हुए पिण्डपर निम्न मन्त्रसे पूर्वाग्र जलधारा दे—

ॐ अघोराः पितरः सन्तु।

आशिष-प्रार्थना—पूर्वाभिमुख होकर हाथ जोड़कर आशिष-प्रार्थना करे—

ॐ गोत्रं नो वर्द्धतां दातारो नोऽभिवर्द्धन्ताम्। वेदाः सन्ततिरेव च। श्रद्धा च नो मा व्यगमद् बहुदेयं च नोऽस्तु।

अन्नं च नो बहु भवेदतिथींश्च लभेमहि। याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म कञ्चन। एताः सत्या आशिषः सन्तु॥

ब्राह्मणवाक्य—सन्त्वेताः सत्या आशिषः।

पिण्डपर जलधारा या दुग्धधारा—अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर एक पवित्रीमें तीन कुशोंको फँसाकर पिण्डपर दक्षिणाग्र रखे तथा निम्न मन्त्रसे पिण्डपर दक्षिणाग्र जलधारा या दुग्धधारा दे—

ऊर्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्रुतम्। स्वधा स्थ तर्पयत मे पितॄन्॥

पिण्डाघ्राण—नम्र होकर पिण्डको सूँघकर उठाकर रख दे। पिण्डाधारकुश (पिण्डोंके नीचेवाले कुश) एवं उल्मुकको अग्निमें छोड़ दे।

अर्घपात्रका संचालन—अर्घपात्रको हिला दे।

दक्षिणादान—सव्य पूर्वाभिमुख हो जाय। हाथमें त्रिकुश, तिल, जल तथा दक्षिणा लेकर बोले—

ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे मरणोत्तरभाविप्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वक-सर्वोत्तमलोकप्राप्त्यर्थं पितृपङ्क्तिप्रवेशाधिकारसिद्ध्यर्थं शवविशुद्ध्यर्थं च कृतस्य आद्यश्राद्धस्य साङ्गताप्रतिष्ठासंसिद्ध्यर्थं रजतं/तन्निष्क्रयद्रव्यं ....गोत्राय ....शर्मणे ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे कहकर ब्राह्मणको दक्षिणा दे दे।

सद्गतिकी कामना—अनेन कृतेन जीवच्छ्राद्धान्तर्गतेन आद्यश्राद्धेन ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/ गुप्तस्य मरणोत्तरभाविप्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वकपितृपङ्क्तिप्रवेशाधिकारसिद्धिरस्तु। कहकर जल छोड़ दे।

विसर्जन—अपसव्य दक्षिणामुख होकर '**ॐ अभिरम्यताम्**' कहकर विसर्जन कर दे।

रक्षादीपनिर्वापण—रक्षादीप बुझा दे। हाथ-पैर धोकर सव्य पूर्वाभिमुख हो जाय। आचमन करे, तीन बार निम्न पितृगायत्रीका पाठ करे—

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च। नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः॥

प्रार्थना—तदनन्तर भगवान्का स्मरण और प्रार्थना करे—

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्। स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥
यत्पादपङ्कजस्मरणाद् यस्य नामजपादपि। न्यूनं कर्म भवेत् पूर्णं तं वन्दे साम्बमीश्वरम्॥
कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुध्याऽऽत्मना वानुसृतस्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पये तत्॥
ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नम।
ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। ॐ साम्बसदाशिवाय नमः।

श्राद्धकी वस्तुओंको ब्राह्मणको दे दे अथवा गायको खिला दे या जलमें डाल दे।*

॥ जीवच्छ्राद्धान्तर्गत आद्यश्राद्ध (महैकोद्दिष्टश्राद्ध) पूर्ण हुआ॥

---

* ततः कर्मणि निर्वृत्ते तान् पिण्डांस्तदनन्तरम्। ब्राह्मणोऽग्निरजो गौर्वा भक्षयेदप्सु वा क्षिपेत्॥ (श्राद्धचिन्तामणिमें देवलका वचन)

जीवशय्यादान

जीवशय्याको उत्तरकी ओर सिरहाना कर बिछाये।[१] शय्याके नीचे ईशानकोणमें सामर्थ्यानुसार धातु या मिट्टीसे बना घृतपूर्णपात्र, अग्निकोणमें कुमकुमपात्र, नैर्ऋत्यकोणमें गेहूँसे भरा पात्र तथा वायव्यकोणमें जलपात्र रखे। सिरहानेकी ओर घृतपूर्ण कलश रखे।[२] यह निद्राकलश कहलाता है। शय्यापर गद्दा आदि बिछाकर श्वेत चादरसे सुसज्जित कर दे। कोमल तकिया लगा दे। जीवके द्वारा उपभोगमें लायी जानेयोग्य वस्तुएँ—वस्त्र, वाहन, पात्र आदि सामग्रियोंको शय्याके पास इकट्ठा करे। शय्याके नीचे सप्तधान्य भी रख दे। जीवके लिये जो निषिद्धेतर प्रिय वस्तुएँ हैं, उन वस्तुओंको भी शय्याके पास रख दे। शय्याके ऊपर फल, फूल, माला, पान, कुमकुम, कर्पूर, अगरु, चन्दन, गमछा, धोती, मच्छरदानी, शृंगारपात्र, आभूषण, पुस्तक, जपमाला, स्वर्णमयी जीवप्रतिमा (काञ्चन-पुरुष) और भोजनपात्र आदि रख दे।[३]

---

१. देवशय्याशिरः प्राच्यां मखशय्या तु दक्षिणे। पश्चिमे तीर्थशय्यायाः प्रेतशय्याशिरोत्तरे॥ (दानसंग्रह)

२. उच्छीर्षके घृतभृतं कलशं परिकल्पयेत्। (धर्मसिन्धु)

३. तस्माच्छय्यां समासाद्य सारदारुमयीं दृढाम्। दन्तपत्रचितां रम्यां हेमपट्टैरलङ्कृताम्॥
रक्ततूलिप्रतिच्छन्नां शुभशीर्षोपधानिकाम्। प्रच्छादनपटीयुक्तां गन्धधूपाधिवासिताम्॥
तस्यां संस्थाप्य हैमं च हरिं लक्ष्म्या समन्वितम्। घृतपूर्णं च कलशं तत्रैव परिकल्पयेत्॥
ताम्बूलं कुङ्कुमक्षोदं कर्पूरागुरुचन्दनम्। दीपकोपानहौ छत्रं चामरासनभाजनम्॥
पार्श्वेषु स्थापयेद् भक्त्या सप्तधान्यानि चैव हि। शयनस्थं च भवति यच्च स्यादुपकारकम्॥
भृङ्गारकादर्शपंचवर्णवितानशोभितम्। शय्यामेवंविधां कृत्वा ब्राह्मणाय निवेदयेत्॥ (ग०महा०, प्रेत० २४।५१—५६)

शय्यादानके पहलेका कृत्य—द्विज-दम्पती*को ससम्मान उत्तराभिमुख आसनोंपर विराजमान कर दे। यदि ब्राह्मणी न आयी हो तो ब्राह्मणीके प्रतिनिधिके रूपमें कुशको ब्राह्मणके बायें भागमें विराजमान कर दे। इसके बाद दक्षिणाभिमुख रक्षादीप जलाकर आसनपर पूर्वाभिमुख बैठ जाय। शिखाबन्धन, पवित्रीकरण, पवित्री-धारण, आचमन, प्राणायाम कर ले। तदनन्तर भगवान् विष्णुका ध्यान करे—

शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् । प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

द्विजदम्पती-पूजन—दायें हाथमें त्रिकुश, तिल, जल तथा पुष्प लेकर ब्राह्मणदम्पतीके पूजनका संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे मरणोत्तर-भाविप्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वकाक्षयस्वर्गाद्युत्तमलोकप्राप्त्यर्थं करिष्यमाणशय्यादानादेः प्रतिग्रहार्थं द्विजदम्पतिपूजनं करिष्ये। कहकर संकल्पजल छोड़ दे।

‘**द्विजदम्पतिभ्यां नमः**’ इस मन्त्रसे गन्ध, अक्षत, पुष्प तथा दक्षिणा आदिसे द्विजदम्पतीकी पूजा करे।

द्विजदम्पती-वरण—जीवशय्याका दान देनेके पहले द्विजदम्पतीका वरण करे। दायें हाथमें त्रिकुश, तिल, जल, कुश और वरण-द्रव्य लेकर संकल्प बोले—

वरणसंकल्प—ॐ अद्य ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य

* यहाँ शय्यादानके प्रकरणमें द्विजदम्पतीका पूजन लिखा गया है। गौडीयश्राद्धप्रकाशके अनुसार द्विजदम्पतीका पूजन पर्वतीय और मैथिलोंकी परम्परामें है। केवल ब्राह्मणपूजनके द्वारा शय्यादानका कार्य सम्पन्न हो सकता है। अतः अपने देशाचार तथा कुलाचारके अनुसार करना चाहिये।

जीवच्छ्राद्धे श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं सोपकरणशय्याप्रतिग्रहीतृत्वेन एभिर्वरणद्रव्यैः ....गोत्रं ....शर्माणं सपत्नीकं भवन्तं वृणे।

—ऐसा बोलकर वरणद्रव्य आदिके साथ संकल्पका जल द्विजदम्पतीके हाथोंमें दे दे।

ब्राह्मणवचन—ब्राह्मणदम्पती बोलें—'**वृतौ स्वः।**'

उपभोग्य वस्तुओंके साथ प्रतिमा-दान—जीवके द्वारा उपयोगमें लानेयोग्य वस्तुओंके साथ सोनेकी बनी जीवकी प्रतिमाका दान करे। दान करनेके पूर्व प्रतिमाका पूजन इस प्रकार करना चाहिये—

प्रतिमापूजन

प्रक्षालन—सोनेकी बनी हुई जीव-प्रतिमा (कांचनपुरुष)-को कसोरेमें रखकर उसका निम्न मन्त्रसे प्रक्षालन करे—

हिमस्य त्वा जरायुणाऽग्ने परिव्ययामसि। पावको अस्मभ्यꣳ शिवो भव॥

इसके बाद प्रतिमाको अक्षतपुंज अथवा पानपर रख दे।

प्रतिष्ठा—निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर मूर्तिकी प्रतिष्ठा करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः काञ्चनपुरुष इहागच्छ, इह तिष्ठ, सुप्रतिष्ठितो वरदो भव।

कांचनपुरुषपर पाद्य, अर्घ, गन्ध आदि चढ़ाये—

पाद्य—एतत् पाद्यम्। **माला—इयं माला।**

अर्घ—अयमर्घः। **धूप—एष धूपः।**

गन्ध—एष गन्धः। **दीप—एष दीपः।**

अक्षत—इमे तिलाक्षताः।

दोना आदि किसी पात्रमें जल भरकर—'**इमां जीवप्रतिकृतिं ते ददानि**' ऐसा कहकर द्विजदम्पतीके हाथमें दे तथा दान देनेकी आज्ञा प्राप्त करे। ब्राह्मण बोले—'**ददस्व**'। तदनन्तर जीवप्रतिमा तथा ब्राह्मणपर जलसे छींटा दे। फिर संकल्प करे।

दानसंकल्प—कांचनप्रतिमा तथा जीवके द्वारा प्रयोगमें लाने योग्य वस्त्र, उपवस्त्र, वाहन, फल, पुष्प आदि सामग्रियोंके साथ दायें हाथमें त्रिकुश, जल आदि लेकर संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे शास्त्रोक्त-फलप्राप्त्यर्थमिमां जीवोपभोगयोग्योपकरणयुतां फलवस्त्रादिसमन्वितां काञ्चनमयीं जीवप्रतिकृतिं भवद्भ्यां सम्प्रददे।

—ऐसा संकल्पकर द्विजदम्पतीके हाथोंमें संकल्पजल छोड़ दे।

दक्षिणासंकल्प—दाहिने हाथमें सुवर्णखण्ड (निष्क्रयद्रव्य), त्रिकुश, तिल, जल आदि लेकर बोले—

ॐ अद्य ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे कृतस्य जीवोपभोगयोग्यवस्त्रादिसहितकाञ्चनमयजीवप्रतिकृतिदानस्य साङ्गताप्रतिष्ठासंसिद्ध्यर्थं सुवर्णं/सुवर्णनिष्क्रयद्रव्यं भवद्भ्यां सम्प्रददे।

द्रव्यसहित संकल्पका जल ब्राह्मणदम्पतीके हाथोंमें दे दे।

ब्राह्मणवचन—ब्राह्मणदम्पती बोलें—'**ॐ स्वस्ति।**'[१]

शय्यापूजन

शय्यादान करनेसे पहले शय्याका पूजन निम्नलिखित मन्त्रोंसे करे—

ॐ सोपकरणशय्यायै नमः—इस मन्त्रसे पाद्य, अर्घ, गन्ध, अक्षत, पुष्पमाला, धूप, दीप तथा नैवेद्य आदिद्वारा शय्याका पूजन करे।

पूजनको सांग बनानेके लिये हाथ जोड़कर '**प्रमाण्यै देव्यै नमः**' इस मन्त्रका उच्चारण करते हुए शय्याको प्रणाम करे और उसके बाद प्रदक्षिणा करे।[२]

ब्राह्मण और शय्या दोनोंका जलसे प्रोक्षण कर दे।

शय्यादानका संकल्प—हाथमें त्रिकुश, तिल, पुष्प, जल तथा द्रव्य लेकर शय्याकी पाटीका स्पर्श करते हुए निम्न रीतिसे संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे मरणोत्तर-भाविप्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वकस्वर्गाद्युत्तमलोकप्राप्त्यर्थं श्रुतिस्मृतिपुराणकल्पोक्तफलप्राप्त्यर्थं च यथाशक्त्यलङ्कृतां विष्णुदैवत्यां

---

१. स्वस्तिदेवी वायुपत्नी प्रतिविश्वेषु पूजिता॥ आदानं च प्रदानं च निष्फलं च यया विना। (देवीभा० ९।१।१००-१०१)

अर्थात् वायुकी पत्नी स्वस्तिदेवी सम्पूर्ण विश्वमें पूजित हैं। '**स्वस्ति**' शब्दके न बोलनेसे लेना-देना सब विफल हो जाता है।

२. शय्यां तु पूजयित्वैवं तद्भक्तो मत्परायणः। कृताञ्जलिपुटो भूत्वा कुर्याच्छय्याप्रदक्षिणाम्॥ नमः प्रमाण्यै देव्यै इति प्रणम्य चतुर्दिशि।

सोपकरणां सुपूजितामिमां शय्यां ....गोत्राय ....सपत्नीकाय ....नाम्ने भवते ब्राह्मणाय सम्प्रददे।

इस तरह संकल्प बोलकर निम्नलिखित मन्त्रोंको पढ़ते हुए ब्राह्मणको शय्या*का दान कर दे। ब्राह्मणदम्पतीके हाथसे शय्याका स्पर्श करा दे—

यथा न कृष्णशयनं शून्यं सागरजातया।
तथाऽशून्याऽस्तु जीवस्य शय्या जन्मनि जन्मनि॥
यस्मादशून्यं शयनं केशवस्य शिवस्य च।
शय्याऽशून्याऽस्तु जीवस्य तस्माज्जन्मनि जन्मनि॥

ब्राह्मणवचन—शय्या स्पर्शकर ब्राह्मण बोले—'**ॐ स्वस्ति।**'

सांगताके लिये दक्षिणा-संकल्प—दाहिने हाथमें दक्षिणाद्रव्य तथा त्रिकुश, तिल, जल लेकर संकल्प करे—

---

* शय्यादानसे जीवको तो प्रलयपर्यन्त सुख मिलता ही है और दान देनेवालेका भी अभ्युदय होता है। जीवको न तो यमदूतोंकी प्रताड़ना सहनी पड़ती है और न शीत-घाम आदि द्वन्द्व ही सहने पड़ते हैं। बस, सुख-ही-सुख प्राप्त होता है। इसी तरह दान देनेवाला व्यक्ति भी लाभ-ही-लाभ प्राप्त करता है।

(क) स्वर्गे पुरन्दरपुरे सूर्यपुत्रालये तथा। सुखं वसत्यसौ जन्तुः शय्यादानप्रभावतः॥
ताडयन्ति न तं याम्याः पुरुषा भीषणाननाः। न यमेन न शीताद्यैर्बाध्यते स नरः क्वचित्॥
अपि पापसमायुक्तः स्वर्गलोकं स गच्छति। आभूतसम्प्लवं यावत् तिष्ठत्यन्तकवर्जितः॥ (भविष्य०)

(ख) प्रदद्याद् यस्तु विप्राय शृणुयाद्वापि यत् फलम्। पुरुषः सुभगः श्रीमान् स्त्रीसहस्रैश्च संवृतः॥ दशवर्षसहस्राणि स्वर्गलोके महीयते॥

ॐ अद्य ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे शास्त्रोक्तफलप्राप्त्यर्थं कृतस्य सोपकरणशय्यादानकर्मणः साङ्गताप्रतिष्ठासंसिद्ध्यर्थमिमां दक्षिणां भवद्भ्यां सम्प्रददे।

इस तरह संकल्प बोलकर ब्राह्मणदम्पतीको दक्षिणा प्रदान करे। तदनन्तर ब्राह्मण एवं शय्याकी तीन बार प्रदक्षिणा करे, प्रणाम और क्षमायाचना करे।

भगवान्का स्मरण—हाथ जोड़कर भगवान्का स्मरण करे—

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्। स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥
यत्पादपङ्कजस्मरणाद् यस्य नामजपादपि। न्यूनं कर्म भवेत् पूर्णं तं वन्दे साम्बमीश्वरम्॥
कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुध्याऽऽत्मना वानुसृतस्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पये तत्॥
ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः।
ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। ॐ साम्बसदाशिवाय नमः।

॥ जीवशय्यादान पूर्ण हुआ॥

विविध दान

जीवशय्यादानके बाद शिविका आदि वाहन, महिषी, पुस्तक तथा कपिला गौ आदिके दान करनेकी भी विधि है। अपनी श्रद्धा और शक्तिके अनुसार निष्क्रयरूपमें भी इनका दान किया जा सकता है। हाथमें त्रिकुश, तिल, जल तथा सभी वस्तुओंका निष्क्रयद्रव्य लेकर इस प्रकार दानका संकल्प करे—

दानका संकल्प—ॐ अद्य ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे शास्त्रोक्तानां कपिलागवीवाहनमहिषीभूमिवृक्षादीनां दानजन्यफलप्राप्त्यर्थं यथाशक्तितन्निष्क्रयभूतद्रव्यं ....गोत्राय ....शर्मणे ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे। (यदि बादमें देना हो तो **दातुमुत्सृज्ये** बोले।)

सान्नोदककुम्भदान (वर्षाशन)

जीवकी क्षुधा-पिपासाकी निवृत्तिके लिये अपनी श्रद्धा और शक्तिके अनुसार वर्षभरके लिये सोपस्कर अन्न (गेहूँ, चावल, दाल, घृत, शर्करा, तेल, नमक, षड्रस आदि)-सहित जलपूर्ण घटका दान करना चाहिये। सम्भव हो तो ताम्रादि धातुका घट दे अन्यथा जलपूर्ण मिट्टीका घट दे। साथ ही वर्षभरके लिये तेल, रूई तथा एक धातुका दीपक भी दे। इन पदार्थोंके दानका संकल्प इस प्रकार है। हाथमें त्रिकुश, तिल, जल लेकर संकल्प करे—

संकल्प—ॐ अद्य ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे क्षुत्तृषादिनिवृत्तिपूर्वकाक्षयतृप्तिप्राप्त्यर्थमिमं सदीपं सोपस्करसान्नोदककुम्भं साङ्गताद्रव्यसहितं ....गोत्राय ....शर्मणे ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे, न मम।

हाथका जल सभी वस्तुओंपर छिड़क दे और वस्तुएँ ब्राह्मणको प्रदान कर दे।

ब्राह्मण स्वीकार करके बोले—'**ॐ स्वस्ति।**'

प्रार्थना—तदनन्तर निम्न प्रार्थना करे—

अनादिनिधनो देवः शङ्खचक्रगदाधरः। अक्षय्यः पुण्डरीकाक्ष जीवमोक्षप्रदो भव॥

भगवत्स्मरण—हाथ जोड़कर भगवान्‌का स्मरण करे—

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्। स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

यत्पादपङ्कजस्मरणाद् यस्य नामजपादपि। न्यूनं कर्म भवेत् पूर्णं तं वन्दे साम्बमीश्वरम्॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुध्याऽऽत्मना वानुसृतस्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पये तत्॥

ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः।

ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। ॐ साम्बसदाशिवाय नमः।

॥ जीवच्छ्राद्धान्तर्गत विविधदान पूर्ण हुआ॥

वृषोत्सर्ग

देश, काल तथा परिस्थितिके अनुसार यदि किसी कारणवश प्रत्यक्ष वृषोत्सर्ग करना सम्भव नहीं हो तो इसके लिये शास्त्रोंने विकल्परूपमें कुश, मिट्टी या जौके आटेसे वृष तथा बछिया बनाकर दान करनेकी विधि बतायी है।[१] अतः वृष-पूजनसे पूर्व ही वृष तथा एक या दो बछिया बनाकर तैयार कर ले और उन्हींका पूजनकर उत्सर्ग करे। पूजन आदिसे पूर्व निम्न मन्त्रसे अक्षत छोड़कर इनका प्रतिष्ठाकर्म कर ले—

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳ समिमं दधातु।
विश्वे देवास इह मादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ॥

जहाँ परिस्थिति अनुकूल हो, वहाँ प्रत्यक्ष वृषभका ही उत्सर्ग करना चाहिये। शास्त्रने एक वृषभके साथ एकसे अधिक बछियाओंके उत्सर्गका विधान किया है। एक बछिया भी मान्य हो सकती है।[२] तीन वर्षकी बछिया और तीन वर्षका वृषभ

---

१. (क) धर्मसिन्धुमें कहा गया है—**वृषाऽभावे मृद्भिः पिष्टैर्वा वृषभं कृत्वा होमादिविधिना वृषोत्सर्गः।**
(ख) एकादशेऽह्नि सम्प्राप्ते वृषाभावो भवेद् यदि। दर्भैः पिष्टैश्च सम्पाद्य तं वृषं मोचयेद् बुधः॥
(ग) वृषोत्सर्जनवेलायां वृषाऽभावः कथञ्चन। मृत्तिकाभिश्च दर्भैर्वा वृषं कृत्वा विमोचयेत्॥

२. यथोक्तालाभे यथालाभो द्विवर्ष एकवर्षो वा वृषः, वर्षाधिकाश्चतस्र एका वा वत्सतरी स्यात्। (धर्मसिन्धु परि० ३, उत्तरा०)
यथोक्त लक्षणोंसे युक्त वृष और वत्सतरी यदि प्राप्त न हो तो जो प्राप्त हो उसीका उत्सर्ग कर देना चाहिये। वृष एक वर्षका हो, अथवा दो वर्षका हो। बछिया एक वर्षसे अधिक की हो, वे संख्यामें चार हों अथवा एक ही हो, इनका उत्सर्ग किया जा सकता है।

उत्तम माने जाते हैं। सुलक्षणता और सुन्दरताका होना आवश्यक माना जाता है।[१] वृषभोंमें नील वृषभका अधिक महत्त्व है। नील वृषभ पारिभाषिक शब्द है। जिसका रंग लाल हो, मुख और पूँछ पीत-धवल हो एवं सींग सफेद हो, उसे नील वृषभ कहते हैं।[२] नील वृषभ उसे भी कहते हैं, जिसका सारा अंग तो श्याम हो किंतु मुख आदि श्वेत हो।[३]

वृषोत्सर्ग कहाँ करे ?—वृषोत्सर्ग घरपर न करे; क्योंकि इससे बहुत कम फल मिलता है।[४] गोकुल, तीर्थ, मनोरम निर्जन वन या पवित्र एकान्त स्थानमें करना उत्तम फलदायक माना गया है।

वृषोत्सर्ग-प्रयोगविधि

वृषोत्सर्ग मण्डपके बिना भी और मण्डप सजाकर भी होता है। यहाँ बिना मण्डप सजाये वृषोत्सर्गकी विधि लिखी जा रही है।[५]

---

१. त्रिहायनीभिर्धर्म्याभिः सुरूपाभिः सुशोभितः। (ब्रह्मपुराण)

२. लोहितो यस्तु वर्णेन मुखे पुच्छे च पाण्डुरः। श्वेतः खुरविषाणाभ्यां स नीलो वृष उच्यते॥

३. यद्वा सर्वश्यामस्य मुखादि श्वेतत्वे नीलवृषत्वम्। (धर्मसिन्धु ३, उत्तरा०)

४. (क) स त्वरण्ये भवेत् तीर्थे उत्सर्गो गोकुलेऽपि वा। (चतुर्वर्गचिन्तामणि)
   (ख) विविक्तेऽष्वेव कुर्वन्ति····। (देवल)
   (ग) अयं गृहे न कार्यः। (धर्मसिन्धु ३ उत्त०)
   (घ) न गृहे मोचयेद् विद्वान् कामयन् पुष्कलं फलम्॥ (ब्रह्मपुराण)

५. मण्डपाच्छादन करके वृषोत्सर्ग करना हो तो उसकी विधि गीताप्रेससे प्रकाशित अन्त्यकर्म-श्राद्धप्रकाश पुस्तककी पृ०-संख्या ४१० पर देखनी चाहिये।

जहाँ वृषोत्सर्ग करना हो, वह भूमि पूर्व या उत्तरकी ओर ढालू हो।* गोबरसे लिपी-पुती हो। आवश्यक सामग्रियोंके साथ इस स्थानपर पूर्वकी ओर मुँहकर आसनपर बैठ जाय। शिखा बाँध ले, यदि बँधी हो तो स्पर्श कर ले। पवित्री पहन ले, आचमन और प्राणायाम करे। कर्मपात्र बना ले। इससे जल निकालकर बायें हाथमें रख ले। फिर दायें हाथकी अँगुलियोंके अग्रभागसे निम्नलिखित मन्त्रको पढ़ता हुआ अपने ऊपर और सामग्रियोंपर विष्णुका स्मरण करता हुआ जलका छींटा दे—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा । यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु। ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु। ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

वृषोत्सर्गका प्रतिज्ञासंकल्प—दाहिने हाथमें त्रिकुश, तिल और जल लेकर वृषोत्सर्गके लिये संकल्प करे—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः नमः परमात्मने पुरुषोत्तमाय ॐ तत्सत् अद्यैतस्य विष्णोराज्ञया जगत्सृष्टिकर्मणि प्रवर्तमानस्य ब्रह्मणो द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे तत्प्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे ....क्षेत्रे (यदि काशी हो तो **अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रे गौरीमुखे त्रिकण्टकविराजिते महाश्मशाने भगवत्या उत्तरवाहिन्या भागीरथ्या वामभागे) बौद्धावतारे ....नाम संवत्सरे उत्तरायणे/दक्षिणायने ....ऋतौ ....मासे ....पक्षे ....तिथौ ....वासरे ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहम् ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे मरणोत्तरभाविप्रेतत्वविमुक्तिपूर्वकविष्णवाद्युत्तमलोकप्राप्त्यर्थं वृषोत्सर्गकर्म करिष्ये।** संकल्पका

* प्रागुदक्प्रवणे देशे मनोज्ञे निर्जने वने। (ब्रह्मपुराण) वृषोत्सर्गः कार्य इति शेषः। (हेमाद्रि, श्राद्धकल्प अ० २०)

जल छोड़ दे।

संकल्पके अनन्तर भूमिसहित भगवान् लक्ष्मीनारायणका '**भूमिसहिताय लक्ष्मीनारायणाय नमः**' इस नाममन्त्रसे षोडशोपचार अथवा पंचोपचार पूजन कर लेना चाहिये।

ईशानकोणमें रुद्र-कलश-स्थापन—विष्णुपूजनके बाद ईशानकोणमें रुद्रकलशकी स्थापना करनेके लिये कलशमें रोलीसे स्वस्तिक बनाकर उसके गलेमें तीन धागेवाली मौली लपेटे और उस कलशको पूजित भूमिपर सप्तधान्य (जौ, धान, तिल, कँगनी, मूँग, चना तथा साँवाँ) अथवा गेहूँ, चावल या जौपर स्थापित कर दे। कलशमें जल, चन्दन, दूर्वा, द्रव्य, पुष्प, सुपारी आदि छोड़ दे। पंचपल्लव छोड़े, कलशको वस्त्रसे अलंकृत कर दे। तदनन्तर चावलसे भरे एक पात्रको कलशके ऊपर रखे और उसपर लाल वस्त्रसे वेष्टित नारियल रख दे।

तत्पश्चात् कलशमें वरुण आदि देवताओंका आवाहन करे। सर्वप्रथम दाहिने हाथमें अक्षत लेकर कलशके अधिष्ठातृदेव भगवान् वरुणका निम्न मन्त्रसे आवाहन करे—

ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशꣳस मा न आयुः प्र मोषीः॥

ॐ अपाम्पतये वरुणाय नमः—कहकर अक्षत-पुष्प कलशपर छोड़ दे। तदनन्तर अन्य देवोंका आवाहन निम्न मन्त्रोंको पढ़ते हुए करे—

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः। मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः॥
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः। अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा॥
आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः।
गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् संनिधिं कुरु॥
सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः। आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः॥

नवग्रहोंका भी आवाहनकर पूजन करे।

अक्षत-पुष्प लेकर निम्न मन्त्रसे कलश तथा आवाहित देवताओंकी प्रतिष्ठा करे—

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञᳬ समिमं दधातु।
विश्वे देवास इह मादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ॥
एष वै प्रतिष्ठानां यज्ञो यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते सर्वं मे प्रतिष्ठितं भवति।

तदनन्तर '**ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः**' इस मन्त्रसे गन्ध, अक्षत, धूप, दीप, नैवेद्य आदिसे कलशका पूजन करे और पुष्पांजलि देकर प्रणाम निवेदन करे।

कलशपर रुद्रकी पूजा—कलशपर भगवान् रुद्रकी ताम्र अथवा स्वर्णमूर्तिकी स्थापनाकर पूजा करनी चाहिये। कलशपर मूर्तिस्थापनके पहले अग्न्युत्तारण और प्राणप्रतिष्ठा करना आवश्यक होता है।

अग्न्युत्तारण—हाथमें त्रिकुश, तिल, जल लेकर संकल्प करे—

ॐ अद्य पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ……गोत्रः ……शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहम् ……गोत्रस्य ……जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे मरणोत्तरभाविप्रेतत्वविमुक्तिपूर्वकविष्णवाद्युत्तमलोकप्राप्त्यर्थं शास्त्रोक्तफलप्राप्त्यर्थं श्रीरुद्रदेवताप्रीतिद्वारा सकलाभीष्टसिद्ध्यर्थं च क्रियमाणे वृषोत्सर्गकर्मणि रुद्रप्रतिमायाः अवघातादिदोषपरिहारार्थं अग्न्युत्तारणपूर्वकरुद्रमूर्तिप्राणप्रतिष्ठां करिष्ये। इस प्रकार संकल्पकर जल गिरा दे।

इसके बाद रुद्रकी ताम्रमयी या स्वर्णमयी प्रतिमाको पात्रमें रखकर घृतसे उसका लेपन कर दे तथा जल और दूधकी धारासे निम्न मन्त्रोंको पढ़ता हुआ मूर्तिको स्नान कराये—

ॐ समुद्रस्य त्वाऽवकयाग्ने परि व्ययामसि। पावको अस्मभ्यꣳ शिवो भव॥

ॐ हिमस्य त्वा जरायुणाऽग्ने परि व्ययामसि। पावको अस्मभ्यꣳ शिवो भव॥

ॐ उप ज्मन्नुप वेतसेऽव तर नदीष्वा। अग्ने पित्तमपामसि मण्डूकि ताभिरा गहि।
सेमं नो यज्ञं पावकवर्णꣳ शिवं कृधि॥

ॐ अपामिदं न्ययनꣳ समुद्रस्य निवेशनम्।
अन्याँस्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्यꣳ शिवो भव॥

ॐ अग्ने पावक रोचिषा मन्द्रया देव जिह्वया। आ देवान् वक्षि यक्षि च॥

ॐ स नः पावक दीदिवोऽग्ने देवाँ२ इहा वह। उप यज्ञꣳ हविश्च नः॥

ॐ पावकया यश्चितयन्त्या कृपा क्षामन् रुरुच उषसो न भानुना।
तूर्वन् न यामन्नेतशस्य नू रण आ यो घृणे न ततृषाणो अजरः॥
ॐ नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते अस्त्वर्चिषे।
अन्याँस्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्यꣳ शिवो भव॥
ॐ नृषदे वेडप्सुषदे वेड् बर्हिषदे वेड् वनसदे वेट् स्वर्विदे वेट्॥
ॐ ये देवा देवानां यज्ञिया यज्ञियानाꣳ संवत्सरीणमुप भागमासते।
अहुतादो हविषो यज्ञे अस्मिन्त्स्वयं पिबन्तु मधुनो घृतस्य॥
ये देवा देवेष्वधि देवत्वमायन् ये ब्रह्मणः पुर एतारो अस्य।
येभ्यो न ऋते पवते धाम किञ्चन न ते दिवो न पृथिव्या अधि स्नुषु॥
ॐ प्राणदा अपानदा व्यानदा वर्चोदा वरिवोदाः।
अन्याँस्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्यꣳ शिवो भव॥

प्राणप्रतिष्ठा—हाथमें अक्षत, फूल लेकर निम्न मन्त्र बोलकर रुद्रप्रतिमाकी प्राणप्रतिष्ठा करे—

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳ समिमं दधातु।
विश्वे देवास इह मादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ॥

एष वै प्रतिष्ठानां यज्ञो यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते सर्वं मे प्रतिष्ठितं भवति।

षोडश संस्कार—अब रुद्रमूर्तिका फिर स्पर्श करते हुए सोलह बार '**ॐ**' मन्त्रका जप करे। हाथमें जल, अक्षत

लेकर बोले—**ॐ अनेनास्या रुद्रदेवताप्रतिमाया गर्भाधानादित्रेताग्निसंग्रहान्ताः षोडशसंस्काराः**[१] **सम्पद्यन्ताम्।**

इसके बाद जल, अक्षत छोड़कर इस प्रकार बोले—

ॐ वृत्रस्यासि कनीनकश्चक्षुर्दा असि चक्षुर्मे देहि।

रुद्रपूजन[२]

आवाहन—हाथमें फूल लेकर प्रतिमामें रुद्रदेवताका आवाहन निम्न मन्त्रसे करे—

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणादिदेवतासहिताय साङ्गाय सायुधाय सपरिवाराय रुद्राय नमः, रुद्र इहागच्छ इह तिष्ठ रुद्रमावाहयामि। मूर्तिके पास पुष्प रख दे।

आसन—ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणादिदेवतासहिताय साङ्गाय सायुधाय सपरिवाराय रुद्राय नमः, आसनं समर्पयामि। आसन प्रदान करे।

पाद्य—ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणादिदेवतासहिताय साङ्गाय सायुधाय सपरिवाराय रुद्राय नमः, पादयोः पाद्यं समर्पयामि। जल चढ़ा दे।

---

१. गर्भाधानं पुंसवनं सीमन्तो जातकर्म च। नामक्रियानिष्क्रमणेऽन्नप्राशनं वपनक्रिया:॥
कर्णवेधो व्रतादेशो वेदारम्भक्रियाविधिः। केशान्तः स्नानमुद्वाहो विवाहाग्निपरिग्रहः॥
त्रेताग्निसंग्रहश्चेति संस्काराः षोडशस्मृताः॥ (व्यासस्मृति १। १३—१५)

२. यदि समयाभाव हो तो '**रुद्राय नमः**' केवल इस नाममन्त्रसे पूजन किया जा सकता है।

अर्घ—ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणादिदेवतासहिताय साङ्गाय सायुधाय सपरिवाराय रुद्राय नमः, हस्तयोरर्घं समर्पयामि। जल चढ़ा दे।

आचमन—ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणादिदेवतासहिताय साङ्गाय सायुधाय सपरिवाराय रुद्राय नमः, आचमनीयं जलं समर्पयामि। पुनः जल चढ़ाये।

स्नान—ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणादिदेवतासहिताय साङ्गाय सायुधाय सपरिवाराय रुद्राय नमः, स्नानीयं जलं समर्पयामि। स्नानके लिये जल चढ़ाये।

आचमन—स्नानके बाद आचमनीय जल निम्न मन्त्रसे चढ़ाये—

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणादिदेवतासहिताय साङ्गाय सायुधाय सपरिवाराय रुद्राय नमः, स्नानाङ्गमाचमनीयं जलं समर्पयामि।

पंचामृतस्नान—ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणादिदेवतासहिताय साङ्गाय सायुधाय सपरिवाराय रुद्राय नमः, पञ्चामृतस्नानं जलं च समर्पयामि। पंचामृतसे स्नान कराये।

शुद्धोदकस्नान—ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणादिदेवतासहिताय साङ्गाय सायुधाय सपरिवाराय रुद्राय नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदक स्नानके लिये जल चढ़ाये।

आचमन—ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणादिदेवतासहिताय साङ्गाय सायुधाय सपरिवाराय रुद्राय नमः, शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। जल चढ़ाये।

वस्त्र—ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणादिदेवतासहिताय साङ्गाय सायुधाय सपरिवाराय रुद्राय नमः, वस्त्रं समर्पयामि। वस्त्र चढ़ाये।

आचमन—ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणादिदेवतासहिताय साङ्गाय सायुधाय सपरिवाराय रुद्राय नमः, वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। आचमनके लिये जल चढ़ाये।

यज्ञोपवीत—ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणादिदेवतासहिताय साङ्गाय सायुधाय सपरिवाराय रुद्राय नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि। यज्ञोपवीत चढ़ाये।

आचमन—ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणादिदेवतासहिताय साङ्गाय सायुधाय सपरिवाराय रुद्राय नमः, यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। आचमनके लिये जल चढ़ाये।

उपवस्त्र—ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणादिदेवतासहिताय साङ्गाय सायुधाय सपरिवाराय रुद्राय नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि। उपवस्त्र चढ़ा दे।

आचमन—ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणादिदेवतासहिताय साङ्गाय सायुधाय सपरिवाराय रुद्राय नमः, उपवस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। जल चढ़ा दे।

चन्दन—ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणादिदेवतासहिताय साङ्गाय सायुधाय सपरिवाराय रुद्राय नमः, चन्दनं समर्पयामि। चन्दन चढ़ाये।

अक्षत—ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणादिदेवतासहिताय साङ्गाय सायुधाय सपरिवाराय रुद्राय नमः, अक्षतान्

समर्पयामि। अक्षत चढ़ाये।

पुष्पमाला—ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणादिदेवतासहिताय साङ्गाय सायुधाय सपरिवाराय रुद्राय नमः, पुष्पमालां समर्पयामि। पुष्पमाला चढ़ाये।

परिमलद्रव्य—ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणादिदेवतासहिताय साङ्गाय सायुधाय सपरिवाराय रुद्राय नमः, नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि। हल्दी-रोरी आदि परिमल-द्रव्य चढ़ाये।

इत्र—ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणादिदेवतासहिताय साङ्गाय सायुधाय सपरिवाराय रुद्राय नमः, सुगन्धितद्रव्यं (इत्रम्) समर्पयामि। इत्र आदि चढ़ाये।

धूप—ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणादिदेवतासहिताय साङ्गाय सायुधाय सपरिवाराय रुद्राय नमः, धूपमाघ्रापयामि। धूप आघ्रापित करे।

दीप—ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणादिदेवतासहिताय साङ्गाय सायुधाय सपरिवाराय रुद्राय नमः, दीपं दर्शयामि। दीपक दिखानेके बाद '**हृषीकेशाय नमः**' कहकर हाथ धो ले।

नैवेद्य—नैवेद्यको प्रोक्षितकर पुष्पसे आच्छादित करे। तदनन्तर जलसे चतुष्कोण घेरा लगाकर भगवान्‌के आगे रखे—

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणादिदेवतासहिताय साङ्गाय सायुधाय सपरिवाराय रुद्राय नमः, नैवेद्यं निवेदयामि।

आचमन—नैवेद्यके बाद आचमनीय जलके लिये निम्नलिखित मन्त्र बोलकर जल चढ़ाये—

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणादिदेवतासहिताय साङ्गाय सायुधाय सपरिवाराय रुद्राय नमः, नैवेद्यान्ते आचमनीयम्,

मुखहस्तप्रक्षालनार्थं च जलं समर्पयामि।

करोद्वर्तन—ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणादिदेवतासहिताय साङ्गाय सायुधाय सपरिवाराय रुद्राय नमः, करोद्वर्तनं समर्पयामि। दोनों हाथकी अनामिकाओं और अँगूठोंसे चन्दन चढ़ाये।

ताम्बूल—ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणादिदेवतासहिताय साङ्गाय सायुधाय सपरिवाराय रुद्राय नमः, ताम्बूलं समर्पयामि। ताम्बूल चढ़ाये।

द्रव्यदक्षिणा—ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणादिदेवतासहिताय साङ्गाय सायुधाय सपरिवाराय रुद्राय नमः, द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि। द्रव्यदक्षिणा प्रदान करे।

आरती—ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणादिदेवतासहिताय साङ्गाय सायुधाय सपरिवाराय रुद्राय नमः, आरार्तिकं समर्पयामि। ऐसा कहते हुए कर्पूर जलाकर आरती करे, बादमें थोड़ा जल आरतीके चारों ओर गिरा दे।

पुष्पांजलि—दोनों हाथोंमें फूल लेकर निम्न मन्त्रसे पुष्पांजलि समर्पित करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणादिदेवतासहिताय साङ्गाय सायुधाय सपरिवाराय रुद्राय नमः, पुष्पांजलिं समर्पयामि।

इसके बाद हाथमें फूल लेकर प्रदक्षिणा और नमस्कार करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणादिदेवतासहिताय साङ्गाय सायुधाय सपरिवाराय रुद्राय नमः, प्रार्थनापूर्वकं नमस्कारं समर्पयामि।

होमकृत्य

होमके लिये कलशके पश्चिमभागमें एक हाथ लम्बी तथा एक हाथ चौड़ी वेदी बनाकर आचार्य तथा ब्रह्मा आदिका वरण करे। त्रिकुश, तिल, जल तथा वरण-सामग्री लेकर आचार्यका वरण करे—

आचार्यवरणका संकल्प—ॐ अद्य पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे वृषोत्सर्गाङ्गभूतहवनकर्मणि आचार्यत्वेन ....गोत्रं ....शर्माणं भवन्तं वृणे। वरण-सामग्री आचार्यको दे दे।

आचार्य बोले—'वृतोऽस्मि।'

प्रार्थना—जीवच्छ्राद्धकर्ता हाथ जोड़कर आचार्यकी प्रार्थना करे—

आचार्यस्तु यथा स्वर्गे शक्रादीनां बृहस्पतिः। तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् आचार्यो भव सुव्रत॥

ब्रह्माके वरणका संकल्प—ब्रह्माके लिये ब्राह्मणके अभावमें कुशका ब्रह्मा बना लें। ब्रह्माको* वेदीके दक्षिण उत्तराभिमुख आसनपर बैठाकर हाथमें त्रिकुश, तिल, जल तथा वरण-सामग्री लेकर उनके वरणका संकल्प करे—

ॐ अद्य पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहम् ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे वृषोत्सर्गाङ्गभूतहवनकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्मकर्तृत्वेन

---

* पचास कुशोंद्वारा ब्रह्मा बनाये—**पञ्चाशत् कुशैर्ब्रह्मा तदर्धेन तु विष्टरः। ऊर्ध्वकेशो भवेद् ब्रह्मा लम्बकेशश्च विष्टरः॥ दक्षिणावर्तको ब्रह्मा वामावर्तस्तु विष्टरः॥**

....**गोत्रं ....शर्माणं भवन्तं वृणे।** वरण-सामग्री ब्रह्माको दे दे।

ब्रह्मा बोले—'**वृतोऽस्मि।**'

ब्रह्मा आदेश दे—'**यथाविहितं कर्म कुरु।**'

ब्रह्माकी आज्ञा शिरोधार्यकर बोले—'**करवाणि।**'

इसके बाद जीवच्छ्राद्धकर्ता हाथ जोड़कर ब्रह्माकी प्रार्थना करे—

यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा इन्द्रादीनां बृहस्पतिः । तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् ब्रह्मा भव द्विजोत्तम॥

होताके वरणका संकल्प—होताको उत्तराभिमुख बैठाकर त्रिकुश, जल, पुष्प, अक्षत, चन्दन, ताम्बूल, वस्त्रादि तथा वरण-सामग्री लेकर उनके वरणका संकल्प करे—

ॐ अद्य पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहम् ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे वृषोत्सर्गाङ्गभूतहवनकर्मणि होमकर्तृत्वेन ....गोत्रं ....शर्माणं भवन्तं वृणे। वरण-सामग्री होताको दे दे।

होता बोले—'**वृतोऽस्मि।**'

वरणकर्ता प्रार्थना करे—'**यथाविहितं कर्म कुरुष्व।**'

होता उत्तर दे—'**यथाज्ञानं करवाणि।**'

इसके बाद होता पूर्वाभिमुख बैठकर आचमनकर होमकी तैयारी करे। पहलेसे बनायी गयी वेदीको निम्नलिखित विधिसे

संस्कृत करे—

हवनके लिये पायस एवं चरुका निर्माण

हवनके लिये पायस एवं चरुका निर्माण करनेके लिये पायस (चावलकी खीर) तथा जौके आटेका पिष्टचरु बना ले। घृताहुतियोंके लिये गोघृत भी रख ले। स्थण्डिल (कुण्ड)-की उत्तर दिशामें प्रादेश (तर्जनीसे अँगूठेकी लम्बाई)-मात्र असंचर देशका परित्यागकर पत्तों या कुशोंपर चतुष्कोण प्रणीतापात्र रख दे तथा उसके पश्चिम पत्तों या कुशोंके आसनपर प्रोक्षणीपात्र रख दे।

पंच-भूसंस्कार—वेदीके निम्नलिखित पाँच संस्कार करने चाहिये—

(१) तीन कुशोंसे वेदी अथवा ताम्रकुण्डका दक्षिणसे उत्तरकी ओर परिमार्जन करे तथा उन कुशोंको ईशान-दिशामें फेंक दे **(दर्भैः परिसमुह्य)**। (२) वेदीको गोबर और जलसे लीप दे **(गोमयोदकेनोपलिप्य)**। (३) स्रुवा अथवा कुशमूलसे पश्चिमसे पूर्वकी ओर प्रादेशमात्र (दस अंगुल लम्बी) तीन रेखाएँ दक्षिणसे प्रारम्भकर उत्तरकी ओर खींचे **(स्रुवमूलेन अथवा कुशमूलेन त्रिरुल्लिख्य)**। (४) उल्लेखनक्रमसे दक्षिण अनामिका और अँगूठेसे रेखाओंपरसे मिट्टी निकालकर बायें हाथमें तीन बार रखकर पुनः सब मिट्टी दाहिने हाथमें रख ले और उसे उत्तरकी ओर फेंक दे **(अनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां मृदमुद्धृत्य)**। (५) पुनः जलसे कुण्ड या स्थण्डिलको सींच दे **(उदकेनाभ्युक्ष्य)**।

अग्निस्थापन—इस प्रकार पंच-भूसंस्कार करके पवित्र अग्नि अपने दक्षिणकी ओर रखे और उस अग्निसे थोड़ा क्रव्याद अंश निकालकर नैर्ऋत्यकोणमें रख दे। पुनः सामने रखी पवित्र अग्निको कुण्ड या स्थण्डिलपर निम्न मन्त्रसे स्थापित

करे—

ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे। देवाँ२ आ सादयादिह॥

कुशास्तरण—अग्नि-स्थापनके पश्चात् कुशोंसे परिस्तरण करे (कुश बिछाये)। कुण्ड या स्थण्डिलके पूर्व उत्तराग्र तीन कुश रखे। दक्षिणभागमें पूर्वाग्र तीन कुश रखे। पश्चिमभागमें उत्तराग्र तीन कुश रखे। उत्तरभागमें पूर्वाग्र तीन कुश रखे।

अग्निको बाँसकी नलीसे प्रज्वलित करे। इसके बाद अग्निका ध्यान करे और गन्धाक्षत-पुष्पसे अग्निकी पूजा करे—

ॐ साहसनामाग्नये नमः, सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि। कहकर गन्ध, अक्षत, पुष्प चढ़ाये तथा हाथ जोड़ ले।

होमप्रक्रिया

दाहिना घुटना जमीनपर टिका ले।* स्रुवाको दाहिने हाथमें पकड़कर उससे कटोरेमेंसे घी लेकर निम्नलिखित मन्त्रको पढ़कर एक-एक आहुति दे। प्रत्येक आहुतिके बाद स्रुवामेंसे एक बूँद घी प्रोक्षणीपात्रमें डालता जाय—

(१) घृताहुति—

१. ॐ इह रतिः स्वाहा; इदमग्नये, न मम।

२. ॐ इह रमध्वं स्वाहा; इदमग्नये, न मम।

---

* दक्षिणजान्वाच्य।

३. ॐ इह धृतिः स्वाहा; इदमग्नये, न मम।

४. ॐ इह स्वधृतिः स्वाहा; इदमग्नये, न मम।

५. ॐ उपसृजन् धरुणं मात्रे धरुणो मातरंधयन् स्वाहा; इदमग्नये, न मम।

६. ॐ रायस्पोषमस्मासु दीधरत् स्वाहा; इदमग्नये, न मम।

इस प्रकार घृत-आहुतियोंके बाद होता प्रजापतिका ध्यानकर निम्न मन्त्रोंका मनमें उच्चारणकर घृतसे आहुतियाँ दे—

१. ॐ प्रजापतये स्वाहा; इदं प्रजापतये, न मम। (अग्निके उत्तरभागमें)।

२. ॐ इन्द्राय स्वाहा; इदमिन्द्राय, न मम। (अग्निके दक्षिणभागमें)।

३. ॐ अग्नये स्वाहा; इदमग्नये, न मम। (अग्निके उत्तर-पूर्वभागमें)।

४. ॐ सोमाय स्वाहा, इदं सोमाय, न मम। (अग्निके दक्षिणभागमें)।

(२) चरुसे आहुति—इसके बाद नौ देवताओंको चरु (खीर)-की आहुति नीचे लिखे मन्त्रोंसे दे—

१. ॐ अग्नये स्वाहा; इदमग्नये, न मम।

२. ॐ रुद्राय स्वाहा; इदं रुद्राय, न मम।

३. ॐ शर्वाय स्वाहा; इदं शर्वाय, न मम।

४. ॐ पशुपतये स्वाहा; इदं पशुपतये, न मम।

५. ॐ उग्राय स्वाहा; इदमुग्राय, न मम।

६. ॐ अशनये स्वाहा; इदमशनये, न मम।

७. ॐ भवाय स्वाहा; इदं भवाय, न मम।

८. ॐ महादेवाय स्वाहा; इदं महादेवाय, न मम।

९. ॐ ईशानाय स्वाहा; इदमीशानाय, न मम।

(३) पिष्टचरुसे हवन—जौके आटेकी बनी चरुकी एक आहुति पूषा देवताको दे। यदि चरु ठोस हो गया हो तो हाथसे आहुति दे। द्रवीभूत रहनेपर स्रुवासे दे। मन्त्र इस प्रकार है—

ॐ पूषा गा अन्वेतु नः पूषा रक्षत्वर्वतः। पूषा वाजं सनोतु नः स्वाहा॥ इदं पूष्णे, न मम।

(४) खीर और आटेसे बने चरुकी आहुति—पायस, घृत तथा पिष्ट चरुको स्रुवामें रखकर खड़ा हो जाय और निम्नलिखित मन्त्र बोलकर स्विष्टकृत् नामक हवन करे—

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा; इदमग्नये स्विष्टकृते, न मम।

(५) घीकी आहुति—इसके बाद बैठ जाय। स्रुवामें घी लेकर निम्न मन्त्रोंको बोलते हुए हवन करे। प्रत्येक आहुतिके अन्तमें हवनसे बचे हुए घीको प्रोक्षणीमें डालता जाय—

१. ॐ भूः स्वाहा; इदमग्नये, न मम।

२. ॐ भुवः स्वाहा; इदं वायवे, न मम।

३. ॐ स्वः स्वाहा; इदं सूर्याय, न मम।

४. ॐ त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा

द्वेषाꣳसि प्र मुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा॥ इदमग्नीवरुणाभ्याम्; न मम।

५. ॐ स त्वं नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ। अव यक्ष्व नो वरुणꣳरराणो वीहि मृडीकꣳ सुहवो न एधि स्वाहा॥ इदमग्नीवरुणाभ्याम् ; न मम।

६. ॐ अयाश्चाग्ने ऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्त्वमया असि। अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषजꣳ स्वाहा॥

इदमग्नये अयसे; न मम।

७. ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्त्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः। तेभिर्नो ऽअद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा॥ इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च; न मम।

८. ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमꣳ श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा॥ इदं वरुणायादित्यायादितये; न मम।

तदनन्तर प्रजापतिदेवताका ध्यानकर मनमें निम्न मन्त्रका उच्चारणकर आहुति दे—

९. ॐ प्रजापतये स्वाहा; इदं प्रजापतये, न मम।

भस्मधारण—निम्नलिखित मन्त्रोंको पढ़ता हुआ स्त्रुवासे हवनवेदीका भस्म लेकर दाहिने हाथकी अनामिकाके अग्रभागसे उन-उन अंगोंपर भस्म लगाये—

ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः। (ललाटपर)

ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम्। (कण्ठपर)

ॐ यद् देवेषु त्र्यायुषम्। (दाहिनी बाहुपर)

ॐ तन्नोऽस्तु त्र्यायुषम्। (हृदयपर)

संस्त्रवप्राशन—इसके बाद प्रोक्षणीपात्रमें गिराये गये घृतका प्राशन करे। बादमें आचमन कर ले।

मार्जन—प्रणीतापात्रमें रखे हुए पवित्रोंसे मुखका मार्जनकर उन पवित्रोंको अग्निमें डाल दे।

ब्रह्माको पूर्णपात्रदान—दक्षिणा, त्रिकुश, तिल, जल तथा पूर्णपात्र लेकर निम्न संकल्प बोलकर ब्रह्माको दे दे—

संकल्प—ॐ अद्य यथोक्तगुणविशिष्टतिथ्यादौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहम् ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य कृतैतज्जीवच्छ्राद्धसम्बन्धिवृषोत्सर्गाङ्गभूतहोमकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं पूर्णपात्रसहितम् इमं वृषम्/वृषनिष्क्रयद्रव्यं कृताकृतावेक्षणकर्त्रे ब्रह्मणे ....गोत्राय ....शर्मणे भवते सम्प्रददे। पूर्णपात्र ब्रह्माको दे दे।

ब्रह्मा बोले—ॐ स्वस्ति।

अग्निके पश्चिम अथवा ईशानकोणपर प्रणीताको उलटकर रख दे। तदनन्तर निम्नलिखित मन्त्र बोलते हुए कुशोंके द्वारा मार्जन करे—

ॐ आपः शिवाः शिवतमा शान्ताः शान्तममाध्व कृण्वन्तु भेषजम्।

मार्जन करनेके बाद कुशोंको अग्निमें डाल दे।

दक्षिणादान—इसके बाद जीवच्छ्राद्धकर्ता आचार्य तथा होता आदिको हाथमें त्रिकुश, तिल, जल तथा दक्षिणा लेकर निम्न संकल्प बोलकर दक्षिणा दे—

आचार्य-दक्षिणादानका संकल्प—ॐ अद्य ····गोत्रः ····शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहम् ····गोत्रस्य ····जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे वृषोत्सर्गाङ्गभूतहोमकर्मणः प्रतिष्ठार्थं दक्षिणाद्रव्यं ····गोत्राय ····शर्मणे आचार्याय भवते सम्प्रददे। कहकर दक्षिणा आचार्यको दे दे।

आचार्य बोले—ॐ स्वस्ति।

होता-दक्षिणादानका संकल्प—ॐ अद्य ····गोत्रः ····शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहम् ····गोत्रस्य ····जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे वृषोत्सर्गाङ्गभूतहोमकर्मणः प्रतिष्ठार्थं दक्षिणाद्रव्यं ····गोत्राय ····शर्मणे होत्रे भवते सम्प्रददे। कहकर दक्षिणा होताको दे दे।

होता बोले—ॐ स्वस्ति।

इसके बाद कुशमें दी गयी ब्रह्मग्रन्थि खोल दे।

वृष तथा वत्सतरीका अभिमन्त्रण

निम्न रुद्रसूक्त*का पाठ करते हुए वृष तथा वत्सतरीका अभिमन्त्रण करे—

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः॥ १ ॥

---

* रुद्रसूक्तश्रावणकर्म देशाचारकी व्यवस्था है।

ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि॥ २ ॥
ॐ यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे। शिवां गिरित्र तां कुरु मा हिꣳसीः पुरुषं जगत्॥ ३ ॥
ॐ शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामसि। यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मꣳ सुमना असत्॥ ४ ॥
ॐ अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्। अहीँश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च यातुधान्योऽधराचीः परा सुव॥ ५ ॥
ॐ असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः। ये चैनꣳ रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशोऽवैषाꣳ हेड ईमहे॥ ६ ॥
ॐ असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः। उतैनं गोपा अदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्यः स दृष्टो मृडयाति नः॥ ७ ॥
ॐ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे। अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नमः॥ ८ ॥
ॐ प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरार्त्न्योर्ज्याम्। याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो वप॥ ९ ॥
ॐ विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ२ उत। अनेशन्नस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गधिः॥ १० ॥
ॐ या ते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः। तयाऽस्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परि भुज॥ ११ ॥
ॐ परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः। अथो य इषुधिस्तवारे अस्मन्नि धेहि तम्॥ १२ ॥
ॐ अवतत्य धनुष्ट्वꣳ सहस्राक्ष शतेषुधे। निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव॥ १३ ॥
ॐ नमस्त आयुधायानातताय धृष्णवे। उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने॥ १४ ॥

ॐ मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम्।
मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः॥ १५ ॥

ॐ मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः।
मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित् त्वा हवामहे॥ १६॥

वृष और वत्सतरी (बछिया)-का पूजन*

अंकन—पूजनके पहले वृष और वत्सतरी (बछिया)-को वेदीके उत्तरभागमें उत्तराभिमुख खड़ा कर दे। प्रत्यक्ष न हो तो पिष्टीसे बने वृष तथा बछियाको यथास्थान रख दे। पुनः निम्नलिखित मन्त्रसे वृषभके पिछले दायें पैरके ऊपरी भागमें लाल चन्दन या कुमकुमसे निम्न मन्त्र पढ़ते हुए त्रिशूल बना दे—

मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः।
मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित् त्वा हवामहे॥

नीचे लिखे मन्त्रसे पिछले बायें पुट्ठेपर लाल चन्दन आदिसे चक्र बना दे—

---

* जहाँ प्रत्यक्ष वृष और वत्सतरी (बछिया) उपलब्ध न हों, वहाँ जौके आटे अथवा मिट्टी-कुशसे वृष और वत्सतरी पहलेसे बना लेने चाहिये तथा प्रत्यक्ष वृष-वत्सतरीके स्थानपर पूजनमें इन्हींको स्थापित कर लेना चाहिये।

किसी पत्तल अथवा काष्ठ आदिके आसनपर बायीं ओर बछिया तथा दाहिनी ओर वृषभको स्थापित करे। यदि दो बछिया बनायी गयी हो तो वृषके दोनों ओर एक-एक बछिया रखनी चाहिये। निम्न मन्त्र बोलते हुए अक्षत छोड़कर उनकी प्रतिष्ठा करे—

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳ समिमं दधातु। विश्वे देवास इह मादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ॥

भगवन् वृष अस्यां मूर्तौ त्वं सुप्रतिष्ठितो वरदो भव। भगवति वत्सतरि अस्यां मूर्तौ सुप्रतिष्ठिता वरदा भव।

(दो बछिया होनेपर) **भगवत्यौ वत्सतर्यौ अनयोः मूर्त्योः सुप्रतिष्ठिते वरदे भवतम्।**

वृषा ह्यसि भानुना द्युमन्तं त्वा हवामहे। पवमानः स्वर्दृशः॥

प्रत्यक्ष वृष होनेपर लोहारद्वारा गरम किये गये त्रिशूल तथा चक्रसे अंकन कराये,[१] चन्दन-चिह्नित स्थानोंपर क्रमशः त्रिशूल और चक्र दगवा दे।[२]

रुद्रकलशके जलसे मार्जनात्मक स्नान—निम्न मन्त्रोंको पढ़ते हुए पूर्वस्थापित रुद्रकलशके जलसे वृष और बछियाको मार्जनात्मक स्नान कराये[३]—

हिरण्यवर्णाः शुचयः पावका यासु जातः कश्यपो यास्विन्द्रः।

---

१. ये अंकन उत्तर प्रदेशके आचारके अनुसार दिये गये हैं। गरुडपुराणमें लिखा है—'**त्रिशूलं दक्षिणे पार्श्वे वामे चक्रं तु विन्यसेत्।**' किंतु शास्त्रोंमें भिन्न-भिन्न मत पाये जाते हैं—

(क) 'वामे त्रिशूलं दक्षिणे चक्रम्।' (विष्णुधर्मोत्तरपुराण)

(ख) ततोऽरुणेन गन्धेन मानस्तोक इतीरयन्। वृषस्य दक्षिणे पार्श्वे त्रिशूलाङ्कं समुल्लिखेत्॥
वृषा ह्यसीति सव्येऽस्य चक्राङ्कमपि दर्शयेत्॥ (शु०तत्त्व, छन्दो० परिशिष्ट वचन)

(ग) बह्वृचपद्धतिके अनुसार दोनों अंकन पिछले दोनों पुट्ठोंपर ही होते हैं। (अन्त्यकर्मदीपक)

(घ) तप्तेन धातुना पश्चादयस्कारोऽङ्कयेद् वृषम्। सव्ये स्फिचि लिखेच्चक्रं शूलं बाहौ तु दक्षिणे। कुङ्कुमेनाङ्कमित्यादौ ब्राह्मणः सुसमाहितः॥ (सौरपु०)

ये भिन्नताएँ शाखाके अनुसार हैं। अपनी-अपनी शाखा और देशाचारके अनुसार व्यवस्था कर लेनी चाहिये।

२. (क) दाग देनेके बाद दग्ध स्थानपर तेल-हल्दी लगा दे। जबतक घाव न भरे, तबतक उपचार चलता रहे। (यदि तत्काल दागना सम्भव न हो तो चन्दनसे त्रिशूल तथा चक्र बना दिया जाय तथा वृषभको सुरक्षित रखकर किसी दूसरे दिन दागनेकी क्रिया पूरी कर देनी चाहिये।)

(ख) यदि पिष्टमय वृषभ हो तो वहाँ मात्र चन्दनसे त्रिशूल एवं चक्र अंकित कर देना चाहिये। दागनेकी आवश्यकता नहीं है।

३. स्नापयेच्च वृषं वत्सीं रुद्रकुम्भोदकेन च। (गरुडपुराण)

अग्निं या गर्भं दधिरे विरूपास्ता न आपः शꣳ स्योना भवन्तु॥ १॥
यासां राजा वरुणो याति मध्ये सत्यानृते अवपश्यञ्जनानाम्।
मधुश्चुतः शुचयो याः पावकास्ता न आपः शꣳ स्योना भवन्तु॥ २॥
यासां देवा दिवि कृण्वन्ति भक्ष्यं या अन्तरिक्षे बहुधा भवन्ति।
याः पृथिवीं पयसोन्दन्ति शुक्रास्ता न आपः शꣳ स्योना भवन्तु॥ ३॥
शिवेन मा चक्षुषा पश्यतापः शिवया तन्वोपस्पृशत त्वचं मे।
सर्वाꣳ अग्नीꣳ रप्सुषदो हुवे वो मयि वर्चो बलमोजो निधत्त॥ ४॥
शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्त्रवन्तु नः॥ ५॥

अलंकरण—स्नान करानेके बाद वृष और वत्सतरीको लोहेकी घण्टी, नूपुर, सोनेकी पट्टी, माला आदिसे यथायोग्य अलंकृत करे। पिष्टी आदिसे बने वृष और वत्सतरीके लिये भी सभी क्रियाएँ इसी प्रकार करे।

पूजन—स्नान करानेके बाद पहले प्रोक्षणकर बछियाकी पूजा करे।

प्रोक्षण—जलसे निम्न मन्त्रद्वारा बछियाका प्रोक्षण करे—

कामधेनोः कुले जातास्त्रिहायण्यः सुधावहाः। नरकादुद्धरन्त्वेनं स्वर्गलोके मयाऽर्चिताः॥

एक बछिया हो तब इस प्रकार बोले—**वत्सतर्यै नमः, प्रोक्षणं समर्पयामि।**

दो बछिया हो तब इस प्रकार बोले—**वत्सतरीभ्यां नमः, प्रोक्षणं समर्पयामि।**

अनेक बछिया हों, तब इस प्रकार बोले—**वत्सतरीभ्यो नमः, प्रोक्षणं समर्पयामि।**

तदनन्तर वस्त्र, उपवस्त्र, चन्दन, अक्षत, माला, नूपुर, धूप, दीप, नैवेद्य आदिसे पूजा करे और बोले—**एतान्यर्चनानि समर्पयामि। वत्सतरीभ्यो नमः।**

बछियाके कानमें मन्त्र-श्रावण—बछियाके दाहिने कानमें निम्नलिखित मन्त्रको सुनाये—

तीक्ष्णशृङ्गायै विद्महे वेदपादायै धीमहि। तन्नो गौरी प्रचोदयात्॥

वृषपूजा—बछियाके पूजनके उपरान्त प्रोक्षणकर वृषका पूजन निम्न प्रकारसे करे—

प्रोक्षण—जलसे निम्न मन्त्रसे प्रोक्षण करे—

धर्मस्त्वं वृषरूपेण जगदानन्दकारक। अष्टमूर्तेरधिष्ठानमतः पाहि सनातन॥

वृषाय नमः, प्रोक्षणं समर्पयामि।

इसी प्रकार चन्दन, अक्षत, माला आदिसे वृषका यथोचित पूजन करे और **एतान्यर्चनानि समर्पयामि वृषाय नमः।** कहकर पूजन अर्पित करे।

वृषके कानमें मन्त्र-श्रावण—वृषके दाहिने कानमें निम्नलिखित मन्त्रोंको पढ़े—

तीक्ष्णशृङ्गाय विद्महे वेदपादाय धीमहि। तन्नो वृषः प्रचोदयात्॥

वृषो हि भगवान्धर्मश्चतुष्पादः प्रकीर्तितः। वृणोमि तमहं भक्त्या स मां रक्षतु सर्वतः॥

परिक्रमा—इसके बाद हाथमें पुष्पांजलि लेकर तीन बार परिक्रमा करे। अन्तमें नमस्कार करे।

गठबन्धन और दान—वृष तथा बछिया दोनोंको ओढ़ाये गये वस्त्रोंमें गाँठ लगा दे। निम्नलिखित मन्त्र बोलते हुए बछियाके लिये वृषका एवं वृषके लिये बछियाका दान करे—

अयं हि वो मया दत्तः सर्वासां पतिरुत्तमः। तुभ्यं चैता मया दत्ताः पत्न्यः सर्वा मनोरमाः॥

परिक्रमा कराना—बछिया और वृष दोनोंसे अग्निकी चार परिक्रमा कराये। (पिष्टिनिर्मित बछिया और वृष दोनोंको उठाकर अग्निकी चार परिक्रमा कराये।)

उत्सर्ग-संकल्प—अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर दाहिने हाथमें मोटक, तिल और जल लेकर तथा वृषकी पूँछ पकड़कर वृषके उत्सर्गके लिये इस प्रकार संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहम् ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे शास्त्रोक्तफलप्राप्त्यर्थं इमं वृषं यथाशक्त्यलङ्कृतं गन्धाद्यर्चितं वत्सतरीसहितं रुद्रदैवतमुत्सृजामि। इस प्रकार बोलकर हाथका जल गिरा दे।

सव्य पूर्वाभिमुख होकर हाथ जोड़कर निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर वृषकी पूँछ और हाथमें मोटक, तिल, जल लेकर बोले—

एतं युवानं पतिं वो ददामि तेन क्रीडन्तीश्चरथ प्रियेण।
मा नः साप्तजनुषाऽसुभगा रायस्पोषेण समिषा मदेम॥

....गोत्राय ....जीवशर्मणे/वर्मणे/गुप्ताय मया दत्त एष वृषस्त्वां तारयतु सर्वदा।

यह कहकर जल आदिको पृथ्वीपर छोड़ दे।

वृषका अभिमन्त्रण—अनामिका अंगुलीसे स्पर्शकर वृषको निम्नलिखित मन्त्रोंसे अभिमन्त्रित करे—

मयोभूरभि मा वाहि स्वाहा मारुतोऽसि मरुतां गणः शम्भूर्मयोभूरभि मा वाहि स्वाहाऽवस्यूरसि दुवस्वाञ्छम्भूर्मयोभूरभि मा वाहि स्वाहा॥

यास्ते अग्ने सूर्ये रुचो दिवमातन्वन्ति रश्मिभिः।
ताभिर्नो अद्य सर्वाभी रुचे जनाय नस्कृधि॥

या वो देवाः सूर्ये रुचो गोष्वश्वेषु या रुचः।
इन्द्राग्नी ताभिः सर्वाभी रुचं नो धत्त बृहस्पते॥

रुचं नो धेहि ब्राह्मणेषु रुचꣳ राजसु नस्कृधि।
रुचं विश्येषु शूद्रेषु मयि धेहि रुचा रुचम्॥

तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशꣳ स मा न आयुः प्र मोषीः॥

स्वर्ण घर्मः स्वाहा स्वर्णार्कः स्वाहा स्वर्ण शुक्रः स्वाहा
स्वर्ण ज्योतिः स्वाहा स्वर्ण सूर्यः स्वाहा॥

नीलवृषश्राद्ध*

वृषके अभिमन्त्रणके अनन्तर तिल, घृत और शर्करामिश्रित जौके आटेसे २८ पिण्ड बनाकर पिण्डदान करना चाहिये। सव्य, पूर्वाभिमुख होकर हाथमें त्रिकुश, तिल, जल लेकर पिण्डदानका निम्न प्रतिज्ञा-संकल्प करे—

प्रतिज्ञासंकल्प—ॐ अद्य ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे मरणोत्तरभाविप्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वकशास्त्रोक्तफलप्राप्त्यर्थं वृषोत्सर्गाङ्गभूतनीलवृषश्राद्धं करिष्ये। हाथका संकल्पजल छोड़ दे।

तदनन्तर अपसव्य दक्षिणाभिमुख हो जाय, बायाँ घुटना जमीनपर गिरा ले। दायें हाथमें मोटक, तिल, जल तथा एक-एक पिण्ड लेकर पितृतीर्थसे निम्न मन्त्रोंको पृथक्-पृथक् पढ़ते हुए नीलवृषके मुखके आगे पिण्डदान करे।

पिण्डदानके मन्त्र

पितृपक्षाश्च ये केचिद्ये चान्ये मातृपक्षकाः। गुरुश्वशुरबन्धूनां ये कुलेषु समुद्भवाः॥
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपिण्डं ददाम्यहम्॥ १॥

ये चान्ये लुप्तपिण्डाश्च पुत्रदारविवर्जिताः। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपिण्डं ददाम्यहम्॥ २ ॥

---

* नीलश्राद्धं तु कर्तव्यं यवपिष्टेन धीमता। तिलशर्करया युक्तं तर्पणं च ततः परम्॥
यवचूर्णेन तिलघृतमधुशर्कराभिर्नीलमुखाग्रे पौराणिकमन्त्रेण पिण्डान् दद्यात्। (श्राद्धसंग्रह)

आब्रह्मणो ये पितृवंशजाता मातुस्तथा वंशभवा मदीयाः।
कुलद्वये ये मम वंशभूता भृत्यास्तथैवाश्रितसेवकाश्च।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपिण्डं ददाम्यहम्॥ ३॥
मित्राणि शिष्या पशवश्च वृक्षाः दृष्टा ह्यदृष्टाश्च कृतोपकाराः।
जन्मान्तरे ये मम सङ्गताश्च तेभ्यः स्वधा पिण्डमिदं ददामि।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपिण्डं ददाम्यहम्॥ ४॥
ये बान्धवाबान्धवा वा येऽन्यजन्मनि बान्धवाः। अकालेऽपगता ये च ये चान्धाः पङ्गवस्तथा॥
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपिण्डं ददाम्यहम्॥ ५॥
विरूपा आमगर्भाश्च ज्ञाताज्ञाताः कुले मम। आमगर्भाश्च ये केचिदागता मुखगोचरे॥
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपिण्डं ददाम्यहम्॥ ६॥
वृषयोनिगता ये च कीटकादिपतङ्गकाः। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपिण्डं ददाम्यहम्॥ ७॥
नरके रौरवे जाताः कुम्भीपाके च ये गताः। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपिण्डं ददाम्यहम्॥ ८॥
तप्ततैले च क्षीयन्ते यमलोके महाभये। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपिण्डं ददाम्यहम्॥ ९॥
पीड्यन्ते किङ्करैर्ये च सुदृढमिक्षुकाण्डवत्। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपिण्डं ददाम्यहम्॥ १०॥
जलेन पीडिताः पङ्के यमदूतैर्महाबलैः। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपिण्डं ददाम्यहम्॥ ११॥
यन्त्रमध्ये प्रपीड्यन्ते प्रेतपीडाव्यवस्थिताः। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपिण्डं ददाम्यहम्॥ १२॥

कुष्ठापस्मारलूताभिर्जलोदरभगन्दरैः । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपिण्डं ददाम्यहम्॥ १३ ॥
गण्डमालापाण्डुरोगैः क्षयव्याधिमृताश्च ये । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपिण्डं ददाम्यहम्॥ १४ ॥
कारागृहे मृता ये च व्याघ्रभीतिहतास्तथा । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपिण्डं ददाम्यहम्॥ १५ ॥
चाण्डालैर्निहता मार्गे आशौचशयने मृताः । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपिण्डं ददाम्यहम्॥ १६ ॥
ब्रह्मस्वहारिणो ये च सुरापा ब्रह्महारिणः । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपिण्डं ददाम्यहम्॥ १७ ॥
कुब्जाश्च बधिरा ये च पितृमातृकुलोद्भवाः । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपिण्डं ददाम्यहम्॥ १८ ॥
संसाररहिता ये च रौरवादिषु ये गताः । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपिण्डं ददाम्यहम्॥ १९ ॥
वृक्षयोनिगता ये च तृणगुल्मलतास्थिताः । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपिण्डं ददाम्यहम्॥ २० ॥
देवत्वं मानुषत्वं च तिर्यक् प्रेतपिशाचकाः । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपिण्डं ददाम्यहम्॥ २१ ॥
कृमिकीटपतङ्गत्वं गता ये च स्वकर्मणा । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपिण्डं ददाम्यहम्॥ २२ ॥
आसुरीं योनिमापन्नाः पिशाचत्वं च ये गताः । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपिण्डं ददाम्यहम्॥ २३ ॥
उद्बन्धनरके जाता ऊर्ध्ववक्त्रस्थिताश्च ये । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपिण्डं ददाम्यहम्॥ २४ ॥
महापातकजान् घोरान्नरकान् प्राप्य दारुणान् । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपिण्डं ददाम्यहम्॥ २५ ॥
महाप्रेता महाभागाः पूर्वप्रेतत्वसंस्थिता । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपिण्डं ददाम्यहम्॥ २६ ॥
अगम्यागमने लुब्धा व्रतभङ्गकराश्च ये । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपिण्डं ददाम्यहम्॥ २७ ॥
जलाग्निभिर्मृता ये च अघोरा धर्मवर्जिताः । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपिण्डं ददाम्यहम्॥ २८ ॥

नीलवृषपुच्छोदकतर्पण

नीलवृषश्राद्ध करनेके अनन्तर नीलवृषपुच्छोदकतर्पण करना चाहिये। सव्य, पूर्वाभिमुख होकर आचमन कर ले। दाहिने हाथमें त्रिकुश, तिल, जल लेकर नीलवृषपुच्छोदकतर्पणका प्रतिज्ञासंकल्प करे—

प्रतिज्ञासंकल्प—ॐ अद्य ''''गोत्रः ''''शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं ''''गोत्रस्य ''''जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे मरणोत्तरभाविप्रेतत्त्वनिवृत्तिपूर्वकशास्त्रोक्तफलप्राप्त्यर्थं वृषोत्सर्गाङ्गभूतनीलवृषपुच्छोदकतर्पणं करिष्ये।

हाथका संकल्पजल छोड़ दे। तदनन्तर हाथमें नीलवृषकी पूँछ, त्रिकुश, जौ तथा जल लेकर देवतीर्थसे निम्न मन्त्रोंको पढ़ते हुए देवादि तर्पण करे—

ब्रह्माद्या देवताः सर्वा ऋषयो मुनयस्तथा। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः॥ १॥

असुरा देवपत्न्यश्च मातरश्चण्डिकास्तथा। दिक्पाला लोकपालाश्च गृहदेवाधिदेवताः॥
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः॥ २॥

विश्वेदेवास्तथादित्याः साध्याश्चैव मरुद्गणाः। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः॥ ३॥

क्षेत्रपीठोपपीठादिनदा नद्यश्च सागराः। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः॥ ४॥

पाताले नागपत्न्यश्च नागाश्चैव सपर्वताः। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः॥ ५॥

पृथिव्यापश्च तेजश्च वायुराकाशमेव च। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः॥ ६॥

पिशाचा गुह्यकाः प्रेता गणा गन्धर्वराक्षसाः। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः॥ ७॥

दिवि भुव्यन्तरिक्षे च ये च पातालवासिनः। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः॥ ८ ॥
शिवः शिवा तथा विष्णुः सिद्धिर्लक्ष्मीः सरस्वती। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः॥ ९ ॥
तपोधनश्च भगवान् व्यक्ताऽव्यक्तः परेश्वरः। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः॥ १० ॥
क्षेत्रौषधीर्लता वृक्षाः वनस्पत्यादिदेवताः। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः॥ ११ ॥
कपिलः शेषनागश्च तक्षकोऽनन्त एव च। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः॥ १२ ॥
अनेकजलचरा जीवा असङ्ख्यातास्त्वनेकशः। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः॥ १३ ॥
चतुर्दशयमाश्चैव चे चान्ये यमकिङ्कराः। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः॥ १४ ॥
सर्वे तु यक्षराजानः पशवः पक्षिणस्तथा। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः॥ १५ ॥
स्वेदजोद्भिज्जजातीया अण्डजाश्च जरायुजाः। शान्तिदाः शुभदास्ते स्युर्नीलपुच्छेषु तर्पिताः॥ १६ ॥

तदनन्तर अपसव्य, दक्षिणाभिमुख हो जाय; बायाँ घुटना जमीनपर लगा ले। हाथमें नीलवृषकी पूँछ, मोटक, तिल तथा जल लेकर निम्न मन्त्रोंको पढ़ते हुए पितृतीर्थसे तर्पण करे—

ॐ स्वधा पितृभ्यो मातृभ्यो बन्धुभ्यश्चापि तृप्तये। मातृपक्षाश्च ये केचिद्ये चाऽन्ये पितृपक्षजाः॥
गुरुश्वशुरबन्धूनां ये कुलेषु समुद्भवाः। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः॥ १ ॥
ये चाऽन्ये लुप्तपिण्डाश्च पुत्रदारविवर्जिताः। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः॥ २ ॥
आब्रह्मणो ये पितृवंशजाता मातुस्तथा वंशभवा मदीयाः।

कुलद्वये ये मम वंशभूता भृत्यास्तथैवाश्रितसेवकाश्च॥
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः॥ ३॥
मित्राणि शिष्याः पशवश्च वृक्षा दृष्टा ह्यदृष्टाश्च कृतोपकाराः।
जन्मान्तरे ये मम सङ्गताश्च तेभ्यः स्वधाकृत्य इदं ददामि॥
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः॥ ४॥

ये बान्धवाबान्धवा वा येऽन्यजन्मनि बान्धवाः। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः॥ ५ ॥
अकालेऽपगता ये च ये चान्धाः पङ्गवस्तथा। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः॥ ६ ॥
विरूपा आमगर्भाश्च ज्ञाताज्ञाताः कुले मम। आमगर्भाश्च ये केचिदागताः पुच्छगोचरे॥
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः॥ ७॥
वृषयोनिगता ये च कीटकाकपतङ्गकाः। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः॥ ८ ॥
किङ्करैः पीड्यमाना ये सुतरामिक्षुकाण्डवत्। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः॥ ९ ॥
जलेन पीडिताः पङ्के यमदूतैर्महाबलैः। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः॥ १०॥
यन्त्रमध्ये प्रपीड्यन्ते प्रेतपीडाव्यवस्थिताः। कुष्ठापस्मारलूतादिजलोदरभगन्दरैः ॥
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः॥ ११॥
गण्डमालापाण्डुरोगैः क्षयव्याधिमृताश्च ये। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः॥ १२॥

कारागृहे मृता ये च सिंहव्याघ्रहताश्च ये। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः॥ १३॥
चाण्डालैर्निहता मार्गे आशौचशयने मृताः। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः॥ १४॥
ब्रह्मस्वहारिणो ये च सुरापा स्वर्णहारिणः। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः॥ १५॥
कुब्जाश्च बधिरा ये च पितृमातृकुलोद्भवाः। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः॥ १६॥
संसाररहिता ये च रौरवादिषु ये गताः। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः॥ १७॥
सर्पयोनिगता ये च तृणगुल्मलतास्थिताः। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः॥ १८॥
देवत्वं मानुषत्वं च तिर्यक् प्रेतपिशाचकाः। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः॥ १९॥
कृमिकीटपतङ्गत्वं गता ये च स्वकर्मणा। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः॥ २०॥
पश्वादियोनिजाता ये वृश्चिकादिषु ये गताः। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः॥ २१॥
आसुरीं योनिमुत्पन्नाः पिशाचत्वं च ये गताः। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः॥ २२॥
उद्बन्धनरके जाता ऊर्ध्ववक्त्रस्थिताश्च ये। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः॥ २३॥
महापातकजान् घोरान्नरकान् प्राप्य दारुणान्। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः॥ २४॥
महाप्रेता महाभागाः प्रेतपूर्वे च ये स्थिताः। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः॥ २५॥
अगम्यागमने लुब्धा व्रतभङ्गकराश्च ये। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः॥ २६॥
जलाग्निभिर्मृता ये च अघोरा धर्मवर्जिताः। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु नीलपुच्छेषु तर्पिताः॥ २७॥
ये प्रेतभावमापन्ना ये चान्ये श्राद्धवर्जिताः। वृषोत्सर्गेण ते सर्वे लभन्तां प्रीतिमुत्तमाम्॥ २८॥

पुच्छोदकसे पितरोंका तर्पण—नीलवृषपुच्छोदकतर्पणके बाद वृष और बछिया दोनोंकी पूँछको तथा मोटक, तिल, जल दायें हाथमें रखकर बायाँ घुटना जमीनपर टेककर निम्नलिखित मन्त्रोंको पढ़ते हुए पितृतीर्थसे पितरोंको जलांजलि दे—

स्वधा पितृभ्यो मातृभ्यः पशुभ्यश्चापि तृप्तये। मातृपक्षाश्च ये केचिद् ये चान्ये पितृपक्षकाः॥
गुरुश्वशुरबन्धूनां ये चान्ये कुलसम्भवाः। ये प्रेतभावमापन्ना ये चान्ये श्राद्धवर्जिताः।
वृषोत्सर्गेण ते सर्वे लभन्तां तृप्तिमुत्तमाम्॥

ईशानकोणमें प्रेषण—इसके बाद वृष और बछियाको ईशानकोणकी ओर चलनेके लिये प्रेरित करे। इन्हें ऐसे जंगलमें भेजे, जहाँ पानी और घासकी कमी न हो या ऐसे गोकुलमें छोड़वा दे, जहाँ बहुत-सी गायें रहती हों। पिष्टमय वृष आदिको ईशानकोणमें ले जाकर छोड़ देना चाहिये।

लोहारका सम्मान—लोहारको द्रव्य देकर सन्तुष्ट करे।

आचार्यको दक्षिणादानका संकल्प—दायें हाथमें त्रिकुश, तिल, जल तथा दक्षिणा लेकर निम्न संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्रः ....जीवशर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे वृषोत्सर्गकर्मणः साङ्गताप्रतिष्ठासंसिद्ध्यर्थं ....गोत्राय ....शर्मणे ब्राह्मणाय आचार्याय भवते दक्षिणाद्रव्यं सम्प्रददे। कहकर संकल्प-जल तथा दक्षिणा आचार्यको दे दे तथा रुद्रकुम्भ भी प्रदान करे।

भूयसी दक्षिणादानका संकल्प—दायें हाथमें त्रिकुश, तिल, जल तथा भूयसी दक्षिणा लेकर निम्न संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धाङ्गभूत-

वृषोत्सर्गकर्मणि न्यूनातिरिक्तदोषपरिहारार्थं शास्त्रोक्तफलप्राप्त्यर्थं च भूयसीदक्षिणां नानानामगोत्रेभ्यः ब्राह्मणेभ्यः यथाकाले विभज्य दातुमुत्सृज्ये। कहकर यथासमय ब्राह्मणोंको दक्षिणा प्रदान करे।

घोषणा—इसके बाद सबको एकत्र करके घोषणा कर दे—

नैवाज्यं न च तत्क्षीरं पातव्यं केनचित् क्वचित्। न वाह्योऽसौ वृषश्चैषामृते गोमूत्रगोमये॥

कोई भी व्यक्ति इस गायका न तो दूध पीये और न घी ही खाये। वृषको भी कोई न तो जोते न इससे बोझा ढोनेका काम ले, केवल इनके मूत्र और गोबरका उपयोग किया जा सकता है।

भगवान्का स्मरण—हाथ जोड़कर भगवान्का स्मरण करते हुए बोले—

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्। स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥
यत्पादपङ्कजस्मरणाद् यस्य नामजपादपि। न्यूनं कर्म भवेत् पूर्णं तं वन्दे साम्बमीश्वरम्॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुध्याऽऽत्मना वानुसृतस्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पये तत्॥

ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः।

ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। ॐ साम्बसदाशिवाय नमः।

॥ जीवच्छ्राद्धान्तर्गत वृषोत्सर्ग पूर्ण हुआ॥

संक्षिप्त वैतरणी-गोदान*

वृषोत्सर्गके बाद वैतरणी-गोदान करनेकी विधि है। जो लोग प्रत्यक्ष-गोदान करें, उनके लिये यहाँ वैतरणी-गोदानकी संक्षिप्त विधि दी जा रही है और जो प्रत्यक्ष-गोदान न करें, उनके लिये अन्तमें गोनिष्क्रयद्रव्यदानका संकल्प दिया गया है। समयाभावके कारण गो तथा ब्राह्मणका संक्षिप्त पूजन कर लेना चाहिये।

प्रतिज्ञा-संकल्प—दाहिने हाथमें त्रिकुश, तिल तथा जल लेकर वैतरणी-गोदानका निम्न रीतिसे प्रतिज्ञा-संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहम् ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे मरणोत्तर-भाविप्रेतदशायां मार्गमध्ये स्थितां शतयोजनविस्तीर्णां अस्थिकूलां मांसकर्दमोपेतां पूयशोणितजलां नखलोमादियुतां अतिक्रूररुरुसंज्ञकजन्तुयुतां महाघोरां वैतरणीं सन्तर्तुकामः सवत्सकपिलागवीदानं गोब्राह्मणपूजनञ्च करिष्ये।

ऐसा कहकर हाथका जलादि छोड़ दे।

गोपूजन—तदनन्तर '**सोपकरणसवत्सकपिलागव्यै नमः**' कहकर गन्ध-पुष्पादि उपचारोंसे गौका पूजन कर ले।

अनुज्ञा वचन—'**इमां सोपकरणां सवत्सां कपिलां गां ते ददानि ?**' ऐसा कहकर ब्राह्मणके हाथमें जल दे।

प्रतिवचन—ब्राह्मण '**ददस्व**' ऐसा बोले।

ब्राह्मणवरण—हाथमें त्रिकुश, तिल, जल तथा वरणद्रव्य लेकर निम्न संकल्पसे ब्राह्मणवरण करे—

---

* जो लोग विस्तारपूर्वक वैतरणी-गोदान करनेके इच्छुक हों, वे गीताप्रेसद्वारा प्रकाशित 'अन्त्यकर्मश्राद्धप्रकाश' के परिशिष्टमें पृ०सं० ३८३ का अवलोकन करें।

ॐ अद्य ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहम् ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे मरणोत्तरभाविप्रेतदशायां वैतरणीसन्तरणार्थं क्रियमाणे कपिलागवीदानकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः ....गोत्रं ....शर्माणं ब्राह्मणं गोप्रतिग्रहीतृत्वेन भवन्तं वृणे—ऐसा कहकर वरण-सामग्री ब्राह्मणके हाथमें दे दे।

ब्राह्मणवचन—'वृतोऽस्मि'।

गोदान-संकल्प—दाहिने हाथमें त्रिकुश, तिल, जल लेकर तथा गोपुच्छ पकड़कर निम्न संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहम् ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे मरणोत्तरभाविप्रेतदशायां यममार्गस्थितां वैतरणीसन्तरणार्थं यथाशक्त्यलङ्कृतां सोपकरणाम् इमां रुद्रदैवत्यां सवत्सां गां ....गोत्राय ....शर्मणे ....ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे—ऐसा कहकर संकल्पजल तथा गोपुच्छ ब्राह्मणके हाथमें दे दे।

ब्राह्मणवचन—ब्राह्मण '**स्वस्ति**' बोले।

सांगता-संकल्प—हाथमें त्रिकुश, तिल, जल तथा दक्षिणा-द्रव्य लेकर सांगताका संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहम् ....गोत्राय ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे कृतस्य वैतरणीगवीदानकर्मणः साङ्गताप्रतिष्ठासंसिद्ध्यर्थं दक्षिणाद्रव्यं ....गोत्राय ....शर्मणे ....ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे—ऐसा कहकर दक्षिणा-द्रव्य ब्राह्मणको दे दे।

गोप्रार्थना—

नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एव च। नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नमः॥

अर्चितासि वसिष्ठेन विश्वामित्रेण पूजिता। सुरभे हर मे पापं यन्मया दुष्कृतं कृतम्॥
यममार्गे महाघोरे तां नदीं शतयोजनाम्। तर्त्तुकामो ददाम्येतां तुभ्यं वैतरणीं नमः॥
गावो ममाऽग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः। गावो मे सर्वतः सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम्॥
विष्णुरूप द्विजश्रेष्ठ मामुद्धर महीसुर। सदक्षिणा मया दत्ता तुभ्यं वैतरणीं नमः॥

वैतरणीतरण—समय तथा स्थानके अनुरूप गड्ढा खोदकर अथवा मिट्टीकी बाड़ बनाकर उसमें पानी भरकर वैतरणी नदीका आकार बनाना चाहिये, जो पश्चिमसे पूर्वकी ओर बहनेवाली हो। इक्षुदण्ड (गन्नेके टुकड़े) काटकर एक नाव बनानी चाहिये। नावमें कांचनपुरुषकी प्रतिमा, लोहदण्ड तथा कपास स्थापित करना चाहिये। नाव कलावा या रक्षासूत्रसे गायकी पूँछमें बँधी होनी चाहिये। वैतरणी-संतरण उत्तरसे दक्षिण दिशामें होगा। वैतरणी पार करते समय आगे सवत्सा गाय होगी तथा उसके पीछे पार करनेवाला व्यक्ति पूर्वोक्त उपकरणोंसे युक्त इक्षुमयी नावको हाथमें लिये हुए होगा।

वैतरणी पार करते समय निम्नलिखित मन्त्र पढ़े—

धेनुके मां प्रतीक्षस्व यमद्वारमहापथे। उत्तारणार्थं देवेशि वैतरण्यै नमोऽस्तु ते॥

वैतरणीगोनिष्क्रयद्रव्यदानका संकल्प

जो लोग प्रत्यक्ष वैतरणी-गोदान न कर सकें, वे वैतरणी-गोनिष्क्रयद्रव्यदानका संकल्प अवश्य कर लें। हाथमें त्रिकुश, तिल, जल तथा गोनिष्क्रयद्रव्य लेकर निम्न संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहम् ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे मरणोत्तरभाविप्रेतदशायां अतिघोरां सुदुस्तरां वैतरणीं सन्तर्तुकामः वैतरणीगवीनिष्क्रयभूतद्रव्यं साङ्गताप्रतिष्ठाद्रव्यसहितं ....गोत्राय ....शर्मणे ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे। कहकर संकल्पजल तथा दक्षिणा-द्रव्य ब्राह्मणके हाथमें दे दे।

भगवान्‌का स्मरण—हाथ जोड़कर भगवान्‌का स्मरण करते हुए बोले—

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्। स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥
यत्पादपङ्कजस्मरणाद् यस्य नामजपादपि। न्यूनं कर्म भवेत् पूर्णं तं वन्दे साम्बमीश्वरम्॥
कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुध्याऽऽत्मना वानुसृतस्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पये तत्॥
ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः।
ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। ॐ साम्बसदाशिवाय नमः।

॥ जीवच्छ्राद्धान्तर्गत संक्षिप्त वैतरणी-गोदान पूर्ण हुआ॥

उत्तमषोडशीश्राद्ध

पाकनिर्माण—जीवच्छ्राद्धकर्ता स्नान करके धुली हुई धोती तथा उत्तरीय (चादर–गमछा) धारणकर श्राद्धस्थलपर आ जाय। ईशानकोणमें सोलह* पिण्डोंके लिये पाकका निर्माण कर ले। हाथ–पैर धो ले।

शिखाबन्धन—अपने आसनपर पूर्वाभिमुख बैठ जाय, गायत्रीमन्त्रसे शिखाबन्धन कर ले।

तिलकधारण—मृत्तिका, गोपीचन्दन आदिसे ऊर्ध्वपुण्ड्र अथवा भस्मसे त्रिपुण्ड्र लगा ले।

सिंचन–मार्जन—निम्न मन्त्रसे अपने ऊपर तथा श्राद्धीय वस्तुओंपर जल छिड़के—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

पवित्रीधारण—निम्न मन्त्रसे पवित्री पहन ले—

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः।
तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्॥

आचमन—**ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः।** इन मन्त्रोंको बोलकर आचमन

---

* यदि उस वर्ष पुरुषोत्तममास पड़ रहा हो तो सोलहके स्थानपर सत्रह पिण्डके लिये पाक बनाना चाहिये। इसी प्रकार आसन, अर्घ आदिकी संख्या भी सत्रह हो जायगी। शास्त्रके मतसे जिस मासके बाद अधिकमास पड़ रहा हो, उस मासके आसनको देनेके बाद आधिमासिक आसन प्रदान करके ही उसके आगेके महीनेके आसन आदि क्रमसे देने चाहिये।

करे। **ॐ हृषीकेशाय नमः**—कहकर हाथ धो ले।

प्राणायाम—प्राणायाम करे।

आसनों और पात्रोंका रखना—सोलह आसनोंके लिये सोलह पलाशके पत्ते पश्चिमसे पूर्व क्रममें रखे। यदि पुरुषोत्तममास उस वर्षमें पड़ता हो तो सत्रह आसन होंगे। इन सभी पत्तलोंपर दक्षिणाग्र मोटकरूप आसन रख दे। सभी आसनोंके आगे एक-एक पलाशका पत्तल भोजनपात्रके रूपमें रखे तथा उसके पश्चिम भागमें एक-एक जलपात्र, अर्घपात्र और भोजनपात्रके सामने घृतपात्रके लिये एक-एक दोनिया या हस्तनिर्मित दीया रख दे।

रक्षादीप-प्रज्वालन—तिलका आसन देकर उसपर दक्षिणाभिमुख रक्षादीप जला दे। श्राद्धान्ततक दीपक बुझे नहीं, ऐसी व्यवस्था करे। **सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि**—कहकर गन्ध, अक्षत तथा पुष्पसे दीपकका पूजन कर ले और निम्न प्रार्थना करे—

भो दीप ब्रह्मरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत्। यावत् कर्मसमाप्तिः स्यात् तावत् त्वं सुस्थिरो भव॥

गदाधर आदिकी प्रार्थना—अंजलिमें फूल लेकर गयाधाम, गदाधर तथा पितरोंका स्मरणकर प्रार्थना करे—

श्राद्धारम्भे गयां ध्यात्वा ध्यात्वा देवं गदाधरम्। स्वपितॄन् मनसा ध्यात्वा ततः श्राद्धं समाचरेत्॥

ॐ गयायै नमः। ॐ गदाधराय नमः कहकर फूल चढ़ा दे।

तदनन्तर तीन बार '**ॐ श्राद्धभूम्यै नमः**' कहकर भूमिपर जौ एवं पुष्प छोड़े।

भूमिसहित विष्णु-पूजन—श्राद्ध आरम्भ करनेके पूर्व विष्णुभगवान्का पूजन करनेका विधान है। अतः निम्न श्लोकसे विष्णुभगवान्का स्मरण-पूजन करते हुए पुष्पांजलि समर्पितकर श्राद्ध आरम्भ करना चाहिये—

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्॥

ॐ भूमिपत्नीसहिताय विष्णवे नमः—कहकर भगवान् विष्णुको प्रणामकर पुष्प अर्पित कर दे।

कर्मपात्रका निर्माण—श्राद्धकर्ममें जलका उपयोग करनेके लिये कर्मपात्रका निर्माण कर ले। अक्षतोंके ऊपर जलसे भरा एक कलश रखकर उसमें चन्दन, तुलसी, जौ, पुष्प तथा कुश छोड़ दे और त्रिकुशसे जलको दक्षिणावर्त आलोडित करते हुए निम्न मन्त्रोंको पढ़े—

ॐ यद्देवा देवहेडनं देवासश्चकृमा वयम्। अग्निर्मा तस्मादेनसो विश्वान् मुञ्चत्वꣳहसः॥
ॐ यदि दिवा यदि नक्तमेनाꣳसि चकृमा वयम्। वायुर्मा तस्मादेनसो विश्वान् मुञ्चत्वꣳहसः॥
ॐ यदि जाग्रद्यदि स्वप्न एनाꣳसि चकृमा वयम्। सूर्यो मा तस्मादेनसो विश्वान् मुञ्चत्वꣳहसः॥

प्रोक्षण—कर्मपात्रके जलसे कुशद्वारा अपना तथा सभी श्राद्धसामग्री एवं पाकका प्रोक्षण करे और बोले—
‘श्वादिदुष्टदृष्टिनिपातदूषितपाकादिकं पूतं भवतु।’

दिग्-रक्षण—बायें हाथमें पीली सरसों लेकर दाहिने हाथसे ढककर निम्न मन्त्र बोले—

नमो नमस्ते गोविन्द पुराणपुरुषोत्तम। इदं श्राद्धं हृषीकेश रक्ष त्वं सर्वतो दिशः॥

तदनन्तर दाहिने हाथसे सरसोंको पूर्व-दक्षिण आदि दिशाओंमें निम्न मन्त्रोंको पढ़ते हुए छोड़े—पूर्वमें—**प्राच्यै नमः।** दक्षिणमें—**अवाच्यै नमः।** पश्चिममें—**प्रतीच्यै नमः।** उत्तरमें—**उदीच्यै नमः।** आकाशमें—**अन्तरिक्षाय नमः।** भूमिपर—**भूम्यै नमः।**

हाथ जोड़कर प्रार्थना करे—

पूर्वे नारायणः पातु वारिजाक्षस्तु दक्षिणे। प्रद्युम्नः पश्चिमे पातु वासुदेवस्तथोत्तरे।
ऊर्ध्वं गोवर्धनो रक्षेदधस्ताच्च त्रिविक्रमः॥

नीवीबन्धन—किसी पत्र-पुटक या पानके पत्तेपर तिल, त्रिकुशका टुकड़ा लपेटकर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए दक्षिण कटिभागमें उसे खोंस ले, बाँध ले—

ॐ निहन्मि सर्वं यदमेध्यकृद् भवेद्धताश्च सर्वेऽसुरदानवा मया।
यक्षाश्च रक्षांसि पिशाचगुह्यका हता मया यातुधानाश्च सर्वे॥
ॐ सोमस्य नीविरसि विष्णोः शर्मासि शर्मयजमानस्येन्द्रस्य योनिरसि सुसस्याः कृषीस्कृधि।

प्रतिज्ञा-संकल्प—दाहिने हाथमें त्रिकुश, तिल तथा जल लेकर निम्न प्रतिज्ञा-संकल्प करे—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः नमः परमात्मने पुरुषोत्तमाय ॐ तत्सत् अद्यैतस्य विष्णोराज्ञया जगत्सृष्टिकर्मणि प्रवर्तमानस्य ब्रह्मणो द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे ''''क्षेत्रे (यदि काशी हो तो **अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रे गौरीमुखे त्रिकण्टकविराजिते**

महाश्मशाने भगवत्या उत्तरवाहिन्या भागीरथ्या वामभागे) बौद्धावतारे ....संवत्सरे उत्तरायणे/दक्षिणायने ....ऋतौ ....मासे ....पक्षे ....तिथौ ....वासरे ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहम् ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे मरणोत्तरभाविप्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वकपितृपङ्क्तिप्रवेशाधिकारसिद्ध्यर्थं करिष्यमाणानि ऊनमासिकादि-द्वादशमासिकान्तानि षोडशश्राद्धानि करिष्ये। संकल्पका तिल, जल छोड़ दे।

पितृगायत्रीका पाठ—पितृगायत्रीका तीन बार पाठ करे—

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च। नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः॥

आसनदानका संकल्प—मोटक, तिल, जल लेकर अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर तथा बायाँ घुटना जमीनपर टिकाकर निम्न संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे मरणोत्तरभाविप्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वकपितृपङ्क्ति-प्रवेशाधिकारसिद्ध्यर्थं क्रियमाणेषु उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतोनमासिकादिद्वादशमासिकान्तश्राद्धेषु जीवस्य एतानि मोटकरूपाणि आसनानि ते स्वधा। हाथका जल और तिल पितृतीर्थसे सभी आसनोंपर छोड़ दे।

आवाहन—आसनोंपर निम्न मन्त्रसे तिल छोड़ दे—

ॐ अपहता असुरा रक्षा꣡ꣳसि वेदिषदः।

अर्घपात्र-निर्माण—निम्न मन्त्र पढ़ते हुए पृथक्-पृथक् सभी अर्घपात्रों (दोनियों)-में दक्षिणाग्र पवित्रक रख दे—

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः।
तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्॥

जलप्रक्षेप—

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्त्रवन्तु नः॥

पढ़कर सभी अर्घपात्रों (दोनियों)-में जल छोड़े।

तिलप्रक्षेप—

ॐ तिलोऽसि सोमदैवत्यो गोसवो देवनिर्मितः।
प्रत्नमद्भिः पृक्तः स्वधया पितॄँल्लोकान् प्रीणाहि नः स्वाहा॥

—पढ़कर सभी अर्घपात्रों (दोनियों)-में तिल डाल दे। मौन होकर गन्ध-पुष्प भी छोड़ दे।

अर्घपात्र-अभिमन्त्रण—पहला अर्घपात्र बायें हाथमें लेकर उसमें स्थित पवित्रकको निकालकर जीवके भोजनपात्रपर उत्तराग्र रख दे। उस पवित्रकपर '**ॐ नमो नारायणाय**' बोलकर एक आचमनी जल डाल दे। उस अर्घपात्रको दायें हाथसे आच्छादित करके निम्न मन्त्र पढ़ते हुए उसका अभिमन्त्रण करे—

ॐ या दिव्या आपः पयसा सम्बभूवुर्या आन्तरिक्षा उत पार्थवीर्याः।
हिरण्यवर्णा यज्ञियास्ता न आपः शिवाः शꣳ स्योनाः सुहवा भवन्तु॥

दायें हाथमें मोटक, तिल, जल तथा अर्घपात्र लेकर निम्न संकल्प करे—

अर्घदान-संकल्प—१-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतोनमासिकश्राद्धे एषोऽर्घस्ते स्वधा। बोलकर जल पवित्रकपर गिरा दे और उस पवित्रकको उठाकर अर्घपात्रमें रखकर '**जीवाय स्थानमसि**' कहकर अर्घपात्रको जीवासनके पश्चिमभागमें सीधा रख दे।

इसी प्रकार सभी अर्घोंका अभिमन्त्रण आदि कार्य करके निम्न वाक्य पढ़ते हुए पृथक्-पृथक् अर्घ प्रदान करे और अर्घ देनेके पश्चात् उनमें अलग-अलग पवित्रक रखकर उन्हें **जीवाय स्थानमसि** कहकर अर्घपात्रको जीवासनके पश्चिमभागमें सीधा रखता जाय। यदि वर्षभरमें पुरुषोत्तममास हो तो एक अर्घ और बढ़ा दे।

२-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतप्रथममासिकश्राद्धे एषोऽर्घस्ते स्वधा।

३-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतत्रैपाक्षिकश्राद्धे एषोऽर्घस्ते स्वधा।

४-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतद्वितीयमासिकश्राद्धे एषोऽर्घस्ते स्वधा।

५-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गततृतीयमासिकश्राद्धे एषोऽर्घस्ते स्वधा।

६-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतचतुर्थमासिकश्राद्धे एषोऽर्घस्ते स्वधा।

७-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतपञ्चममासिकश्राद्धे एषोऽर्घस्ते स्वधा।

८-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतोनषाण्मासिकश्राद्धे एषोऽर्घस्ते स्वधा।

९-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतषाण्मासिकश्राद्धे एषोऽर्घस्ते स्वधा।

१०-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतसप्तममासिकश्राद्धे एषोऽर्घस्ते स्वधा।

११-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गताष्टममासिकश्राद्धे एषोऽर्घस्ते स्वधा।

१२-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतनवममासिकश्राद्धे एषोऽर्घस्ते स्वधा।

१३-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतदशममासिकश्राद्धे एषोऽर्घस्ते स्वधा।

१४-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतैकादशमासिकश्राद्धे एषोऽर्घस्ते स्वधा।

१५-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतोनद्वादशमासिकश्राद्धे एषोऽर्घस्ते स्वधा।

१६-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतद्वादशमासिकश्राद्धे एषोऽर्घस्ते स्वधा।

आसनोंपर पूजन—सभी आसनोंपर निम्न रीतिसे पूजन करे—

[यजमानवचन] [आचार्यवचन]

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं स्नानीयम् (सुस्नानीयम्)—कहकर स्नानीय जल दे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं वस्त्रम् (सुवस्त्रम्)—कहकर वस्त्र अर्पित करे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इमे यज्ञोपवीते (सुयज्ञोपवीते)—कहकर यज्ञोपवीत चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदमुपवस्त्रम् (सुवस्त्रम्)—कहकर उपवस्त्र अर्पित करे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

एष गन्धः (सुगन्धः)—कहकर गन्ध आघ्रापित करे।

इमे तिलाक्षताः (सुतिलाक्षताः)—कहकर तिलाक्षत चढ़ाये।

इदं माल्यम् (सुमाल्यम्)—कहकर माला चढ़ाये।

एष धूपः (सुधूपः)—कहकर धूप आघ्रापित करे।

एष दीपः (सुदीपः)—कहकर दीप दिखाये।

हस्तप्रक्षालनम् (हाथ धो ले)

इदं नैवेद्यम् (सुनैवेद्यम्)—कहकर नैवेद्य अर्पित करे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं फलम् (सुफलम्)—कहकर फल अर्पित करे।

इदं ताम्बूलम् (सुताम्बूलम्)—कहकर ताम्बूल अर्पित करे।

एषा दक्षिणा (सुदक्षिणा)—कहकर दक्षिणा चढ़ाये।

—इस प्रकार बोलकर विविध उपचारोंसे सभी आसनोंपर पूजन करे।

अर्चनदानका संकल्प—हाथमें मोटक, तिल, जल लेकर **ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/**

गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे मरणोत्तरभाविप्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वकपितृपङ्क्तिप्रवेशाधिकारसिध्यर्थं क्रियमाणेषु उत्तमषोडश-श्राद्धान्तर्गतोनमासिकादिद्वादशमासिकान्तश्राद्धेषु जीव एतान्यर्चनानि ते स्वधा। इस प्रकार बोलकर हाथका जल आदि सभी आसनोंपर छोड़ दे।

सव्य होकर आचमन कर ले। पुनः अपसव्य हो जाय।

मण्डलकरण—निम्नांकित मन्त्र पढ़ते हुए जलसे भोजनपात्रोंसहित सभी आसनोंके चारों ओर अप्रदक्षिण क्रमसे (बायीं ओरसे) पृथक्-पृथक् वर्तुलाकार (गोल) मण्डल बनाये—

ॐ यथा चक्रायुधो विष्णुस्त्रैलोक्यं परिरक्षति। एवं मण्डलतोयं तु सर्वभूतानि रक्षतु॥

भूस्वामीके पितरोंको अन्न-प्रदान—सब प्रकारका अन्न तथा जल एक दोनियामें लेकर '**ॐ इदमन्नमेतद् भूस्वामिपितृभ्यो नमः**' बोलकर दक्षिण दिशामें त्रिकुशपर रख दे।

अन्नपरिवेषण—भोजनपात्रोंसे तिल हटा दे। सब भोजनपात्रोंपर अन्न परोसकर बायीं ओर रखे दोनियोंमें जल तथा सामनेकी ओर रखे दोनियोंमें घृत परोसकर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए दोनों हाथोंसे पितृतीर्थद्वारा परोसे गये सभी अन्नोंपर पृथक्-पृथक् मधु डाल दे—

ॐ मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः॥ मधु नक्तमुतोषसो मधुमत् पार्थिवꣳरजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता॥ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ२ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥ ॐ मधु मधु मधु॥

पात्रालम्भन[1]—अनुत्तान (उलटे) दायें हाथपर अनुत्तान बायाँ हाथ स्वस्तिकाकार रखकर भोजनपात्रका स्पर्श करते हुए निम्न मन्त्र पढ़े—

ॐ पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे अमृते अमृतं जुहोमि स्वाहा।

ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम्। समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा॥

ॐ कृष्ण कव्यमिदं रक्ष मदीयम्।

कहकर बायें हाथसे भोजनपात्रका स्पर्श किये हुए ही दाहिने हाथके अनुत्तान अँगूठेसे अन्नावगाहन[2] करे—अन्न छूकर बोले—‘**इदमन्नम्।**’ जल छूकर बोले—‘**इमा आपः।**’ घी छूकर बोले—

१. (क) दक्षिणोपरि वामं च पित्र्यपात्रस्य लम्भनम्। पात्रालम्भनं कुर्याद् दत्त्वा चान्नं यथाविधि॥ (श्राद्धकाशिकामें पद्मपुराणका वचन)

(ख) पित्र्येऽनुत्तानपाणिभ्यामुत्तानाभ्यां च दैवते। (यम)

२. उत्तानेन तु हस्तेन कुर्यादन्नावगाहनम्। आसुरं तद्भवेच्छ्राद्धं पितॄणां नोपतिष्ठते॥ (श्राद्धकाशिका)

उत्तान हाथसे अन्नावगाहन करनेपर वह श्राद्ध आसुर हो जाता है और पितरोंको प्राप्त नहीं होता।

'इदमाज्यम्।' पुनः अन्न छूकर बोले—**'इदं कव्यम्।'**

अन्नके ऊपर **'ॐ अपहता असुरा रक्षाꣳसि वेदिषदः'**—मन्त्र पढ़ते हुए तिल बिखेर दे।

अन्नदानका संकल्प—हाथमें मोटक, तिल, जल लेकर निम्न अन्नदानका संकल्प करे—

१-ॐ अद्य ....गोत्राय ....जीवशर्मणे/वर्मणे/गुप्ताय उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतोनमासिकश्राद्धे इदमन्नं सोपस्करं ते स्वधा। कहकर संकल्पजल भोजनपात्रके पास गिरा दे तथा अन्नपात्रसे बायाँ हाथ हटा ले।
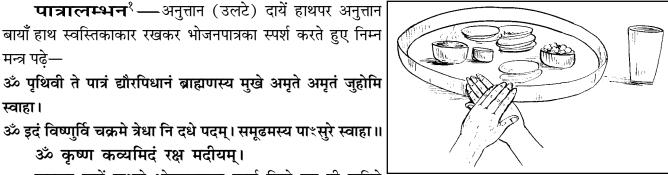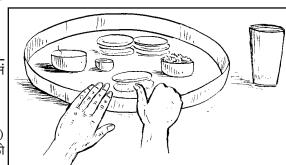
इसी प्रकार आगेके सभी अन्नपात्रोंका आलम्भन तथा अन्नावगाहन करके निम्न मन्त्रोंसे अन्नदानका संकल्प करे और प्रत्येक संकल्पके अनन्तर बायाँ हाथ हटाता जाय।

२-ॐ अद्य ....गोत्राय ....जीवशर्मणे/वर्मणे/गुप्ताय उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतप्रथममासिकश्राद्धे इदमन्नं सोपस्करं ते स्वधा।

३-ॐ अद्य ....गोत्राय ....जीवशर्मणे/वर्मणे/गुप्ताय उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतत्रैपाक्षिकश्राद्धे इदमन्नं सोपस्करं ते स्वधा।

४-ॐ अद्य ....गोत्राय ....जीवशर्मणे/वर्मणे/गुप्ताय उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतद्वितीयमासिकश्राद्धे इदमन्नं सोपस्करं ते स्वधा।

५-ॐ अद्य ....गोत्राय ....जीवशर्मणे/वर्मणे/गुप्ताय उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गततृतीयमासिकश्राद्धे इदमन्नं सोपस्करं ते स्वधा।

६-ॐ अद्य ....गोत्राय ....जीवशर्मणे/वर्मणे/गुप्ताय उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतचतुर्थमासिकश्राद्धे इदमन्नं सोपस्करं ते स्वधा।

७-ॐ अद्य ....गोत्राय ....जीवशर्मणे/वर्मणे/गुप्ताय उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतपञ्चममासिकश्राद्धे इदमन्नं सोपस्करं ते स्वधा।

८-ॐ अद्य ....गोत्राय ....जीवशर्मणे/वर्मणे/गुप्ताय उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतोनषाण्मासिकश्राद्धे इदमन्नं सोपस्करं ते स्वधा।

९-ॐ अद्य ....गोत्राय ....जीवशर्मणे/वर्मणे/गुप्ताय उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतषाण्मासिकश्राद्धे इदमन्नं सोपस्करं ते स्वधा।

१०-ॐ अद्य ....गोत्राय ....जीवशर्मणे/वर्मणे/गुप्ताय उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतसप्तममासिकश्राद्धे इदमन्नं सोपस्करं ते स्वधा।

११-ॐ अद्य ....गोत्राय ....जीवशर्मणे/वर्मणे/गुप्ताय उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गताष्टममासिकश्राद्धे इदमन्नं सोपस्करं ते स्वधा।

१२-ॐ अद्य ....गोत्राय ....जीवशर्मणे/वर्मणे/गुप्ताय उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतनवममासिकश्राद्धे इदमन्नं सोपस्करं ते स्वधा।

१३-ॐ अद्य ....गोत्राय ....जीवशर्मणे/वर्मणे/गुप्ताय उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतदशममासिकश्राद्धे इदमन्नं

सोपस्करं ते स्वधा।

१४-ॐ अद्य ....गोत्राय ....जीवशर्मणे/वर्मणे/गुप्ताय उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतैकादशमासिकश्राद्धे इदमन्नं सोपस्करं ते स्वधा।

१५-ॐ अद्य ....गोत्राय ....जीवशर्मणे/वर्मणे/गुप्ताय उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतोनद्वादशमासिकश्राद्धे इदमन्नं सोपस्करं ते स्वधा।

१६-ॐ अद्य ....गोत्राय ....जीवशर्मणे/वर्मणे/गुप्ताय उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतद्वादशमासिकश्राद्धे इदमन्नं सोपस्करं ते स्वधा।

अन्तमें निम्न प्रार्थना करे—

अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद् भवेत्। अच्छिद्रमस्तु तत्सर्वं पित्रादीनां प्रसादतः॥

पितृगायत्रीका पाठ—सव्य पूर्वाभिमुख हो आचमन एवं हरिस्मरण कर ले। निम्न पितृगायत्रीका तीन बार पाठ करे—

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च। नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः॥

वेदशास्त्रादिका पाठ—तदनन्तर पैरोंके नीचे पूर्वाग्र तीन कुश रखकर स्वयं करे अथवा ब्राह्मणद्वारा निम्न वेदादि मन्त्रोंका पाठ कराये—

श्रुतिपाठ—**ॐ अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्॥**

ॐ इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्व मघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा व स्तेन ईशत माघशꣳसो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि॥

ॐ अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये। नि होता सत्सि बर्हिषि॥

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्त्रवन्तु नः॥

स्मृतिपाठ—मनुमेकाग्रमासीनमभिगम्य महर्षयः। प्रतिपूज्य यथान्यायमिदं वचनमब्रुवन्॥

योगीश्वरं याज्ञवल्क्यं सम्पूज्य मुनयोऽब्रुवन्। वर्णाश्रमेतराणां नो ब्रूहि धर्मानशेषतः॥

मन्वत्रिविष्णुहारीतयाज्ञवल्क्योशनोऽङ्गिराः। यमापस्तम्बसंवर्ताः कात्यायनबृहस्पती॥

पराशरव्यासशङ्खलिखिता दक्षगौतमौ। शातातपोवसिष्ठश्च धर्मशास्त्रप्रयोजकाः॥

महाभारत—दुर्योधनो मन्युमयो महाद्रुमः स्कन्धः कर्णः शकुनिस्तस्य शाखाः।

दुःशासनः पुष्पफले समृद्धे मूलं राजा धृतराष्ट्रोऽमनीषी॥

युधिष्ठिरो धर्ममयो महाद्रुमः स्कन्धोऽर्जुनो भीमसेनोऽस्य शाखाः।

माद्रीसुतौ पुष्पफले समृद्धे मूलं कृष्णो ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च॥

पुराण— नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्। देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत्॥

सप्त व्याधा दशार्णेषु मृगाः कालञ्जरे गिरौ॥

चक्रवाकाः शरद्वीपे हंसाः सरसि मानसे॥

तेऽभिजाताः कुरुक्षेत्रे ब्राह्मणा वेदपारगाः। प्रस्थिता दीर्घमध्वानं यूयं किमवसीदथ॥

विकिरदान*—अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर दक्षिणकी भूमिको जलसे सींच दे। वहाँ कुश बिछा दे। पिण्डदानके लिये निर्मित सामग्रीमेंसे किंचित् सामग्री लेकर उसमें घृत, जल, तिल मिलाकर दाहिने हाथमें ले ले तथा मोटक, तिल, जल लेकर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए पितृतीर्थसे सिंचित भूमिपर कुशोंके ऊपर विकिरदान करे—

असंस्कृतप्रमीतानां त्यागिनां कुलभागिनाम्। उच्छिष्टभागधेयानां दर्भेषु विकिरासनम्॥

अग्निदग्धाश्च ये जीवा येऽप्यदग्धाः कुले मम। भूमौ दत्तेन तृप्यन्तु तृप्ता यान्तु परां गतिम्॥

तदनन्तर पहिनी हुई पवित्री, मोटक आदिका वहीं परित्याग कर दे। हाथ-पैर धो ले। अपने आसनपर आ जाय। सव्य पूर्वाभिमुख होकर आचमन कर ले, नयी पवित्री धारण कर ले। श्रीहरिका स्मरणकर अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर पिण्डदानके लिये वेदीका निर्माण करे।

वेदीनिर्माण—बायाँ घुटना जमीनपर टिकाकर एक वित्ता लम्बी तथा आठ अङ्गुल चौड़ी दक्षिण दिशामें ढालवाली सोलह वेदियाँ बनाकर उन्हें निम्न मन्त्र पढ़ते हुए जलसे सींच दे—

ॐ अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची ह्यवन्तिका। पुरी द्वारावती ज्ञेयाः सप्तैता मोक्षदायिकाः॥

रेखाकरण—बायें हाथके अंगुष्ठ तथा तर्जनीसे तीन समूल कुशोंके अग्रभागको और दाहिने हाथके अंगुष्ठ तथा तर्जनीसे कुशोंके मूलभागको पकड़कर '**ॐ अपहता असुरा रक्षाꣳसि वेदिषदः**' मन्त्रससे सभी वेदियोंपर उत्तरसे दक्षिणकी

* आभ्युदयिके च पूर्वे प्रेतश्राद्धे तु दक्षिणे। क्षयाहे अग्निकोणे स्यान्नैर्ऋत्ये पार्वणे तथा॥

ओर रेखा खींचे और उन कुशोंको ईशानकोणकी ओर फेंक दे।

उल्मुकस्थापन—एक अंगारको क्रमशः सभी वेदियोंके चारों ओर बायीं ओरसे निम्न मन्त्रसे घुमाये—

ॐ ये रूपाणि प्रतिमुञ्चमाना असुराः सन्तः स्वधया चरन्ति। परापुरो निपुरो ये भरन्त्यग्निष्टाँल्लोकात्प्रणुदात्यस्मात्॥

—और उसे प्रथम पिण्डवेदीके दक्षिणकी ओर श्राद्धपर्यन्त स्थापित कर दे।

कुशास्तरण—समूल तीन कुशोंको एक साथ जड़सहित दो भागोंमें विभक्त करके प्रत्येक वेदीपर खींची गयी रेखापर दक्षिणाग्र बिछा दे।

अवनेजनपात्र-स्थापन—सभी वेदियोंकी पश्चिम दिशामें एक-एक अवनेजनपात्र (दोनिये या मिट्टीके दीये) रख दे। ये ही अवनेजनपात्र बादमें प्रत्यवनेजनपात्र कहलाते हैं।

अवनेजनदानका संकल्प—पिण्डवेदीकी पश्चिम दिशामें रखे सोलह दोनियोंमें तिल, जल, चन्दन, पुष्प छोड़कर दाहिने हाथमें प्रथम दोनिया तथा मोटक, तिल, जल लेकर निम्न संकल्प बोलकर अवनेजनदान करे—

१-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धे उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतोनमासिकश्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते स्वधा।

—कहकर प्रथम वेदीके मध्यमें उस अवनेजनपात्रसे पितृतीर्थद्वारा आधा जल बिछे हुए कुशपर गिराकर उस सजलपात्रको जहाँसे उठाया था, वहीं रख दे। इसी प्रकार क्रमशः सभी वेदियोंपर संकल्पके अनन्तर आधा-आधा अवनेजन-जल कुशोंपर दे और अवनेजनपात्र यथास्थान रखता जाय। संकल्प इस प्रकार हैं—

२-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धे उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतप्रथममासिकश्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते स्वधा।

३-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धे उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतत्रैपाक्षिकश्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते स्वधा।

४-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धे उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतद्वितीयमासिकश्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते स्वधा।

५-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धे उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गततृतीयमासिकश्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते स्वधा।

६-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धे उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतचतुर्थमासिकश्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते स्वधा।

७-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धे उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतपञ्चममासिकश्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते स्वधा।

८-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धे उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतोनषाणमासिकश्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते स्वधा।

९-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धे उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतषाणमासिकश्राद्धपिण्डस्थाने

अत्रावनेनिक्ष्व ते स्वधा।

१०-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धे उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतसप्तममासिकश्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते स्वधा।

११-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धे उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गताष्टममासिकश्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते स्वधा।

१२-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धे उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतनवममासिकश्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते स्वधा।

१३-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धे उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतदशममासिकश्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते स्वधा।

१४-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धे उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतैकादशमासिकश्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते स्वधा।

१५-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धे उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतोनद्वादशमासिकश्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते स्वधा।

१६-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धे उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गते द्वादशमासिकश्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते स्वधा।

पिण्डदान—तिल, घृतादिमिश्रित अन्नसे कपित्थ (कैथ)-के बराबर सोलह पिण्ड* बनाकर किसी पत्तल आदिपर रख ले—

बायाँ घुटना मोड़कर तथा जमीनपर टिकाकर मोटक, तिल, जल तथा एक पिण्ड दायें हाथमें लेकर बायें हाथसे दायें हाथका स्पर्श किये हुए निम्न संकल्प बोलकर पिण्डको पितृतीर्थसे प्रथम वेदीके मध्यमें कुशोंपर अवनेजनस्थानपर बायें हाथकी सहायतासे रख दे—

१-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धविहितोत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतोनमासिकश्राद्धे एष पिण्डस्ते स्वधा।

कुछ अन्न पिण्डके समीप डाल दे तथा पिण्डाधार कुशोंके मूलमें हाथ पोंछ ले।

इसी प्रकार सभी वेदियोंपर निम्न संकल्पोंसे पिण्डदानादि करे—

२-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धविहितोत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतप्रथममासिकश्राद्धे एष पिण्डस्ते स्वधा।

३-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धविहितोत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतत्रैपाक्षिकश्राद्धे एष पिण्डस्ते स्वधा।

---

* अधिकमास होनेपर सत्रह पिण्ड होंगे।

४-ॐ अद्य ····गोत्र ····जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धविहितोत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतद्वितीयमासिकश्राद्धे एष पिण्डस्ते स्वधा।

५-ॐ अद्य ····गोत्र ····जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धविहितोत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गततृतीयमासिकश्राद्धे एष पिण्डस्ते स्वधा।

६-ॐ अद्य ····गोत्र ····जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धविहितोत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतचतुर्थमासिकश्राद्धे एष पिण्डस्ते स्वधा।

७-ॐ अद्य ····गोत्र ····जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धविहितोत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतपञ्चममासिकश्राद्धे एष पिण्डस्ते स्वधा।

८-ॐ अद्य ····गोत्र ····जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धविहितोत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतोनषाण्मासिकश्राद्धे एष पिण्डस्ते स्वधा।

९-ॐ अद्य ····गोत्र ····जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धविहितोत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतषाण्मासिकश्राद्धे एष पिण्डस्ते स्वधा।

१०-ॐ अद्य ····गोत्र ····जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धविहितोत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतसप्तममासिकश्राद्धे एष पिण्डस्ते स्वधा।

११-ॐ अद्य ......गोत्र ......जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धविहितोत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गताष्टममासिकश्राद्धे एष पिण्डस्ते स्वधा।

१२-ॐ अद्य ......गोत्र ......जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धविहितोत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतनवममासिकश्राद्धे एष पिण्डस्ते स्वधा।

१३-ॐ अद्य ......गोत्र ......जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धविहितोत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतदशममासिकश्राद्धे एष पिण्डस्ते स्वधा।

१४-ॐ अद्य ......गोत्र ......जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धविहितोत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतैकादशमासिकश्राद्धे एष पिण्डस्ते स्वधा।

१५-ॐ अद्य ......गोत्र ......जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धविहितोत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतोनद्वादशमासिकश्राद्धे एष पिण्डस्ते स्वधा।

१६-ॐ अद्य ......गोत्र ......जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धविहितोत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतद्वादशमासिकश्राद्धे एष पिण्डस्ते स्वधा।

सव्य पूर्वाभिमुख होकर आचमन करे तथा हरिस्मरण कर ले।

श्वासनियमन—अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर आसनपर बैठे हुए ही श्वास खींचते हुए बायीं ओरसे

उत्तराभिमुख हो निम्न मन्त्र पढ़े—

अत्र पितरो* मादयध्वं यथाभागमावृषायध्वम्।

श्वास रोककर उसी क्रमसे दक्षिणाभिमुख होकर भास्वरमूर्ति तेजःपुंजस्वरूप जीवका ध्यान करते हुए पिण्डके पास श्वास छोड़े और '**अमीमदन्त पितरो यथाभागमावृषायिषत**' यह मन्त्र पढ़े। यह क्रिया सभी वेदियोंपर करे।

प्रत्यवनेजनदान—पहले अवनेजनपात्रमें जल न हो तो उसमें जल छोड़कर मोटक, तिल, जल तथा प्रत्यवनेजनपात्र दायें हाथमें लेकर बायें हाथसे स्पर्श किये हुए बायाँ घुटना टिकाकर निम्न संकल्प करते हुए प्रत्यवनेजन जलको पिण्डपर गिरा दे और प्रत्यवनेजनपात्रको अलग रख दे।

---

* श्राद्धकी कई प्रयोगपद्धतियोंमें '**अत्र पितरो मादयध्वम्०**', '**नमो वः पितरः०**', '**अघोराः पितरः०**', '.....**स्वधा स्थ तर्पयत मे पितॄन्**' आदि वैदिक मन्त्रोंमें ऊह करके लिंग-वचन तथा सम्बन्ध आदिका परिवर्तन कर दिया गया है अर्थात् एकोद्दिष्टश्राद्धोंमें '**पितरः०**' इत्यादि बहुवचनान्त पदोंमें ऊह करके उन्हें एकवचनान्त कर दिया गया है। वैदिक मन्त्रोंमें आनुपूर्वी नियत होनेके कारण ऊह करनेसे मन्त्रत्व नहीं रह जायगा और उन मन्त्रोंकी कर्मांगता भी नहीं हो सकेगी। इसी आशयसे पातंजलमहाभाष्यमें '**वैदिकाः खल्वपि**'—इसका व्याख्यान करते हुए आचार्य कैयटने '**वेदे त्वानुपूर्वीनियमाद्वाक्यान्युदाहरति**'—ऐसा लिखा है। इसके अतिरिक्त ऊह न करनेके विषयमें निम्नलिखित प्रमाण ध्यातव्य हैं—

(क) अनाम्नातेष्वमन्त्रत्वमाम्नातेषु हि विभागः॥'.....**याज्ञिकप्रसिद्धिरूपस्य मन्त्रलक्षणस्यैतेष्वभावात्। न ह्यध्येतार ऊहादीन् मन्त्रकाण्डेऽधीयते। तस्मात् नास्ति मन्त्रत्वम्।**' (जैमिनीय न्यायमाला अ० २, पाद १, अधि० ९, सूत्र ३४ तथा व्याख्या)

(ख) '.....**एवञ्च पूर्वोक्ते मन्त्रजाते पितृशब्दस्य सपिण्डीकरणान्तश्राद्धजन्यपितृत्वपरत्वात्तस्य च मातामहादिष्वपि सद्भावान्नोहः**। तथा '**पूयति वा एतदृचोऽक्षरं यदेनदूहति तस्मादृचं नोहेत्**' **इति प्रतिषेधादपि नोहः**। तथा **अनृग्रूपेष्वपि मन्त्रेषु** '**एतद्वः पितरो वासोऽमीमदन्त पितरः**' **इत्यादिष्वपि पूर्वोक्तन्यायान्नोहः।**' (भगवन्तभास्कर, श्राद्धमयूख)

१-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धे उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतोनमासिकश्राद्धपिण्डोपरि अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते स्वधा।

—बोलकर पिण्डपर उस जलको गिरा दे। प्रत्यवनेजनपात्रको अलग रख दे। इसी प्रकार आगे भी निम्न संकल्पवाक्योंको पढ़ते हुए सभी पिण्डोंपर प्रत्यवनेजनदान दे।

२-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धे उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतप्रथममासिकश्राद्धपिण्डोपरि अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते स्वधा।

३-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धे उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतत्रैपाक्षिकश्राद्धपिण्डोपरि अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते स्वधा।

४-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धे उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतद्वितीयमासिकश्राद्धपिण्डोपरि अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते स्वधा।

५-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धे उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गततृतीयमासिकश्राद्धपिण्डोपरि अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते स्वधा।

६-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धे उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतचतुर्थमासिकश्राद्धपिण्डोपरि अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते स्वधा।

७-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धे उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतपञ्चममासिकश्राद्धपिण्डोपरि

अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते स्वधा।

८-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धे उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतोनषाण्मासिकश्राद्धपिण्डोपरि अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते स्वधा।

९-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धे उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतषाण्मासिकश्राद्धपिण्डोपरि अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते स्वधा।

१०-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धे उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतसप्तममासिकश्राद्धपिण्डोपरि अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते स्वधा।

११-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धे उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गताष्टममासिकश्राद्धपिण्डोपरि अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते स्वधा।

१२-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धे उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतनवममासिकश्राद्धपिण्डोपरि अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते स्वधा।

१३-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धे उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतदशममासिकश्राद्धपिण्डोपरि अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते स्वधा।

१४-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धे उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतैकादशमासिकश्राद्धपिण्डोपरि अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते स्वधा।

१५-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धे उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतोनद्वादशमासिकश्राद्धपिण्डोपरि अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते स्वधा।

१६-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धे उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतद्वादशमासिकश्राद्धपिण्डोपरि अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते स्वधा।

नीवीविसर्जन—नीवीको निकालकर ईशानकोणकी ओर फेंक दे। सव्य होकर आचमन करे और भगवान्‌का स्मरण करे, पुनः अपसव्य हो जाय।

सूत्रदान—बायें हाथसे सूत्र पकड़कर दाहिने हाथमें लेकर निम्न मन्त्र पढ़े—

ॐ नमो वः पितरो रसाय नमो वः पितरः शोषाय नमो वः पितरो जीवाय नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे नमो वः पितरः पितरो नमो वो गृहान्नः पितरो दत्त सतो वः पितरो देष्म। और **'एतद्वः पितरो वासः'** कहकर सभी पिण्डोंपर पृथक्-पृथक् सूत्र चढ़ाये।

सूत्रदानका संकल्प—तदनन्तर मोटक, तिल, जल हाथमें लेकर निम्नरीतिसे सूत्रदानका संकल्प करे—

१-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धे उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतोनमासिकश्राद्धपिण्डोपरि एतत्ते वासः स्वधा—कहकर संकल्पजल प्रथमपिण्डपर छोड़ दे। इसी प्रकार सभी पिण्डोंपर निम्न संकल्प पढ़कर जल छोड़े—

२-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धे उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतप्रथममासिकश्राद्धपिण्डोपरि

एतत्ते वासः स्वधा।

३-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धे उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतत्रैपाक्षिकश्राद्धपिण्डोपरि एतत्ते वासः स्वधा।

४-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धे उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतद्वितीयमासिकश्राद्धपिण्डोपरि एतत्ते वासः स्वधा।

५-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धे उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गततृतीयमासिकश्राद्धपिण्डोपरि एतत्ते वासः स्वधा।

६-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धे उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतचतुर्थमासिकश्राद्धपिण्डोपरि एतत्ते वासः स्वधा।

७-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धे उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतपञ्चममासिकश्राद्धपिण्डोपरि एतत्ते वासः स्वधा।

८-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धे उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतोनषाण्मासिकश्राद्धपिण्डोपरि एतत्ते वासः स्वधा।

९-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धे उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतषाण्मासिकश्राद्धपिण्डोपरि एतत्ते वासः स्वधा।

१०-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धे उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतसप्तममासिकश्राद्धपिण्डोपरि एतत्ते वासः स्वधा।

११-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धे उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गताष्टममासिकश्राद्धपिण्डोपरि एतत्ते वासः स्वधा।

१२-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धे उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतनवममासिकश्राद्धपिण्डोपरि एतत्ते वासः स्वधा।

१३-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धे उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतदशममासिकश्राद्धपिण्डोपरि एतत्ते वासः स्वधा।

१४-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धे उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतैकादशमासिकश्राद्धपिण्डोपरि एतत्ते वासः स्वधा।

१५-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धे उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतोनद्वादशमासिकश्राद्धपिण्डोपरि एतत्ते वासः स्वधा।

१६-ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धे उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतद्वादशमासिकश्राद्धपिण्डोपरि एतत्ते वासः स्वधा।

पिण्डपूजन—तदनन्तर निम्न रीतिसे सोलह पिण्डोंका पृथक्-पृथक् पूजन करे—

इदं स्नानीयं जलम्—कहकर स्नानीय जल चढ़ाये। **इदमाचमनीयम्**—कहकर आचमनीय जल चढ़ाये। **इदं सूत्रादिकं वासः**—कहकर सूत चढ़ाये। **इदमाचमनीयम्**—कहकर आचमनीय जल चढ़ाये। **एष गन्धः**—कहकर गन्ध चढ़ाये। **इमे तिलाक्षताः**—कहकर तिलाक्षत चढ़ाये। **इदं माल्यम्**—कहकर माला चढ़ाये। **एष धूपः**—कहकर धूप दिखाये। **एष दीपः**—कहकर दीप दिखाये। हाथ धो ले। **इदं नैवेद्यम्**—कहकर नैवेद्य अर्पित करे। **एषा दक्षिणा**—कहकर दक्षिणा चढ़ाये।

पिण्डपूजनका संकल्प—पिण्ड-पूजनके अनन्तर हाथमें मोटक, तिल, जल लेकर निम्न संकल्प बोले—

ॐ अद्य ......गोत्र ......जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धे उत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतोनमासिकादिद्वादशमासिकान्त-श्राद्धपिण्डेषु एतान्यर्चनानि ते स्वधा। कहकर हाथका संकल्पजल सभी पिण्डोंपर छोड़ दे।

अक्षय्योदकदान—प्रत्येक भोजनपात्रपर '**ॐ शिवा आपः सन्तु**' कहकर जल छोड़े।

'**ॐ सौमनस्यमस्तु**' कहकर पुष्प छोड़े और '**ॐ अक्षतं चारिष्टं चास्तु**' कहकर अक्षत छोड़े।

अक्षय्योदकदानका संकल्प—हाथमें जल लेकर सर्वप्रथम ऊनमासिक श्राद्धके निमित्त अक्षय्योदकदानका संकल्प करे—

१-ॐ अद्य ......गोत्रस्य ......जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धविहितोत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतोनमासिकश्राद्धे जीवस्य दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु।

—कहकर जल गिरा दे। इसी प्रकार अन्य प्रथम मासिकादि श्राद्धोंके अक्षय्योदकदानका अलग-अलग संकल्प करके

जल गिरा दे।

२-ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धविहितोत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतप्रथममासिकश्राद्धे जीवस्य दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु।

३-ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धविहितोत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतत्रैपाक्षिकश्राद्धे जीवस्य दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु।

४-ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धविहितोत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतद्वितीयमासिकश्राद्धे जीवस्य दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु।

५-ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धविहितोत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गततृतीय-मासिकश्राद्धे जीवस्य दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु।

६-ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धविहितोत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतचतुर्थ-मासिकश्राद्धे जीवस्य दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु।

७-ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धविहितोत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतपञ्चम-मासिकश्राद्धे जीवस्य दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु।

८-ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धविहितोत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतोनषाणमासिक-श्राद्धे जीवस्य दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु।

९-ॐ अद्य ·····गोत्रस्य ·····जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धविहितोत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतषाण्मासिकश्राद्धे जीवस्य दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु।

१०-ॐ अद्य ·····गोत्रस्य ·····जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धविहितोत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतसप्तम-मासिकश्राद्धे जीवस्य दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु।

११-ॐ अद्य ·····गोत्रस्य ·····जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धविहितोत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गताष्टम-मासिकश्राद्धे जीवस्य दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु।

१२-ॐ अद्य ·····गोत्रस्य ·····जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धविहितोमषोडशश्राद्धान्तर्गतनवममासिकश्राद्धे जीवस्य दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु।

१३-ॐ अद्य ·····गोत्रस्य ·····जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धविहितोत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतदशममासिकश्राद्धे जीवस्य दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु।

१४-ॐ अद्य ·····गोत्रस्य ·····जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धविहितोत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतैकादशमासिक-श्राद्धे जीवस्य दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु।

१५-ॐ अद्य ·····गोत्रस्य ·····जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धविहितोत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतोनद्वादशमासिक-श्राद्धे जीवस्य दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु।

१६-ॐ अद्य ·····गोत्रस्य ·····जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धविहितोत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतद्वादश-

मासिकश्राद्धे जीवस्य दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु।

जलधारा—सव्य होकर दक्षिण दिशाकी ओर देखते हुए सभी पिण्डोंपर निम्न मन्त्रसे पितृतीर्थसे पूर्वाग्र जलधारा दे—**ॐ अघोराः पितरः सन्तु।**

आशिष-प्रार्थना—पूर्वाभिमुख होकर हाथ जोड़कर आशिष-प्रार्थना करे—

ॐ गोत्रं नो वर्द्धतां दातारो नोऽभिवर्द्धन्ताम्। वेदाः सन्ततिरेव च। श्रद्धा च नो मा व्यगमद् बहुदेयं च नोऽस्तु। अन्नं च नो बहु भवेदतिथींश्च लभेमहि। याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म कञ्चन। एताः सत्या आशिषः सन्तु॥

ब्राह्मणवाक्य—सन्त्वेताः सत्या आशिषः।

पिण्डोंपर जलधारा या दुग्धधारा देना—एक पवित्रीमें तीन कुशोंको फँसाकर पिण्डोंपर दक्षिणाग्र रखे तथा निम्न मन्त्रसे पिण्डोंपर दक्षिणाग्र जलधारा अथवा दुग्धधारा दे—

ॐ ऊर्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्रुतम्। स्वधा स्थ तर्पयत मे पितॄन्॥

पिण्डाघ्राण—नम्र होकर पिण्डोंको सूँघकर उठा ले और किसी पात्रमें रख दे।

अर्घपात्रसंचालन—अर्घपात्रोंको हिला दे।

रजतदक्षिणादान—श्राद्धके अनन्तर चाँदीकी दक्षिणा देनेका विधान है। सव्य होकर सोलह रजतखण्डों तथा त्रिकुश, तिल, जल लेकर निम्न संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे मरणोत्तरभाविप्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वकपितृपङ्क्ति-

प्रवेशाधिकारसिद्ध्यर्थं विहितानामुत्तमषोडशश्राद्धान्तर्गतोनमासिकादिद्वादशमासिकान्तश्राद्धानां साङ्गताप्रतिष्ठासंसिद्ध्यर्थं रजतं चन्द्रदैवतम्/रजतनिष्क्रयद्रव्यम् .....गोत्राय .....शर्मणे ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे। बोलकर दक्षिणा ब्राह्मणको दे। (अधिक ब्राह्मणोंको विभाग कर देना हो तो '**नानानामगोत्रेभ्यः नानाशर्मब्राह्मणेभ्यः दातुमुत्सृज्ये**' कहे।)

प्रार्थना—ब्राह्मणसे प्रार्थना करे—**ॐ .....गोत्रस्य .....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य मरणोत्तरभाविप्रेतत्व-निवृत्तिपूर्वकपितृपङ्क्तिप्रवेशाधिकारसिद्धिरस्तु।**

ब्राह्मण बोले—ॐ अस्तु सिद्धिः।

ब्राह्मणभोजनका संकल्प—जीवच्छ्राद्धान्तर्गत उत्तमषोडशश्राद्धकी साङ्गताप्रतिष्ठासिद्धिके लिये अन्तमें ब्राह्मणभोजन कराना चाहिये और दक्षिणा देनी चाहिये; जिसका संकल्प यहाँ दिया जा रहा है—

ॐ अद्य .....गोत्रः .....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहम् .....गोत्रस्य .....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे कृतैतदुत्तमषोडशश्राद्धप्रतिष्ठासाङ्गतासंसिद्ध्यर्थं नानागोत्रनामधेयान् यथासंख्याकान् ब्राह्मणान् यथाकाले भोजयिष्ये दक्षिणां च दास्ये।

रक्षादीपको बुझाकर हाथ-पैर धोकर पूर्वाभिमुख हो जाय। सव्य होकर आचमन करे और पितृगायत्रीका तीन बार पाठ करे—

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च। नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः॥

भगवान्‌का स्मरण—हाथ जोड़कर भगवान्‌का स्मरण करते हुए बोले—

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्। स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

यत्पादपङ्कजस्मरणाद् यस्य नामजपादपि। न्यूनं कर्म भवेत् पूर्णं तं वन्दे साम्बमीश्वरम्॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुध्याऽऽत्मना वानुसृतस्वभावात्।

करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पये तत्॥

ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः।

ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। ॐ साम्बसदाशिवाय नमः।

कुशोंको बटोरकर एक किनारे कहीं अलग फेंक दे। श्राद्धकी सभी वस्तुएँ ब्राह्मणको दे दे अथवा जलमें छोड़ दे या किसी बाग-बगीचे अथवा वृक्षके नीचे शुद्ध स्थानपर रख दे। श्राद्धभूमिको स्वच्छ कर दे।

॥ जीवच्छ्राद्धान्तर्गत उत्तमषोडशी पूर्ण हुई॥

॥ चतुर्थ दिनका कृत्य पूर्ण हुआ॥

शुक्ल प्रतिपदा (पंचम दिन)-के कृत्योंकी सामग्री

(क) सपिण्डनश्राद्ध-सामग्री

(१) गंगाजल अथवा शुद्ध जल।

(२) बालू अथवा शुद्ध मिट्टी (वेदी बनानेके लिये)।

खीर बनानेके लिये—(क) ढक्कनसहित हँड़िया—२, एक जिसमें दो किलो जल आ सके। दूसरी, जिसमें आधा किलो जल आ सके, (ख) गोहरी, (ग) दूध—ढाई किलो, (घ) चावल—१ किलो, (ङ) शक्कर देशी—१५० ग्राम।

(३) सफेद चन्दन घिसा हुआ।

(४) काला तिल—१०० ग्राम।

(५) जौ—१० ग्रा।

(६) चावल—५० ग्राम।

(७) दूध—१०० ग्राम।

(८) शक्कर देशी—५० ग्राम।

(९) शहद—५० ग्राम।

(१०) सुपारी—१० नग।

(११) पान—१० नग।

(१२) दीपकके लिये रूई।

(१३) धूप—१ पैकेट।

(१४) गायका घी—२०० ग्राम।

(१५) तिलका तेल—१०० ग्राम (रक्षादीपके लिये)।

(१६) दियासलाई—१ नग।

(१७) पीली सरसों—१० ग्राम।

(१८) कच्चा सूत—१ गोला।

(१९) लौंग-इलायची—१५-१५ नग।

(२०) जनेऊ—१० नग।

(२१) नैवेद्य (पेड़ा-मिसरी आदि)—१२ नग।

(२२) ऋतुफल—१२ (केला छोड़कर)।

(२३) सफेद सुगन्धित पुष्पकी माला—१० नग।

(२४) सफेद सुगन्धित पुष्प, तुलसीपत्र।
(२५) पलाशका पत्तल—५।
(२६) हाथसे बना दीया या पलाशकी दोनिया—२५।
(२७) कुश—२५ नग।
(२८) धोती (सूती मर्दानी)—५ तथा गमछा—५।
(२९) यदि स्त्रीश्राद्ध हो तो जनानी साड़ी—४, ब्लाउज-पीस—४ तथा विश्वेदेवके लिये धोती-गमछा १-१।
(३०) स्वर्णखण्ड—१ नग।
(३१) रजतखण्ड—४ नग।
(३२) पिण्डछेदनके लिये स्वर्ण या रजतका तार लगभग १२ इंच लम्बा।

(ख) सपिण्डनके अनन्तर गणेशपूजन, कलशपूजन, शय्यादान तथा विविध दान आदिकी सामग्री

(क) पूजन-सामग्री—(१) रोली—२५ ग्राम।
(२) अबीर—२५ ग्राम।
(३) सिन्दूर—१० ग्राम।
(४) जनेऊ—५ नग।
(५) सफेद चन्दन (घिसा हुआ)।
(६) चावल—२५० ग्राम। (७) पुष्पमाला—५ नग।
(८) दूर्वा।
(९) पानका पत्ता—१०।
(१०) सुपारी—१० नग।
(११) नैवेद्य (पेड़ा-मिसरी आदि)।
(१२) ऋतुफल।
(१३) धूप—१ पैकेट।
(१४) दीपक।
(१५) रूई।
(१६) घी-२५० ग्राम।
(१७) दियासलाई—१ नग।

(१८) दही।

(१९) पंचामृत।

(२०) आमका पल्लव।

(२१) धातु या मिट्टीका ढक्कनसहित कलश—१ नग।

(२२) मिट्टीका दीया—१० नग।

(२३) मिट्टीका सकोरा—१० नग।

(२४) एक सजल नारियल (कलशपर रखनेके लिये)।

(२५) लाल वस्त्र—१ मीटर।

(ख) ब्राह्मणवरण-सामग्री—धोती, गमछा, आसन, जनेऊ, सुपारी, दक्षिणा।

(ग) शय्यादान-सामग्री—यह शय्या चतुर्थ दिनके ही समान सामग्रीसे युक्त होगी; किंतु इसमें जीवप्रतिमाके स्थानपर श्रीलक्ष्मीनारायणकी स्वर्णप्रतिमा रहेगी तथा जीवोपभुक्त वस्त्र आदि सामग्री नहीं रहेगी।

(ङ) विविध दान-सामग्री—(१) जलपूर्ण धातुका कलश—१ नग।

(२) वर्षाशन—वर्षभरके लिये षड्रसादि भोजन-सामग्री—सूखा अन्न।

(३) विविध दानकी सामग्री अथवा निष्क्रय द्रव्य।

(४) पददानकी सामग्री तेरह-तेरहकी संख्यामें—(१) छत्र, (२) उपानह (जूता), (३) वस्त्र, (४) मुद्रिका (अँगूठी), (५) कमण्डलु, (६) आसन, (७) बर्तन तथा (८) भोज्यसामग्री। **अथवा** (१) आसन, (२) जूता, (३) छाता, (४) अँगूठी, (५) कमण्डलु, (६) अन्न, (७) जल, (८) बर्तन, (९) वस्त्र, (१०) घी, (११) यज्ञोपवीत, (१२) छड़ी, (१३) ताम्बूल (पान)।

(५) वस्त्रसहित द्वादश कुम्भ।

(६) पक्वान्नसहित वर्धनीकलश—३ नग।

(७) विशेष वर्धनीकलश—१।

(८) श्रवण नामक ऋषियोंके लिये १२ तथा विष्णुके लिये एक कलश—कुल १३ कलश।

सपिण्डनश्राद्धका स्वरूप

दक्षिण

पूर्व

पश्चिम

विकिरदान

भूस्वामी

रक्षादीप (दक्षिणाभिमुख)

जीवप्रपितामह उत्तराभिमुख

जीवपितामह उत्तराभिमुख

जीवपिता उत्तराभिमुख

आसन

जलपात्र

भोजन–पात्र

अर्घपात्र

घृतपात्र

पुनः तीनों अर्घपात्रोंका स्थान

पिण्डदानवेदी

अवनेजनपात्र

अवनेजनपात्र

अवनेजनपात्र

श्राद्धसामग्री

कर्मपात्र

अग्नौकरणपात्र

जीवच्छ्राद्धकर्ता (दक्षिणाभिमुख)

रक्षादीप (दक्षिणाभिमुख)

जीव उत्तराभिमुख आसन

आसन

जलपात्र

भोजनपात्र

अर्घपात्र

घृतपात्र

उत्तान अर्घपात्र

अर्घ्यमेलनके लिये तीन पात्र

पिण्ड–दान वेदी

अवेजनपात्र

श्राद्धसामग्री

कर्मपात्र

जीवच्छ्राद्धकर्ता (दक्षिणाभिमुख)

जीवच्छ्राद्धकर्ता (उत्तराभिमुख)

श्राद्धसामग्री

कर्मपात्र

विश्वेदेवका आसन पूर्वाभिमुख

आसन

भोजन–पात्र

घृतपात्र

अर्घपात्र

जलपात्र

रक्षादीप (पूर्वाभिमुख)

शुक्लप्रतिपदा (पंचम दिन)-का कृत्य

सपिण्डीकरणश्राद्धप्रयोग

भूमिशोधन—स्नानके अनन्तर श्राद्धस्थलपर आ जाय और उसे गोमयसे लीपकर शुद्ध कर ले।

पाकनिर्माण—ईशानकोणमें दो पृथक्-पृथक् पाक बनाने चाहिये, एक पाक विश्वेदेवों तथा पितरोंके लिये एवं दूसरा पाक जीवके लिये। पाकनिर्माणके अनन्तर हाथ-पाँव धो ले। पाकमें तुलसीदल छोड़कर भगवान्‌का भोग लगा ले।*

शिखाबन्धन—श्राद्धकर्ता अपने आसनपर पूर्वाभिमुख बैठ जाय, गायत्रीमन्त्रसे शिखाबन्धन कर ले।

तिलकधारण—मृत्तिका, गोपीचन्दन आदिसे ऊर्ध्वपुण्ड्र अथवा भस्मसे त्रिपुण्ड्र लगा ले।

सिंचन-मार्जन—निम्न मन्त्रसे अपने ऊपर तथा श्राद्धीय वस्तुओंपर जल छिड़के—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु। ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु। ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

पवित्रीधारण—निम्न मन्त्रसे पवित्री पहन ले—

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः।
तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्॥

---

* विष्णोर्निवेदितान्नेन यष्टव्याः सर्वदेवताः।

आचमन—ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः। इन मन्त्रोंको बोलकर आचमन करे। **ॐ हृषीकेशाय नमः** कहकर हाथ धो ले।

प्राणायाम—प्राणायाम करे।

आसन एवं पात्रासादन

विश्वेदेवका आसन—सबसे पहले श्राद्धभूमिमें पश्चिमकी ओर विश्वेदेवके लिये पूर्वाभिमुख पलाशके पत्तलके ऊपर तीन कुशोंका पूर्वाग्र एक आसन रख दे। विश्वेदेवके आसनके पूर्वमें विश्वेदेवके लिये भोजनपात्र (पत्तल) भी रख दे। भोजनपात्रके पास उत्तर दिशामें जलपात्र और अर्घपात्र तथा भोजनपात्रके पूर्वमें घृतपात्र भी रख दे।

जीवच्छ्राद्धकर्ताका आसन—विश्वेदेवके दक्षिण दिशामें उत्तराभिमुख जीवच्छ्राद्धकर्ता अपना आसन लगाये।

जीवासन—विश्वेदेवसे कुछ दूर दक्षिण-पूर्व दिशामें जीवासनके लिये पलाशका पत्तल रखे और उसके ऊपर आसनके लिये दक्षिणाग्र मोटकको रख दे। आसनके सामने भोजनके लिये भोजनपात्र (पत्तल), भोजनपात्रके पश्चिम जलपात्र (दोनिया) तथा अर्घपात्र (दोनिया) और भोजनपात्रके उत्तर घृतपात्र (दोनिया) भी रख दे।

जीवका आसन उत्तराभिमुख तथा जीवच्छ्राद्धकर्ताका आसन दक्षिणाभिमुख रहे।

जीवके पिता, पितामह तथा प्रपितामहके लिये आसन—जीवासनसे कुछ दूर पूर्व दिशामें एक पंक्तिमें जीवके पिता, पितामह तथा प्रपितामहके लिये पृथक्-पृथक् पश्चिमसे पूर्वकी ओर तीन पलाशके

पत्तल बिछा दे तथा उन पत्तलोंपर तीन-तीन कुशोंसे बने मोटकरूप तीन आसन दक्षिणाग्र रखे।

सभी आसनोंके सामने भोजनपात्र (पत्तल) रखे। भोजनपात्रके पास पश्चिममें जलपात्र (दोनिया) तथा अर्घपात्र (दोनिया) और सामने घृतपात्र (दोनिया) रखे।

जीवच्छ्राद्धकर्ताका आसन—इन तीनों पिता-पितामहादिके आसनोंके ठीक सामने मध्यमें श्राद्धकर्ता अपना आसन दक्षिणाभिमुख लगाये।

रक्षादीप-प्रज्वालन—तिलके तेलसे विश्वेदेवोंके निमित्त विश्वेदेवके आसनके पश्चिम रक्षादीप जलाकर उसे जौके ऊपर पूर्वाभिमुख रख दे। हाथ धो ले। इसी प्रकार जीवके लिये जीवासनसे दक्षिण दिशामें दक्षिणाभिमुख और पितरोंके लिये भी पितरोंके आसनसे दक्षिण दिशामें दक्षिणाभिमुख एक-एक दीपक जलाकर तिलके ऊपर रख दे। दीपक बुझे नहीं—ऐसी व्यवस्था कर ले। **सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि** कहकर गन्ध, अक्षत, पुष्प आदिसे दीपकोंका पूजनकर निम्न प्रार्थना करे—

भो दीप ब्रह्मरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत्। यावत् कर्मसमाप्तिः स्यात् तावत् त्वं सुस्थिरो भव॥

हाथ धोकर अपने आसनपर बैठ जाय।

गदाधर आदिकी प्रार्थना—अंजलिमें फूल लेकर गयाधाम, गदाधर तथा पितरोंका स्मरणकर निम्न मन्त्रसे प्रार्थना करे—

श्राद्धारम्भे गयां ध्यात्वा ध्यात्वा देवं गदाधरम्। स्वपितॄन् मनसा ध्यात्वा ततः श्राद्धं समाचरेत्॥

ॐ गयायै नमः। ॐ गदाधराय नमः। कहकर फूल चढ़ा दे।

तदनन्तर तीन बार '**ॐ श्राद्धभूम्यै नमः**' कहकर भूमिपर जौ एवं पुष्प छोड़े।

भूमिसहित विष्णु-पूजन—श्राद्ध आरम्भ करनेके पूर्व विष्णुभगवान्‌का पूजन करनेका विधान है। अतः निम्न श्लोकसे विष्णुभगवान्‌का स्मरण-पूजन करते हुए पुष्पांजलि समर्पितकर श्राद्ध आरम्भ करना चाहिये—

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्॥

ॐ भूमिपत्नीसहिताय विष्णवे नमः—कहकर भगवान् विष्णुको प्रणामकर पुष्प अर्पित कर दे।

कर्मपात्रका निर्माण—श्राद्धकर्ममें जलका उपयोग करनेके लिये कर्मपात्रका निर्माण कर ले। अक्षतोंके ऊपर जलसे भरा एक कलश रखकर उसमें चन्दन, तुलसी, जौ, पुष्प तथा कुश छोड़ दे और त्रिकुशसे जलको दक्षिणावर्त आलोडित करते हुए निम्न मन्त्रोंको पढ़े—

ॐ यद्देवा देवहेडनं देवासश्चकृमा वयम्। अग्निर्मा तस्मादेनसो विश्वान् मुञ्चत्वꣳहसः॥
ॐ यदि दिवा यदि नक्तमेनाꣳसि चकृमा वयम्। वायुर्मा तस्मादेनसो विश्वान् मुञ्चत्वꣳहसः॥
ॐ यदि जाग्रद्यदि स्वप्न एनाꣳसि चकृमा वयम्। सूर्यो मा तस्मादेनसो विश्वान् मुञ्चत्वꣳहसः॥

प्रोक्षण—कर्मपात्रके जलसे कुशद्वारा अपना तथा सभी श्राद्धसामग्री एवं पाकका प्रोक्षण करे और बोले—'**श्वादिदुष्टदृष्टिनिपातदूषितपाकादिकं पूतं भवतु।**'

कर्मपात्रके जलको तीन भागोंमें विभक्त करके एक भाग विश्वेदेवके सामने, दूसरा भाग जीवके सामने तथा तीसरा भाग पितरोंके लिये रख ले।

दिग्-रक्षण—बायें हाथमें पीली सरसों लेकर दाहिने हाथसे ढककर निम्न मन्त्र बोले—

नमो नमस्ते गोविन्द पुराणपुरुषोत्तम। इदं श्राद्धं हृषीकेश रक्ष त्वं सर्वतो दिशः॥

तदनन्तर दाहिने हाथसे पीली सरसोंको पूर्व-दक्षिण आदि दिशाओंमें निम्न मन्त्रोंको पढ़ते हुए छोड़े—पूर्वमें—**प्राच्यै नमः।** दक्षिणमें—**अवाच्यै नमः।** पश्चिममें—**प्रतीच्यै नमः।** उत्तरमें—**उदीच्यै नमः।** आकाशमें—**अन्तरिक्षाय नमः।** भूमिपर—**भूम्यै नमः।**

हाथ जोड़कर प्रार्थना करे—

पूर्वे नारायणः पातु वारिजाक्षस्तु दक्षिणे। प्रद्युम्नः पश्चिमे पातु वासुदेवस्तथोत्तरे।
ऊर्ध्वं गोवर्धनो रक्षेदधस्ताच्च त्रिविक्रमः॥

नीवीबन्धन—किसी पत्र-पुटक या पानके पत्तेपर तिल, त्रिकुशका टुकड़ा लपेटकर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए दक्षिण कटिभागमें* उसे खोंस ले, बाँध ले—

ॐ निहन्मि सर्वं यदमेध्यकृद् भवेद्धताश्च सर्वेऽसुरदानवा मया।
यक्षाश्च रक्षांसि पिशाचगुह्यका हता मया यातुधानाश्च सर्वे॥

---

* श्राद्धमें रक्षाके लिये किसी पत्तेमें तिल तथा कुशत्रयसे नीवीबन्धन किया जाता है। पितृकार्यमें दक्षिण कटिभागमें नीवीबन्धन होता है—**पितॄणां दक्षिणे पार्श्वे विपरीता तु दैविके। दक्षिणे कटिदेशे तु कुशत्रयतिलैः सह॥ तर्जयन्तीह दैत्यानां यथा नॄणामयस्तथा।**

ॐ सोमस्य नीविरसि विष्णोः शर्मासि शर्मयजमानस्येन्द्रस्य योनिरसि सुसस्याः कृषीस्कृधि।

प्रतिज्ञा-संकल्प—दाहिने हाथमें त्रिकुश, तिल तथा जल लेकर प्रतिज्ञा-संकल्प करे—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः नमः परमात्मने पुरुषोत्तमाय ॐ तत्सत् अद्यैतस्य विष्णोराज्ञया जगत्सृष्टिकर्मणि प्रवर्तमानस्य ब्रह्मणो द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे ....क्षेत्रे (यदि काशी हो तो **अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रे गौरीमुखे त्रिकण्टकविराजिते महाश्मशाने भगवत्या उत्तरवाहिन्या भागीरथ्या वामभागे) बौद्धावतारे ....संवत्सरे ....उत्तरायणे/दक्षिणायने ....ऋतौ ....मासे ....पक्षे ....तिथौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहम् ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धे मरणोत्तरभाविप्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वकपितृपङ्क्तिप्रवेशार्थं पार्वणविधिना सदैवं सैकोद्दिष्टं सपिण्डीकरणश्राद्धं करिष्ये।**

हाथके संकल्पके जल आदिको भूमिपर छोड़ दे।

पितृगायत्रीका पाठ—पितृगायत्रीका तीन बार पाठ करे—

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च। नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः॥

आसनदान

(१) विश्वेदेवके लिये आसनदान—जीवके पिता, पितामह तथा प्रपितामहके आसनोंकी प्रदक्षिणा करते हुए विश्वेदेवके आसनके पास आ जाय तथा उत्तराभिमुख होकर अपने आसनपर बैठ जाय। विश्वेदेवके आसनके पास रखे हुए कर्मपात्रके जलसे विश्वेदेवसम्बन्धी सब कार्य करे। हाथमें त्रिकुश, जल तथा जौ लेकर

विश्वेदेवको आसन प्रदान करनेके लिये निम्न संकल्प पढ़े—

संकल्प—ॐ अद्य ……गोत्रस्य ……जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतसपिण्डीकरणश्राद्धे जीवपितृपितामहप्रपितामहानां ……गोत्राणां ……शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां श्राद्धसम्बन्धिनां कामकालसंज्ञकानां* विश्वेषां देवानामिदं त्रिकुशात्मकमासनं वो नमः।

हाथका जौ, जल आदि विश्वेदेवके आसनपर छोड़ दे। हाथकी पवित्री तथा त्रिकुश वहींपर रख दे।

जीवके लिये आसनदान—विश्वेदेवको आसन देनेके बाद विश्वेदेवकी परिक्रमा करते हुए जीवासनके समीप आकर अपने आसनपर अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर बैठ जाय। जीवमण्डलमें रखे गये कर्मपात्रके जलसे ही यहाँका समस्त कार्य करे। नयी पवित्री धारण कर ले। हाथमें मोटक, तिल तथा जल लेकर जीवके लिये आसनदानका इस प्रकार संकल्प करे—

संकल्प—ॐ अद्य ……गोत्रस्य ……जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतसपिण्डीकरणश्राद्धे जीवस्य इदं मोटकरूपमासनं ते स्वधा—ऐसा कहकर जीवके आसनपर पितृतीर्थसे मोटक, जल तथा तिल छोड़ दे।

---

* **इष्टिश्राद्धे क्रतुर्दक्षः सत्यो नान्दीमुखे वसुः। नैमित्तिके कामकालौ काम्ये च धुरिलोचनौ। पुरूरवार्द्रवौ चैव पार्वणे समुदाहृतौ॥**

[इष्टिश्राद्धमें क्रतु तथा दक्ष, नान्दीमुखश्राद्धमें सत्य तथा वसु, नैमित्तिकश्राद्धमें काम तथा काल, काम्यश्राद्धमें धुरि तथा लोचन, पार्वणश्राद्धमें पुरूरव तथा आर्द्रव—इन नामोंसे विश्वेदेव कहे गये हैं।] (कामधेनुके अनुसार '**मार्द्रव**' शब्द माकारादि सकारान्त है तथा गौड़निबन्धोंमें **पुरूरवाः** शब्द सकारान्त है। अतः **पुरूरवो मार्द्रवौ** यह पाठ भी प्राप्त होता है।)

हाथकी पवित्री और मोटक वहीं रख दे।

जीवके पिता, पितामह तथा प्रपितामहके लिये आसनदान—जीवको आसनदान देनेके अनन्तर जीवके पितरोंके आसनके समीप आकर अपने आसनपर दक्षिणाभिमुख बैठ जाय। यहाँ स्थापित कर्मपात्रके जलसे यहाँका कार्य करे। नयी पवित्री पहन ले। हाथमें मोटक, तिल, जल लेकर जीवके पिता, पितामह तथा प्रपितामहको आसन प्रदान करनेके लिये एकतन्त्रसे निम्न संकल्प पढ़े—

संकल्प—ॐ अद्य ''''गोत्रस्य ''''जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतसपिण्डीकरणश्राद्धे जीव-पितृपितामहप्रपितामहानां ''''शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणामेतानि मोटकरूपाण्यासनानि विभज्य युष्मभ्यं स्वधा।

—ऐसा संकल्प बोलकर हाथके तिल, जलको जीवके पिता, पितामह, प्रपितामहके तीनों मोटकरूप आसनोंपर पितृतीर्थसे क्रमशः छोड़ दे।

हाथकी पवित्री और मोटकको वहीं रख दे।

विश्वेदेवके आसनपर जाना—आसनसे उठकर जीवके पितरोंके आसनोंकी परिक्रमा करते हुए विश्वेदेवके मण्डलमें अपने आसनपर सव्य उत्तराभिमुख होकर बैठ जाय। पवित्री धारण कर ले।

विश्वेदेवोंका आवाहन—हाथमें जौ लेकर इस मन्त्रसे विश्वेदेवोंका आवाहन करे—**ॐ विश्वान् देवानावाहयिष्ये।**

ॐ विश्वे देवास आ गत शृणुता म इमꣳ हवम्। एदं बर्हिर्निषीदत।
ॐ विश्वे देवाः शृणुतेमꣳ हवं मे ये अन्तरिक्षे य उप द्यवि ष्ठ।
ये अग्निजिह्वा उत वा यजत्रा आसद्यास्मिन् बर्हिषि मादयध्वम्॥
आगच्छन्तु महाभागा विश्वेदेवा महाबलाः । ये यत्र योजिताः श्राद्धे सावधाना भवन्तु ते॥

तदनन्तर '**ॐ यवोऽसि यवयास्मद् द्वेषो यवयारातीः**'—इस मन्त्रको पढ़ते हुए विश्वेदेवके आसन*पर जौ छोड़े।

जीवका आवाहन—विश्वेदेवके आसनसे उठकर उनकी परिक्रमा करते हुए जीवासनके पास अपने आसनपर अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर बैठ जाय। यहाँ पहलेसे रखी हुई पवित्री पहन ले। जीवके आवाहनकी भावना करके हाथमें तिल लेकर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए जीवासनपर तिल छोड़ दे—**ॐ अपहता असुरा रक्षाꣳसि वेदिषदः।** हाथकी पवित्री उतारकर वहींपर रख दे।

जीवके पितरोंका आवाहन—जीवासनसे उठकर पितरोंके आसनके समीप अपने आसनपर आकर बैठ जाय। यहाँकी पवित्री धारण कर ले। हाथमें तिल लेकर पितरोंका आवाहन निम्न मन्त्रोंको पढ़ते हुए करे—
'**पितॄनावाहयिष्ये**'

ॐ उशन्तस्त्वा नि धीमह्युशन्तः समिधीमहि। उशन्नुशत आ वह पितॄन् हविषे अत्तवे॥

---

* आवाहयेदनुज्ञातो विश्वे देवास इत्यृचा॥ यवैरन्ववकीर्याथ भाजने सपवित्रके।
शन्नो देव्या पयः क्षिप्त्वा यवोऽसीति यवांस्तथा॥ (वीरमित्रोदय-श्राद्धप्रकाशमें याज्ञवल्क्यका वचन)

ॐ आ यन्तु नः पितरः सोम्यासोऽग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः।
अस्मिन् यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधि ब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान्॥

तदनन्तर **ॐ अपहता असुरा रक्षाꣳसि वेदिषदः**—यह मन्त्र पढ़कर क्रमशः जीवके पिता, पितामह तथा प्रपितामहके मोटकरूप आसनोंपर तिल छोड़ दे।

विश्वेदेवके अर्घपात्रका निर्माण—इस प्रकार आवाहनकर पितृमण्डलकी परिक्रमा करके विश्वेदेवमण्डलपर आ जाय, सव्य उत्तराभिमुख होकर निम्न रीतिसे विश्वदेवके अर्घपात्रका निर्माण करे—

अर्घपात्र (दोनिये)-में निम्न मन्त्रसे दो कुशपत्रका पवित्रक पूर्वाग्र रखे—

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः।
तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्॥

तदनन्तर निम्न मन्त्रसे दोनियेमें जल डाले—

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्रवन्तु नः॥

और फिर '**ॐ यवोऽसि यवयास्मद् द्वेषो यवयारातीः**'—मन्त्रसे जौ डाले।

गन्ध, पुष्प मौन होकर छोड़े।

इसके बाद अर्घपात्रको बायें हाथमें लेकर दाहिने हाथसे अर्घपात्रसे पवित्रक निकालकर विश्वेदेवके भोजनपात्रपर

पूर्वाग्र रख दे और '**ॐ नमो नारायणाय**' इस मन्त्रसे एक आचमनी जल पवित्रकके ऊपर छोड़ दे।

अर्घपात्रको दाहिने हाथसे ढककर निम्न मन्त्र पढ़कर अभिमन्त्रित करे—

ॐ या दिव्या आपः पयसा सम्बभूवुर्या आन्तरिक्षा उत पार्थवीर्याः।
हिरण्यवर्णा यज्ञियास्ता न आपः शिवाः शꣳ स्योनाः सुहवा भवन्तु॥

विश्वेदेव-अर्घदान—दाहिने हाथमें त्रिकुश, जौ, जल तथा अर्घपात्र लेकर निम्न संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतसपिण्डीकरणश्राद्धे ....गोत्राणां जीवपितृपितामहप्रपितामहानां ....शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां श्राद्धसम्बन्धिनः कामकालसंज्ञका विश्वेदेवा एष हस्तार्घो वो नमः।

—ऐसा संकल्प पढ़कर हाथपर रखे हुए अर्घपात्रके जलको देवतीर्थसे भोजनपात्रस्थ पवित्रकपर गिरा दे। पवित्रकको पूर्वाग्र अर्घपात्रमें रख दे और अर्घपात्रको विश्वेदेवके आसनके दक्षिणभागमें (दायीं ओर) '**विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्थानमसि**' कहकर ऊर्ध्वमुख रख दे।

विश्वेदेवपूजन—निम्न रीतिसे विश्वेदेवोंका पूजन करे—

[कर्ताका वचन] [आचार्यका वचन]

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं स्नानीयम् (सुस्नानीयम्)—कहकर स्नानीय जल दे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं वस्त्रम् (सुवस्त्रम्)—कहकर वस्त्र अर्पित करे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इमे यज्ञोपवीते (सुयज्ञोपवीते)—कहकर यज्ञोपवीत चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदमुपवस्त्रम् (सुवस्त्रम्)—कहकर उपवस्त्र चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

एष गन्धः (सुगन्धः)—कहकर गन्ध आघ्रापित करे।

इमे यवाक्षताः (सुयवाक्षताः)—कहकर यवाक्षत चढ़ाये।

इदं माल्यम् (सुमाल्यम्)—कहकर माला चढ़ाये।

एष धूपः (सुधूपः)—कहकर धूप आघ्रापित करे।

एष दीपः (सुदीपः)—कहकर दीप दिखाये।

हस्तप्रक्षालनम् (हाथ धो ले)

इदं नैवेद्यम् (सुनैवेद्यम्)—कहकर नैवेद्य अर्पित करे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं फलम् (सुफलम्)—कहकर फल अर्पित करे।

इदं ताम्बूलम् (सुताम्बूलम्)—कहकर ताम्बूल अर्पित करे।

एषा दक्षिणा (सुदक्षिणा)—कहकर दक्षिणा चढ़ाये। इत्यादि उपचारोंसे विश्वेदेवका पूजन करे।

तदनन्तर त्रिकुश, जौ, जल लेकर अर्चनदानका संकल्प करे—

अर्चनदानका संकल्प—ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गत-सपिण्डीकरणश्राद्धे ....गोत्राणां ....शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां जीवपितृपितामहप्रपितामहानां श्राद्धसम्बन्धिनः कामकालसंज्ञकाः विश्वेदेवा एतान्यर्चनानि वो नमः। संकल्पका जल आदि देवासनपर छोड़ दे।

विश्वेदेवमण्डलकरण—जलसे विश्वेदेवके भोजनपात्रसहित आसनके चारों ओर प्रदक्षिणक्रमसे[1] चौकोर[2] मण्डल बनाये। मण्डल बनाते समय निम्न मन्त्र पढ़े—

ॐ यथा चक्रायुधो विष्णुस्त्रैलोक्यं परिरक्षति। एवं मण्डलतोयं तु सर्वभूतानि रक्षतु॥

यहाँकी पवित्री यहीं छोड़ दे।

---

१. (क) गन्धोदके तथा दीपमाल्यदामप्रदीपकम्। अपसव्यं ततः कृत्वा पितॄणामप्रदक्षिणम्॥ (ग०पु०, आचारकाण्ड ९९। १३)

(ख) दक्षिणं पातयेज्जानुं देवान् परिचरन् सदा। पातयेदितरं जानुं पितॄन् परिचरन् सदा। प्रदक्षिणं तु देवानां पितॄणामप्रदक्षिणम्॥

(वीरमित्रोदय-श्राद्धप्रकाशमें कात्यायनका वचन)

२. दैवे चतुरस्रं पित्र्ये वर्तुलं मण्डलं कृत्वा क्रमेण सयवान् सतिलांश्च दर्भान् दद्यात्। (निर्णयसिन्धुमें बह्वृचपरिशिष्ट)

अग्नौकरण—विश्वेदेवके आसनकी परिक्रमा करते हुए पितृमण्डलमें आकर अपने आसनपर बैठ जाय। यहाँकी पवित्री धारण कर ले। सव्य पूर्वाभिमुख होकर अग्नौकरण करे। अपने आसनके समीप एक दोनियेमें जल भरकर रख ले। विश्वेदेव और पितरोंके लिये जो पाक बना हुआ है, उस पाकान्नपर थोड़ा घी छोड़ दे। उस पाकसे थोड़ा अन्न निकालकर निम्न मन्त्रोंको पढ़ते हुए दोनियेके जलमें* दो आहुति छोड़े—

(१) ॐ अग्नये कव्यवाहनाय स्वाहा।

(२) ॐ सोमाय पितृमते स्वाहा।

यहाँकी पवित्री यहीं उतारकर रख दे।

विश्वेदेवमण्डलमें आना—पितरोंके आसनसे उठकर उनकी प्रदक्षिणा करते हुए विश्वेदेवके आसनके समीप आकर अपने आसनपर सव्य उत्तराभिमुख बैठ जाय। यहाँकी पवित्री धारण कर ले।

विश्वेदेवके लिये अन्नपरिवेषण—बने हुए पाकमेंसे विश्वेदेवके भोजनपात्रमें अन्न परोसे। जलपात्रमें जल तथा घृतपात्रमें घृत रख दे और अन्नके ऊपर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए दोनों हाथोंसे मधु छोड़े—

---

* अग्नौकरणके सम्बन्धमें वीरमित्रोदय-श्राद्धप्रकाशमें यह वचन प्राप्त है—‘**अग्न्यभावे तु विप्रस्य पाणौ वाथ जलेऽपि वा।**’ इस वचनके अनुसार जो अग्निहोत्री हैं, वे दक्षिणाग्निमें अग्नौकरण करें और अग्निके अभावमें अर्थात् अग्न्याधानके अभावमें जो अग्निहोत्री नहीं हैं, वे सपात्रकश्राद्धमें ब्राह्मणके दाहिने हाथमें अग्नौकरण करें और सपात्रकश्राद्ध न होनेपर दोनियेमें स्थित जलमें अग्नौकरण करें। (वीरमित्रोदय-श्राद्धप्रकाशमें मत्स्यपुराणका वचन)

ॐ मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः॥ मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवᳬं रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता॥ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ२ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥ ॐ मधु मधु मधु॥

पात्रालम्भन*—उत्तान बायें हाथपर उत्तान दायाँ हाथ स्वस्तिकाकार रखकर भोजनपात्रका स्पर्श करते हुए निम्न मन्त्र पढ़े—

ॐ पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे अमृते अमृतं जुहोमि स्वाहा। इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम्। समूढमस्य पाᳬंसुरे स्वाहा॥

ॐ कृष्ण हव्यमिदं रक्ष मदीयम्।

बायें हाथसे पात्रका स्पर्श किये हुए ही दाहिने हाथके अनुत्तान अँगूठेको अन्नमें रखकर बोले—**इदमन्नम्।** जलमें—**इमा आपः।** घीमें—**इदमाज्यम्।** तदनन्तर अन्नको स्पर्शकर बोले—**इदं हव्यम्।**

विश्वेदेवके भोजनपात्रमें अन्नके ऊपर **ॐ यवोऽसि यवयास्मद् द्वेषो यवयारातीः**—मन्त्र पढ़ते हुए जौ छींट दे
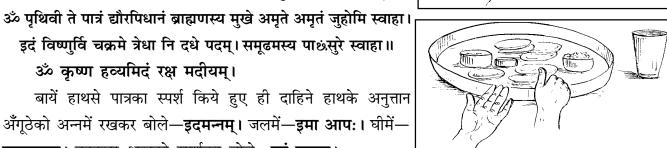
* (क) दक्षिणं तु करं कृत्वा वामोपरि निधाय च । देवपात्रमथालभ्य पृथ्वी ते पात्रमुच्चरेत्॥ दक्षिणोपरि वामं च पित्र्यपात्रस्य लम्भनम्। पात्रालम्भनं कुर्याद् दत्त्वा चान्नं यथाविधि॥ (पद्मपुराण) (ख) पित्र्येऽनुत्तानपाणिभ्यामुत्तानाभ्यां च दैवते। (यम) एवमेव हेमाद्रिमदनरत्नप्रभृतयः।

और बायें हाथसे भोजनपात्रको स्पर्श किये हुए ही दाहिने हाथमें त्रिकुश, जौ तथा जल लेकर संकल्प करे—

अन्नदानका संकल्प—ॐ अद्य .....गोत्रस्य .....जीवशर्मण:/वर्मण:/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गत-सपिण्डीकरणश्राद्धे जीवपितृपितामहप्रपितामहानां .....गोत्राणां .....शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां श्राद्धसम्बन्धिभ्य: कामकालसंज्ञकेभ्य: विश्वेभ्यो देवेभ्य इदमन्नं सोपस्करं वो नम:। कहकर संकल्पका जल गिरा दे तथा बायाँ हाथ भोजनपात्रसे हटा ले। यहाँकी पवित्री उतार दे।

जीवके लिये अर्घनिर्माण—विश्वेदेवके आसनसे उठकर विश्वेदेवकी परिक्रमा करते हुए जीवासनके पास अपने आसनपर अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर बैठ जाय। यहाँकी पवित्री पहन ले और निम्न रूपसे अर्घपात्रका निर्माण करे। यहाँका अर्घपात्र बड़ा रहेगा। जीवके लिये अर्घपात्रका निर्माण करे—

निम्न मन्त्रसे अर्घपात्रमें दक्षिणाग्र पवित्रक रखे—

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्व: प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभि:।
तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्काम: पुने तच्छकेयम्॥

निम्न मन्त्रसे अर्घपात्रमें जल छोड़े—

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्त्रवन्तु न:॥

निम्न मन्त्रसे अर्घपात्रमें तिल छोड़े—

ॐ तिलोऽसि सोमदैवत्यो गोसवो देवनिर्मित:। प्रत्नमद्भि: पृक्त: स्वधया पितॄँल्लोकान् प्रीणाहि न: स्वधा॥

गन्ध और पुष्प मौन होकर छोड़े।

अर्घपात्रको बायें हाथमें रख ले। पवित्रकको दाहिने हाथसे निकालकर जीवके भोजनपात्रपर उत्तराग्र रख ले और '**ॐ नमो नारायणाय**' कहकर एक आचमनी जल उसपर छोड़ दे।

उस अर्घपात्रको दाहिने हाथसे ढककर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए अभिमन्त्रित करे—

ॐ या दिव्या आपः पयसा सम्बभूवुर्या आन्तरिक्षा उत पार्थवीर्याः।
हिरण्यवर्णा यज्ञियास्ता न आपः शिवाः शꣳ स्योनाः सुहवा भवन्तु॥

तदनन्तर दाहिने हाथमें मोटक, तिल, जल तथा अर्घपात्र लेकर निम्न संकल्प करे—

जीवके लिये अर्घदानका संकल्प—ॐ अद्य ····गोत्र ····जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धान्तर्गत-सपिण्डीकरणश्राद्धे एषोऽर्घस्ते स्वधा।

इस प्रकार संकल्प पढ़कर अर्घपात्रके जलके चौथाई भागको भोजनपात्रपर रखे पवित्रकपर छोड़ दे और पवित्रकको उठाकर अर्घपात्रमें दक्षिणाग्र रख ले तथा अर्घपात्रको यथास्थान सुरक्षित रख दे। हाथकी पवित्री उतारकर वहींपर रख दे।

जीवके पितरोंके लिये अर्घपात्रनिर्माण—जीवमण्डलसे उठकर पितृमण्डलमें आकर अपने

आसनपर दक्षिणाभिमुख हो बैठ जाय और अर्घपात्रका निर्माण करे।

जीवके पिता, पितामह और प्रपितामहके तीनों अर्घपात्रों (दोनियों)–में निम्न मन्त्र पढ़कर पवित्रक दक्षिणाग्र रखे—

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः।
तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्॥

निम्न मन्त्रसे तीनों दोनियोंमें जल छोड़े—

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्त्रवन्तु नः॥

निम्न मन्त्रसे तीनों दोनियोंमें तिल छोड़े—

ॐ तिलोऽसि सोमदैवत्यो गोसवो देवनिर्मितः। प्रत्नमद्भिः पृक्तः स्वधया पितॄँल्लोकान् प्रीणाहि नः स्वाहा॥

तीनों दोनियोंमें गन्ध, पुष्प मौन होकर छोड़े—

इस प्रकार तीन अर्घपात्र बनाकर जीवके पितावाला प्रथम अर्घपात्र बायें हाथमें रख ले और उसका पवित्रक उठाकर भोजनपात्रपर उत्तराग्र रखे। तदनन्तर कर्मपात्रसे एक आचमनी जल '**ॐ नमो नारायणाय**' कहकर पवित्रकपर छोड़े। दाहिने हाथसे अर्घपात्रको ढक ले और निम्न मन्त्र पढ़कर उसे अभिमन्त्रित करे—

ॐ या दिव्या आपः पयसा सम्बभूवुर्या आन्तरिक्षा उत पार्थवीर्याः।
हिरण्यवर्णा यज्ञियास्ता न आपः शिवाः शꣳ स्योनाः सुहवा भवन्तु॥

जीवके पिताके लिये अर्घदानका संकल्प—दाहिने हाथमें मोटक, तिल, जल और अर्घपात्र लेकर निम्न संकल्प करे—

ॐ अद्य .....गोत्रस्य .....जीवशर्मण:/वर्मण:/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतसपिण्डीकरणश्राद्धे जीवपित: .....गोत्र .....शर्मन्/वर्मन्/गुप्त वसुस्वरूप एषोऽर्घस्ते स्वधा। कहकर जीवके पिताके भोजनपात्रपर रखे पवित्रकपर अर्घजल पितृतीर्थसे छोड़े, अर्घपात्रमें कुछ जल बचा रहे। पवित्रकको अर्घपात्रमें दक्षिणाग्र रखकर सजल अर्घपात्र जहाँसे उठाया था, वहीं रख दे।

इसी प्रकार जीवके पितामह तथा जीवके प्रपितामहके अर्घपात्रोंकी अभिमन्त्रण आदि क्रिया करके निम्न संकल्पसे उन्हें अर्घ प्रदान करे—

जीवके पितामहको अर्घदानका संकल्प—ॐ अद्य .....गोत्रस्य .....जीवशर्मण:/वर्मण:/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतसपिण्डीकरणश्राद्धे जीवपितामह .....गोत्र .....शर्मन्/वर्मन्/गुप्त रुद्रस्वरूप एषोऽर्घस्ते स्वधा। कहकर जीवके पितामहके लिये पितृतीर्थसे पवित्रकपर अर्घ प्रदान करे। अर्घपात्रमें कुछ जल बचा रहे। पवित्रकको अर्घपात्रमें दक्षिणाग्र रखकर सजल अर्घपात्र जहाँसे उठाया था, वहीं रख दे।

जीवके प्रपितामहको अर्घदानका संकल्प—ॐ अद्य .....गोत्रस्य .....जीवशर्मण:/वर्मण:/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतसपिण्डीकरणश्राद्धे जीवप्रपितामह .....गोत्र .....शर्मन्/वर्मन्/गुप्त आदित्यस्वरूप एषोऽर्घस्ते

स्वधा। कहकर जीवके प्रपितामहके लिये पितृतीर्थसे पवित्रकपर अर्घ प्रदान करे। अर्घपात्रमें कुछ जल बचा रहे। पवित्रकको अर्घपात्रमें दक्षिणाग्र रखकर सजल अर्घपात्र जहाँसे उठाया था, वहीं रख दे।

अर्घसंयोजन (मेलन)

(क) जीवके अर्घका संयोजन—पित्रादि-मण्डलसे उठकर पितरोंकी तथा विश्वेदेवकी परिक्रमा करते हुए जीवमण्डलमें अपने आसनपर अपसव्य दक्षिणाभिमुख हो बैठ जाय। यहाँकी पवित्री धारण कर ले। तदनन्तर जीवके अर्घपात्रके आगे उत्तरसे दक्षिणक्रममें तीन नवीन पात्र (दोनिये) स्थापित करे। इन्हीं तीन दोनियोंमें क्रमशः जीवके अर्घपात्रका जल आदि तीन भागोंमें विभाजित किया जायगा। पवित्रक जीवार्घपात्रमें ही बना रहेगा। उसकी विधि इस प्रकार है—

सर्वप्रथम जीवार्घपात्रका एक अंश जल उत्तरवाले नवीन पात्रमें डाले, उस समय निम्न दोनों मन्त्रोंको बोले—

ये समानाः समनसः पितरो यमराज्ये। तेषाँल्लोकः स्वधा नमो यज्ञो देवेषु कल्पताम्॥

ये समानाः समनसो जीवा जीवेषु मामकाः। तेषाꣳ श्रीर्मयि कल्पतामस्मिँल्लोके शतꣳ समाः॥

इसी प्रकार जीवार्घपात्रका दूसरा अंश जल दूसरे पात्रमें **'ये समानाः०'** इन मन्त्रोंको पढ़ते हुए डाले और जीवार्घपात्रका तीसरा अंश तीसरे पात्रमें **'ये समानाः०'** इन दो मन्त्रोंको पढ़ते हुए छोड़े तथा जीवार्घपात्र यथास्थान रख दे।

तदनन्तर अर्घमेलनके लिये प्रथम पात्र (उत्तरवाले)-का जल जीवार्घपात्रमें मौन होकर डाले और उस उत्तरवाले

प्रथम पात्रको पीछेकी ओर फेंक दे। तदनन्तर दाहिने हाथमें जीवार्घपात्र, मोटक, तिल, जल लेकर जीवार्घपात्रके जलका जीवके पिताके अर्घपात्रमें मेलनके लिये निम्न रीतिसे संकल्प करे—

जीवके पितासे जीवके अर्घसंयोजन (मेलन)-का संकल्प—ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतसपिण्डीकरणश्राद्धे जीवार्घपात्रस्थप्रथमांशजलादिकं जीवपित्रार्घ-पात्रोदकेन सह संयोजयिष्ये।

—ऐसा संकल्प पढ़कर जीवार्घपात्रके प्रथमांश जल आदिको जीवके पिताके अर्घपात्रके जलमें निम्न दोनों मन्त्रोंको पढ़ते हुए छोड़े, पवित्रक अर्घपात्रमें ही रहने दे।

ये समानाः समनसः पितरो यमराज्ये। तेषाँल्लोकः स्वधा नमो यज्ञो देवेषु कल्पताम्॥

ये समानाः समनसो जीवा जीवेषु मामकाः। तेषाꣳ श्रीर्मयि कल्पतामस्मिँल्लोके शतꣳ समाः॥

इसी प्रकार द्वितीय पात्रस्थित अर्घजलको जीवके अर्घपात्रमें मौन होकर डाल दे और उस द्वितीय पात्रको भी पीछेकी ओर फेंक दे। तदनन्तर दाहिने हाथमें जीवार्घपात्र, मोटक, तिल, जल लेकर जीवार्घपात्रके जलका जीवके पितामहके अर्घपात्रमें मेलनके लिये निम्न रीतिसे संकल्प करे—

जीवके पितामहसे जीवके अर्घसंयोजनका संकल्प—ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतसपिण्डीकरणश्राद्धे जीवार्घपात्रस्थद्वितीयांशजलादिकं जीवपितामहार्घपात्रोदकेन

सह संयोजयिष्ये।

—ऐसा संकल्प पढ़कर जीवार्घपात्रके द्वितीयांश जल आदिको जीवके पितामहके अर्घपात्रके जलमें निम्न दोनों मन्त्रोंको पढ़ते हुए छोड़े। पवित्रक अर्घपात्रमें ही बना रहेगा।

ये समानाः समनसः पितरो यमराज्ये। तेषाँल्लोकः स्वधा नमो यज्ञो देवेषु कल्पताम्॥

ये समानाः समनसो जीवा जीवेषु मामकाः। तेषाᳬ श्रीर्मयि कल्पतामस्मिँल्लोके शतᳬ समाः॥

तदनन्तर तृतीय पात्रका जल जीवार्घपात्रमें मौन होकर डाले और उस तृतीय पात्रको भी पीछेकी ओर फेंक दे। तदनन्तर दाहिने हाथमें मोटक, तिल, जल तथा जीवार्घपात्र लेकर जीवार्घपात्रके जलका जीवके प्रपितामहके अर्घपात्रमें मेलनके लिये निम्न रीतिसे संकल्प करे—

जीवके प्रपितामहसे जीवके अर्घसंयोजनका संकल्प—ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/ वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतसपिण्डीकरणश्राद्धे जीवार्घपात्रस्थतृतीयांशजलादिकं जीवप्रपितामहार्घपात्रोदकेन सह संयोजयिष्ये।

—ऐसा संकल्प पढ़कर जीवार्घपात्रके अन्तिम तृतीयांश जलको जीवके प्रपितामहके अर्घपात्रके जलमें निम्न दोनों मन्त्रोंको पढ़ते हुए मिलाये, पवित्रक प्रेतार्घपात्रमें ही रहने दे—

ये समानाः समनसः पितरो यमराज्ये। तेषाँल्लोकः स्वधा नमो यज्ञो देवेषु कल्पताम्॥

ये समानाः समनसो जीवा जीवेषु मामकाः। तेषाᳬ श्रीर्मयि कल्पतामस्मिँल्लोके शतᳬ समाः॥

तदनन्तर **'जीवाय स्थानमसि'** कहकर जीवका अर्घपात्र जीवासनके पश्चिम वामभागमें उत्तान (सीधा) रख दे।

जीवके पितरोंके मण्डलमें आना—जीवमण्डलसे उठकर जीवपितृमण्डलमें अपने आसनपर आ जाय। यहाँकी पवित्री पहन ले। अपसव्य दक्षिणाभिमुख हो, बायाँ घुटना पृथ्वीपर टिका ले और निम्न रीतिसे अर्घसंयोजनका कार्य करे—

जीवके पिता, पितामह तथा प्रपितामहत्रयका अर्घसंयोजन—जीवके प्रपितामहका अर्घपात्र हाथमें उठाकर उसमें स्थित तिल, पुष्प, पवित्रक, जल आदि जीवके पितामहके अर्घपात्रमें छोड़ दे और जीवके पितामहके अर्घपात्रस्थ जलादिको जीवके पिताके अर्घपात्रमें छोड़ दे। जीवके पिताके अर्घपात्रको जीवके पितामहके अर्घपात्रके ऊपर और उन दोनों अर्घपात्रोंको जीवके प्रपितामहके अर्घपात्रके ऊपर रखकर तीनों अर्घपात्रोंको जीवके पिताके आसनके वाम पार्श्व अर्थात् पश्चिम दिशामें **'पितृभ्यः स्थानमसि'** कहकर उलटकर[1] रख दे।

इन एकके ऊपर एक उलटकर रखे गये अर्घपात्रोंको न तो हिलाये और न उठाये ही।[2]

यहाँकी पवित्री यहीं उतार दे।

जीवका पूजन—जीवपितृमण्डल तथा विश्वेदेवमण्डलकी परिक्रमा करते हुए जीवमण्डलमें अपसव्यकी स्थितिमें अपने आसनपर दक्षिणाभिमुख बैठ जाय। यहाँकी पवित्री पहन ले। तदनन्तर जीवका पूजन करे—

---

१. दत्त्वार्घ्यं संस्रवांस्तेषां पात्रे कृत्वा विधानतः। पितृभ्यः स्थानमसीति न्युब्जं पात्रं करोत्यधः॥ (याज्ञ०स्मृ० १०। २३५)

२. नोद्धरेत् न च चालयेत्। (यमस्मृति)

[कर्ताका वचन] [आचार्यका वचन]

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं स्नानीयम् (सुस्नानीयम्)—कहकर स्नानीय जल दे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं वस्त्रम् (सुवस्त्रम्)—कहकर वस्त्र अर्पित करे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इमे यज्ञोपवीते (सुयज्ञोपवीते)—कहकर यज्ञोपवीत चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदमुपवस्त्रम् (सुवस्त्रम्)—कहकर उपवस्त्र अर्पित करे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

एष गन्धः (सुगन्धः)—कहकर गन्ध आघ्रापित करे।

इमे तिलाक्षताः (सुतिलाक्षताः)—कहकर तिलाक्षत चढ़ाये।

इदं माल्यम् (सुमाल्यम्)—कहकर माला चढ़ाये।

एष धूपः (सुधूपः)—कहकर धूप आघ्रापित करे।

एष दीपः (सुदीपः)—कहकर दीप दिखाये।

हस्तप्रक्षालनम् (हाथ धो ले)

इदं नैवेद्यम् (सुनैवेद्यम्)—कहकर नैवेद्य अर्पित करे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं फलम् (सुफलम्)—कहकर फल अर्पित करे।

इदं ताम्बूलम् (सुताम्बूलम्)—कहकर ताम्बूल अर्पित करे।

एषा दक्षिणा (सुदक्षिणा)—कहकर दक्षिणा चढ़ाये।

इत्यादि उपचारोंसे जीवका पूजन करे। तदनन्तर अर्चनदानका संकल्प करे—

जीवके अर्चनदानका संकल्प—हाथमें मोटक, तिल, जल लेकर निम्न संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धान्तर्गतसपिण्डीकरणश्राद्धे एतान्यर्चनानि ते स्वधा।

हाथके जल आदिको जीवासनपर छोड़ दे।

हाथकी पवित्री यहींपर छोड़ दे तथा जीवपितृमण्डलमें आकर अपने आसनपर दक्षिणाभिमुख बैठ जाय और यहाँ रखी हुई पवित्री धारण कर ले।

जीवके पितरोंका पूजन—जीवके पिता, पितामह तथा प्रपितामहका क्रमसे विभिन्न उपचारोंद्वारा पृथक्-पृथक् निम्न रीतिसे पूजन करे—

[कर्ताका वचन] [आचार्यका वचन]

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं स्नानीयम् (सुस्नानीयम्)—कहकर स्नानीय जल दे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं वस्त्रम् (सुवस्त्रम्)—कहकर वस्त्र अर्पित करे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इमे यज्ञोपवीते (सुयज्ञोपवीते)—कहकर यज्ञोपवीत चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदमुपवस्त्रम् (सुवस्त्रम्)—कहकर उपवस्त्र अर्पित करे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

एष गन्धः (सुगन्धः)—कहकर गन्ध आघ्रापित करे।

इदं माल्यम् (सुमाल्यम्)—कहकर माला चढ़ाये।

इमे तिलाक्षताः (सुतिलक्षताः)—कहकर तिलाक्षत चढ़ाये।

एष धूपः (सुधूपः)—कहकर धूप आघ्रापित करे।

एष दीपः (सुदीपः)—कहकर दीप दिखाये।

हस्तप्रक्षालनम् (हाथ धो ले)

इदं नैवेद्यम् (सुनैवेद्यम्)—कहकर नैवेद्य अर्पित करे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं फलम् (सुफलम्)—कहकर फल अर्पित करे।

इदं ताम्बूलम् (सुताम्बूलम्)—कहकर ताम्बूल अर्पित करे।

एषा दक्षिणा (सुदक्षिणा)—कहकर दक्षिणा चढ़ाये।

उपचारोंद्वारा पृथक्-पृथक् पूजन करनेके बाद हाथमें मोटक, तिल, जल लेकर अर्चनदानका संकल्प करे—

अर्चनदानका संकल्प—ॐ अद्य ......गोत्रस्य ......जीवशर्मण:/वर्मण:/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गत-सपिण्डीकरणश्राद्धे जीवपितृपितामहप्रपितामहा: ......गोत्रा: ......शर्माण:/वर्माण:/गुप्ता: वसुरुद्रादित्यस्वरूपा एतान्यर्चनानि युष्मभ्यं स्वधा।

हाथका जल आदि पितरोंके आसनपर छोड़ दे। पवित्री उतारकर रख दे।

जीवमण्डलकरण—जीवपितृमण्डल तथा विश्वेदेवकी परिक्रमा करते हुए अपसव्यकी स्थितिमें जीवके आसनके समीप दक्षिणाभिमुख बैठ जाय। यहाँकी पवित्री धारण कर ले। जीवके भोजनपात्रसहित आसनके चारों ओर अप्रदक्षिणक्रमसे (वामावर्त) जलसे गोल मण्डल बनाये और उस समय निम्न मन्त्र पढ़े—

ॐ यथा चक्रायुधो विष्णुस्त्रैलोक्यं परिरक्षति। एवं मण्डलतोयं तु सर्वभूतानि रक्षतु॥

यहाँकी पवित्री यहीं उतारकर रख दे।

जीवके पितरोंका मण्डलकरण—अपसव्यकी स्थितिमें ही जीवमण्डलसे आकर दक्षिणाभिमुख बैठ जाय। यहाँकी पवित्री पहन ले और जीवके पिता, पितामह तथा प्रपितामह इस क्रमसे उनके भोजनपात्रोंसहित आसनोंके चारों ओर अप्रदक्षिणक्रम (वामावर्त)-से पृथक्-पृथक् जलसे गोलाकार मण्डल बनाये। उस समय पृथक्-पृथक् यह मन्त्र पढ़े—

ॐ यथा चक्रायुधो विष्णुस्त्रैलोक्यं परिरक्षति। एवं मण्डलतोयं तु सर्वभूतानि रक्षतु॥

भूस्वामीके पितरोंको अन्नदान—बने हुए पाकसे एक दोनियेमें पाकान्न निकालकर उसमें घृत-मधु मिलाकर मोटक, तिल, जल लेकर जीवके पितरोंके आसनके दक्षिण दिशामें निम्न मन्त्रको पढ़ते हुए दक्षिणाग्र त्रिकुशपर रख दे—'**ॐ इदमन्नमेतद् भूस्वामिपितृभ्यो नमः।**'

जीवमण्डलमें आना तथा अन्नपरिवेषण—पितृमण्डलसे पितरों और विश्वेदेवोंकी परिक्रमा करते हुए जीवमण्डलके पास आकर अपने आसनपर अपसव्यकी ही स्थितिमें दक्षिणाभिमुख होकर बैठ जाय। यहाँकी पवित्री धारण कर ले। जीवके भोजनपात्र (पत्तल)-पर पड़े हुए तिल आदिको हटा दे।* जीवके पाकसे भोजनपात्रपर पितृतीर्थसे अन्न परोसे। जलपात्र तथा घृतपात्रमें क्रमशः जल तथा घृत छोड़ दे। अन्नपर निम्न मन्त्रसे मधु छोड़े—

ॐ मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः॥ मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳ रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता॥ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ२ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥ ॐ मधु मधु मधु॥

---

* अन्नपात्रे तिलान् दृष्ट्वा निराशाः पितरो गताः।

पात्रालम्भन[१]—अनुत्तान (उलटे) दायें हाथपर अनुत्तान (उलटा) बायाँ हाथ स्वस्तिकाकार रखकर भोजनपात्रका स्पर्श करते हुए निम्न मन्त्र पढ़े—

ॐ पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे अमृते अमृतं जुहोमि स्वाहा। इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम्। समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा॥

ॐ कृष्ण कव्यमिदं रक्ष मदीयम्।

अन्नावगाहन—बायें हाथसे भोजनपात्रका स्पर्श किये हुए ही दाहिने हाथके अनुत्तान अँगूठेसे इस प्रकार अन्नावगाहन[२] करे—अन्न छूकर बोले—'**इदमन्नम्।**' जल छूकर बोले—'**इमा आपः।**' घी छूकर बोले—'**इदमाज्यम्।**'

---

१. (क) दक्षिणोपरि वामं च पित्र्यपात्रस्य लम्भनम्। पात्रालम्भनं कुर्याद् दत्त्वा चान्नं यथाविधि॥

(श्राद्धकाशिकामें पद्मपुराणका वचन)

(ख) पित्र्येऽनुत्तानपाणिभ्यामुत्तानाभ्यां च दैवते। (यम)
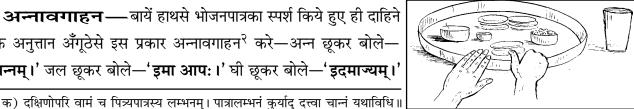
२. (क) उत्तानेन तु हस्तेन द्विजाङ्गुष्ठनिवेशनम्। यः करोति नरो मोहात् तद्वै रक्षांसि गच्छति॥ (धौम्य) (ख) उत्तानेन तु हस्तेन कुर्यादन्नावगाहनम्। आसुरं तद्भवेच्छ्राद्धं पितॄणां नोपतिष्ठते॥ जो अज्ञानवश उत्तान हाथसे अंगुष्ठनिवेशन करता है तो वह अन्न राक्षसोंको प्राप्त होता है। वह श्राद्ध आसुर-श्राद्ध हो जाता है और पितरोंको प्राप्त नहीं होता।

पुनः अन्न छूकर बोले—'**इदं कव्यम्।**'

अन्नके ऊपर '**ॐ अपहता असुरा रक्षाꣳसि वेदिषदः**'—मन्त्र पढ़ते हुए तिल बिखेर दे।

अन्नदानका संकल्प—हाथमें मोटक, तिल, जल लेकर संकल्प करे—

ॐ अद्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतसपिण्डीकरणश्राद्धे ....गोत्राय ....जीवशर्मणे/वर्मणे/गुप्ताय इदमन्नं सोपस्करं ते स्वधा। संकल्पका जल छोड़ दे। यहाँकी पवित्री उतारकर रख दे।

पितृमण्डलमें अन्नपरिवेषण—जीवमण्डलसे पितृमण्डलमें आ जाय। जीवके पिता, पितामह तथा प्रपितामहके भोजनपात्रोंसे तिल आदि हटा ले। तदनन्तर बने हुए पितरोंके पाकसे तीनों पृथक्-पृथक् भोजनपात्रोंपर पितृतीर्थसे अन्न परोसे। जलपात्रमें जल तथा घृतपात्रमें घृत छोड़े। परोसे हुए तीनों अन्नोंपर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए दोनों हाथोंसे पितृतीर्थसे मधु छोड़े—

ॐ मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः॥ मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳ रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता॥ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ२ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥ ॐ मधु मधु मधु॥

पात्रालम्भन—दाहिने अनुत्तान हाथके ऊपर बायें हाथको अनुत्तान (उलटा) स्वस्तिकाकार रखकर सर्वप्रथम जीवके पितावाले भोजनपात्रका स्पर्श करते हुए निम्न मन्त्र पढ़े—

ॐ पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे अमृते अमृतं जुहोमि स्वाहा।

इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम्। समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा॥

ॐ कृष्ण कव्यमिदं रक्ष मदीयम्।

अन्नावगाहन—बायें हाथसे भोजनपात्रका स्पर्श किये हुए ही दाहिने हाथके अनुत्तान अँगूठेको अन्नमें रखकर बोले—**इदमन्नम्।** जलमें—**इमा आपः।** घीमें—**इदमाज्यम्।** फिर अन्नको स्पर्शकर '**इदं कव्यम्**' कहे।

'**ॐ अपहता असुरा रक्षाꣳसि वेदिषदः।**' मन्त्रसे भोजनपात्रमें अन्नके ऊपर तिल छींट दे।

जीवके पिताके लिये अन्नदानका संकल्प—दाहिने हाथमें मोटक, तिल तथा जल लेकर बायें हाथसे भोजनपात्रको स्पर्श किये हुए ही संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतसपिण्डीकरणश्राद्धे जीवपित्रे ....गोत्राय ....शर्मणे/वर्मणे/गुप्ताय वसुस्वरूपाय इदमन्नं सोपस्करं ते स्वधा।

—ऐसा कहकर संकल्पका जल जीवके पितावाले भोजनपात्रके समीप छोड़ दे और बायाँ हाथ भोजनपात्रसे हटा ले।

इसी प्रकार जीवके पितामह तथा जीवके प्रपितामहके अन्नपात्रोंपर भी आलम्भन, अन्नावगाहन तथा अन्नके ऊपर तिलविकिरण और संकल्पकी क्रियाएँ पृथक्-पृथक् करे। संकल्पके अनन्तर बायाँ हाथ हटा ले।

जीवके पितामहके लिये अन्नदानका संकल्प—दाहिने हाथमें मोटक, तिल तथा जल लेकर बायें हाथसे भोजनपात्रको स्पर्श किये हुए ही निम्न संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतसपिण्डीकरणश्राद्धे जीवपितामहाय ....गोत्राय ....शर्मणे/वर्मणे/गुप्ताय रुद्रस्वरूपाय इदमन्नं सोपस्करं ते स्वधा।

जीवके प्रपितामहके लिये अन्नदानका संकल्प—दाहिने हाथमें मोटक, तिल तथा जल लेकर बायें हाथसे भोजनपात्रको स्पर्श किये हुए ही निम्न संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतसपिण्डीकरणश्राद्धे जीवप्रपितामहाय ....गोत्राय ....शर्मणे/वर्मणे/गुप्ताय आदित्यस्वरूपाय इदमन्नं सोपस्करं ते स्वधा।

तदनन्तर निम्न प्रार्थना करे—

अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद् भवेत्। अच्छिद्रमस्तु तत्सर्वं पित्रादीनां प्रसादतः॥

पितृगायत्रीका जप—सव्य पूर्वाभिमुख होकर आचमन करे। तीन बार पितृगायत्रीका जप करे—

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च। नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः॥

वेद-शास्त्रादिका पाठ—इस अवसरपर यथासम्भव पुरुषसूक्त, अप्रतिरथमन्त्र इत्यादि श्रुति, स्मृति, पुराण और इतिहासका पाठ करे; इससे पितरोंको प्रसन्नता होती है। पैरोंके नीचे पूर्वाग्र तीन कुश रख ले।

श्रुतिपाठ—

ॐ अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्॥

ॐ इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्व मघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा व स्तेन ईशत माघशꣳसो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि॥

ॐ अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये। नि होता सत्सि बर्हिषि॥

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्त्रवन्तु नः॥

स्मृतिपाठ—

मनुमेकाग्रमासीनमभिगम्य महर्षयः। प्रतिपूज्य यथान्यायमिदं वचनमब्रुवन्॥
योगीश्वरं याज्ञवल्क्यं सम्पूज्य मुनयोऽब्रुवन्। वर्णाश्रमेतराणां नो ब्रूहि धर्मानशेषतः॥
मन्वत्रिविष्णुहारीतयाज्ञवल्क्योशनोऽङ्गिराः। यमापस्तम्बसंवर्ताः कात्यायनबृहस्पती॥
पराशरव्यासशङ्खलिखिता दक्षगौतमौ। शातातपो वसिष्ठश्च धर्मशास्त्रप्रयोजकाः॥

पुराण—

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्। देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत्॥
सप्त व्याधा दशार्णेषु मृगाः कालञ्जरे गिरौ। चक्रवाकाः शरद्वीपे हंसाः सरसि मानसे॥
तेऽभिजाता कुरुक्षेत्रे ब्राह्मणा वेदपारगाः। प्रस्थिता दीर्घमध्वानं यूयं किमवसीदथ॥

इतिहास—

दुर्योधनो मन्युमयो महाद्रुमः स्कन्धः कर्णः शकुनिस्तस्य शाखाः।
दुःशासनः पुष्पफले समृद्धे मूलं राजा धृतराष्ट्रोऽमनीषी॥
युधिष्ठिरो धर्ममयो महाद्रुमः स्कन्धोऽर्जुनो भीमसेनोऽस्य शाखाः।
माद्रीसुतौ पुष्पफले समृद्धे मूलं कृष्णो ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च॥

विकिरदान—अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर जीवके पितरोंके आसनके दक्षिण दिशाकी भूमिको जलसे सींच दे, वहाँ कुश बिछा दे और निम्न मन्त्र पढ़ते हुए मोटक, तिल, जल लेकर पितृतीर्थसे सिंचित भूमिपर बिछाये गये कुशोंपर बने हुए पाकसे कुछ अन्न तथा जल लेकर विकिरदान करे—

असंस्कृतप्रमीतानां त्यागिनां कुलभागिनाम्। उच्छिष्टभागधेयानां दर्भेषु विकिरासनम्॥
अग्निदग्धाश्च ये जीवा येऽप्यदग्धाः कुले मम। भूमौ दत्तेन तृप्यन्तु तृप्ता यान्तु परां गतिम्॥

विकिरदानके अनन्तर मोटक तथा पवित्रकका वहीं परित्याग कर दे। हाथ-पैर धोकर, सव्य पूर्वाभिमुख होकर आचमन करके हरिस्मरण कर ले। तदनन्तर जीवमण्डलके पास आ जाय।

वेदीनिर्माण—अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर बैठ जाय। पिण्डदानके लिये बालू अथवा शुद्ध मिट्टीसे एक वेदी बनाये और निम्न मन्त्रद्वारा जलसे उसे सींच दे—

ॐ अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची ह्यवन्तिका। पुरी द्वारावती ज्ञेयाः सप्तैता मोक्षदायिकाः॥

रेखाकरण—बायें हाथके अंगुष्ठ तथा तर्जनीसे तीन समूल कुशोंके अग्रभागको और दाहिने हाथके अंगुष्ठ तथा तर्जनीसे कुशोंके मूलभागको पकड़कर '**ॐ अपहता असुरा रक्षाᳬसि वेदिषदः**' मन्त्रसे वेदीपर उत्तरसे दक्षिणकी ओर रेखा खींचे और उन कुशोंको ईशानकोणकी ओर फेंक दे।

उल्मुकस्थापन—वेदीके चारों ओर बायीं ओरसे अंगारको निम्न मन्त्रसे घुमाये—

ॐ ये रूपाणि प्रतिमुञ्चमाना असुराः सन्तः स्वधया चरन्ति। परापुरो निपुरो ये भरन्त्यग्निष्टाँल्लोकात्प्रणुदात्यस्मात्॥

तथा उसे पिण्डवेदीके दक्षिणकी ओर श्राद्धपर्यन्त स्थापित कर दे।*

कुशास्तरण—समूल तीन कुशोंको एक साथ जड़सहित दो भागोंमें एक ही बारमें विभक्त करके वेदीपर दक्षिणाग्र बिछा दे।

अवनेजनपात्र-निर्माण—एक दोनियेमें तिल, जल, चन्दन, पुष्प रखकर अवनेजनपात्र बनाये, तदनन्तर उस दोनिये तथा मोटक, तिल, जलको दाहिने हाथमें लेकर निम्न संकल्प करे—

अवनेजनदानका संकल्प—ॐ अद्य ""गोत्र ""जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धान्तर्गतसपिण्डीकरण-श्राद्धे पिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते स्वधा।

—ऐसा बोलकर पितृतीर्थसे वेदीके मध्यभागमें बिछाये गये कुशपर अवनेजनका आधा जल गिरा दे और अवनेजनपात्र (दोनिये)-को वेदीके पश्चिम भागमें यथास्थान सुरक्षित रख दे।

---

* यदि अग्निकी व्यवस्था न हो तो ज्वालामुखी धूपसे ही अंगार-भ्रामणकी प्रक्रिया पूरी की जा सकती है।

पिण्डनिर्माण तथा जीवपिण्डदान—मधु, घृत तथा तिल मिलाकर एक लम्बा पिण्ड बनाकर पत्तलपर रख ले। बायाँ घुटना जमीनमें टिकाकर मोटक, तिल, जल और पिण्ड दायें हाथमें लेकर निम्न संकल्प करे—

पिण्डदानका संकल्प—ॐ अद्य ''''गोत्र ''''जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धान्तर्गतसपिण्डीकरणश्राद्धे एष पिण्डस्ते स्वधा।

—कहकर वेदीके मध्य बायें हाथकी सहायतासे पितृतीर्थसे कुशोंपर अवनेजनस्थानपर पिण्ड रख दे। पिण्डशेषान्न भी पिण्डके अग्रभागमें रख दे। पिण्डाधार कुशोंके मूलमें हाथ पोंछ ले। सव्य पूर्वाभिमुख होकर आचमनकर हरिस्मरण कर ले।

श्वासनियमन—अपसव्य होकर आसनपर बैठे हुए ही श्वास खींचते हुए बायीं ओरसे उत्तराभिमुख हो निम्न मन्त्र पढ़े—

अत्र पितरो* मादयध्वं यथाभागमावृषायध्वम्।

---

* श्राद्धकी कई प्रयोगपद्धतियोंमें **'अत्र पितरो मादयध्वम्०'**, **'नमो वः पितरः०'**, **'अघोराः पितरः०'** **''''स्वधास्थ तर्पयत मे पितॄन्'** आदि वैदिक मन्त्रोंमें ऊह करके विभक्तिका परिवर्तन कर दिया गया है अर्थात् एकोद्दिष्टश्राद्धोंमें **'पितरः०'** इत्यादि बहुवचनान्त पदोंमें ऊह करके उन्हें एकवचनान्त कर दिया गया है। वैदिक मन्त्रोंमें आनुपूर्वी नियत होनेके कारण ऊह करनेसे मन्त्रत्व नहीं रह जायगा और अतः उन मन्त्रोंकी कर्मांगता भी नहीं हो सकेगी। इसी आशयसे पातंजलमहाभाष्यमें **'वैदिकाः खल्वपि'**—इसका व्याख्यान करते हुए आचार्य कैयटने **'वेदे त्वानुपूर्वीनियमाद्वाक्यान्युदाहरति'**—ऐसा लिखा है। ऊह न करनेके विषयमें निम्नलिखित प्रमाण ध्यातव्य हैं—

श्वास रोककर उसी क्रमसे दक्षिणाभिमुख होकर भास्वरमूर्ति (तेजःपुंजस्वरूप) जीवका ध्यान करते हुए पिण्डके पास श्वास छोड़े और '**अमीमदन्त पितरो यथाभागमावृषायिषत**' यह मन्त्र पढ़े।

प्रत्यवनेजनदानका संकल्प—दायें हाथमें मोटक, तिल, जल तथा सजल अवनेजनपात्र लेकर प्रत्यवनेजनदानका संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धान्तर्गतसपिण्डीकरणश्राद्धे पिण्डोपरि प्रत्यवनेनिक्ष्व ते स्वधा।

—बोलकर पिण्डपर प्रत्यवनेजनजल गिरा दे।

सूत्रदान—अपसव्य दक्षिणाभिमुख हो जाय एवं बायें हाथसे सूत्र लेकर दाहिने हाथमें रखकर निम्न मन्त्रका उच्चारण करे—

ॐ नमो वः पितरो रसाय नमो वः पितरः शोषाय नमो वः पितरो जीवाय नमो वः पितरः

(क) **अनाम्नातेष्वमन्त्रत्वमाम्नातेषु हि विभागः॥**
'....**याज्ञिकप्रसिद्धिरूपस्य मन्त्रलक्षणस्यैतेष्वभावात्। न ह्यध्येतार ऊहादीन् मन्त्रकाण्डेऽधीयते। तस्मात् नास्ति मन्त्रत्वम्।**'
(जैमिनीयन्यायमाला अ० २, पाद १, अधि० ९, सूत्र ३४ तथा व्याख्या)

(ख) '....**एवञ्च पूर्वोक्ते मन्त्रजाते पितृशब्दस्य सपिण्डीकरणान्तश्राद्धजन्यपितृत्वपरत्वात्तस्य च मातामहादिष्वपि सद्भावान्नोहः।** तथा '**पूयति वा एतदृचोऽक्षरं यदेनदूहति तस्मादृचं नोहेत्**' **इति प्रतिषेधादपि नोहः। तथा अनृग्रूपेष्वपि मन्त्रेषु** '**एतद्वः पितरो वासोऽमीमदन्त पितरः**' **इत्यादिष्वपि पूर्वोक्तन्यायान्नोहः।**' (भगवन्तभास्कर, श्राद्धमयूख)

स्वधायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे नमो वः पितरः पितरो नमो वो गृहान्नः पितरो दत्त सतो वः पितरो देष्म—ऐसा पढ़कर '**ॐ एतद्वः पितरो वासः**'—कहकर पिण्डपर सूत्र चढ़ाये।

सूत्रदानका संकल्प—दाहिने हाथमें मोटक, तिल, जल लेकर सूत्रदानका निम्न रीतिसे संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धान्तर्गतसपिण्डीकरणश्राद्धे जीवपिण्डोपरि एतत्ते वासः स्वधा। कहकर जलादि जीवके पिण्डपर छोड़ दे।

पिण्डपूजन—पिण्डका विविध उपचारोंसे पूजन करे—

[कर्ताका वचन] [आचार्यका वचन]

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं स्नानीयम् (सुस्नानीयम्)—कहकर स्नानीय जल दे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं वस्त्रम् (सुवस्त्रम्)—कहकर वस्त्र या सूत्र अर्पित करे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इमे यज्ञोपवीते (सुयज्ञोपवीते)—कहकर यज्ञोपवीत चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदमुपवस्त्रम् (सुवस्त्रम्)—कहकर उपवस्त्र चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

एष गन्धः (सुगन्धः)—कहकर गन्ध आघ्रापित करे।

इमे तिलाक्षताः (सुतिलाक्षताः)—कहकर तिलाक्षत चढ़ाये।

इदं माल्यम् (सुमाल्यम्)—कहकर माला चढ़ाये।

एष धूपः (सुधूपः)—कहकर धूप आघ्रापित करे।

एष दीपः (सुदीपः)—कहकर दीप दिखाये।

हस्तप्रक्षालनम् (हाथ धो ले)

इदं नैवेद्यम् (सुनैवेद्यम्)—कहकर नैवेद्य अर्पित करे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं फलम् (सुफलम्)—कहकर फल अर्पित करे।

इदं ताम्बूलम् (सुताम्बूलम्)—कहकर ताम्बूल अर्पित करे।

एषा दक्षिणा (सुदक्षिणा)—कहकर दक्षिणा चढ़ाये।

दायें हाथमें मोटक, तिल, जल लेकर अर्चनदानका संकल्प करे—

अर्चनदानका संकल्प—ॐ अद्य ....गोत्र ....जीवशर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धान्तर्गतसपिण्डीकरणश्राद्धे जीवपिण्डोपरि एतान्यर्चनानि ते स्वधा।

—कहकर जल छोड़ दे। हाथकी पवित्री यहाँ उतार दे।

जीवपितृमण्डलमें जाना

वेदीनिर्माण—जीवपितृमण्डलमें आकर अपने आसनपर अपसव्य दक्षिणाभिमुख हो बैठ जाय। यहाँकी पवित्री धारण कर ले। तदनन्तर भोजनपात्रोंके समक्ष मध्यमें बालू या शुद्ध मिट्टीसे दक्षिणकी ओर ढालवाली एक वेदी बनाये। वेदी चार अंगुल ऊँची, एक हाथ लम्बी-चौड़ी एवं उत्तर-दक्षिण फैलाववाली हो। गोबर और पानीसे वेदीको लीप दे। निम्न मन्त्र पढ़कर उसे जलसे सींच दे—

ॐ अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची ह्यवन्तिका । पुरी द्वारावती ज्ञेयाः सप्तैता मोक्षदायिकाः ॥

रेखाकरण—दायें हाथसे तीनों कुशोंकी जड़ तथा बायें हाथकी तर्जनी एवं अंगुष्ठसे कुशोंके अग्रभागको पकड़कर कुशोंके मूलभागसे उत्तरसे दक्षिणकी ओर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए एक सीधमें तीन रेखाएँ खींचे—

ॐ अपहता असुरा रक्षाᳬसि वेदिषदः ।

उन कुशोंको ईशानकोणमें फेंक दे।

उल्मुकस्थापन—निम्न मन्त्र पढ़कर अधजली हुई गोहरीके उल्मुकको* वेदीके वामावर्त घुमाकर वेदीके दक्षिणकी ओर श्राद्धपर्यन्त सुरक्षित रख दे—

ॐ ये रूपाणि प्रतिमुञ्चमाना असुराः सन्तः स्वधया चरन्ति।
परापुरो निपुरो ये भरन्त्यग्निष्टाँल्लोकात्प्रणुदात्यस्मात् ॥

* यदि अग्निकी व्यवस्था न हो तो ज्वालामुखी धूपसे ही अंगार-भ्रामणकी प्रक्रिया पूरी की जा सकती है।

कुशास्तरण—समूल तीन कुशोंको एक साथ जड़सहित दो भागोंमें एक ही बारमें विभक्त करके वेदीपर दक्षिणाग्र बिछा दे।

अवनेजनपात्र-स्थापन—पिण्डाधार वेदीकी पश्चिम दिशामें उत्तर-दक्षिण क्रमसे तीन अवनेजनपात्र (दोनिये) रख दे। तीनोंमें तिल, जल, गन्ध तथा पुष्प छोड़ दे।

(क) जीवके पिताके लिये अवनेजनदान—दाहिने हाथमें पहला (उत्तरवाला) अवनेजनपात्र रखकर तथा मोटक, तिल, जल लेकर निम्न संकल्प पढ़े—

संकल्प—ॐ अद्य ""गोत्रस्य ""जीवशर्मण:/वर्मण:/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतसपिण्डीकरणश्राद्धे ""गोत्र जीवपित: ""शर्मन्/वर्मन्/गुप्त वसुस्वरूप पिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते स्वधा।

—कहकर आधा जल पितृतीर्थसे वेदीमें उत्तरकी ओर खींची प्रथम रेखापर स्थापित किये हुए कुशके मूलमें छोड़ दे। अवनेजनपात्रको यथास्थानपर रख दे।

(ख) जीवके पितामहके लिये अवनेजनदान—पूर्ववत् दूसरी दोनिया तथा मोटक, तिल, जल लेकर संकल्प करे—

संकल्प—ॐ अद्य ""गोत्रस्य ""जीवशर्मण:/वर्मण:/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतसपिण्डीकरणश्राद्धे ""गोत्र जीवपितामह ""शर्मन्/वर्मन्/गुप्त रुद्रस्वरूप पिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते स्वधा।

—कहकर वेदीकी मध्य रेखापर बिछाये गये कुशके मध्यभागमें आधा जल गिरा दे और दोनियेको यथास्थान

रख दे।

(ग) जीवके प्रपितामहके लिये अवनेजनदान—पूर्ववत् तीसरा अवनेजनपात्र तथा मोटक, तिल, जल लेकर संकल्प करे—

संकल्प—ॐ अद्य ……गोत्रस्य ……जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतसपिण्डीकरणश्राद्धे ……गोत्र जीवप्रपितामह ……शर्मन्/वर्मन्/गुप्त आदित्यस्वरूप पिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते स्वधा।

—कहकर दक्षिण रेखापर बिछे कुशोंके अग्रभागमें आधा जल गिरा दे और दोनियेको यथास्थान रख दे।

पिण्डनिर्माण—बने हुए पाकमें तिल, घृत, मधु मिलाकर जीवके पिता, पितामह तथा प्रपितामहके निमित्त तीन गोल पिण्ड बनाकर पत्तलपर रख ले।

(क) जीवके पिताको पिण्डदान—गंगा, गया, कुरुक्षेत्रका स्मरणकर जीवच्छ्राद्धकर्ता बायाँ घुटना जमीनपर टिकाकर दायें हाथमें मोटक, तिल, जल तथा एक पिण्ड लेकर जीवके पिताका ध्यानकर पिण्डदानके लिये निम्न संकल्प बोले—

संकल्प—ॐ अद्य ……गोत्रस्य ……जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतसपिण्डीकरणश्राद्धे ……गोत्र जीवपितः वसुस्वरूप एष पिण्डस्ते स्वधा—बोलकर पिण्डको वेदीपर बिछे हुए कुशोंके मूलभागपर (प्रथम अवनेजनस्थानपर) दोनों हाथोंसे सँभालकर पितृतीर्थसे रख दे।

(ख) जीवके पितामहको पिण्डदान—पूर्वकी भाँति दाहिने हाथमें मोटक, तिल, जल तथा

दूसरा पिण्ड लेकर संकल्प करे—

संकल्प—ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतसपिण्डीकरणश्राद्धे ....गोत्र जीवपितामह रुद्रस्वरूप एष पिण्डस्ते स्वधा—बोलकर पिण्डको वेदीपर कुशोंके मध्यभागपर दोनों हाथोंसे सँभालकर पितृतीर्थसे (द्वितीय अवनेजनस्थानपर) रख दे।

(ग) जीवप्रपितामहको पिण्डदान—पूर्वकी भाँति तीसरा पिण्ड लेकर संकल्प करे—

संकल्प—ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतसपिण्डीकरणश्राद्धे ....गोत्र जीवप्रपितामह आदित्यस्वरूप एष पिण्डस्ते स्वधा—बोलकर पिण्डवेदीपर कुशोंके अग्रभागपर दोनों हाथोंसे सँभालकर पितृतीर्थसे (तृतीय अवनेजनस्थानपर) पिण्ड रख दे।

लेपभाग*—लेपभागभुक् पितरोंके लिये कुशाके अग्रभागपर पिण्डसे बचे हुए अन्नको '**लेपभागभुजः पितरस्तृप्यन्ताम्**' कहकर रख दे और पिण्डाधार-कुशोंके मूलभागमें तीन बार हाथ पोंछ ले।

सव्य होकर आचमन करे। हरिस्मरण कर ले।

---

* (क) दत्ते पिण्डे ततो हस्तं त्रिर्मृज्याल्लेपभागिनाम्। कुशाग्रे सम्प्रदातव्यं प्रीयन्तां लेपभागिनः॥ (याज्ञवल्क्य)
(लेपभाग कर्म अलग है और कुशमूलमें हाथ पोंछनेकी क्रिया अलग है।)
(ख) उत्तरे कुशमूलं तु पितृमूलं तु दक्षिणे। कुशमूलेषु यो दद्यान्निराशाः पितरो गताः॥ (पा०गृ० षड्भाष्योपेत श्राद्धसूत्रकण्डिका ३)
(ग) लेपभागभुजश्चतुर्थाद्याः पित्राद्याः पिण्डभागिनः। पिण्डदः सप्तमस्तेषां सापिण्ड्यं साप्तपौरुषम्॥ (मत्स्यपु० १८। २९)

श्वासनियमन—अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर आसनपर बैठे हुए ही श्वास खींचते हुए बायीं ओरसे उत्तराभिमुख हो निम्न मन्त्र पढ़े—

अत्र पितरो मादयध्वं यथाभागमावृषायध्वम्।

श्वास रोककर उसी क्रमसे दक्षिणाभिमुख होकर भास्वरमूर्ति (तेजःपुंजस्वरूप) जीवके पिता, पितामह तथा प्रपितामहका ध्यान करते हुए पिण्डके पास श्वास छोड़े और **अमीमदन्त पितरो यथाभागमावृषायिषत**—यह मन्त्र पढ़े।

यह कार्य तीनों पिण्डोंपर अलग-अलग करे।

प्रत्यवनेजनदान

पूर्वमें रखे हुए तीन अवनेजनपात्रों (दोनियों)-में जल न हो तो जल छोड़ ले।

(क) जीवके पिताके पिण्डपर—दाहिने हाथमें प्रत्यवनेजनपात्र तथा मोटक, तिल, जल लेकर निम्न संकल्प करे—

संकल्प—ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतसपिण्डीकरणश्राद्धे ....गोत्र जीवपितः ....शर्मन्/वर्मन्/गुप्त वसुस्वरूप पिण्डोपरि प्रत्यवनेनिक्ष्व ते स्वधा।

—बोलकर जीवके पिताके पिण्डपर प्रत्यवनेजनजल गिरा दे और पात्रको जहाँसे उठाया था, वहीं रख दे।

(ख) जीवके पितामहके पिण्डपर—पूर्ववत् दाहिने हाथमें प्रत्यवनेजनपात्र तथा मोटक, तिल, जल लेकर संकल्प करे—

संकल्प—ॐ अद्य ""गोत्रस्य ""जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतसपिण्डीकरणश्राद्धे ""गोत्र जीवपितामह ""शर्मन्/वर्मन्/गुप्त रुद्रस्वरूप पिण्डोपरि प्रत्यवनेनिक्ष्व ते स्वधा।

—बोलकर जीवके पितामहके पिण्डपर जल गिरा दे और दोनिया यथास्थान रख ले।

(ग) जीवके प्रपितामहके पिण्डपर—पूर्ववत् हाथमें दोनिया आदि लेकर संकल्प करे—

संकल्प—ॐ अद्य ""गोत्रस्य ""जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतसपिण्डीकरणश्राद्धे ""गोत्र जीवप्रपितामह ""शर्मन्/वर्मन्/गुप्त आदित्यस्वरूप पिण्डोपरि प्रत्यवनेनिक्ष्व ते स्वधा।

—बोलकर जीवके प्रपितामहके पिण्डपर जल छोड़ दे। दोनिया यथावत् रख ले।

नीवीविसर्जन—नीवी निकालकर ईशानकोणकी ओर फेंक दे। सव्य पूर्वाभिमुख होकर आचमन करे तथा भगवान्‌का स्मरण करे।

तदनन्तर अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर सूत्रदान करे—

सूत्रदान—बायें हाथसे सूत्र (कच्चा धागा) पकड़कर दाहिने हाथमें लेकर निम्न मन्त्र पढ़े—

ॐ नमो वः पितरो रसाय नमो वः पितरः शोषाय नमो वः पितरो जीवाय नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे नमो वः पितरः पितरो नमो वो गृहान्नः पितरो दत्त सतो वः पितरो देष्म। और **'एतद्वः पितरो वासः॥'**—कहकर सभी पिण्डोंपर पृथक्-पृथक् सूत्र चढ़ाये।

सूत्रदानका संकल्प—तदनन्तर मोटक, जल, तिल हाथमें लेकर सूत्रदानका संकल्प करे—

ॐ अद्य .....गोत्र जीवपितः .....शर्मन्/वर्मन्/गुप्त जीवच्छ्राद्धान्तर्गतसपिण्डीकरणश्राद्धे जीवपितृपिण्डे एतत्ते वासः स्वधा। ऐसा कहकर जीवके पिताके पिण्डपर संकल्पजल छोड़े। इसी प्रकार जीवपितामहादि सभीके पिण्डोंपर भी सूत्रदान करके पृथक्-पृथक् सूत्रदानका संकल्प करे। '**जीवपितः**' के स्थानपर '**जीवपितामह**' तथा '**जीवप्रपितामह**' बोले।

पिण्डपूजन—निम्न उपचारोंसे तीनों पिण्डोंका पूजन करे—

[कर्ताका वचन] [आचार्यका वचन]

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं स्नानीयम् (सुस्नानीयम्)—कहकर स्नानीय जल दे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं वस्त्रम् (सुवस्त्रम्)—कहकर वस्त्र अर्पित करे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इमे यज्ञोपवीते (सुयज्ञोपवीते)—कहकर यज्ञोपवीत चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदमुपवस्त्रम् (सुवस्त्रम्)—कहकर उपवस्त्र अर्पित करे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

एष गन्धः (सुगन्धः)—कहकर गन्ध आघ्रापित करे।

इमे तिलाक्षताः (सुतिलाक्षताः)—कहकर तिलाक्षत चढ़ाये।

इदं माल्यम् (सुमाल्यम्)—कहकर माला चढ़ाये।

एष धूपः (सुधूपः)—कहकर धूप आघ्रापित करे।

एष दीपः (सुदीपः)—कहकर दीप दिखाये।

हस्तप्रक्षालनम् (हाथ धो ले)

इदं नैवेद्यम् (सुनैवेद्यम्)—कहकर नैवेद्य अर्पित करे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं फलम् (सुफलम्)—कहकर फल अर्पित करे।

इदं ताम्बूलम् (सुताम्बूलम्)—कहकर ताम्बूल अर्पित करे।

एषा दक्षिणा (सुदक्षिणा)—कहकर दक्षिणा चढ़ाये। इत्यादि उपचारोंसे पिण्ड-पूजन करे।

तदनन्तर हाथमें मोटक, जल, तिल लेकर अर्चनदानका संकल्प करे—

अर्चनदानका संकल्प—ॐ अद्य .....गोत्रस्य .....जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गत-सपिण्डीकरणश्राद्धे जीवपितृपितामहप्रपितामहाः .....गोत्राः .....शर्माणः/वर्माणः/गुप्ताः वसुरुद्रादित्यस्वरूपाः पिण्डोपरि एतान्यर्चनानि भवद्भ्यः स्वधा।

—कहकर संकल्पजल छोड़ दे। यहाँकी पवित्री यहीं उतार दे।

पिण्ड-छेदन

जीवमण्डलमें आना—अपने आसनसे उठकर जीवपितृमण्डल तथा विश्वेदेवमण्डलकी परिक्रमा करते हुए जीवमण्डलमें अपने आसनपर अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर बैठ जाय, यहाँकी पवित्री धारण कर ले। जीवके लिये प्रदत्त पिण्डके ऊपर चढ़ी हुई सभी वस्तुओंको अलग कर ले और जीवके पिण्डको एक पत्तलपर उत्तर-दक्षिण लम्बाईमें रख दे।

इसके बाद चाँदीके तारको मोड़कर अथवा बड़े कुशका दो भाग करके उसे दोनों हाथोंसे पकड़कर जीवपिण्डके ऊपर दबाकर जीवपिण्डको तीन समान भागोंमें विभक्त कर दे। पिण्डका छेदन करते समय निम्न दो मन्त्रोंको बोले—

ये समानाः समनसः पितरो यमराज्ये। तेषाँल्लोकः स्वधा नमो यज्ञो देवेषु कल्पताम्॥

ये समानाः समनसो जीवा जीवेषु मामकाः। तेषाꣳ श्रीर्मयि कल्पतामस्मिँल्लोके शतꣳ समाः॥

इस समय ज्योतिर्मयस्वरूपमें जीवका ध्यान करे।

पिण्डमेलन

पितृमण्डलमें जाना—जीवमण्डलसे पत्तलसहित जीवपिण्डके तीनों भाग लेकर उठ जाय तथा पितृमण्डलमें जाकर अपने आसनपर अपसव्य दक्षिणाभिमुख बैठ जाय। जीवके पिता, पितामह तथा प्रपितामहके पिण्डोंसे पुष्प आदि हटा ले। तदनन्तर जीवके पिताके पिण्डको बायें हाथमें लेकर दायें हाथके अँगूठेसे उसमें बड़ा-सा छिद्र बनाये और जीवपिण्डका उत्तरवाला भाग लेकर पिताके पिण्डके छिद्रमें निम्न दो मन्त्र—

ये समानाः समनसः पितरो यमराज्ये। तेषाँल्लोकः स्वधा नमो यज्ञो देवेषु कल्पताम्॥

ये समानाः समनसो जीवा जीवेषु मामकाः। तेषाᳬ श्रीर्मयि कल्पतामस्मिँल्लोके शतᳬ समाः॥

—पढ़ते हुए डालकर तथा अच्छी तरह मिलाकर गोल पिण्ड-जैसा बना ले तथा जहाँसे पिताका पिण्ड उठाया था, उसी स्थानपर रख दे। इसी प्रकार जीवपिण्डका दूसरा भाग लेकर निम्न दो मन्त्र—

ये समानाः समनसः पितरो यमराज्ये। तेषाँल्लोकः स्वधा नमो यज्ञो देवेषु कल्पताम्॥

ये समानाः समनसो जीवा जीवेषु मामकाः। तेषाᳬ श्रीर्मयि कल्पतामस्मिँल्लोके शतᳬ समाः॥

—पढ़ते हुए जीवपितामहके पिण्डके छिद्रमें डालें तथा गोल पिण्ड-जैसा बनाकर पिण्डको पहलेवाले स्थानपर रख दे।

ऐसे ही जीवपिण्डका तीसरा भाग लेकर निम्न दो मन्त्र—

ये समानाः समनसः पितरो यमराज्ये। तेषाँल्लोकः स्वधा नमो यज्ञो देवेषु कल्पताम्॥

ये समानाः समनसो जीवा जीवेषु मामकाः। तेषाᳬ श्रीर्मयि कल्पतामस्मिँल्लोके शतᳬ समाः॥

—पढ़ते हुए जीवप्रपितामहके पिण्डके छिद्रमें डाले तथा गोल पिण्ड-जैसा बनाकर पिण्डको पूर्ववाले स्थानपर रख दे।

पिण्डपूजन—सूत्र आदि विविध उपचारोंसे निम्नलिखित मन्त्रोंद्वारा पिण्डपूजन करे—

[कर्ताका वचन] [आचार्यका वचन]

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं स्नानीयम् (सुस्नानीयम्)—कहकर स्नानीय जल दे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं वस्त्रम् (सुवस्त्रम्)—कहकर वस्त्र अर्पित करे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।
इमे यज्ञोपवीते (सुयज्ञोपवीते)—कहकर यज्ञोपवीत चढ़ाये।
इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।
इदमुपवस्त्रम् (सुवस्त्रम्)—कहकर उपवस्त्र अर्पित करे।
इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।
एष गन्धः (सुगन्धः)—कहकर गन्ध आघ्रापित करे।
इमे तिलाक्षताः (सुतिलाक्षताः)—कहकर तिलाक्षत चढ़ाये।
इदं माल्यम् (सुमाल्यम्)—कहकर माला चढ़ाये।
एष धूपः (सुधूपः)—कहकर धूप आघ्रापित करे।
एष दीपः (सुदीपः)—कहकर दीप दिखाये।
हस्तप्रक्षालनम् (हाथ धो ले)
इदं नैवेद्यम् (सुनैवेद्यम्)—कहकर नैवेद्य अर्पित करे।
इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।
इदं फलम् (सुफलम्)—कहकर फल अर्पित करे।
इदं ताम्बूलम् (सुताम्बूलम्)—कहकर ताम्बूल अर्पित करे।
एषा दक्षिणा (सुदक्षिणा)—कहकर दक्षिणा चढ़ाये। इत्यादि उपचारोंसे पिण्ड-पूजन करे।

तदनन्तर हाथमें मोटक, तिल, जल लेकर पिण्डार्चनदानका संकल्प करे—

पिण्डार्चनदानका संकल्प—ॐ अद्य ……गोत्रस्य ……जीवशर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गत-सपिण्डीकरणश्राद्धे जीवपितृपितामहप्रपितामहाः ……गोत्राः ……शर्माणः/वर्माणः/गुप्ताः पिण्डेषु एतान्यर्चनानि भवद्भ्यः स्वधा। संकल्पका जल छोड़ दे। पवित्री भी उतार दे। सव्य पूर्वाभिमुख होकर आचमनकर हरिस्मरण कर ले।

अक्षय्योदकदान

विश्वेदेवमण्डलमें आना—जीवपितृमण्डलसे पितरोंकी परिक्रमा करते हुए विश्वेदेवमण्डलमें अपने आसनपर सव्य उत्तराभिमुख बैठ जाय। यहाँकी पवित्री पहन ले।

'**ॐ शिवा आपः सन्तु**' कहकर भोजनपात्रपर जल छोड़े। '**ॐ सौमनस्यमस्तु**' कहकर पुष्प छोड़े। '**ॐ अक्षतं चारिष्टं चास्तु**' कहकर जौ छोड़े।

तदनन्तर हाथमें त्रिकुश, जौ, जल लेकर संकल्प करे—

संकल्प—ॐ अद्य ……गोत्रस्य ……शर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतसपिण्डीकरणश्राद्धे तदीय-पितृपितामहप्रपितामहानां ……शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां जीवच्छ्राद्धान्तर्गतसपिण्डीकरण-श्राद्धसम्बन्धिनां कामकालसंज्ञकानां विश्वेषां देवानां दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु।

—बोलकर संकल्पका जल आदि भोजनपात्रके पास छोड़ दे। यहाँकी पवित्री यहीं छोड़ दे।

पितृमण्डलमें आना—विश्वेदेवमण्डलसे जीवपितृमण्डलमें आकर अपसव्य दक्षिणाभिमुख हो अपने आसनपर बैठ जाय और पिता, पितामह तथा प्रपितामह—तीनोंके भोजनपात्रोंपर—

ॐ शिवा आपः सन्तु—कहकर जल छोड़े।

ॐ सौमनस्यमस्तु—कहकर पुष्प छोड़े।

ॐ अक्षतं चारिष्टं चास्तु—कहकर अक्षत छोड़े।

तदनन्तर अक्षय्योदक दानका संकल्प करे—

पिताके लिये—ॐ अद्य .....गोत्रस्य .....शर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतसपिण्डीकरणश्राद्धे तदीयपितुः .....शर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य वसुस्वरूपस्य दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु।

—कहकर संकल्पजल पिताके भोजनपात्रके पास छोड़ दे।

पितामहके लिये—ॐ अद्य .....गोत्रस्य .....शर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतसपिण्डीकरणश्राद्धे तदीयपितामहस्य .....शर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य रुद्रस्वरूपस्य दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु।

—कहकर संकल्पजल पितामहके भोजनपात्रके पास छोड़ दे।

प्रपितामहके लिये—ॐ अद्य .....गोत्रस्य .....शर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतसपिण्डीकरणश्राद्धे तदीयप्रपितामहस्य .....शर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य आदित्यस्वरूपस्य दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु।

—कहकर संकल्पजल प्रपितामहके भोजनपात्रके पास छोड़ दे।

जलधारादान—सव्य होकर दक्षिण दिशाकी ओर देखते हुए पिण्डोंपर निम्न मन्त्रसे पूर्वाग्र जलधारा दे—

'ॐ अघोराः पितरः सन्तु।'

आशीष-प्रार्थना—पूर्वाभिमुख हो पितरोंसे प्रार्थना करे—

ॐ गोत्रं नो वर्द्धतां दातारो नोऽभिवर्द्धन्ताम्। वेदाः सन्ततिरेव च। श्रद्धा च नो मा व्यगमद् बहुदेयं च नोऽस्तु। अन्नं च नो बहु भवेदतिथींश्च लभेमहि। याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म कञ्चन। एताः सत्या आशिषः सन्तु॥

ब्राह्मणवाक्य—सन्त्वेताः सत्या आशिषः।

पिण्डोंपर जलधारा या दुग्धधारा—तदनन्तर अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर पिण्डोंपर दक्षिणाग्र सपवित्र तीन कुशोंको रखकर निम्न मन्त्रसे दक्षिणाग्र जलधारा या दुग्धधारा दे—

ॐ ऊर्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्रुतम्। स्वधा स्थ तर्पयत मे पितॄन्॥

पिण्डाघ्राण—नम्र होकर पिण्डोंको सूँघकर उठा ले और किसी पात्रमें रख दे।

जीवपितरोंके पिण्डोंके नीचेवाले तीन कुशों तथा उल्मुक (पूर्वमें रखे गये अंगार)-को किसी दूसरी आगमें डाल दे। यहाँकी पवित्री यहीं छोड़ दे।

विश्वेदेवके अर्घपात्रका संचालन—जीवपितृमण्डलकी परिक्रमा करते हुए विश्वेदेवमण्डलमें आ जाय। सव्य उत्तराभिमुख हो यहाँकी पवित्री धारण कर ले। तदनन्तर विश्वेदेवके अर्घपात्रको हिला दे, फिर हाथमें त्रिकुश,

जौ, जल, सुवर्ण अथवा निष्क्रय-द्रव्य लेकर दक्षिणासंकल्प करे—

विश्वेदेवदक्षिणासंकल्प—ॐ अद्य ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहम् ....गोत्रस्य ....शर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गतसपिण्डीकरणश्राद्धे तदीयपितृपितामहप्रपितामहानां ....शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां जीवच्छ्राद्धान्तर्गतसपिण्डीकरणश्राद्धसम्बन्धिनां कामकालसंज्ञकानां विश्वेषां देवानां श्राद्धप्रतिष्ठार्थं सुवर्णदक्षिणां/सुवर्णनिष्क्रयद्रव्यं ....गोत्राय ....शर्मणे ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे।

हाथका जल तथा दक्षिणा ब्राह्मणको दे दे।

तदनन्तर यहाँकी पवित्री उतार दे और जीवके मण्डलमें आ जाय।

जीवश्राद्धके दक्षिणादानका संकल्प—जीवके मण्डलमें अपने आसनपर आकर यहाँकी पवित्री धारण कर ले और अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर जीवके अर्घपात्रको हिला दे। तदनन्तर सव्य पूर्वाभिमुख होकर हाथमें त्रिकुश, तिल, जल तथा रजत अथवा निष्क्रय-द्रव्य लेकर दक्षिणादानका संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहम् ....गोत्रस्य ....शर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गत-सपिण्डीकरणश्राद्धे जीवश्राद्धप्रतिष्ठार्थं रजतदक्षिणां/रजतनिष्क्रयद्रव्यं ....गोत्राय ....शर्मणे ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे। कहकर दे दे। (बादमें देना हो तो '**दातुमुत्सृज्ये**' बोलकर रख दे।)

यहाँकी पवित्री उतार दे और पितृमण्डलमें आ जाय।

पितृमण्डलमें आना—जीवके मण्डलसे पितृमण्डलमें आकर अपसव्य और दक्षिणाभिमुख हो अपने आसनपर बैठकर यहाँकी पवित्री धारण कर ले। सर्वप्रथम पिता, पितामह तथा प्रपितामहके संयुक्त तीन अर्घपात्रोंको उत्तान (सीधा) कर दे। सव्य पूर्वाभिमुख हो जाय और हाथमें त्रिकुश, तिल, जल तथा रजतदक्षिणा अथवा निष्क्रय-द्रव्य लेकर दक्षिणादानका संकल्प करे—

संकल्प—ॐ अद्य ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहम् ....गोत्रस्य ....शर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य जीवच्छ्राद्धान्तर्गत-सपिण्डीकरणश्राद्धे तदीयपितृपितामहप्रपितामहानां ....गोत्राणां ....शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां श्राद्धप्रतिष्ठार्थमेतानि रजतखण्डानि/रजतनिष्क्रयद्रव्यं ....गोत्राय ....शर्मणे ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे। कहकर हाथका जल तथा दक्षिणा-द्रव्य उपस्थित ब्राह्मणको दे दे।

पितृविसर्जन—अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए पित्रादिके आसनपर तिल छींटते हुए पितरोंका विसर्जन करे—

ॐ वाजे वाजेऽवत वाजिनो नो धनेषु विप्रा अमृता ऋतज्ञाः।
अस्य मध्वः पिबत मादयध्वं तृप्ता यात पथिभिर्देवयानैः॥

विश्वेदेवविसर्जन—विश्वेदेवमण्डलमें आकर सव्य उत्तराभिमुख हो जाय और '**विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्**' बोलकर विश्वेदेवके आसनपर जौ छींटते हुए उनका विसर्जन करे।

पितृगायत्रीका पाठ—विश्वेदेवोंकी परिक्रमा करते हुए जीवपितृमण्डलमें आ जाय, पूर्वाभिमुख हो

आचमन करके निम्न पितृगायत्रीमन्त्रका तीन बार पाठ करे—

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च । नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः ॥

रक्षादीपनिर्वापण—सव्य उत्तराभिमुख होकर विश्वेदेवका रक्षादीप बुझा दे तथा अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर दीपकपर प्याली आदि रखकर एक बारमें रक्षादीपोंको बुझा दे।

प्रार्थना—हाथ-पैर धोकर सव्य पूर्वाभिमुख हो जाय और भगवान्से प्रार्थना करे—

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत् । स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः ॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु । न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥

यत्पादपङ्कजस्मरणाद् यस्य नामजपादपि । न्यूनं कर्म भवेत् पूर्णं तं वन्दे साम्बमीश्वरम् ॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुध्याऽऽत्मना वानुसृतस्वभावात् ।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पये तत् ॥

ॐ विष्णवे नमः । ॐ विष्णवे नमः । ॐ विष्णवे नमः ।

ॐ साम्बसदाशिवाय नमः । ॐ साम्बसदाशिवाय नमः । ॐ साम्बसदाशिवाय नमः ।

प्रार्थनाके अनन्तर श्राद्धीय वस्तुएँ ब्राह्मणको दे दे अथवा जलमें डाल दे।

॥ जीवच्छ्राद्धान्तर्गतसपिण्डीकरणश्राद्धप्रयोग पूर्ण हुआ ॥

सपिण्डीकरणश्राद्धके बादके गणेशपूजन तथा शय्यादानादि कृत्य

(१) गणेशाम्बिका-पूजन तथा कलशपूजन। (२) शय्यादान। (३) सान्नोदककुम्भदान (वर्षाशन)। (४) विविध दान। (५) पददान। (६) जीवके उद्देश्यसे द्वादश कुम्भदान। (७) तीन वर्द्धनीकलशोंका दान। (८) विशेष वर्द्धनीकलशका दान। (९) श्रवणोंके लिये त्रयोदश घटदान।

गणेशाम्बिका-पूजन तथा कलशपूजन

जीवच्छ्राद्धान्तर्गत सपिण्डीकरणश्राद्ध करनेके अनन्तर स्नानकर धुला वस्त्र—धोती पहन ले तथा उत्तरीय—चादर (उपवस्त्र) धारण कर ले। तदनन्तर जलपूर्ण तथा पल्लवयुक्त एक कलश दाहिने हाथमें लेकर मंगलपाठ करता हुआ ब्राह्मणों तथा परिजनोंके साथ आवासस्थानपर आये और सर्वप्रथम गणेशाम्बिकापूजन करे। तदनन्तर शय्यादानकर्म करे।

आसनपर सव्य और पूर्वाभिमुख हो बैठ जाय। सभी पूजन-सामग्रीको यथास्थान रख ले।

निम्न मन्त्रसे अपने ऊपर तथा सभी सामग्रियोंपर जल छिड़के—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

तदनन्तर आचमन, प्राणायाम करे।

रक्षादीप-प्रज्वालन—रक्षादीप जलाकर उसे अक्षतपुंजपर पूर्वाग्र स्थापितकर निम्न प्रार्थना करे—

भो दीप ब्रह्मरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत्। यावत् कर्मसमाप्तिः स्यात् तावत् त्वं सुस्थिरो भव॥

'**सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि**' कहकर गन्ध, अक्षत, पुष्पसे दीपकका पूजन करे।

स्वस्तिपाठ—हाथमें अक्षत और पुष्प लेकर स्वस्तिपाठ करे—

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥ पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथेषु जग्मयः। अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसागमन्निह॥ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाᳫं सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥ शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्। पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः॥ अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः। विश्वे देवा अदितिः पञ्च जना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्॥ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षᳫं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वᳫं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥ यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु। शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः॥ सुशान्तिर्भवतु॥

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः। लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः। द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा। सङ्ग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥
अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः। सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः॥

सर्वमङ्गलमङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके। शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते॥

अक्षत और पुष्पको सामने छोड़ दे। पुनः दाहिने हाथमें त्रिकुश, अक्षत, जल लेकर निम्न संकल्प करे—

प्रतिज्ञासंकल्प—ॐ अद्य पूर्वोच्चारितग्रहगणगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं जीवच्छ्राद्धे श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं गणेशाम्बिकादिपूजनपूर्वकं यथाशक्तिसोपकरणशय्यादान-पददानादिकर्म करिष्ये। संकल्पका जल छोड़ दे।

गणेश-गौरीपूजन

सर्वप्रथम संक्षेपमें गणेश-गौरीका पूजन करे।

सुपारीमें मौली लपेटकर अक्षतपुंजपर स्थापित कर ले। प्रतिष्ठा कर ले।

भगवान् गणेशका ध्यान—हाथमें अक्षत लेकर भगवान् गणेशका ध्यान करे—

गजाननं भूतगणादिसेवितं कपित्थजम्बूफलचारुभक्षणम्। उमासुतं शोकविनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपङ्कजम्॥

भगवती गौरीका ध्यान—

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्॥

इस प्रकार गौरी-गणेशका ध्यानकर '**ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः**' इस मन्त्रसे आवाहन करे और अक्षत चढ़ा दे।

प्रतिष्ठा—हाथमें अक्षत-पुष्प लेकर निम्न मन्त्रसे गणेशाम्बिकाकी प्रतिष्ठा करे—

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ॑ᳬ समिमं दधातु। विश्वे देवास इह मादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च। अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

अक्षत-पुष्प छोड़ दे।

तदनन्तर '**ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः**' इस मन्त्रसे संक्षेपमें गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य आदि उपचारोंसे गणेशाम्बिकाकी पूजा करे और अन्तमें पुष्पांजलि लेकर प्रार्थना करे—

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते॥
त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या विश्वस्य बीजं परमासि माया।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत् त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः॥

पुष्पांजलि चढ़ा दे और प्रणाम निवेदन करे।

समर्पण—अनया पूजया गणेशाम्बिके प्रीयेताम्, न मम।

कलश-स्थापन

कलशमें रोलीसे स्वस्तिकका चिह्न बनाकर गलेमें तीन धागोंवाली मौली लपेटे और उस कलशको सप्तधान्य (जौ, धान, तिल, कँगनी, मूँग, चना तथा साँवा) अथवा गेहूँ, चावल या जौपर स्थापित कर दे। कलशमें जल, चन्दन, दूर्वा,

द्रव्य, पुष्प, सुपारी आदि छोड़ दे। पंचपल्लव छोड़े। वस्त्रसे अलंकृत करे। तदनन्तर चावलसे भरे एक पात्रको कलशके ऊपर रखे और लाल वस्त्रसे वेष्टित नारियल रख दे।

तत्पश्चात् स्थापित कलशमें वरुण आदि देवताओंका आवाहन करना चाहिये। सर्वप्रथम हाथमें अक्षत-पुष्प लेकर निम्न मन्त्रसे कलशस्थ जलके अधिष्ठातृदेव वरुणका आवाहन करे—

ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशꣳस मा न आयुः प्र मोषीः॥

'**ॐ अपाम्पतये वरुणाय नमः**'—कहकर अक्षत-पुष्प कलशपर छोड़ दे। तदनन्तर कलशमें अन्य देवोंका आवाहन निम्न मन्त्रोंको पढ़ते हुए करे—

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः। मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः॥
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः। अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा॥
आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः।
गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥
सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः। आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः॥

प्रतिष्ठा—अक्षत लेकर निम्न मन्त्रसे कलश तथा आवाहित देवताओंकी प्रतिष्ठा करे और अक्षत छोड़े—

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ७ँ समिमं दधातु। विश्वे देवास इह मादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ॥

प्रतिष्ठाके अनन्तर '**ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः**' इस मन्त्रसे संक्षेपमें गन्ध, अक्षत, धूप, दीप, नैवेद्य आदि उपचारोंसे कलशका पूजन करे और निम्न मन्त्रसे प्रार्थना करे—

नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय। सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते॥

'**ॐ अपाम्पतये वरुणाय नमः।**'

पुष्पांजलि-नमस्कार—'**ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, प्रार्थनापूर्वकं नमस्कारान् समर्पयामि**' कहकर पुष्पांजलि समर्पित करे और प्रणाम करे।

शय्यादान[1]

गोबरसे लिपी हुई या धुली हुई पवित्र भूमि, आँगन अथवा दरवाजेपर दक्षिणशिरस्क[2] एक शय्या लगाये। उसपर

---

१. गरुडपुराणमें शय्याका स्वरूप इस प्रकार बताया गया है—
तस्माच्छय्यां समासाद्य सारदारुमयीं शुभाम्। दन्तपत्रचितां रम्यां हेमपट्टैरलङ्कृताम्॥
रक्ततूलिप्रतिच्छन्नां शुभशीर्षोपधानिकाम्। प्रच्छादनपटीयुक्तां गन्धधूपाधिवासिताम्॥
तस्यां संस्थाप्य हैमं च हरिं लक्ष्म्या समन्वितम्। घृतपूर्णं च कलशं तत्रैव परिकल्पयेत्॥
ताम्बूलं कुङ्कुमाक्षोदं कर्पूरागुरुचन्दनम्। दीपकोपानहौ छत्रं चामरासनभाजनम्॥
पार्श्वेषु स्थापयेद् भक्त्या सप्त धान्यानि चैव हि। शयनस्थं च भवति यच्च स्यादुपकारकम्॥
भृङ्गारकादर्शपञ्चवर्णवितानशोभितम्। शय्यामेवंविधां कृत्वा ब्राह्मणाय निवेदयेत्॥ (ग०पु०, प्रेतकल्प अ० २४।५१—५६)

२. देवशय्याशिरः प्राच्यां मखशय्या तु दक्षिणे। पश्चिमे तीर्थशय्यायाः प्रेतशय्याशिरोत्तरे॥ (दानसंग्रह)

बिछावन बिछा दे। ओढ़नेकी रजाई या कम्बल अथवा चादर-तकिया आदि रख दे। साथ ही आइना, कंघी, माला, गन्ध (स्त्री हो तो सौभाग्यद्रव्य तथा आभूषण आदि), छाता, जूता, पूजा-सामग्री, पुस्तक तथा भोजननिर्माणोपयोगी पात्र रख दे। शय्याके नीचे चारों पायोंके निकट ईशानकोणमें सामर्थ्यानुसार धातु या मिट्टीका बना घृतपात्र, अग्निकोणमें कुमकुमपात्र, नैर्ऋत्यकोणमें गेहूँसे भरा पात्र तथा वायव्यकोणमें जलपात्र रखे। साथ ही सप्तधान्य[1] तथा सिरहानेके नीचे घृतकुम्भको यथास्थान रख दे।

ब्राह्मण-वरण

शय्यादान ग्रहण करनेवाले ब्राह्मण (यथासम्भव सपत्नीक)-को उत्तराभिमुख आसनपर बैठाये।

दाहिने हाथमें त्रिकुश, अक्षत, जल तथा वरण-द्रव्य लेकर संकल्प करे—

संकल्प—ॐ अद्य पूर्वोच्चारितग्रहगणगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं जीवच्छ्राद्धे शास्त्रोक्तफलप्राप्त्यर्थं क्रियमाणे शय्यादानादिकर्मणि सोपकरणशय्याप्रतिग्रहीतृत्वेन एभिर्वरणद्रव्यैः ....गोत्रं ....शर्माणं सपत्नीकम्[2] भवन्तं वृणे।

---

१. यवगोधूमधान्यानि तिलाः कङ्कुस्तथैव च। श्यामाकं चीनकञ्चैव सप्तधान्यमुदाहृतम्॥ (षट्त्रिंशन्मत)

जौ, गेहूँ, धान, तिल, टाँगुन, साँवा तथा चना—ये सप्तधान्य कहलाते हैं ।

यवधान्यतिलाः कङ्गुः मुद्गचणकश्यामकाः। एतानि सप्तधान्यानि सर्वकार्येषु योजयेत्॥

मतान्तरसे जौ, धान, तिल, कंगु (कँगनी), मूँग, चना तथा साँवा—ये सप्तधान्य कहलाते हैं।

२. यदि ब्राह्मणपत्नी न हो तो ब्राह्मणके वामभागमें पत्नीके प्रतिनिधिके रूपमें कुश रख दे।

—ऐसा बोलकर वरण-द्रव्यादि ब्राह्मणको दे दे।

ब्राह्मण बोले—'वृतोऽस्मि'।

तदनन्तर '**द्विजदम्पतिभ्यां नमः**' इस मन्त्रसे गन्ध, अक्षत, पुष्प, दीप, माला तथा दक्षिणा आदिसे द्विजदम्पतीका पूजन करे।

लक्ष्मीनारायणकी प्रतिमाका पूजन—किसी पात्रमें पानके पत्तेपर स्वर्णकी लक्ष्मीनारायणकी प्रतिमा स्थापितकर **ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः, आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि**—कहकर भगवान् लक्ष्मीनारायणका आवाहन करे। तदनन्तर हाथमें अक्षत लेकर निम्न मन्त्रसे प्रतिमाकी प्राण-प्रतिष्ठा करे—

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳ समिमं दधातु।
विश्वे देवास इह मादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च । अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

—मन्त्र पढ़कर अक्षत छोड़े।

पूजन—'ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः' इस मन्त्रसे गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप तथा नैवेद्य आदि उपचारोंसे प्रतिमाका पूजनकर प्रणाम निवेदन करे।

पूजनके अनन्तर पानपर स्थित प्रतिमाको शय्यापर रख दे।

शय्यापूजन—'सोपकरणशय्यायै नमः' इस मन्त्रसे शय्याका गन्धादि उपचारोंसे पूजन कर ले। पूजनको

सांग बनानेके लिये हाथ जोड़कर '**प्रमाण्यै देव्यै नमः**'* इस मन्त्रका उच्चारण करते हुए शय्याको प्रणाम करे और उसके बाद शय्याकी एक प्रदक्षिणा करे।

जलसे शय्या तथा सभी देय वस्तुओंको सींच दे।

हाथमें त्रिकुश, जल, अक्षत, पुष्प तथा द्रव्य लेकर शय्याकी पाटीका स्पर्श करते हुए निम्न संकल्प करे—

शय्यादान-संकल्प—ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः नमः परमात्मने पुरुषोत्तमाय ॐ तत्सत् अद्यैतस्य विष्णोराज्ञया जगत्सृष्टिकर्मणि प्रवर्तमानस्य ब्रह्मणो द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे तत्प्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे ....क्षेत्रे (यदि काशी हो तो **अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रे गौरीमुखे त्रिकण्टकविराजिते महाश्मशाने भगवत्या उत्तरवाहिन्या भागीरथ्या वामभागे**) **बौद्धावतारे ....संवत्सरे उत्तरायणे/ दक्षिणायने ....ऋतौ ....मासे ....पक्षे ....तिथौ ....वासरे ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/ गुप्तोऽहं जीवच्छ्राद्धे महिमण्डलसहित-समृद्धिविशिष्टराजकुलजन्म- बहुगन्धर्वोपगीयमानकीर्तिकत्वविशिष्ट-दिव्यदेहत्व-हस्त्यश्वरथयानाधिपत्य-महामहेन्द्रत्व-महेश्वरपुरगमनपूर्वक-विविधहर्षभोग्यत्ववरशय्यासमस्तावच्छिन्न-वस्त्रतन्तुसमसंख्यवर्षसहस्रावच्छिन्न-देवलोक-मदनसमदेहप्राप्तिपूर्वक-धनधान्यसमृद्धिमत्व-विष्णुलोकवासकामः घृतकुम्भजलकलश-ताम्बूलकुङ्कुमागरुकर्पूर-**

---

* शय्यापूजनके अनन्तर '**प्रमाण्यै देव्यै नमः**' कहकर हाथ जोड़कर शय्याकी प्रदक्षिणा करनी चाहिये—

शय्यां तु पूजयित्वैवं तद्भक्तो मत्परायणः। कृताञ्जलिपुटो भूत्वा कुर्याच्छय्याप्रदक्षिणाम्॥ नमः प्रमाण्यै देव्यै इति प्रणम्य चतुर्दिशि।

दीपिका-पादुकोपानच्छत्र-चामरासन-नानाविधभाजन-सुवर्णरजतभूषणविविधभक्ष्यभोज्यादर्शभूषणसिन्दूरादि-सौभाग्यद्रव्य-यथासम्भवपट्टकौशेय-क्षौमोर्णकार्पासवस्त्रादि-नानाविधोपस्करणान्वितां लक्ष्मीनारायणप्रतिमासहितां विष्णुदैवत्यामिमां शय्यां शास्त्रोक्तफलप्राप्तिपूर्वकभगवत्प्रीत्यर्थं ""गोत्राय ""शर्मणे ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे। संकल्पका जलादि ब्राह्मणके हाथमें दे दे।

ब्राह्मण बोले—'स्वस्ति'।

हाथमें त्रिकुश, अक्षत एवं जल लेकर निम्न सांगतासंकल्प करे—

सांगतासंकल्प—ॐ अद्य पूर्वोच्चारितग्रहगणगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ""गोत्रः ""शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं जीवच्छ्राद्धे कृतस्य यथाशक्तिसमलङ्कृतसोपकरणशय्यादानकर्मणः साङ्गताप्रतिष्ठासंसिद्ध्यर्थमिमां दक्षिणां ""गोत्राय ""शर्मणे ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे।

ब्राह्मणके हाथमें संकल्पजल आदि देकर उनका हाथ पकड़कर उन्हें शय्याकी पाटी पकड़वा दे।

प्रार्थना—अन्तमें भगवान्से प्रार्थना करे—

यथा न कृष्णशयनं शून्यं सागरजातया। शय्या ममाप्यशून्यास्तु तथा जन्मनि जन्मनि॥

हाथमें पुष्प लेकर—'**कृतेनानेन सोपकरणशय्यादानाख्येन कर्मणा भगवान् श्रीलक्ष्मीनारायणः प्रीयताम् न मम**'—कहकर जल छोड़े दे तथा पुष्प चढ़ा दे। हाथ जोड़ ले।

सान्नोदककुम्भदान (वर्षाशन)

जीवके उद्देश्यसे वर्षभरके लिये सभी प्रकारकी भोजनसामग्रीसहित जलपूर्ण घटका दान किया जाता है। अतः शय्यादानके अनन्तर यह दान करना चाहिये। इससे जीवकी क्षुधा-पिपासा शान्त होती है।

जलपूर्ण धातु-कलशके साथ वर्षभरके लिये षड्रसादि उपस्करसहित भोजनसामग्री एक स्थानपर एकत्र करके उसमें तुलसी छोड़कर भगवान्‌को समर्पित कर दे। फिर **'इदं वर्षाशनं सोपस्करं ते ददानि'** कहकर दानग्रहीता ब्राह्मणके हाथमें जल दे और ब्राह्मण **'ददस्व'** कहे। देय सामग्रीको जलसे सींच दे, **'देयद्रव्याय नमः'** कहकर देयसामग्रीका पूजन कर ले और फिर त्रिकुश, अक्षत, जल लेकर दानका संकल्प करे—

संकल्प—ॐ अद्य पूर्वोच्चारितग्रहगणगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं जीवच्छ्राद्धे जीवस्य क्षुधातृषानिवृत्तिपूर्वकाक्षयतृप्तिसम्पादनार्थं शास्त्रोक्तफलप्राप्त्यर्थं च सोपस्करं वर्षाशनं जलपूर्णघटसहितं भवते सम्प्रददे।

संकल्पका जल ब्राह्मणके हाथमें दे दे।

ब्राह्मण बोले—'स्वस्ति'।

सांगतासंकल्प—त्रिकुश, अक्षत, जल तथा सांगता-द्रव्यदक्षिणा लेकर निम्न संकल्प करे—

ॐ अद्य पूर्वोच्चारितग्रहगणगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं जीवच्छ्राद्धे कृतैतत्सजलघटसमन्वितसोपस्करवर्षाशनदानकर्मणःसाङ्गताप्रतिष्ठासंसिद्ध्यर्थमिदं दक्षिणाद्रव्यं ....गोत्राय ....शर्मणे

.....**ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे।** बोलकर दक्षिणा ब्राह्मणको दे दे।

विविध दान

सान्नोदककुम्भदानके अनन्तर कपिला गौ, वाहन, महिषी, भूमि तथा वृक्ष आदिके दानकी भी विधि है। अपनी श्रद्धा और शक्तिके अनुसार प्रत्यक्ष अथवा निष्क्रयरूपमें भी इनका दान किया जा सकता है।[1] निष्क्रयरूपमें दानका संकल्प इस प्रकार है—

ॐ अद्य पूर्वोच्चारितग्रहगणगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ .....गोत्रः .....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं जीवच्छ्राद्धे शास्त्रोक्तकपिलागवीवाहनमहिषीभूमिवृक्षादिदानजन्यफलप्राप्त्यर्थं यथाशक्ति तन्निष्क्रयभूतद्रव्यं .....शर्मणे ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे।

हाथका संकल्पजल छोड़ दे। दक्षिणा ब्राह्मणको दे दे।

पददान

गरुडपुराणके अनुसार (१) छत्र, (२) उपानह (जूता), (३) वस्त्र, (४) मुद्रिका (अँगूठी), (५) कमण्डलु, (६) आसन, (७) भाजन (बर्तन) तथा (८) भोज्यसामग्री—इन आठ वस्तुओंका एक पद होता है।[2]

देशाचारके अनुसार गौड़ीयश्राद्धप्रकाश (पृ० २३९)-में निम्न तेरह वस्तुओंका एक पदके रूपमें वर्णन है। यथा—

---

१. यदि वस्तुओंका प्रत्यक्ष दान करे तो वहाँ प्रत्येक वस्तुके दानके लिये अलग-अलग संकल्प करना चाहिये।

२. छत्रोपानहवस्त्राणि मुद्रिका च कमण्डलुः। आसनं भाजनं भोज्यं पदं चाष्टविधं स्मृतम्॥ (गरुडपुराण, प्रेतखण्ड ४।९)

(१) आसन, (२) जूता, (३) छत्र (छाता), (४) अँगूठी (सोने, चाँदी या ताँबेकी), (५) कमण्डलु (ताँबे, पीतलका या गंगा-जमुनी), (६) अन्न, (७) जल, (८) बर्तन (पात्र), (९) वस्त्र, (१०) घी, (११) यज्ञोपवीत, (१२) छड़ी तथा (१३) ताम्बूल (पान)।

इस प्रकार दो प्रकारके पददानोंकी व्यवस्था उपलब्ध है, देशाचारके अनुसार इनमेंसे किसी व्यवस्थाके अनुसार पदको अंगीकार करके आठ वस्तुओंका अथवा तेरह वस्तुओंसे एक पद बनाकर तेरह संख्यामें तेरह पदोंको दक्षिणोत्तर क्रमसे रख दे तथा दानसांगताकी दक्षिणा भी साथमें रख दे—

दाहिने हाथमें त्रिकुश, अक्षत, जल लेकर निम्न रीतिसे प्रतिज्ञासंकल्प करे—

प्रतिज्ञासंकल्प—ॐ अद्य पूर्वोच्चारितग्रहगणगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं जीवच्छ्राद्धे शास्त्रोक्तपददानजन्यफलप्राप्त्यर्थं त्रयोदशपददानानि करिष्ये तदङ्गत्वेन देयद्रव्यपूजनं च करिष्ये।

पदपूजा—देयवस्तुओंकी '**देयद्रव्याय नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि**' कहकर गन्ध, अक्षत, पुष्प आदि उपचारोंसे पूजा करे, जलसे सींच दे, तदनन्तर पददानका संकल्प करे—

पददानका संकल्प—हाथमें त्रिकुश, अक्षत, जल लेकर संकल्प करे—

ॐ अद्य पूर्वोच्चारितग्रहगणगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं जीवच्छ्राद्धे शास्त्रोक्तपददानजन्यफलप्राप्त्यर्थं साङ्गताद्रव्यसहितानि त्रयोदशपदानि नानानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य यथाकाले

दातुमुत्सृज्ये। कहकर संकल्पजल छोड़ दे और वस्तुएँ ब्राह्मणोंको तिलक लगाकर दे दे।

जीवके उद्देश्यसे द्वादश कुम्भोंका दान[1]

संकल्प—जलसे पूर्ण बारह कुम्भोंके ऊपर किसी पात्रमें द्रव्यसहित पक्वान्न तथा यथासम्भव वस्त्रादि रखकर हाथमें त्रिकुश, अक्षत तथा जल लेकर द्वादश कुम्भोंके दानका इस प्रकार संकल्प करे—

ॐ अद्य पूर्वोच्चारितग्रहगणगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं जीवच्छ्राद्धे मरणोत्तरभाविप्रेतदशायां यमलोकगमनकाले यममार्गे क्षुधातृषानिवृत्तिपूर्वकाक्षयसुखप्राप्त्यर्थं याम्यपुरुषप्रीत्यर्थं शास्त्रोक्तफलप्राप्त्यर्थं च इमान् पक्वान्नयुतान् जलपूरितान् द्वादशकुम्भान् (जो वस्त्र देना चाहें, वे संकल्पमें **'सवस्त्रान्'** पद जोड़ लें) **सदक्षिणान् विविधगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य यथाकाले दातुमुत्सृज्ये।** ऐसा कहकर बारह कुम्भ बारह ब्राह्मणोंको भोजन कराकर दक्षिणाके साथ दे दे।

तीन वर्द्धनीकलशोंका दान[2]

तीन कलशोंमें जल भरकर उनके ऊपर किसी धातु अथवा मिट्टीके पात्रमें पक्वान्न तथा फल रखकर उन्हें वस्त्रसे

---

१. द्वादशाहे विशेषेण उदकुम्भान् प्रदापयेत्। विधिना तत्र संकल्प्य घटान् द्वादशसंख्यकान्॥ (गरुडपुराण, प्रेतखण्ड ३७।७)

२. एकापि वर्द्धनी तत्र पक्वान्नफलपूरिता। विष्णुमुद्दिश्य दातव्या संकल्प्य ब्राह्मणे शुभे॥
एको वै धर्मराजाय तेन तुष्टेन मुक्तिभाक्। चित्रगुप्ताय चैकं तु गतस्तत्र सुखी भवेत्॥
एका वै वर्द्धनी तत्र तस्यां पात्रं तु वंशजम्॥
वस्त्रेणाच्छादयेत्तान्तु पूजयित्वा सुगन्धिभिः। ब्राह्मणेभ्यो विशेषेण जलपूर्णानि दापयेत्॥ (ग०पु०, प्रेत० ३७।८-९, १३-१४)

ढककर '**सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि**' कहकर गन्ध, अक्षतसे उनकी पूजा कर ले। इनमें प्रथम कलश भगवान् विष्णु, द्वितीय कलश धर्मराज तथा तृतीय कलश चित्रगुप्तके निमित्त दिया जाता है। तीनों वर्द्धनी कलशोंके दानका पृथक्-पृथक् संकल्प इस प्रकार है—

हाथमें त्रिकुश, अक्षत, जल, पुष्प तथा द्रव्य लेकर सर्वप्रथम विष्णुवर्द्धनीकलशके दानके लिये संकल्प बोले—

संकल्प—(१) ॐ अद्य पूर्वोच्चारितग्रहगणगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं जीवच्छ्राद्धे श्रीविष्णुप्रीतये पक्वान्नयुतं सजलं वर्द्धनीसंज्ञकमिमं कलशं ....गोत्राय ....शर्मणे ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे। संकल्पजल तथा वर्द्धनीकलश ब्राह्मणको दे दे। (बादमें देना हो तो **दातुमुत्सृज्ये** कहकर जल छोड़ दे)। ब्राह्मण '**स्वस्ति**' बोले।

इसी प्रकार धर्मराजवर्द्धनीकलश तथा चित्रगुप्तवर्द्धनीकलशके दानके लिये भी निम्न संकल्प करे—

(२) ॐ अद्य पूर्वोच्चारितग्रहगणगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं जीवच्छ्राद्धे श्रीधर्मराजप्रीतये पक्वान्नयुतं सजलं वर्द्धनीसंज्ञकमिमं कलशं ....गोत्राय ....शर्मणे ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे। बादमें देना हो तो **दातुमुत्सृज्ये** कहकर जल छोड़ दे।

(३) ॐ अद्य पूर्वोच्चारितग्रहगणगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं जीवच्छ्राद्धे श्रीचित्रगुप्तप्रीतये पक्वान्नयुतं सजलं वर्द्धनीसंज्ञकमिमं कलशं ....गोत्राय ....शर्मणे ब्राह्मणाय भवते

सम्प्रददे। बादमें देना हो तो **दातुमुत्सृज्ये** कहकर जल छोड़ दे।

विशेष वर्द्धनीकलशका दान

इन तीन कलशोंके साथ ही एक विशेष वर्द्धनीकलशका दान भी करना चाहिये। एक जलपूर्ण कलशके ऊपर किसी बाँसकी टोकरीमें फल तथा पक्वान्न रखकर उसे वस्त्रसे आच्छादितकर **'सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि'**—कहकर गन्ध, अक्षतसे उसकी पूजा करे और हाथमें त्रिकुश, अक्षत, जल लेकर दानका संकल्प करे—

संकल्प—ॐ अद्य पूर्वोच्चारितग्रहगणगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं जीवच्छ्राद्धे इमं विशेषवर्द्धनीसंज्ञकं कलशं शास्त्रोक्तफलप्राप्त्यर्थं ....गोत्राय ....शर्मणे ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे।

संकल्पका जल छोड़ दे और विशेष वर्द्धनीकलश ब्राह्मणको प्रदान कर दे। बादमें देना हो तो **दातुमुत्सृज्ये** कहकर जल छोड़ दे।

ब्राह्मण बोले—**'स्वस्ति'**।

समर्पण—अनेन वर्द्धनीकलशदानकर्मणा भगवान् श्रीलक्ष्मीनारायणः प्रीयताम्, न मम।

श्रवण नामक ऋषियोंके लिये बारह घटदान

गरुडपुराणमें श्रवणोंकी प्रसन्नता तथा तृप्तिके लिये अन्नपूरित बारह कुम्भ तथा एक कुम्भ भगवान् विष्णुके निमित्त

देनेकी विधि है। गरुडपुराणके अनुसार श्रवण ब्रह्माजीके मानस पुत्र हैं। इनकी संख्या बारह है। ये दूरदर्शन (दूरसे ही देखने) तथा दूरश्रवण (दूरसे ही सुनने)-की शक्तिसे सम्पन्न हैं। ये जीवोंके सभी शुभाशुभ कर्मोंका ज्ञान रखते हैं और सब कुछ चित्रगुप्त एवं यमराजको सत्य-सत्य बताते हैं।* जलपूरित तेरह कलशोंके ऊपर किसी पात्रमें मिष्टान्न, पक्वान्न रखकर दक्षिणाके साथ संकल्पकर ब्राह्मणको दे दें। कलश यथाशक्ति धातु अथवा मिट्टीके भी हो सकते हैं।

एक कुम्भमें भगवान् विष्णु तथा बारह कुम्भोंमें ब्रह्मपुत्र श्रवण ऋषियोंकी भावनाकर गन्ध, अक्षत, पुष्पादिसे उनकी पूजा कर ले।

संकल्प—हाथमें त्रिकुश, अक्षत, जल लेकर घटदानका संकल्प करे—

ॐ अद्य पूर्वोच्चारितग्रहगणगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं जीवच्छ्राद्धे श्रीविष्णुप्रीतये ब्रह्मपुत्रश्रवणादिऋषीणां प्रीतये च तदुद्देश्येन इमान् अन्नसहितान् जलपूर्णान् त्रयोदशसंख्याकान् सदक्षिणान् घटान् विभज्य नानानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो यथाकाले दातुमुत्सृज्ये। कहकर संकल्पजल छोड़ दे और घट ब्राह्मणोंको प्रदान करे।

ब्राह्मणभोजन—प्रथम दिन प्रधान प्रायश्चित्तानुष्ठान किया गया था। प्रायश्चित्तके उत्तरांगके रूपमें विष्णु-श्राद्धके अनन्तर बारह ब्राह्मणोंको भोजन करानेका संकल्प किया गया था। अतः जीवच्छ्राद्धकी सर्वांगपूर्णताके लिये

---

* गरुडपुराण प्रेतखण्ड अ० १६-१७

वसुरुद्रादित्यके पार्वणके निमित्त ५, आद्यश्राद्धके लिये १, षोडशत्रय श्राद्धके लिये ४८ तथा पूर्वसंकल्पित १२ एवं सपिण्डन-श्राद्धकी सांगताके लिये ५—इस प्रकार ७१ ब्राह्मणोंको भोजन कराना चाहिये। भोजन कराकर ताम्बूल-दक्षिणा आदिसे उन्हें सम्मानित करना चाहिये। अतः हाथमें त्रिकुश, अक्षत तथा जल लेकर ब्राह्मणभोजनका संकल्प इस प्रकार करे—

ब्राह्मणभोजनका संकल्प—ॐ अद्य ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं सम्पादिते जीवच्छ्राद्धे प्रथमदिवसीयप्रधानप्रायश्चित्तानुष्ठानाङ्गभूतविष्णुश्राद्धादीनां साङ्गताप्रतिष्ठासंसिद्ध्यर्थं एकसप्ततिसंख्याकान् ब्राह्मणान् भोजयिष्ये। हाथका संकल्पजल छोड़ दे।

जीवच्छ्राद्धके न्यूनातिरिक्तदोषके परिहारके लिये तथा सांगताप्रतिष्ठाकी सिद्धिके लिये यथाशक्ति प्रत्यक्ष गोदान अथवा गोनिष्क्रयद्रव्यका दान करना चाहिये। हाथमें त्रिकुश, अक्षत तथा जल लेकर गोनिष्क्रयका निम्नलिखित संकल्प करे—

गोनिष्क्रयसंकल्प—ॐ अद्य पूर्वोच्चारितग्रहगणगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं सम्पादिते जीवच्छ्राद्धे सञ्जातन्यूनातिरिक्तदोषपरिहारार्थं साङ्गताप्रतिष्ठासंसिद्ध्यर्थञ्च ....गोत्राय ....शर्मणे ब्राह्मणाय आचार्याय सवत्सां गाम्/गोनिष्क्रयभूतद्रव्यं भवते सम्प्रददे। कहकर गोनिष्क्रय-द्रव्य आचार्यको दे दे।

आचार्य बोले—'ॐ स्वस्ति'।

समर्पण तथा प्रार्थना—निम्न मन्त्र पढ़कर सम्पूर्ण जीवच्छ्राद्ध-कर्म भगवान्‌को निवेदित करे और

प्रार्थना करे—

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्। स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥
यत्पादपङ्कजस्मरणाद् यस्य नामजपादपि। न्यूनं कर्म भवेत् पूर्णं तं वन्दे साम्बमीश्वरम्॥
कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुध्याऽऽत्मना वानुसृतस्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पये तत्॥
ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः।
ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। ॐ साम्बसदाशिवाय नमः।

॥ जीवच्छ्राद्धान्तर्गत सपिण्डीकरणश्राद्ध पूर्ण हुआ॥

॥ जीवच्छ्राद्धपद्धति पूर्ण हुई॥